2
देवकीनन्दन खत्री
चन्द्रकान्ता सन्तति

बाबू देवकीनन्दन खत्री

जन्म : 18 जून 1861 (आषाढ़ कृष्ण 7, संवत् 1918)। **जन्मस्थान** : मुजफ्फरपुर (बिहार)।

बाबू देवकीनन्दन खत्री के पिता लाला ईश्वरदास के पुरखे मुल्तान और लाहौर में बसते-उजड़ते हुए काशी आकर बस गये थे। इनकी माता मुजफ्फरपुर के रईस बाबू जीवनलाल महता की बेटी थीं। पिता अधिकतर ससुराल में ही रहते थे। इसी से इनके बाल्यकाल और किशोरावस्था के अधिसंख्य दिन मुजफ्फरपुर में ही बीते।

हिन्दी और संस्कृत में प्रारम्भिक शिक्षा भी ननिहाल में हुई। फारसी से स्वाभाविक लगाव था, पर पिता की अनिच्छावश शुरू में उसे नहीं पढ़ सके। इसके बाद 18 वर्ष की अवस्था में, जब गया स्थित टिकारी राज्य से सम्बद्ध अपने पिता के व्यवसाय में स्वतन्त्र रूप से हाथ बँटाने लगे तो फारसी और अंग्रेजी का भी अध्ययन किया। 24 वर्ष की आयु में व्यवसाय सम्बन्धी उलट-फेर के कारण वापस काशी आ गये और काशी नरेश के कृपापात्र हुए। परिणामतः मुसाहिब बनना तो स्वीकार न किया, लेकिन राजा साहब की बदौलत चकिया और नौगढ़ के जंगलों का ठेका पा गये। इससे उन्हें आर्थिक लाभ भी हुआ और वे अनुभव भी मिले जो उनके लेखकीय जीवन में काम आये। वस्तुतः इसी काम ने उनके जीवन की दिशा बदली।

स्वभाव से मस्तमौला, यारबाश किस्म के आदमी और शक्ति के उपासक। सैर-सपाटे, पतंगबाजी और शतरंज के बेहद शौकीन। बीहड़ जंगलों, पहाड़ियों और प्राचीन खँडहरों से गहरा, आत्मीय लगाव रखनेवाले। विचित्रता और रोमांचप्रेमी। अद्भुत स्मरण-शक्ति और उर्वर, कल्पनाशील मस्तिष्क के धनी।

चन्द्रकान्ता पहला ही उपन्यास, जो सन् 1888 में प्रकाशित हुआ। सितम्बर 1898 में लहरी प्रेस की स्थापना की। 'सुदर्शन' नामक मासिक पत्र भी निकाला। चन्द्रकान्ता और चन्द्रकान्ता सन्तति (छः भाग) के अतिरिक्त देवकीनन्दन खत्री की अन्य रचनाएँ हैं : नरेन्द्र-मोहिनी, कुसुम कुमारी, वीरेन्द्र वीर या कटोरा-भर खून, काजल की कोठरी, गुप्त गोदना तथा भूतनाथ (प्रथम छः भाग)।

निधन : 1 अगस्त, सन् 1913।

देवकीनन्दन खत्री

चन्द्रकान्ता सन्तति

2

राजकमल पेपरबैक्स में
पहला संस्करण : 1987

राजकमल पेपरबैक्स : उत्कृष्ट साहित्य के जनसुलभ संस्करण

राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,
8, नेताजी सुभाष मार्ग,
नयी दिल्ली-110002
से प्रकाशित

मुद्रक :
कोणार्क प्रेस
लक्ष्मी नगर, दिल्ली-९२

मूल्य :
प्रति खण्ड रु. 12.00
चन्द्रकान्ता सहित
पूरा सैट रु. 84.00

आवरण पारदर्शी : मोहन गुप्त

CHANDRAKANTA SANTATI
Novel *by* Devaki Nandan Khatri

पाँचवाँ भाग

पहिला बयान

बेचारी किशोरी को चिता पर बैठाकर जिस समय दुष्टा धनपति ने आग लगायी उसी समय बहुत-से आदमी जो उसी जंगल में किसी जगह छिपे हुए थे हाथों में नंगी तलवारें लिये 'मारो मारो' कहते हुए उन लोगों पर आ टूटे। उन लोगों ने सबसे पहले किशोरी को चिता पर से खैंच लिया और इसके बाद धनपति के साथियों को पकड़ने लगे।

पाठक समझते होंगे कि ऐसे समय में इन लोगों के आ पहुँचने और जान बचने से किशोरी खुश हुई होगी और इन्द्रजीतसिंह से मिलने की कुछ उम्मीद भी उसे हो गयी होगी मगर नहीं, अपने बचानेवाले को देखते ही किशोरी चिल्ला उठी और उसके दिल का दर्द पहिले से भी ज़्यादे बढ़ गया। किशोरी ने आसमान की तरफ देखकर कहा, "मुझे तो विश्वास हो गया था कि इस चिता में जलकर ठण्ढे-ठण्ढे बैकुण्ठ चली जाऊँगी क्योंकि इसकी आँच कुँअर इन्द्रजीतसिंह की जुदाई की आँच से ज़्यादा गर्म न होगी, मगर हाय, इस बात का गुमान भी न था कि यह दुष्ट आ पहुँचेगा और मैं एक सचमुच की तपती हुई भट्टी में झोंक दी जाऊँगी। मौत तू कहाँ है? तू कोई वस्तु है भी या नहीं, मुझे तो इसी में शक है!"

वह आदमी जिसने ऐसे समय में पहुँचकर किशोरी को बचाया, माधवी का दीवान अग्निदत्त था जिसके चंगुल में फँसकर किशोरी ने राजगृही में बहुत दुःख उठाया था और कामिनी की मदद से—जिसका नाम कुछ दिनों तक किन्नरी था—छुट्टी मिली थी। किशोरी को अपने मरने की कुछ भी परवाह न थी और वह अग्निदत्त की सूरत देखने की

बनिस्बत मौत को लाख दर्जे उत्तम समझती थी, यही सबब था कि इस समय उसे अपनी जान बचाने का रंज हुआ।

अग्निदत्त और उसके आदमियों ने किशोरी को तो बचा लिया मगर जब उसके दुश्मनों को अर्थात् धनपति और उसके साथियों को पकड़ने का इरादा किया तो लड़ाई गहरी हो पड़ी। मौका पाकर धनपति भाग गयी और गहन वन में किसी झाड़ी के अन्दर छिपकर उसने अपनी जान बचायी। उसके साथियों में से एक भी न बचा, सब मारे गये। अग्निदत्त भी केवल दो ही आदमियों के साथ बच गया। उस संगदिल ने रोती और चिल्लाती हुई बेचारी किशोरी को ज़बर्दस्ती उठा लिया और एक तरफ़ का रास्ता लिया।

पाठक आश्चर्य करते होंगे कि अग्निदत्त को तो राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ने राजगृही में गिरफ़्तार कर चुनार भेज दिया था, वह यकायक यहाँ कैसे आ पहुँचा ? इसलिए अग्निदत्त का थोड़ा-सा हाल इस जगह लिख देना हम मुनासिब समझते हैं।

राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ने दीवान अग्निदत्त को गिरफ़्तार करके अपने बीस सवारों के पहरे में चुनारगढ़ रवाना कर दिया और एक चीठी भी सब हाल की महाराज सुरेन्द्रसिंह को लिखकर, उन्हीं लोगों के मार्फ़त भेजी। अग्निदत्त हथकड़ी डाल घोड़े पर सवार कराया गया और उसके पैर रस्सी से घोड़े की जीन के साथ बाँध दिये गये, घोड़े की लम्बी बागडोर दोनों तरफ़ से दो सवारों ने पकड़ ली और सफ़र शुरू किया। तीसरे दिन जब वे लोग सोन नदी के पास पहुँचे अर्थात् जब वह नदी दो कोस बाकी रह गयी, तब उन लोगों पर डाका पड़ा। पचास आदमियों ने चारों तरफ़ से घेर लिया। घण्टे-भर की लड़ाई में राजा बीरेन्द्रसिंह के कुल आदमी मारे गये, ख़बर पहुँचाने के लिए भी एक आदमी न बचा और अग्निदत्त को उन लोगों के हाथों से छुट्टी मिली। वे डाकू सब अग्निदत्त के तरफ़दार और उन लोगों में से थे, जो गयाजी में फ़साद मचाया करते और उन लोगों की जानें लेते और घर लूटते थे, जो दीवान अग्निदत्त के विरुद्ध जाने जाते। इस तरह अग्निदत्त को छुट्टी मिली और बहुत दिन तक इस डाके की ख़बर राजा बीरेन्द्रसिंह या उनके आदमियों को न मिली।

यद्यपि दीवान अग्निदत्त के हाथ से गया की दीवानी जाती रही और वह एक साधारण आदमी की तरह मारा-मारा फिरने लगा तथापि वह अपने साथी डाकुओं में मालदार गिना जाता था, क्योंकि उसके पास ज़ुल्म की कमाई हुई दौलत थी और वह उस दौलत को राजगृही से थोड़ी दूर पर एक मढ़ी में, जो पहाड़ी के ऊपर थी रखता था, जिसका हाल दस-बारह

आदमियों के सिवाय और किसी को भी मालूम न था। उस दौलत को निकालने में अग्निदत्त ने विलम्ब न किया और उसे अपने कब्ज़े में लाकर साथी डाकुओं के साथ अपनी धुन में चारों तरफ़ घूमने तथा इस बात की टोह लेने लगा कि राजा बीरेन्द्रसिंह की तरफ़ क्या-क्या होता है।

थोड़े ही दिन बाद मौक़ा समझकर वह रोहतासगढ़ के चारों तरफ़ घूमने लगा और जिस तरह किशोरी से मिला उसका हाल आप ऊपर पढ़ ही चुके हैं।

जिस जगह अग्निदत्त किशोरी से मिला था, उससे थोड़ी ही दूर पर एक पहाड़ी थी, जिसमें कई खोह और ग़ार थे। वह किशोरी को उठाकर उस पहाड़ी पर ले गया। रोते और चिल्लाते-चिल्लाते किशोरी बेहोश हो गयी थी। अग्निदत्त ने उसे खोह के अन्दर ले जाकर लेटा दिया और आप बाहर चला आया।

पहर रात जाते-जाते जब किशोरी होश में आयी तो उसने अपने को अजब हालत में पाया। ऊपर-नीचे चारों तरफ़ पत्थर देखकर वह समझ गयी कि मैं किसी खोह में हूँ। एक तरफ़ चिराग जल रहा था। गुलाब के फूल से नाज़ुक किशोरी कीअवस्था इस समय बहुत ही नाज़ुक थी। अग्निदत्त की याद से उसे घड़ी-घड़ी रोमांच होता था, उसके धड़कते हुए कलेजे में अजब तरह का दर्द था और इस सोच ने उसे बिल्कुल ही निकम्मा कर रक्खा था कि देखें चाण्डाल अग्निदत्त के पहुँचने पर मेरी क्या दुर्दशा होती है। घण्टों की मेहनत में बड़ी कोशिश करके उसने अपने होश-हवास दुरुस्त किये और सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए। उसने इस इरादे को तो पक्का कर ही लिया था कि अगर अग्निदत्त मेरे पास आवेगा तो पत्थर पर सर पटककर अपनी जान दे दूँगी, मगर यह भी सोचती थी कि पत्थर पर सर पटकने से जान नहीं जा सकती, किसी तरह खोह के बाहर निकलकर ऐसा मौका ढूँढ़ना चाहिए कि अपने को इस पहाड़ के नीचे गिराकर बखेड़ा तय कर दिया जाय, जिसमें हमेशा के लिए इस खिचाखिची से छुट्टी मिले।

किशोरी चिराग़ बुझाने के लिए उठी ही थी कि सामने से पैर की चाप मालूम हुई। वह डरकर उसी तरफ़ देखने लगी कि यकायक अग्निदत्त पर नज़र पड़ी। देखते ही वह काँप गयी, ऐसा मालूम हुआ कि रग़ों मे ख़ून की जगह पारा भर गया। वह अपने को किसी तरह सम्हाल न सकी और ज़मीन पर बैठकर रोने लगी। अग्निदत्त सामने आकर खड़ा हो गया और बोला—

अग्निदत्त : तुमने मुझको बड़ा ही धोखा दिया, अपने साथ मेरी लड़की

को भी मुझसे जुदा कर दिया। अभी तक मुझे इस बात का पता न लगा कि मेरी स्त्री पर क्या बीती और बीरेन्द्रसिंह ने उसके साथ क्या सलूक किया, और यह सब तुम्हारी बदौलत हुआ।

किशोरी : फिर भी मैं कहती हूँ कि मुझे सताकर तुम सुख न पाओगे।

अग्निदत्त : इस समय तुम्हें पाकर मैं बहुत खुश हूँ, दीन-दुनिया की फिक्र जाती रही, आगे जो होगा देखा जायेगा।

किशोरी : मैं तुमसे वादा करती हूँ कि यदि मुझे छोड़ दोगे तो मैं राजा बीरेन्द्रसिंह से कहकर तुम्हारा कसूर माफ़ करा दूँगी और तुम्हारी जीविका-निर्वाह के लिए भी बन्दोबस्त हो जायेगा, नहीं तो याद रखना तुम्हारी स्त्री भी······

अग्निदत्त : जो तुम कहोगी सो मैं समझ गया। मेरी स्त्री पर चाहे जो बीते इसकी परवाह नहीं, न मुझे बीरेन्द्रसिंह का डर है। मुझे दुनिया में तुमसे बढ़कर कोई चीज़ नहीं दिखायी देती है। देखो, तुम्हारे लिए मैंने कितना दु:ख भोगा और भोगने को तैयार हूँ, क्या अब भी तुमको मुझ पर तरस नहीं आता! मैं कसम खाकर कहता हूँ कि तुम्हें अपनी जान से ज़्यादा प्यार करूँगा, यदि मेरी होकर रहोगी।

किशोरी : अरे दुष्ट चाण्डाल, ख़बरदार फिर ऐसी बात मुँह से न निकालियो!

अग्निदत्त : चाहे जो हो, मैं तुम्हें किसी तरह नहीं छोड़ सकता!

किशोरी : जान जाय तो जाय मगर तेरी हवा अपने बदन से लगने न दूँगी।

अग्निदत्त : (हँसकर) देखूँ तो तू अपने को मुझसे क्योंकर बचाती है।

इतना कहकर अग्निदत्त किशोरी को पकड़ने के लिए आगे बढ़ा। किशोरी घबड़ाकर उठ खड़ी हुई और दूर हट गयी। थोड़ी देर तक तो इस तंग जगह में दौड़-धूप कर किशोरी ने अपने को बचाया मगर कहाँ तक? आख़िर मर्द के सामने औरत की क्या पेश आ सकती थी! अग्निदत्त को क्रोध आ गया। उसने किशोरी को पकड़ लिया और ज़मीन पर पटक दिया।

दूसरा बयान

पाठक अभी भूले न होंगे कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह कहाँ हैं। हम ऊपर लिख आये हैं कि उस मकान में जो तालाब के अन्दर बना हुआ था, कुँअर इन्द्रजीतसिंह दो औरतों को देखकर ताज्जुब में आ गये। कुमार उन

औरतों का नाम नहीं जानते थे मगर पहिचानते ज़रूर थे, क्योंकि उन्हें राजगृही में माधवी के यहाँ देख चुके थे और जानते थे कि ये दोनों माधवी की लौंडियाँ हैं, परन्तु यह जानने के लिए कुमार व्याकुल हो रहे थे कि ये दोनों यहाँ क्योंकर आयीं, क्या इस औरत से जो इस मकान की मालिक है और उस माधवी से कोई सम्बन्ध है? इसी समय उन दोनों औरतों के पीछे-पीछे वह औरत भी आ पहुँची, जिसने इन्द्रजीत-सिंह के ऊपर एहसान किया था और जो उस मकान की मालिक थी। अभी तक इस औरत का नाम मालूम नहीं हुआ मगर आगे इससे काम बहुत पड़ेगा, इसलिए जब तक इसका असल नाम मालूम न हो कोई बनावटी नाम रख दिया जाये तो उत्तम होगा। मेरी समझ में तो कमलिनी नाम कुछ बुरा न होगा।

जिस समय कुँअर इन्द्रजीतसिंह की निगाह उन दोनों औरतों पर पड़ी। वे हैरान होकर उनकी तरफ देखने लगे, उसी समय दौड़ती हुई कमलिनी भी आयी और दूर ही से बोली—

कमलिनी : कुमार, इन दोनों हरामखोरियों का कोई मुलाहिज़ा न कीजियेगा और न किसी तरह की ज़ुबान ही दीजियेगा, अपनी जान बचाने के लिए ही दोनों आपके पास आयी हैं।

इन्द्रजीत : क्या मामला है, ये दोनों कौन हैं?

कमलिनी : ये दोनों माधवी की लौंडियाँ हैं, आपकी जान लेने आयी थीं, मेरे आदमियों के हाथ गिरफ़्तार हो गयीं।

इन्द्रजीत : तुम्हारे आदमी कहाँ हैं? मैंने तो इस मकान में सिवाय तुम्हारे किसी को भी नहीं देखा!

कमलिनी : बाहर निकलकर देखिए मेरे सिपाही मौजूद हैं, जिन्होंने इसे गिरफ़्तार किया।

इन्द्रजीत : अगर ये गिरफ्तार होकर आयी हैं तो इनके हाथ-पैर खुले क्यों हैं?

कमलिनी : इसके लिए कोई हर्ज़ नहीं, ये मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं, जब तक कि मैं जागती हूँ या अपने होश में हूँ।

इन्द्रजीत : (उन दोनों की तरफ़ देखकर) तुम क्या कहती हो?

एक : (कमलिनी की तरफ़ इशारा करके) ये जो कुछ कहती हैं, ठीक है परन्तु आप वीर पुरुष हैं, आशा है कि हम लोगों का अपराध क्षमा करेंगे!

कुँअर इन्द्रजीतसिंह इन बातों को सुनकर सोच में पड़ गये। उन्हें उन दोनों औरतों की और कमलिनी की बातों का विश्वास न हुआ, बल्कि

यक़ीन हो गया कि ये लोग किसी तरह का धोखा दिया चाहती हैं। आधी घड़ी तक सोचने के बाद कुमार बंगले के बाहर निकले तो देखा क्या कि तालाब के बाहर लगभग बीस सिपाही खड़े आपुस में कुछ बातें कर रहे और घड़ी-घड़ी इसी तरफ़ देख रहे हैं। कुमार वहाँ से लौट आये और कमलिनी की तरफ़ देखकर बोले —

इन्द्रजीत : ख़ैर जो तुम्हारे जी में आये करो, हम इस बारे में कुछ नहीं कह सकते।

कमलिनी : करना क्या है, इन दोनों का सिर काटा जायेगा।

इन्द्रजीत : खुशी तुम्हारी। मैं ज़रा इस तालाब के बाहर जाना चाहता हूँ।

कमलिनी : क्यों ?

इन्द्रजीत : यह समय मज़ेदार है, ज़रा मैदान की हवा खाऊँगा और उस घोड़े की भी ख़बर लूँगा जिस पर सवार होकर आया था।

कमलिनी : इस मकान की छत पर चढ़ने से अच्छी और साफ़ हवा आपको मिल सकती है, घोड़े के लिए चिन्ता न करें, या फिर ऐसा ही है तो सवेरे जाइयेगा !

न मालूम क्या सोचकर इन्द्रजीतसिंह चुप हो रहे। कमलिनी ने उन दोनों औरतों का हाथ पकड़ा और धमकाती हुई न जाने कहाँ ले गयी, इस का हाल कुमार को न मालूम हुआ और न उन्होंने जानने का उद्योग ही किया।

यद्यपि इस औरत अर्थात् कमलिनी ने कुमार की जान बचायी थी तथापि उन्हें विश्वास हो गया कि कमलिनी ने दोस्ती की राह पर यह काम नहीं किया बल्कि किसी मतलब से किया है। उस मकान में गुलदस्ते के नीचे से जो चीठी कुमार ने पायी थी उसके पढ़ने से कुमार होशियार हो गये थे तथा समझ गये थे कि यह मुझे मकर में लाया चाहती और किशोरी के साथ भी किसी तरह की बुराई किया चाहती है। इसमें कोई शक नहीं कि कुमार इसे चाहने लगे थे और जान बचाने का बदला चुकाने की फिक्र में थे मगर उस चीठी के पढ़ते ही उनका रंग बदल गया और वे किसी दूसरी ही धुन में लग गये।

कुमार चाहते तो शायद यहाँ से निकल भागते क्योंकि उस औरत की तरफ़ से होशियार हो चुके थे मगर इस काम में उन्होंने यह समझकर जल्दी न की कि इस औरत का कुछ हाल मालूम करना चाहिए और जानना चाहिए कि यह कौन है। पर कमलिनी को कुमार के दिल की क्या ख़बर थी, उसने तो सोच रक्खा था कि मैंने कुमार पर अहसान किया है और

वे किसी तरह पर मुझसे बदगुमान न होंगे।

कुमार के पास इस समय सिवाय कपड़ों के कोई चीज़ ऐसी न थी जिससे वे अपनी हिफ़ाज़त करते या समय पड़ने पर मतलब निकाल सकते।

कुछ दिन बाक़ी था, जब कुमार उस मकान की छत पर चढ़ गये और चारों तरफ़ के पहाड़, जंगल तथा मैदान की बहार देखने लगे। कुमार को यह जगह बहुत ही पसन्द आयी और उन्होंने दिल में कहा कि यदि ईश्वर की इच्छा हुई तो सब बखेड़ों से छुट्टी पाकर किशोरी के साथ कुछ दिनों तक इस मकान में ज़रूर रहेंगे। थोड़ी देर तक प्रकृति की शोभा देखकर दिल बहलाते रहे, जब सूर्य अस्त हो गया तो कमलिनी भी वहाँ पहुँची और कुमार के पास खड़ी होकर बातचीत करने लगी।

कमलिनी : यहाँ से अच्छी बहार दिखायी देती है।

कुमार : ठीक है, मगर यह छटा मेरे दिल को किसी तरह नहीं बहला सकती।

कमलिनी : सो क्यों ?

कुमार : तरह-तरह की फ़िक्रों और तरद्‌दुदों ने मुझे दुखी कर रक्खा है, बल्कि यहाँ आने और तुम्हारे मिलने से तरद्‌दुद और भी ज्यादे हो गया।

कमलिनी : यहाँ आकर कौन-सी फ़िक्र बढ़ गयी ?

कुमार : यह तो तब कह सकता हूँ, जब कुछ तुम्हारा हाल मालूम हो, अभी तो मैं यह भी नहीं जानता कि तुम कौन और कहाँ की रहनेवाली हो और इस मकान में आके रहने का सबब क्या है।

कमलिनी : कुमार, मुझे आपसे बहुतकुछ बातें कहनी हैं। इसमें कोई शक नहीं कि मेरे बारे में आप तरह-तरह की बातें सोचते होंगे, कभी मुझे ख़ैरख्वाह तो कभी बदख्वाह समझते होंगे, बल्कि बदख्वाह समझने का मौक़ा ही ज्यादे मिलता होगा। अक्सर उन लोगों ने जो मुझे जानते हैं, मुझे शैतान और ख़ूनी समझ रक्खा है, और इसमें उनका कोई कसूर भी नहीं। मैं उन लोगों का ज़िक्र इस समय केवल इसीलिए करती हूँ कि शायद उन लोगों ने जो केवल दो-तीन ऐयार मात्र हैं, कुछ चर्चा आपसे की हो।

कुमार : नहीं, मैंने किसी से कभी तुम्हारा ज़िक्र नहीं सुना।

कमलिनी : ख़ैर, ऐसा मौक़ा न पड़ा होगा पर मेरा मतलब यह है कि जब तक मैं अपने मुँह से कुछ न कहूँगी, मेरे बारे में कोई भी अपनी राय ठीक नहीं कर सकता और···

इतने ही में सीढ़ी पर किसी के पैर की धमधमाहट मालूम हुई, जिसे सुनकर दोनों चौंके और उसी तरफ़ देखने लगे।

कुमार : इस मकान में तो केवल तुम्हीं रहती हो।

कमलिनी : नहीं और भी कई आदमी रहते हैं, मगर वे लोग उस समय नहीं थे, जब आप आये थे।

दो लौंडियाँ आती हुई दिखायी पड़ीं। एक के हाथ में छोटा-सा गालीचा था, दूसरी के हाथ में शमादान और तीसरी पानदान लिये हुए थी। गालीचा बिछा दिया गया, शमादान और पानदान रखकर, लौंडियाँ हाथ जोड़े सामने खड़ी हो गयीं। कमलिनी के कहने से कुमार गालीचे पर बैठ गये और कमलिनी भी पास बैठ गयी। इस समय इन तीनों लौंडियों का वहाँ पहुँचकर बातचीत में बाधा डालना कुमार को बहुत बुरा मालूम हुआ, क्योंकि वे बड़े ही ग़ौर से कमलिनी की बातें सुन रहे थे और इस बीच में उनके दिल की अजीब हालत थी। कुमार ने कमलिनी की तरफ़ देखके कहा, "हाँ, तुम अपनी बातों का सिलसिला मत तोड़ो।"

कमलिनी : (लौंडियों की तरफ़ देखकर) अच्छा ! तुम लोग जाओ, बहुत जल्द खाने का बन्दोबस्त करो।

कुमार : अभी खाने के लिए जल्दी न करो।

कमलिनी : ख़ैर, ये लोग अपना काम पूरा कर रक्खें, आप जब चाहें भोजन करें।

कुमार : अच्छा हाँ तब ?

कमलिनी : (डब्बे से पान निकालकर) लीजिए, पान खाइए।

कुमार ने पान हाथ में रख लिया और पूछा, "हाँ तब ?"

कमलिनी : पान खाइए, आप डरिए मत, इसमें बेहोशी की दवा नहीं मिली है। हाँ, अगर आप ऐसा ख़याल करें भी तो कोई बेमौक़ा नहीं !

कुमार (हँसकर) इसमें कोई शक नहीं कि इतनी ख़ैरख्वाही करने पर भी मैं तुम्हारी तरफ़ से बदगुमान हूँ, मगर तुम्हारी बातें अजब ढंग पर चल रही हैं। (पान खाकर) अब जो हो, जब तुमने मेरी जान बचायी है तो कब हो सकता है कि तुम अपने हाथ से मुझे ज़हर दो।

कमलिनी : (हँसकर) कुमार, यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है कि आप मुझ पर शक करें। माधवी की दोनों लौंडियों का मामला भी जो अभी थोड़ी देर पहले हुआ आप देख चुके हैं, मुझ पर शक करने का मौक़ा आपको देगा। मगर नहीं, आप पूरा विश्वास रखिए कि मैं आपके साथ कभी बुराई न करूँगी। कई आदमी मेरी शिकायत आपसे करेंगे, आपही के कई ऐयार असल हाल न जानने के कारण, मेरे दुश्मन हो जायेंगे, मगर सिवाय कसम खाकर कहने के और किस तरह आपको विश्वास दिलाऊँ कि मैं आपकी ख़ैरख्वाह हूँ। आप यह भी सोच सकते हैं कि मैं

आपके साथ ख़ैरख़्वाही क्यों कर रही हूँ ? दुनिया का क़ायदा है कि बिना मतलब कोई किसी का काम नहीं करता और मैं भी दुनिया के बाहर नहीं हूँ, अस्तु, मैं भी आपसे बहुत कुछ उम्मीद करती हूँ, मगर उसे ज़ुबान से कह नहीं सकती । अभी आपको मुझसे वर्षों तक काम पड़ेगा, जब आप हर तरह से निश्चिन्त हो जायेंगे, आपकी किशोरी, जो इस समय रोहतासगढ़ में क़ैद है, आपको मिल जायेगी, इसके अतिरिक्त एक और भी भारी काम आपके हाथ से हो लेगा, तब कहीं मेरी मुराद पूरी होगी अर्थात् उस समय मुझे जो कुछ आपसे माँगना होगा माँगूँगी । आप मेरी बात याद रखियेगा कि आपही के ऐयार मेरे दुश्मन होंगे और अन्त में झख मारके मुझही से दोस्ती के तौर पर उन्हें सलाह लेनी पड़ेगी । आप यह भी न समझिए कि मैं आज-ही-कल से आपकी तरफ़दार बनी हूँ; नहीं, बल्कि मैं महीनों से आपका काम कर रही हूँ और इस सबब से सैकड़ों आदमी मेरे दुश्मन हो रहे हैं । दुश्मनों ही के डर से मैं इस तालाब में छिपकर बैठी रहती हूँ, क्योंकि जिन्हें इसका भेद मालूम नहीं है, वे इस मकान के अन्दर पैर नहीं रख सकते । आप मुझे अकेली समझते होंगे, मगर मैं अकेली नहीं हूँ । लौंडी, सिपाही और ऐयार मिलाकर इस गयी गुज़री हालत में भी पचास आदमी मेरी तावेदारी कर रहे हैं ।

कुमार : वे लोग कहाँ हैं ?

कमलिनी : उनमें से कई आदमियों को तो आप इसी जगह बैठे देखेंगे, बाकी सभी को मैंने काम पर भेजा है । जब मैं आपकी ख़ैरख़्वाह हूँ तो किशोरी की मदद भी ज़रूर ही करनी पड़ेगी, इसलिए मेरी एक ऐयारा रोहतासगढ़ किले के अन्दर भी घुसकर बैठी है और किशोरी के हाल-चाल की ख़बर दिया करती है, अभी कल ही उसने एक चीठी भेजी थी, (कमर से चीठी निकालकर और कुमार के हाथ में देकर) लीजिए यही चीठी है, पहिले आप इसे पढ़ लीजिए फिर और कुछ कहूँगी ।

कुमार हाथ में चीठी लेकर ग़ौर से पढ़ने लगे । यह वही चीठी थी, जिस पर पहिले कुमार की निगाह पड़ चुकी थी और जिसे एक गुलदस्ते के नीचे से निकालकर कुमार पढ़ चुके थे । कुमार ने चोरी से उस चीठी को पढ़ने का हाल कमलिनी से कहना मुनासिब न समझा और उसे इस तौर पर पढ़ गये, जैसे पहली दफ़े वह चीठी उनके हाथ में पड़ी हो । परन्तु इस समय इस तरह कमलिनी के हाथ से इस चीठी को पाकर कुमार का ख़याल बिल्कुल बदल गया और कमलिनी उनकी दुश्मन नहीं है, इस बात को वे अच्छी तरह समझ गये, मगर साथ-ही-साथ उनके दिल में एक दूसरी ही तरह की उत्कण्ठा बढ़ गयी और वे यह जानने के लिए

व्याकुल हो गये कि कमलिनी और इसकी ऐयारा ने रोहतासगढ़ किले में पहुँचकर क्या किया !

पाठक, शायद आप इस चीठी का मज़मून भूल गये होंगे, मगर आप उसे याद करें या पुनः पढ़ जायँ, क्योंकि उसके एक-एक शब्द का मतलब इस समय कमलिनी से कुमार पूछना चाहते हैं ।

कुमार : मैं नहीं कह सकता और न मुझे मालूम ही है कि तुम इतनी भलाई मेरे साथ क्यों कर रही हो, तो भी मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम इस समय मुझे चिन्ता में डालकर दुःख न दोगी, बल्कि जो मैं पूछूँगा उसका ठीक-ठीक जवाब दोगी ।

कमलिनी : आप मेरी तरफ़ से किसी तरह का बुरा ख़याल न रक्खें । आज मैं इस बात पर मुस्तैद हूँ कि अगर आपको कष्ट न हो तो रात-भर जागके बहुत कुछ हाल जो अब तक आपको मालूम नहीं है और आपके मतलब का है, आपसे कहूँ और जो-जो सवाल आप करें, उसका जवाब दूँ ।

कुमार : मुझे तुम्हारे इस कहने से बड़ी खुशी हुई, अच्छा पहिले इस बात का जवाब दो कि तुम्हारी वह ऐयारा जो रोहतासगढ़ में है और इस चीठी के पढ़ने से जिसका नाम तारा मालूम होता है, रोहतासगढ़ में किस तौर पर है ? जहाँ तक मैं सोचता हूँ, वह भेष बदलकर नौकरी करती होगी ?

कमलिनी : नहीं, उसने नौकरी नहीं की, बल्कि वहाँ इस तौर पर छिपकर रहती है कि वहाँ के किसी आदमी को उसका पता लग जाना कठिन ही नहीं, बल्कि असम्भव है ।

कुमार : अच्छा तो उसने यह क्या लिखा है कि—'किशोरी का आशिक भी यहाँ मौजूद है !'

कमलिनी : यह कटाक्ष माधवी के दीवान अग्निदत्त पर है, क्योंकि हम लोगों के हिसाब से वह किशोरी पर आशिक है । सच्चा आशिक आपकी तरह नहीं है, मगर बेईमान ऐयारों की तरह पर ज़रूर आशिक है ।

कुमार : नहीं-नहीं, उसे तो हमारे आदमियों ने गिरफ़्तार करके चुनार भेज दिया है !

कमलिनी : आपका यह ख़याल गलत है । वह चुनार नहीं पहुँचा, न मालूम किस तरह उसने अपनी जान बचा ली है । इसका हाल आपको लश्कर में जाने या किसी को चुनारगढ़ भेजने से मालूम होगा ।

कुमार : तो क्या वह भी रोहतासगढ़ पहुँच गया ?

कमलिनी : पहुँच ही गया, तभी तो तारा ने लिखा है।

कुमार :-अच्छा तो ये लाली और कुन्दन कौन हैं ?

कमलिनी : आपकी और मेरी दुश्मन, इन दोनों को मामूली दुश्मन न समझियेगा।

कुमार : इसमें किशोरी के आशिक के बारे में लिखा है कि 'उसे किशोरी से बहुत कुछ उम्मीद भी है' – इसका मतलब क्या है ?

कमलिनी : सो ठीक अभी मालूम नहीं हुआ।

कुमार : यह जवाब तुमने बड़े खुटके का दिया।

कमलिनी : (हँसकर) आप चिन्ता न करें, किशोरी तन-मन-धन आपको समर्पण कर चुकी है, वह किसी दूसरे की न होगी।

कुमार : ख़ैर, जब खुलासा हाल मालूम ही नहीं है तो जोकुछ सोचा जाये मुनासिब है। इसमें लिखा है कि 'किशोरी ने भी पूरा धोखा खाया' —सो क्या ?

कमलिनी : इसका भी हाल अभी नहीं मालूम हुआ। शायद आजकल में कोई दूसरी चीठी आवेगी तो मालूम होगा, बल्कि और भी जोकुछ लिखा है, इशारा ही भर है, असल में क्या बात है, सो मैं नहीं कह सकती।

कुमार : अच्छा, अब मैं तुम्हारा पूरा हाल जानना चाहता हूँ और इसी के साथ रोहतासगढ़ में रहनेवाली लाली और कुन्दन का वृत्तान्त भी तुम्हारी ज़ुबानी सुनना चाहता था।

कमलिनी : मैं सब हाल आपसे कहूँगी और इसके अलावे एक ऐसे भेद की ख़बर भी आपको दूँगी कि आप खुश हो जायँगे, मगर इसके लिए आपको तीन-चार दिन और सब्र करना चाहिए, इसी बीच में तारा भी रोहतासगढ़ से आ जायेगी या मैं ख़ुद उसे बुलवा लूँगी।

कुमार : इन सब बातों को जानने के लिए मैं बहुत बेचैन हो रहा हूँ, कृपा करके जोकुछ तुम्हें कहना हो अभी कहो।

कमलिनी : नहीं-नहीं, आप जल्दी न करें, मेरा दो-चार दिन के लिए टालना भी आपही के फ़ायदे के लिए है। आप यह न समझें कि मैं आपको जान-बूझकर यहाँ अटकाया चाहती हूँ। आप यदि मुझ पर भरोसा रक्खें और मुझे अपना दुश्मन न समझें तो यहाँ रहें। मैं लौंडिया की तरह आपकी ताबेदारी करने को तैयार हूँ, और यदि मुझ पर ऐतबार न हो तो अपने लश्कर चले जायें, चार-पाँच दिन के बाद मैं स्वयं आपसे मिलकर सब हाल कहूँगी।

कुमार : बेशक मैं तुम्हारे बारे में तरह-तरह की बातें सोचता था

व्याकुल हो गये कि कमलिनी और इसकी ऐयारा ने रोहतासगढ़ किले में पहुँचकर क्या किया !

पाठक, शायद आप इस चीठी का मज़मून भूल गये होंगे, मगर आप उसे याद करें या पुनः पढ़ जायँ, क्योंकि उसके एक-एक शब्द का मतलब इस समय कमलिनी से कुमार पूछना चाहते हैं।

कुमार : मैं नहीं कह सकता और न मुझे मालूम ही है कि तुम इतनी भलाई मेरे साथ क्यों कर रही हो, तो भी मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम इस समय मुझे चिन्ता में डालकर दुःख न दोगी, बल्कि जो मैं पूछूँगा उसका ठीक-ठीक जवाब दोगी।

कमलिनी : आप मेरी तरफ़ से किसी तरह का बुरा ख़याल न रक्खें। आज मैं इस बात पर मुस्तैद हूँ कि अगर आपको कष्ट न हो तो रात-भर जागके बहुत कुछ हाल जो अब तक आपको मालूम नहीं है और आपके मतलब का है, आपसे कहूँ और जो-जो सवाल आप करें, उसका जवाब दूँ।

कुमार : मुझे तुम्हारे इस कहने से बड़ी खुशी हुई, अच्छा पहिले इस बात का जवाब दो कि तुम्हारी वह ऐयारा जो रोहतासगढ़ में है और इस चीठी के पढ़ने से जिसका नाम तारा मालूम होता है, रोहतासगढ़ में किस तौर पर है ? जहाँ तक मैं सोचता हूँ, वह भेष बदलकर नौकरी करती होगी ?

कमलिनी : नहीं, उसने नौकरी नहीं की, बल्कि वहाँ इस तौर पर छिपकर रहती है कि वहाँ के किसी आदमी को उसका पता लग जाना कठिन ही नहीं, बल्कि असम्भव है।

कुमार : अच्छा तो उसने यह क्या लिखा है कि—'किशोरी का आशिक भी यहाँ मौजूद है !'

कमलिनी : यह कटाक्ष माधवी के दीवान अग्निदत्त पर है, क्योंकि हम लोगों के हिसाब से वह किशोरी पर आशिक है। सच्चा आशिक आपकी तरह नहीं है, मगर बेईमान ऐयारों की तरह पर ज़रूर आशिक है।

कुमार : नहीं-नहीं, उसे तो हमारे आदमियों ने गिरफ़्तार करके चुनार भेज दिया है !

कमलिनी : आपका यह ख़याल गलत है। वह चुनार नहीं पहुँचा, न मालूम किस तरह उसने अपनी जान बचा ली है। इसका हाल आपको लश्कर में जाने या किसी को चुनारगढ़ भेजने से मालूम होगा।

कुमार : तो क्या वह भी रोहतासगढ़ पहुँच गया ?

कमलिनी : पहुँच ही गया, तभी तो तारा ने लिखा है।

कुमार : अच्छा तो ये लाली और कुन्दन कौन हैं ?

कमलिनी : आपकी और मेरी दुश्मन, इन दोनों को मामूली दुश्मन न समझियेगा।

कुमार : इसमें किशोरी के आशिक के बारे में लिखा है कि 'उसे किशोरी से बहुत कुछ उम्मीद भी है' – इसका मतलब क्या है ?

कमलिनी : सो ठीक अभी मालूम नहीं हुआ।

कुमार : यह जवाब तुमने बड़े खुटके का दिया।

कमलिनी : (हँसकर) आप चिन्ता न करें, किशोरी तन-मन-धन आपको समर्पण कर चुकी है, वह किसी दूसरे की न होगी।

कुमार : ख़ैर, जब खुलासा हाल मालूम ही नहीं है तो जोकुछ सोचा जाये मुनासिब है। इसमें लिखा है कि 'किशोरी ने भी पूरा धोखा खाया' —सो क्या ?

कमलिनी : इसका भी हाल अभी नहीं मालूम हुआ। शायद आजकल में कोई दूसरी चीठी आवेगी तो मालूम होगा, बल्कि और भी जोकुछ लिखा है, इशारा ही भर है, असल में क्या बात है, सो मैं नहीं कह सकती।

कुमार : अच्छा, अब मैं तुम्हारा पूरा हाल जानना चाहता हूँ और इसी के साथ रोहतासगढ़ में रहनेवाली लाली और कुन्दन का वृत्तान्त भी तुम्हारी ज़ुबानी सुनना चाहता था।

कमलिनी : मैं सब हाल आपसे कहूँगी और इसके अलावे एक ऐसे भेद की ख़बर भी आपको दूँगी कि आप खुश हो जायँगे, मगर इसके लिए आपको तीन-चार दिन और सब्र करना चाहिए, इसी बीच में तारा भी रोहतासगढ़ से आ जायेगी या मैं ख़ुद उसे बुलवा लूंगी।

कुमार : इन सब बातों को जानने के लिए मैं बहुत बेचैन हो रहा हूँ, कृपा करके जोकुछ तुम्हें कहना हो अभी कहो।

कमलिनी : नहीं-नहीं, आप जल्दी न करें, मेरा दो-चार दिन के लिए टालना भी आपही के फ़ायदे के लिए है। आप यह न समझें कि मैं आपको जान-बूझकर यहाँ अटकाया चाहती हूँ। आप यदि मुझ पर भरोसा रक्खें और मुझे अपना दुश्मन न समझें तो यहाँ रहें। मैं लौंडिया की तरह आपकी ताबेदारी करने को तैयार हूँ, और यदि मुझ पर ऐतबार न हो तो अपने लश्कर चले जायें, चार-पाँच दिन के बाद मैं स्वयं आपसे मिलकर सब हाल कहूँगी।

कुमार : बेशक मैं तुम्हारे बारे में तरह-तरह की बातें सोचता था

और तुम पर विश्वास करना मुनासिब नहीं समझता था, मगर अब तुम्हारी तरफ़ से मुझे किसी तरह का खुटका नहीं है। तुम्हारी बातों का मेरे दिल पर बड़ा ही असर हुआ। इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम सिवाय भलाई के मेरे साथ बुराई कभी न करोगी। मैं ज़रूर यहाँ रहूँगा और जब तक अपने दिल का शक अच्छी तरह न मिटा लूँगा, न जाऊँगा।

कमलिनी : अहोभाग्य ! (हँसकर) मगर ताज्जुब नहीं कि इसी बीच में आपके ऐयार लोग यहाँ पहुँचकर मुझे गिरफ़्तार कर लें !

कुमार : क्या मजाल !

तीसरा बयान

कुमार कई दिनों तक कमलिनी के यहाँ मेहमान रहे, जिसने बड़ी ख़ातिरदारी और नेकनीयती के साथ इन्हें रक्खा। इस मकान में कई लौंडियाँ भी थीं, जो दिलोजान से कुमार की खिदमत किया करती थीं, मगर कभी-कभी वे सब दो-दो पहर के लिए न मालूम कहाँ चली जाया करती थीं।

एक दिन शाम के वक्त उस मकान की छत पर कमलिनी और कुमार बैठे बातें कर रहे थे, इसी बीच में कुमार ने पूछा—

कुमार : कमलिनी, अगर किसी तरह का हर्ज न हो तो इस मकान के बारे में कुछ कहो। इन पुतलियों की तरफ़ जो इस मकान के चारों कोनों में तथा इस छत के बीचोंबीच में हैं, जब मेरी निगाह पड़ती है तो ताज्जुब से अजब हालत हो जाती है।

कमलिनी : बेशक, इन्हें देख आप ताज्जुब करते होंगे। यह मकान एक तरह का छोटा-सा तिलिस्म है जो इस समय बिल्कुल मेरे आधीन है, मगर यहाँ का हाल बिना मेरे कहे थोड़े ही दिनों में आपको पूरा-पूरा मालूम हो जायेगा।

कुमार : उन दोनों औरतों के साथ जो माधवी की लौंडियाँ थीं, तुमने क्या सलूक किया ?

कमलिनी : अभी तो वे दोनों क़ैद हैं।

कुमार : माधवी का भी कुछ हाल मालूम हुआ है ?

कमलिनी : उसे आपके लश्कर और रोहतासगढ़ के चारों तरफ़ घूमते कई दफ़े मेरे आदमियों ने देखा है। जहाँ तक मैं समझती हूँ, वह इस धुन में लगी है कि किसी तरह आप दोनों भाई और किशोरी उसके हाथ लगें और वह अपना बदला ले।

कुमार : अभी तक रोहतासगढ़ का कुछ हाल नहीं मालूम हुआ, न लश्कर का कोई समाचार मिला।

कमलिनी : मुझे भी इस बात का ताज्जुब है कि मेरे आदमी किस काम में फँसे हुए हैं, क्योंकि अभी तक एक ने भी लौटकर ख़बर न दी। (चौंककर और मैदान की तरफ़ देखके) मालूम होता है, इस समय कोई नया समाचार मिलेगा। मैदान की तरफ़ देखिए, दो आदमी एक बोझ लिये इसी तरफ़ आते दिखायी दे रहे हैं, ताज्जुब नहीं कि ये मेरे ही आदमियों में से हों।

कुमार : (मैदान की तरफ़ देखकर) हाँ ठीक है, इसी तरफ़ आ रहे हैं, उस गट्ठर में शायद कोई आदमी है।

कमलिनी : बेशक ऐसा ही है, (हँसकर) नहीं तो क्या मेरे आदमी माल असबाब चुराकर लावेंगे! देखिए वे दोनों कितनी तेज़ी के साथ आ रहे हैं। (कुछ अटककर) अब मैंने पहिचाना, बेशक इस गठरी में माधवी होगी।

थोड़ी देर तक दोनों आदमी चुपचाप उसी तरफ़ देखते रहे, जब वे लोग इस मकान के पास पहुँचे तो कमलिनी ने कुमार से कहा—

कमलिनी : मुझे आज्ञा दीजिये तो जाकर इन लोगों को यहाँ लाऊँ।

कुमार : क्या बिना तुम्हारे गये वे लोग यहाँ नहीं आ सकते?

कमलिनी : जी नहीं, जब तक मैं ख़ुद उन्हें किश्ती पर चढ़ाकर यहाँ न लाऊँ, वे लोग नहीं आ सकते; वे क्या कोई भी नहीं आ सकता।

कुमार : क्या हरएक के लिए, जब वह इस मकान में आना या जाना चाहे तो तुम्हीं को तकलीफ़ करनी पड़ती है? मैं समझता हूँ कि जिस आदमी को तुम एक दफ़े भी किश्ती पर चढ़ाकर ले जाओगी, उसे रास्ता मालूम हो जायेगा।

कमलिनी : अगर ऐसा ही होता तो इस मकान में बेखटके क्योंकर रह सकती थी। आप ज़रा नीचे चलें, मैं इसका सबब आपको बतला देती हूँ।

कुमार खुशी-खुशी उठ खड़े हुए और कमलिनी के साथ नीचे उतर गये। कमलिनी उन्हें उस कोठरी में ले गयी, जो नहाने के काम में लायी जाती थी और जिसे कुमार देख चुके थे। उस कोठरी में दीवार के साथ एक आलमारी थी, जिसे कमलिनी ने खोला। कुमार ने देखा कि उस दीवार के साथ चाँदी का एक मुट्ठा, जो हाथभर से छोटा न होगा, लगा हुआ है। इसके सिवाय और कोई चीज़ उसमें नहीं थी।

कमलिनी : मैं पहिले ही आपसे कह चुकी हूँ कि इस तालाब में चारों ओर लोहे का जाल पड़ा हुआ है।

कुमार : हाँ, ठीक है, मगर उस रास्ते में जाल न होगा, जिधर से तुम किश्ती लेकर आती-जाती हो।

कमलिनी : ऐसा ख्याल न कीजिए, उस रास्ते में भी जाल है, मगर उसे यहाँ आने का दरवाज़ा कहना चाहिए, जिसकी ताली यह है। देखिए अब आप अच्छी तरह समझ जायेंगे। (उस चाँदी के मुट्ठे को कई दफ़े घुमाकर) अब उतनी दूर का या उस रास्ते का जाल, जिधर से किश्ती लेकर मैं आती-जाती हूँ, हट गया, मानों दरवाजा खुल गया, अब मैं क्या कोई भी जिसको आने-जाने का रास्ता मालूम है किश्ती पर चढ़के आ-जा सकता है। जब मैं इसको उल्टा घुमाऊँगी तो वह रास्ता बन्द हो जायेगा अर्थात् वहाँ भी जाल फैल जायेगा, फिर किश्ती आ नहीं सकती।

कुमार : (हँसकर) बेशक यह एक अच्छी बात है।

इसके बाद कमलिनी किश्ती पर सवार होकर तालाब के बाहर गयी और उन दोनों आदमियों को गठरी सहित सवार कराके मकान में ले आयी तथा तालाब में आने का रास्ता उसी रीति से जैसे कि हम ऊपर लिख चुके हैं, बन्द कर दिया। इस समय यहाँ कई लौंडियाँ भी मौजूद थीं, उन्होंने कमलिनी के इशारे से छत के ऊपर रोशनी का बन्दोबस्त कर दिया और सबकोई छत के ऊपर चले गये। कुमार के पास ही कमलिनी गालीचे पर बैठ गयी और वे दोनों आदमी भी गठरी सामने रखकर बैठ गये। इस छत की ज़मीन चिकने पत्थर की बहुत साफ़-सुथरी बनी हुई थी, अगर नज़ाकत की तरफ़ ख्याल न किया जाये तो फ़र्श या बिछावन बिछाकर वहाँ बैठने की कोई ज़रूरत न थी।

कमलिनी : कुमार देखिए, इन दोनों आदमियों को मैंने माधवी को गिरफ़्तार करने को भेजा था, मालूम होता है कि ये लोग अपना काम पूरा कर आये हैं और इस गठरी में शायद माधवी ही को लाये हैं। (दोनों आदमियों की तरफ़ देखकर) क्योंजी, माधवी ही है या किसी दूसरे को लाये हो ?

एक : जी माधवी को ही लाये हैं।

कमलिनी : गठरी खोलो, ज़रा इसकी सूरत देखूँ।

उन दोनों ने गठरी खोली, कमलिनी और कुमार ने बड़े चाव से माधवी की सूरत देखी, परन्तु यकायक कमलिनी चौंकी और बोली, "क्या यह ज़ख्मी है ?"

एक : जी हाँ, मुझे उम्मीद नहीं कि इसकी जान बचेगी क्योंकि चोट भारी खायी है।

कुमार : इसे किसने ज़ख्मी किया है ?

एक : किसी औरत ने रोहतासगढ़ के तिलिस्मी तहख़ाने में इसे चोट पहुंचायी है।

कुमार : (कमलिनी की तरफ़ देखकर) क्या रोहतासगढ़ म कोई तिलिस्मी तहख़ाना भी है ?

कमलिनी : जी हाँ, पर उसका भेद बहुत आदमियों को मालूम नहीं है, बल्कि जहाँ तक मैं समझती हूँ वहाँ का राजा दिग्विजयसिंह भी पूरा-पूरा हाल न जानता होगा। वहाँ का मामला भी बड़ा ही विचित्र है, किसी समय मैं आपसे उसका हाल कहूँगी।

एक : मगर अब उस तहखाने की रंगत बदल गयी।

कमलिनी : सो क्या ?

एक : (कुमार की तरफ़ इशारा करके) आपके ऐयारों ने उसमें अपना दखल कर लिया, बल्कि ऐसा कहना चाहिए कि रोहतासगढ़ ही ले लिया।

कमलिनी : (कुमार की तरफ़ देखकर) मुबारक हो, ख़बर अच्छी आयी है।

कुमार : बेशक, इस ख़बर ने मुझे खुश कर दिया। ईश्वर करे, तुम्हारी तारा भी जल्द आ जाये और किशोरी का कुछ हाल मालूम हो। (माधवी को ग़ौर से देख और चौंककर) यह क्या ? माधवी की दाहिनी कलाई दिखायी नहीं देती !

कमलिनी (हँसकर) इसका हाल आपको नहीं मालूम ?

कुमार : कुछ नहीं।

कमलिनी : पूरा हाल तो मुझे भी नहीं मालूम, मगर इतना सुना है कि कहीं गयाजी में इससे और इसके दीवान अग्निदत्त की लड़की कामिनी से लड़ाई हो गयी थी। उसी लड़ाई में यह अपनी दाहिनी कलाई खो बैठी। यह भी सुनने में आया है कि यह लड़ाई उसी मकान में हुई थी, जिसमें आप लोग रहते थे और इसमें कमला भी शामिल थी।

कमलिनी की यह बात सुनकर कुमार को वे ताज्जुब की बातें याद आ गयीं, जो बीमारी की हालत में गयाजी में महल के अन्दर कई दफ़े रात के समय देखने में आयी थीं और जबकि अन्त में कोठरी के अन्दर एक लाश और औरत की कलाई पायी गयी थी।

कुमार : हाँ अब याद आया, वह मामला भी बड़ा ही विचित्र हुआ था, अभी तक उसका ठीक-ठीक पता न लगा।

कमलिनी : क्या हुआ था, ज़रा मैं भी सुनूं ?

कुमार ने वह सब हाल कहा और जोकुछ देखने और सुनने में आया था, वह भी बताया।

कमलिनी : कमला से मुलाकात हो तो कुछ और सुनने में आवे (दोनों आदमियों की तरफ़ देखकर) पहिले माधवी को यहाँ से ले जाओ, लौंडियों के हवाले करो और कह दो इसे क़ैदखाने में रक्खें और होश में लाकर इसका इलाज करें, इसके बाद आओ तो तुम्हारी ज़ुबानी वहाँ का सब हाल सुनें। शाबाश, तुम लोगों ने बेशक अपना काम पूरा किया, जिससे मैं बहुत ही ख़ुश हूँ !

"बहुत अच्छा" कहकर दोनों आदमी माधवी को वहाँ से उठाकर नीचे ले गये और इधर कमलिनी और कुमार में बातचीत होने लगी।

कमलिनी : (मुस्कुराकर) लीजिए आपकी मुराद पूरी हुआ चाहती है, पहले-पहिल यह खुशख़बरी मेरे ही सबब से आपको मिली है, सबसे भारी इनाम मुझीको मिलना चाहिए।

कुमार : बेशक, ऐसी ही बात है, मेरे पास कोई ऐसी चीज़ तो नहीं है, जो तुम्हारी नज़र के लायक हो, ख़ैर, इसके बदले में मैं ख़ुद अपने को तुम्हारे हाथ में देता हूँ।

कमलिनी : वाह, क्या ख़ूब !

कुमार : सो क्यों ?

कमलिनी : आपको अपने बदन पर अख्तियार ही क्या है, यह तो किशोरी की मिलकियत है !

कुमार लाजवाब हो गये और हँसकर चुप हो रहे। कमलिनी बड़ी ही ख़ूबसूरत थी, इसके साथ-ही-साथ उसकी अच्छी चाल-चलन, मुरौवत, अहसान और नेकियों ने कुमार को अपना ताबेदार बना लिया था। उसकी एक-एक बात पर कुमार प्रसन्न होते और दिल में बराबर उसकी तारीफ़ करते थे।

कुमार : कमलिनी, मैं तुमसे एक बात पूछता हूँ मगर ईश्वर के लिए सच-सच जवाब देना, बात बनाकर टालने की सही नहीं।

कमलिनी : कहिए तो सही क्या बात है ? रंग, बेढंग मालूम होता है !

कुमार : अगर सच जवाब देने का वादा करो तो पूछूँ नहीं तो व्यर्थ मुंह क्यों दुखाऊँ !

कमलिनी : आपकी नज़ाकत तो औरतों से भी बढ़ गयी, ज़रा-सी बात कहने में मुँह दुखा जाता है, दम फूलने लगता है। ख़ैर, पूछिए, मैं वादा करती हूँ कि सच्चा जवाब दूंगी, अगर कहिए तो कागज़ पर लिख दूं !

कुमार : (मुस्कुराकर) यह तो तुम वादा कर चुकी हो कि अपना हाल

पूरा-पूरा मुझसे कहोगी, मगर इस समय मैं तुमसे केवल इतना ही पूछता हूँ कि तुम्हारा कोई वली, वारिस भी है या नहीं ! तुम्हारे व्यवहार से स्वतन्त्रता मालूम होती है और यह भी जाना जाता है कि तुम कुँआरी हो ।

कमलिनी : यह सवाल, जवाब देने योग्य नहीं है, (मुस्कुराकर) परन्तु क्या किया जाय, वादा करके चुप रहना भी मुनासिब नहीं । वास्तव में मैं स्वतन्त्र हूँ। कुँआरी तो हूँ परन्तु शीघ्र ही मेरी शादी होनेवाली है ।

कुमार : कब और कहाँ ?

कमलिनी : यह दूसरा सवाल है, इसका सच्चा जवाब देने के लिए मैंने वादा नहीं किया है, इसलिए आप इसका उत्तर न पा सकेंगे ।

कुमार : अगर इसका भी जवाब दो तो क्या कोई हर्ज है ?

कमलिनी : हाँ हर्ज है, बल्कि नुकसान है ।

कुमार चुप हो रहे और ज़िद करना मुनासिब न जाना, मगर यह सुनकर कि 'शीघ्र ही मेरी शादी होनेवाली है', कुमार को कुछ रंज हुआ । क्यों रंज हुआ ? इसमें कुमार की हानि ही क्या थी ? क्या कुछ दूसरा इरादा था ? नहीं-नहीं, कुमार यह नहीं चाहते थे कि हम ही इससे शादी करें, वे किशोरी के सच्चे प्रेमी थे, मगर ख़बसूरती के अतिरिक्त कमलिनी के अहसानों ने कुमार को तावेदार बना लिया था और अभी उन्हें कमलिनी से बहुतकुछ उम्मीद थी तथा यह भी सोचते थे कि ऐसी तरकीब निकल आवे, जिससे इस अहसान का बदला चुक जाय, मगर इन बातों से कुमार के रंज होने का मतलब नहीं खुला । ख़ैर, जो हो पहिले यह तो मालूम हो कि कमलिनी है कौन !

वे दोनों आदमी भी छत पर आ पहुँचे जो माधवी को लाये थे, हाथ जोड़कर सामने बैठ गये । कमलिनी ने उनसे खुलासा हाल कहने के लिए कहा और उन दोनों में से एक ने इस तरह कहना शुरू किया—

"हम दोनों हुक्म के मुताबिक यहाँ से जाकर माधवी को खोजने लगे मगर उसका पता गयाजी और राजगृही के इलाकों में कहीं न लगा । लाचार होकर रोहतासगढ़ किले के पास पहुँचे और पहाड़ी के चारों तरफ़ घूमने लगे । कभी-कभी रोहतासगढ़ की पहाड़ी के ऊपर भी जाते और घूम-घूमकर पता लगाते कि वहाँ क्या हो रहा है । एक दिन रोहतासगढ़ पहाड़ी के ऊपर घूमते-फिरते यकायक हम दोनों एक खोह के मुहाने पर जा पहुँचे और वहाँ कई आदमियों के धीरे-धीरे बातचीत करने की आवाज़ सुनकर एक झाड़ी में जहाँ से उन लोगों की आवाज़ साफ़ सुनायी देती थी, छिप रहे । अन्दाज़ से यह मालूम हुआ कि वे लोग कई आदमी हैं और उन्हीं के साथ एक औरत भी है । नीचे लिखी बातें हम

लोगों ने सुनीं।"

एक : न मालूम हम लोगों को कब तक यहाँ अटकना और राह देखना पड़ेगा !

दूसरा : अब हम लोगों को यहाँ ज़्यादे दिन न रहना पड़ेगा, या तो काम हो जायेगा या खाली ही लौटकर चले जाने की नौबत आवेगी।

तीसरा : रंग तो ऐसा ही नज़र आता है, भाई जो हो, हमें तो यही विश्वास होता है कि बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग तहख़ाने में घुस गये क्योंकि पहले कभी एक आदमी भी तहखाने में आता-जाता दिखायी नहीं देता था, बल्कि मैं तो यहाँ तक कह सकता हूँ कि कल उस क़ब्रिस्तान में हम लोगों ने जिसे देखा था, वह कोई ऐयार ही था।

चौथा : ख़ैर, और दो-तीन दिन में मालूम हो जायेगा।

औरत : तुम लोगों का काम चाहे जब हो, मगर मेरा काम तो आज हुआ ही चाहता है। माधवी और तिलोत्तमा को मैंने खूब ही धोखा दिया है। आज उसी कब्रिस्तान की राह से मैं उन दोनों को तहखाने में ले जाऊँगी।

एक : अब तुम्हें वहाँ जाना चाहिए, शायद माधवी वहाँ पहुँच गयी हो !

औरत : हाँ अब जाती हूँ पर अभी समय नहीं हुआ।

दूसरा : दम-भर पहिले ही पहुँचना अच्छा है।

यह बातें सुनकर मैं उन लोगों को पहिचान गया, रामू वग़ैरह धनपतिजी के सिपाही लोग और औरत चमेला थी।

इतना सुनते ही कमलिनी ने रोका और पूछा, "जिस खोह के मुहाने पर वे लोग बैठे थे, वहाँ कोई सलई का पेड़ भी है ?"

इसके जवाब में उन दोनों ने कहा, "हाँ हाँ, दो पेड़ सलई के वहाँ थे, पर उनके सिवाय और दूर-दूर तक कहीं सलई का पेड़ दिखायी नहीं दिया।"

कमलिनी : बस मैं समझ गयी, वह खोह का मुहाना भी तहख़ाने से निकलने का एक रास्ता है, शायद धनपति ने अपने आदमियों को कह रक्खा होगा कि मैं किशोरी को लिये हुए इसी राह से निकलूंगी, तुम लोग मुस्तैद रहना. इसी से वे लोग वहाँ बैठे थे।

एक : शायद ऐसा ही हो।

कुमार : धनपति कौन है ?

कमलिनी : उसे आप नहीं जानते, ठहरिए, इन लोगों का हाल सुन लूं तो कहूँगी। (उन दोनों की तरफ़ देखकर) हाँ तब क्या हुआ ?

उसने फिर यों कहना शुरू किया :—

"थोड़ी ही देर में चमेला वहाँ से उठी और एक तरफ़ को रवाना हुई, हम दोनों भी उसके पीछे-पीछे चले और सुबह की सुफ़ेदी निकलना ही चाहती थी कि उस क़ब्रिस्तान के पास पहुँच गये जो तहखाने में जाने का दरवाज़ा है। हम दोनों एक आड़ की जगह में छिप रहे और तमाशा देखने लगे, उसी समय माधवी और तिलोत्तमा भी वहाँ आ पहुँचीं। तीनों में धीरे-धीरे कुछ बातें होने लगीं, जिसे दूर होने के सबब मैं बिल्कुल न सुन सका, आख़िर वे तीनों तहख़ाने में घुस गयीं और पहरों गुज़र जाने पर भी बाहर न निकलीं, हम दोनों यह निश्चय कर चुके थे कि जब तक वे तहख़ाने से न निकलेंगी, यहाँ से न टलेंगे। सवेरा हो गया बल्कि धीरे-धीरे तीन पहर दिन बीत गया। आख़िर हम दोनों तहख़ाने में घुसने के इरादे से क़ब्रिस्तान में गये। वहाँ पहुँचकर हमारे साथी ने कहा, "आख़िर हम लोग दिन-भर परेशान हो ही चुके हैं, अब शाम हो लेने दो तो तह-खाने में चलें।" मैंने भी यही मुनासिब समझा और हम दोनों आदमी वहाँ से लौटा ही चाहते थे कि तहख़ाने का दरवाज़ा खुला और चमेला दिखायी पड़ी, हम दोनों को भी चमेला ने देखा और पहिचाना, मगर उसको ठहरने या कुछ कहने का साहस न हुआ। वह कुछ परेशान मालूम होती थी और खून से भरा हुआ एक छुरा उसके हाथ में था। हम दोनों ने भी उसको कुछ टोकना मुनासिब न समझा और यह विचार कर कि शायद कोई और भी इस तहख़ाने से निकले, एक क़ब्र की आड़ में छिपकर बिचली क़ब्र अर्थात् तहख़ाने के दरवाज़े की तरफ़ देखने लगे। चमेला हम लोगों के देखते-देखते भाग गयी और थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा।

"थोड़ी देर बाद हम लोगों ने दूर से राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार पंडित बद्रीनाथ को आते देखा। वह तहख़ाने के दरवाज़े पर पहुँचे ही थे कि अन्दर से तिलोत्तमा निकली और पण्डित बद्रीनाथ ने उसे गिरफ़्तार कर लिया। इसके बाद ही एक बूढ़ा आदमी तहख़ाने से निकला और पण्डित बद्रीनाथ से बातें करने लगा। हम लोगों को कुछ-कुछ वे बातें सुनायी देती थीं। इतना मालूम हो गया कि तहख़ाने के अन्दर खून हुआ है और इन दोनों ने तिलोत्तमा को दोषी ठहराया है, मगर हम लोगों ने खून से भरा हुआ छुरा हाथ में लिये चमेला को देखा था, इसलिए विश्वास था कि अगर तहखाने में कोई खून हुआ है तो ज़रूर चमेला के ही हाथ से हुआ, तिलोत्तमा निर्दोष है।

"पण्डित बद्रीनाथ और वह बूढ़ा आदमी तिलोत्तमा को लेकर फिर तहख़ाने में घुस गये। हम लोगों ने भी वहाँ अटकना मुनासिब न समझा

और थोड़ी ही देर बाद हम लोग भी तहख़ाने में घुस गये तथा तहख़ाने की पचासों कोठरियों में घूमने और देखने लगे कि कहाँ क्या होता है। बद्रीनाथ थोड़ी ही देर बार तहख़ाने के बाहर निकल गये और हम लोगों ने तिलोत्तमा को एक खम्भे के साथ बँधे हुए पाया। हम्मामवाली कोठरी में माधवी को पड़े हुए पाकर, हम लोग बड़े खुश हुए और उसे उठाकर ले भागे, फिर न मालूम पीछे क्या हुआ और किस पर क्या गुज़री।"*

कमलिनी : ताज्जुब नहीं कि वहाँ के दस्तूर के मुताबिक तिलोत्तमा बलि दे दी गयी हो!

एक : जो हो।

इतने ही में नीचे से एक लौंडी दौड़ी हुई आयी और हाथ जोड़कर कमलिनी से बोली, "तारा आ गयी, तालाब के बाहर खड़ी है!"

तारा के आने की ख़बर सुनकर कमलिनी बहुत खुश हुई और खुशी के मारे कुँअर इन्द्रजीतसिंह की घबराहट का तो ठिकाना ही न रहा क्योंकि तारा ही की ज़ुबानी रोहतासगढ़ का हाल और बेचारी किशोरी की ख़बर सुननेवाले थे और इसी के बाद कमलिनी का असल भेद उन्हें मालूम होने को था।

कमलिनी : (कुमार की तरफ़ देखकर) जिस तरह इन दोनों आदमियों को मैं तालाब के बाहर से लायी हूँ, उसी तरह तारा को भी लाना पड़ेगा।

कुमार : हाँ हाँ, उसे बहुत जल्द लाओ, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।

कमलिनी : आप क्यों तकलीफ़ करते हैं। बैठिए, मैं उसे अभी लाती हूँ। (दोनों आदमियों की तरफ़ देखकर) चलो तुम दोनों को भी तालाब के बाहर पहुँचा दूँ।

लाचार कुमार उसी जगह बैठे रहे। उन दोनों आदमियों को साथ लेकर कमलिनी वहाँ से चली गयी तथा थोड़ी देर में तारा को लेकर आ पहुँची। कुँअर इन्द्रजीतसिंह को देखकर तारा चौंकी और बोली—

तारा : क्या कुमार यहाँ विराज रहे हैं!

कमलिनी : हाँ, कई दिनों से यहाँ हैं और तुम्हारी राह देख रहे हैं।

---

* यहाँ पर तो पाठक समझ ही गये होंगे कि तहख़ाने में बड़ी मूरत के सामने जो औरत बलि दी गयी थी, वह माधवी की ऐयारा तिलोत्तमा थी और माधवी की लाश को ले भागनेवाले ये ही दोनों कमलिनी के नौकर थे।

तुम्हारी ज़ुबानी रोहतासगढ़ और किशोरी तथा लाली और कुन्दन का असल भेद और हाल सुनने के लिए बड़े बेचैन हो रहे हैं। आओ मेरे पास बैठ जाओ और कहो क्या हाल है?

तारा : (ऊँची साँस लेकर) अफ़सोस, मैं इस समय बठ नहीं सकती और न कुछ वहाँ का हाल ही कह सकती हूँ, क्योंकि हम लोगों का यह समय बड़ा ही अमूल्य है। कुमार को यहाँ देख मैं बहुत खुश हुई, अब वह काम बखूबी निकल जायगा! (कुमार की तरफ़ देखकर) बेचारी किशोरी इस समय बड़े ही संकट में पड़ी हुई हैं। अगर आप उनकी जान बचाना चाहते हैं तो इस समय मुझसे कुछ न पूछिए, बस तुरत उठ खड़े होइए और जहाँ मैं चलती हूँ चले चलिए, हाँ, यदि बन पड़ा तो रास्ते में मैं वहाँ का हाल आपसे कहूँगी। (कमलिनी की तरफ़ देखकर) आप भी चलिए और कुछ आदमी अपने साथ लेती चलिए मगर सब कोई घोड़े पर सवार और लड़ाई के सामान से दुरुस्त रहें।

कमलिनी : ऐसा ही होगा।

कुमार : (खड़े होकर) मैं तैयार हूँ।

तीनों आदमी छत के नीचे उतरे और तारा के कहे मुताबिक़ कार्रवाई की गयी।

सुबह की सुफ़ेदी आसमान पर निकलना ही चाहती है। आओ देखो, हमारा बहादुर नौजवान कुँअर इन्द्रजीतसिंह किस ठाठ से मुश्की घोड़े पर सवार मैदान की तरफ़ घोड़ा फेंके चला जा रहा है और उसकी पेटी से लटकती हुई जड़ाऊ नयाम (म्यान) की तलवार किस तरह उछल-उछलकर घोड़े के पेट में थपकियाँ मार रही है, मानो उसकी चाल की तेज़ी पर शाबाशी दे रही है। कुमार के आगे-आगे घोड़े पर सवार तारा जा रही है, कुमार के पीछे सब्ज़ घोड़े पर कमलिनी सवार है और घोड़े की तेज़ी को बढ़ाकर कुमार के बराबर हुआ चाहती है। उसके पीछे दस दिलावर और बहादुर सवार घोड़ा फेंके चले जा रहे हैं और इस जंगली मैदान के सन्नाटे को घोड़ों के टापों की आवाज़ से तोड़ रहे हैं।

चौथा बयान

हम ऊपर लिख आये हैं कि देवीसिंह को साथ लेकर शेरसिंह कुँअर इन्द्रजीतसिंह को छुड़ाने के लिए रोहतासगढ़ से रवाना हुए। शेरसिंह इस बात को तो जानते थे कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह फ़लानी जगह हैं परन्तु उन्हें तालाब के गुप्त भेदों की कुछ भी ख़बर न थी। राह में आपुस में बातचीत

होने लगी।

देवी : लाली का भेद कुछ मालूम न हुआ।

शेर : अफ़सोस, उसके और कुन्दन के बारे में मुझसे बड़ी भारी भूल हुई, ऐसा धोखा खाया कि शर्म के मारे कुछ कह नहीं सकता।

देवी : इसमें शर्म की क्या बात है, ऐसा कोई ऐयार दुनिया में न होगा, जिसने कभी धोखा न खाया हो, हम लोग कभी धोखा देते हैं, कभी स्वयं धोखे में आ जाते हैं, फिर इसका अफ़सोस कहाँ तक किया जाय !

शेर : आपका कहना बहुत ठीक है, खैर, इस बारे में मैंने जोकुछ मालूम किया है, उसे कहता हूँ ! यद्यपि थोड़े दिनों तक मैंने रोहतासगढ़ से अपना सम्बन्ध छोड़ दिया था तथापि मैं कभी-कभी वहाँ जाया करता और गुप्त राहों से महल के अन्दर जाकर, वहाँ की ख़बर भी लिया करता था। जब किशोरी वहाँ फँस गयी तो अपनी भतीजी कमला के कहने से मैं वहाँ दूसरे-तीसरे बराबर जाने लगा। लाली और कुन्दन को मैंने महल में देखा, यह न मालूम हुआ कि ये दोनों कौन हैं। बहुतकुछ पता लगाया मगर कुछ काम न चला, परन्तु कुन्दन के चेहरे पर जब मैं ग़ौर करता तो मुझे शक होता कि वह सरला है।

देवी : सरला कौन ?

शेर : वही सरला जिसे तुम्हारी चम्पा ने चेली बनाकर रक्खा था और जो उस समय चम्पा के साथ थी, जब उसने एक खोह के अन्दर माधवी के ऐयार की लाश काटी थी।

देवी : हाँ, वह छोकरी, मुझे अब याद आया, मालूम नहीं कि आज-कल वह कहाँ है। खैर, तब क्या हुआ ? तुमने समझा कि वह सरला है मगर उस खोह का और लाश काटने का हाल तुम्हें कैसे मालूम हुआ !

शेर : वह हाल स्वयं सरला ने कहा था, वह मेरे आपुसवालों में से है, इत्तिफाक से एक दिन मुझसे मिलने के लिए रोहतासगढ़ आयी थी, तब सब हाल मैंने सुना था, मगर मुझे यह नहीं मालूम कि आजकल कहाँ है।

देवी : अच्छा तब क्या हुआ ?

शेर : एक दिन यही भेद खोलने की नीयत से मैं रात के समय रोहतासगढ़ महल के अन्दर गया और छिपकर सरला के सामने जाकर बोला, "मैं पहिचान गया कि तू सरला है, फिर तू अपना भेद मुझसे क्यों छिपाती है ?" इसके जवाब में कुन्दन ने पूछा, "तुम कौन हो ?"

मैं : शेरसिंह।

सरला : मुझे जब तक निश्चय न हो कि तुम शेरसिंह ही हो मैं अपना भेद कैसे कहूँ ?

मैं : क्या तू मुझे नहीं पहिचानती ?

सरला : क्या जाने कोई ऐयार सूरत बदलके आया हो, अगर तुम पहिचान गये कि मैं सरला हूँ तो कोई ऐसी छिपी हुई बात कहो, जो मैंने तुमसे कही हो।

इसके जवाब में मैं वही खोहवाला अर्थात् लाश काटनेवाला किस्सा कह गया और अन्त में मैं बोला कि यह हाल स्वयं तूने मुझसे बयान किया था।

उस किस्से को सुनकर कुन्दन हँसी और बोली, "हाँ, अब मैं समझ गयी। मैं चम्पा के हुक्म से यहाँ का हाल-चाल लेने आयी थी और अब किशोरी को छुड़ाने की फिक्र हूँ, मगर लाली मेरे काम में बाधा डालती है, कोई ऐसी तरकीब बताइए जिसमें लाली मुझसे दबे और डरे !"

मैं उस समय यह कहकर वहाँ से चला आया कि अच्छा सोचकर इसका जवाब दूंगा।

देवी : तब क्या हुआ ?

शेर : मैं वहाँ से रवाना हुआ और पहाड़ी के नीचे उतरते समय एक विचित्र बात मेरे देखने और सुनने में आयी।

देवी : वह क्या।

शेर : जब मैं अँधेरी रात में पहाड़ी के नीचे उतर रहा था तो जंगल में मालूम हुआ कि दो-तीन आदमी जो पगडण्डी के पास ही हैं, आपुस में बातें कर रहे हैं। मैं पैर दबाता हुआ उनके पास गया और छिपकर बातें सुनने लगा, मगर उस समय उनकी बातें समाप्त हो चुकी थीं, केवल एक आख़िरी बात सुनने में आयी।

देवी : फिर क्या हुआ ?

शेर : एक ने कहा—'भरसक तो लाली और कुन्दन दोनों उन्हीं में से हैं, नहीं तो लाली तो ज़रूर इन्द्रजीतसिंह की दुश्मन है ! मगर इसकी पहिचान तो सहज ही में हो सकती है। केवल 'किसी के खून से लिखी हुई किताब' और 'आँचल पर गुलामी की दस्तावेज़' इन दोनों जुमलों से अगर वह डर जाये तो हम समझ जायेंगे कि बीरेन्द्रसिंह की दुश्मन है। ख़ैर, बूझा जायेगा, पहिले महल में जाने का मौक़ा भी तो मिले। इसके बाद और कुछ सुनने में न आया और वे लोग उठकर न मालूम कहाँ चले गये। दूसरे दिन मैं फिर कुन्दन के पास गया और उससे बोला कि "तू लाली के सामने 'किसी के खून से लिखी हुई किताब' और 'आँचल

पर गुलामी की दस्तावेज़' का ज़िक्र करके देख क्या होता है !"

देवी : फिर क्या हुआ ?

शेर : तीन-चार दिन बाद जब मैं कुन्दन के पास गया तो उसकी ज़ुबानी मालूम हुआ कि कुन्दन के मुँह से वे बातें सुनकर लाली बहुत डरी और उसने कुन्दन का मुक़ाबला करना छोड़ दिया। मगर मुझे थोड़े ही दिनों में मालूम हो गया कि कुन्दन सरला न थी, उसने मुझे धोखा दिया और चालाकी से मेरी ज़ुबानी कई भेद मालूम करके अपना काम निकाल लिया। मुझे इस बात की बड़ी शर्म है कि मैंने अपने दुश्मन को दोस्त समझा और धोखा खाया।

देवी : अक्सर ऐसा धोखा हो जाया करता है, ख़ैर, लाली तो अभी हम लोगों के क़ैद ही में है, कहीं जाती नहीं, रही कुन्दन, सो इन्द्रजीत-सिंह को लेकर लौटने पर कोई तरक़ीब ऐसी ज़रूर निकाली जायेगी, जिसमें बाक़ी लोगों का असल हाल मालूम हो।

इसी तरह की बातें करते हुए दोनों ऐयार चलते गये। रात को एक जगह दो-तीन घण्टे आराम किया और फिर चल पड़े। सवेरा होते-होते एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ एक छोटा-सा टीला ऐसा था, जिस पर चढ़ने से दूर-दूर तक की जमीन दिखायी देती थी तथा वहाँ से कमलिनी का तालाबवाला मकान भी बहुत दूर न था। दोनों ऐयार उस टीले पर चढ़ गये और मैदान की तरफ़ देखने लगे। यकायक शेरसिंह ने चौंककर कहा, "अहा, हम लोग क्या अच्छे मौक़े पर आये हैं ! देखो वह कुँअर इन्द्र-जीतसिंह और वह औरत, जिसने उन्हें फँसा रक्खा है, घोड़े पर सवार इसी तरफ़ चले आ रहे हैं !!"

देवी : हाँ, ठीक तो है, उनके साथ और भी कई सवार हैं।

शेर : मालूम होता है, उस औरत ने उन्हें अच्छी तरह अपने वश में कर लिया है। बेचारे इन्द्रजीतसिंह क्या जानें कि यह उनकी दुश्मन है। चाहे जो हो, इस समय इन लोगों को आगे न बढ़ने देना चाहिए।

देवी : सबके आगे एक औरत घोड़े पर सवार आ रही है। मालूम होता है कि उन लोगों को रास्ता दिखानेवाली यही है।

शेर : बेशक, ऐसा ही है, तभी तो सबकोई उसके पीछे-पीछे चल रहे हैं। पहिले उसी को रोकना चाहिए, मगर घोड़ों की चाल बहुत तेज़ है।

देवी : कोई हर्ज़ नहीं, हम दोनों आदमी घोड़े की राह पर अड़कर खड़े हो जायें और अपने को घोड़े से बचाने के लिए मुस्तैद रहें, अच्छी नसल का घोड़ा यकायक आदमी के ऊपर टाप न रक्खेगा, वह लोगों को राह में

देख ज़रूर अड़ेगा या झिझकेगा, बस उसी समय घोड़े की बाग थाम लेंगे।

दोनों ऐयारों ने बहुत जल्द अपनी राय ठीक कर ली और दोनों आदमी एक साथ घोड़ों की राह में अड़के खड़े हो गये। बात-की-बात में वे लोग भी आ पहुँचे। तारा का घोड़ा रास्ते में आदमियों को खड़ा देखकर झिझका और आड़ देकर बगल की तरफ़ घूमना चाहा, उसी समय देवीसिंह ने फुर्ती से लगाम पकड़ ली। इस समय तारा का घोड़ा लाचार रुक गया और उसके पीछे आनेवालों को भी रुकना पड़ा। कुँअर इन्द्रजीतसिंह, शेरसिंह को तो नहीं जानते थे मगर देवीसिंह को उन्होंने पहिचान लिया और समझ गये कि ये लोग मेरी ही खोज में घूम रहे हैं, आखिर देवीसिंह के पास आये और बोले

कुमार : यद्यपि आप सब काम मेरी भलाई ही के लिए करते होंगे परंतु इस समय हम लोगों को रोका सो अच्छा न किया।

देवी : क्या मामला है कुछ कहिए तो ?

कुमार : (जल्दी में घबड़ाए हुए ढंग से) बेचारी किशोरी एक आफ़त में फँसी हुई है, उसी को बचाने जा रहे हैं।

देवी : किस आफ़त में फँसी है।

कुमार : इतना कहने का मौक़ा नहीं है।

देवी : यह औरत आपको अवश्य धोखा देगी, जिसके साथ आप जा रहे हैं।

कुमार : ऐसा नहीं हो सकता, यह बड़ी ही नेक और मेरी हमदर्द है।

इतना सुनते ही कमलिनी आगे बढ़ आयी और देवीसिंह से बोली—

"मैं खूब जानती हूँ कि आप लोगों को मेरी तरफ़ से शक है तथापि मुझे कहना ही पड़ता है कि इस समय आप हम लोगों को न रोकें, नहीं तो पछताना पड़ेगा। यदि आप लोगों को मेरी और कुमार की बात का विश्वास न हो तो मेरे सवारों में से दो आदमी घोड़ों पर से उतर पड़ते हैं, उनके बदले में आप दोनों आदमी घोड़ों पर सवार होकर साथ चलें और देख लें कि हम आपके ख़ैरख्वाह हैं या बदख्वाह।"

देवी : हाँ, बेशक यह अच्छी बात है और मैं इसे मंजूर करता हूँ।

कमलिनी के इशारा करते ही दो सवारों ने घोड़ों की पीठें खाली कर दीं। उनके बदले में देवीसिंह और शेरसिंह सवार हो गये और फिर उसी तरह सफ़र शुरू हुआ। इस समय कुछ-कुछ सूरज निकल चुका था और सुनहरी धूप ऊँचे-ऊँचे पेड़ों के ऊपरवाले हिस्सों पर फैल चुकी थी।

आधे घण्टे और सफ़र करने के बाद वे लोग उस जगह पहुँचे, जहाँ धनपति ने किशोरी को जलाकर खाक कर डालने के लिए चिता तैयार की थी और जहाँ से दीवान अग्निदत्त लड़-भिड़कर किशोरी को ले गया था। इस समय भी वह चिता कुछ बिगड़ी हुई सूरत में तैयार थी और इधर-उधर बहुत-सी लाशें पड़ी हुई थीं, उस जगह पहुँचकर तारा ने घोड़ा रोका और इसके साथ ही सब लोग रुक गये। तारा ने कमलिनी की तरफ़ देखकर कहा—

तारा : बस इसी जगह मैं आप लोगों को लानेवाली थी, क्योंकि इसी जगह 'धनपति के बहुत से आदमी मौजूद थे और यहीं वह किशोरी को लेकर आनेवाली थी। (लाशों की तरफ़ देखकर) मालूम होता है, यहाँ बहुत खून-खराबा हुआ है।

कमलिनी : तूने कैसे जाना कि किशोरी को लेकर धनपति इसी जगह आनेवाली थी और धनपति को तूने कहाँ छोड़ा था ?

तारा : रात के समय छिपकर धनपति के आदमियों की बातें मैंने सुनी थी, जिससे बहुत-कुछ हाल मालूम हुआ था और धनपति को मैंने उसी खोह के मुहाने पर छोड़ा था, जो रोहतासगढ़ तहख़ाने से बाहर निकलने का रास्ता है और जहाँ सलई के दो पेड़ लगे हैं। उस समय बेहोश किशोरी धनपति के कब्ज़े में थी और धनपति के कई आदमी भी मौजूद थे। उन लोगों की बातें सुनने से मुझे विश्वास हो गया था कि वें लोग किशोरी को लिये हुए इसी जगह आवेंगे। (एक लाश की तरफ़ देखके और चौंकके) देखिए। पहिचानिए।

कमलिनी : बेशक यह धनपति का नौकर है। (और लाशों को भी अच्छी तरह देखकर) बेशक, धनपति यहाँ तक आयी थी पर किसी से लड़ाई हो गयी, जो इन लाशों को देखने से जाना जाता है, मगर इनमें बहुत-सी लाशें ऐसी हैं जिन्हें मैं नहीं पहचानती। न मालूम इस लड़ाई का क्या नतीजा हुआ, धनपति गिरफ़्तार हो गयी या भाग गयी और किशोरी किसके क़ब्ज़े में पड़ गयी ! (कुमार की तरफ़ देखकर) शायद आपके सिपाही या ऐयार लोग यहाँ आये हों ?

कुमार : नहीं, (देवीसिंह की तरफ़ देखकर) आप क्या ख़याल करते हैं ?

देवी : ख़याल तो मैं बहुत कुछ करता हूँ, इसका हाल कहाँ तक पूछियेगा, मगर इन लाशों में हमारे तरफ़वालों की कोई लाश नहीं है, जिससे मालूम हो कि वे लोग यहाँ आये होंगे।

सब लोग इधर-उधर घूमने और लाशों को देखने लगे। यकायक

देवीसिंह एक ऐसी लाश के पास पहुँचे, जिसमें जान बाकी थी और वह धीरे-धीरे कराह रहा था। उसके बदन में कई जगह ज़ख्म लगे हुए थे और कपड़े खून से तर थे। देवीसिंह ने कुमार की तरफ़ देखके कहा, "इसमें जान बाकी है, अगर बच जाय और कुछ बातचीत कर सके तो बहुत-कुछ हाल मालूम होगा।"

कई आदमी उस लाश के पास आ मौजूद हुए और उसे होश में लाने की फिक्र करने लगे। उसके ज़ख्मों पर पट्टी बाँधी गयी और ताकत देनेवाली दवा भी पिलायी गयी। घोड़े नंगी पीठ करके दम लेने, हरारत मिटाने और चरने के लिए लम्बी बागडोरों से बाँधकर छोड़ दिये गये।

आधे घण्टे बाद उस आदमी को होश आया और उसने कुछ बोलने का इरादा किया मगर जैसे ही उसकी निगाह कमलिनी पर पड़ी, वह काँप उठा और उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गयी। उसके दिल का हाल कमलिनी समझ गयी और उसके पास जाकर मुलायम आवाज़ में बोली, "बाँकेसिंह डरो मत, मैं वादा करती हूँ कि तुम्हें किसी तरह की तकलीफ़ न दूंगी, हाँ, होश में आओ और मेरी बात का जवाब दो।"

कमलिनी की बात सुनकर उसके चेहरे की रंगत बदल गयी, डर की निशानी जाती रही, और यह भी जाना गया कि वह कमलिनी की बातों का जवाब देने के लिए तैयार है।

कमलिनी : किशोरी को लेकर धनपति यहाँ आयी थी ?

बाँके : (सिर हिलाकर धीरे से) हाँ मगर······

कमलिनी : मगर क्या ?

बाँके : उसने किशोरी को जला देना चाहा था, मगर एकाएक अग्निदत्त और उसके साथी लोग आ पहुँचे और लड़-भिड़कर किशोरी को ले गये, हम लोग उन्हीं के हाथ से ज़ख्मी······

बाँकेसिंह ने इतनी बातें धीरे-धीरे और रुक-रुककर कहीं, क्योंकि जख्मों से ज़्यादे खून निकल जाने के कारण, वह बहुत ही कमज़ोर हो रहा था, यहाँ तक कि बात पूरी न कर सका और गश में आ गया। इन लोगों ने उसे होश में लाने के लिए बहुत कुछ उद्योग किया, मगर दो घण्टे तक होश न आया। इस बीच में देवीसिंह ने उसे कई दफ़े दवा पिलायी।

देवी : इसमें कोई शक नहीं कि यह बच जायगा।

शेर : (देवीसिंह की तरफ़ देखकर) हमने (कमलिनी की तरफ़ इशारा करके) इनके बारे में भी धोखा खाया, वास्तव में यह कुमार के साथ नेकी कर रही हैं।

देवी : बेशक, यह कुमार की दोस्त हैं, मगर तुमने इनके बारे में कई बातें ऐसी कही थीं कि अब भी......

कुमार : नहीं-नहीं, देवीसिंहजी, मैं इन्हें अच्छी तरह आजमा चुका हूँ, सच तो यों है कि इन्हीं की बदौलत आज आप लोगों ने मेरी सूरत देखी।

इसके बाद कुमार ने शुरू से अपना किस्सा देवीसिंह से कह सुनाया और कमलिनी की बड़ी तारीफ़ की।

कमलिनी : आप लोगों ने मेरे बारे में बहुत-सी बातें सुनी होंगी और वास्तव में मैंने जो-जो काम किये हैं, वे ऐसे नहीं कि कोई मुझ पर विश्वास कर सके, हाँ जब आप लोग मेरा असल भेद जान जायेंगे तो अवश्य कहेंगे कि तुम्हारे हाथ से कभी कोई बुरा काम नहीं हुआ। अभी कुमार को भी मेरा हाल मालूम नहीं, समय मिलने पर मैं अपना विचित्र हाल आप लोगों से कहूँगी और उस समय आप लोग कहेंगे कि बेशक शेरसिंह और उनकी भतीजी कमला ने मेरे बारे में धोखा खाया।

शेर : (ताज्जुब में आकर) आप मुझे और मेरी भतीजी कमला को क्योंकर जानती हैं?

कमलिनी : मैं आप लोगों को बहुत अच्छी तरह जानती हूँ, हाँ, आप लोग मुझे नहीं जानते और जब तक स्वयम् अपना हाल मैं न कहूँ, जान भी नहीं सकते।

इसके बाद कुमार ने देवींसिंह से शेरसिंह का हाल पूछा और उन्होंने सब हाल कहा। इसी समय उस ज़ख्मी ने आँखें खोलीं और पीने के लिए पानी माँगा, जिसका इलाज ये लोग कर रहे थे।

अबकी दफ़े बाँकेसिंह अच्छी तरह होश में आया और कमलिनी के पूछने पर उसने इस तरह बयान किया—

"इसमें कोई सन्देह नहीं कि अग्निदत्त किशोरी को ले गया क्योंकि मैं उसे बखूबी पहिचानता हूँ, मगर यह नहीं मालूम कि किशोरी की तरह धनपति भी उसके पंजे में फँस गयी या निकल भागी, क्योंकि लड़ाई ख़तम होने के पहिले ही मैं ज़ख्मी होकर गिर पड़ा था। मैं जानता था कि अग्निदत्त बहुत-से बदमाशों और लुटेरों के साथ यहाँ से थोड़ी दूर एक पहाड़ी पर रहता है और इसी सबब से धनपति को मैंने कहा भी था कि इस जगह आपका अटकना मुनासिब नहीं, मगर होनहार को क्या किया जाय! (हाथ जोड़कर) महारानी, न मालूम क्यों आपने हम लोगों को त्याग दिया? आज तक इसका ठीक पता हम लोगों को न लगा।"

बाँकेसिंह की आख़िरी बात का जवाब कमलिनी ने कुछ न दिया

और उससे उस पहाड़ी का पूरा पता पूछा, जहाँ अग्निदत्त रहता था। बाँकेसिंह ने अच्छी तरह वहाँ का पता दिया। कमलिनी ने अपने सवारों में से एक को बाँकेसिंह के पास छोड़ा और बाक़ी सभों को साथ ले, वहाँ से रवाना हुई। इस समय कुँअर इन्द्रजीतसिंह की क्या अवस्था थी, इसे अच्छी तरह समझना जरा कठिन था। कमलिनी की नेकी, किशोरी की दशा, इश्क की खिचाखिंची और अग्निदत्त की कार्रवाई के सोच-विचार में ऐसे मग्न हुए कि थोड़ी देर के लिए तनोबदन की सुध भुला दी, केवल इतना जानते रहे कि कमलिनी के पीछे-पीछे किसी काम के लिए कहीं जा रहे हैं। सूरज अस्त होने के बाद ये लोग पहाड़ी के नीचे पहुँचे, जिस पर अग्निदत्त रहता था और जहाँ खोह के अन्दर किशोरी की अन्तिम अवस्था ऊपर के बयान में लिख आये हैं।

इन लोगों का दिल इस समय ऐसा न था कि इस पहाड़ी के नीचे पहुँचकर किसी ज़रूरी काम के लिए भी कुछ देर तक अटकते। घोड़ों को पेड़ों से बाँध तुरत चढ़ने लगे और बात-की-बात में पहाड़ी के ऊपर जा पहुँचे। सबसे पहिले जिस चीज़ पर इन लोगों की निगाह पड़ी, वह एक लाश थी जिसे इन लोगों में से कोई भी नहीं पहिचानता था और इसके बाद भी बहुत-सी लाशें देखने में आयीं जिससे इन लोगों का दिल छोटा हो गया और सोचने लगे कि देखें किशोरी से मुलाकात होती है या नहीं।

इस पहाड़ी के ऊपर एक छोटी-सी मढ़ी बनी हुई थी, जिसमें बीस-पचीस आदमी रह सकते थे और इसी के बग़ल में एक गुफ़ा थी, जो बहुत लम्बी और अँधेरी थी। पाठक, यह वही गुफ़ा थी, जिसमें बेचारी किशोरी दुष्ट अग्निदत्त के हाथ से बेबस होकर ज़मीन पर गिर पड़ी थी।

इस पहाड़ी के ऊपर बहुत-सी लाशें पड़ी हुई थीं, किसी का सिर कटा हुआ था, किसी को तलवार ने जनेवा काट गिराया था, कोई कमर से दो टुकड़े था, किसी का हाथ कटकर अलग हो गया था, किसी के पेट को खंजर ने फाड़ डाला था और आँतें बाहर निकल पड़ी थीं, मगर किसी जीते आदमी का नाम-निशान वहाँ न था। ऐसी अवस्था देखकर कुँअर इन्द्रजीतसिंह बहुत घबराये और उन्हें किसी के मिलने से नाउम्मीदी हो गयी। ऐयारों ने बटुए से सामान निकालकर बत्ती जलायी और खोह के अन्दर घुसकर देखा तो वहाँ भी एक लाश के सिवाय और कुछ न दिखायी पड़ा। निगाह पड़ते ही देवीसिंह ने पहिचान लिया कि यह अग्निदत्त की लाश है। एक खंजर उसके कलेजे में अभी तक चुभा हुआ मौजूद था, केवल उसका कब्जा बाहर था और दिखायी दे रहा था, उसके

पास ही एक लपेटा हुआ काग़ज़ पड़ा था। देवीसिंह ने वह काग़ज़ उठा लिया और दोनों ऐयार उस लाश को बाहर लाये।

सभों ने अग्निदत्त की लाश को देखा और ताज्जुब किया।

शेर : इस हरामजादे को इसके कुकर्मों की सज़ा न मालूम किसने दी !

कमलिनी : हाय, इस कमबख्त की बदौलत बेचारी किशोरी पर न मालूम क्या-क्या आफ़तें आयीं और अब वह कहाँ या किस अवस्था में है !

देवी : (चीठी दिखाकर) इसकी लाश के पास यह चीठी भी मिली है, शायद इससे कुछ पता चले।

कमलिनी : हाँ हाँ, इसे पढ़ो तो सही, देखें क्या लिखा है।

सभों का ध्यान उस चीठी पर गया। कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने वह चीठी देवीसिंह के हाथ से ले ली और पढकर सभों को सुनाया, यह लिखा था—

"आख़िर हरामज़ादी किशोरी मेरे हाथ लगी ! इसमें कोई शक नहीं कि अब यह अपने किये का फल भोगेगी। इसकी शैतानी ने मुझे जीतेजी मार ही डाला था, मगर मैंने भी पीछा न छोड़ा। कमबख्त अग्निदत्त की क्या हक़ीक़त थी, जो मेरे हाथ से अपनी जान बचा ले जाता। मैं उन लोगों को ललकारता हूँ, जो अपने को बहादुर, दिलेर और राजा मानते हैं ! कहाँ हैं बीरेन्द्रसिंह, इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह, जो अपनी बहादुरी का दावा रखते हैं ? आवें और मेरा चरण छूकर माफ़ी माँगें। कहाँ हैं उनके ऐयार, जो अपने को विधाता ही समझ बैठे हैं ? आवें और मेरे ऐयारों के सामने सिर झुकावें। मुझे विश्वास है कि उन लोगों में से कोई-न-कोई किशोरी को खोजता यहाँ ज़रूर आवेगा और इसलिए मैं यह चीठी लिखकर यहाँ रक्खे जाता हूँ कि ऊपर लिखे व्यक्ति या उनके साथी और मददगार लोग चाहे जो कोई भी हों अपनी-अपनी जान बचावें क्योंकि उनकी मौत आ चुकी है और अब वे लोग मेरे हाथ से किसी तरह बच नहीं सकते। कोई यह न कहे फि मैं छिपकर अपना काम करता हूँ और किसी को अपनी सूरत नहीं दिखाता। जिसको मेरी सूरत देखनी हो मेरे घर चला आवे, मगर होशियार रहे, क्योंकि मेरे सामने आनेवाले की भी वही दशा होगी जो यहाँ वालों की हुई। लो मैं अपना पता भी बताये देता हूँ, जिसको आना हो मेरे पास चला आवे। यहाँ से पाँच कोस पूरब एक नाला है, उसी के किनारे दक्खिन रुख दो कोस तक चले जाने के बाद मेरा मकान दिखायी पड़ेगा।

—बहादुरों का दादागुरु।"

इस चीठी ने सभों को अपने आपे से बाहर कर दिया। मारे क्रोध के कुँअर इन्द्रजीतसिंह की आँखें कबूतर के खून की तरह सुर्ख हो गयीं। देवीसिंह और शेरसिंह दाँत पीसने लगे।

कुमार : चाहे जो हो, मगर इस हरामज़ादे से मुक़ाबिला किये बिना मैं किसी तरह आराम नहीं कर सकता !

देवी : बेशक इसको इस ढिठाई की सज़ा दी जायेगी।

कुमार : अब यहाँ ठहरना व्यर्थ है, चलकर उसे ढूँढ़ना चाहिए।

कमलिनी : बेशक, उसने बड़ी बेअदबी की, उसे ज़रूर सज़ा देनी चाहिए। मगर आप लोग बुद्धिमान हैं, मुझे विश्वास है कि बिना समझे-बूझे किसी काम में जल्दी न करेंगे।

कुमार : ऐसे समय में विलम्ब करना अपनी बहादुरी म बट्टा लगाना है।

कमलिनी : आप इस समय क्रोध में हैं इसलिए ऐसा कहते हैं, नहीं तो आप स्वयं पहिले किसी ऐयार को भेजना मुनासिब समझते। इतनी बड़ी शेखी के साथ पत्र लिखनेवाले को मैं सच्चा नहीं समझ सकती। खुल्लमखुल्ला आप लोगों का मुक़ाबला करना हँसी-खेल है ? क्या यह केवल उन्हीं आदमियों का काम है, जो दग़ाबाज़ नहीं बल्कि सच्चे बहादुर हैं ? कभी नहीं, कभी नहीं, बेशक वह कोई बेईमान और हरामज़ादा आदमी है। इसके अतिरिक्त आप ज़रा इस रात के समय और अपने घोड़ों की हालत पर तो ध्यान दीजिए कि अब वे एक कदम भी चलने लायक़ नहीं रहे।

यद्यपि कुमार और उनके ऐयार इस समय बड़े क्रोध में थे परन्तु कमलिनी की सच्ची हमदर्दी के साथ मीठी-मीठी बातों ने उन्हें ठण्डा किया और इस लायक बनाया कि वे नेक और बद को सोच सकें। कमलिनी के आदमियों के साथ और ऐयारों के बटुए में बहुत-कुछ खाने का सामान था। पहाड़ी के नीचे एक छोटा-सा चश्मा बह रहा था, वहाँ से जल मँगवाया गया और सभों ने कुछ खाकर जल पीया, इसके बाद फिर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

देवी : जिस मकान का इस चीठी में पता दिया गया है, यदि वहाँ न जाना चाहिए तो यहाँ रहना भी मुनासिब नहीं, क्योंकि वे दग़ाबाज़ लोग इस जगह से भी बेफिक्र न होंगे। मेरी राय तो यही है कि शेरसिंह के साथ कुमार विजयगढ़ जाँय और मैं उस मकान की खोज में जाकर देखूँ कि वहाँ क्या है।

कमलिनी : आपका कहना बहुत ठीक है, मैं भी यही मुनासिब समझती

हूँ, इस बीच में मुझे भी दो-एक दुश्मनों का पता लगा लेने का मौक़ा मिलेगा, क्योंकि जहाँ तक मैं समझती हूँ, यह एक ऐसे आदमी का काम है, जिसे सिवाय मेरे आप लोग नहीं जानते और न इस समय उसका नाम आप लोगों के सामने लेना ही मैं मुनासिब समझती हूँ।

कुमार : क्या नाम बताने में कोई हर्ज है ?

कमलिनी : बेशक हर्ज है, हाँ, यदि मेरा गुमान ठीक निकला तो अवश्य उन लोगों का नाम बताऊँगी और पता भी दूँगी।

कुमार : ख़ैर, मगर जो कुछ राय आप लोगों ने दी है, उसके अनुसार चलने में कई दिन व्यर्थ लग जायँगे, इसलिए मेरी राय कुछ दूसरी ही है।

देवी : वह क्या ?

कुमार : मैं ख़ुद आपके साथ उस मकान की तरफ़ चलता हूँ, जिसका पता इस चीठी में दिया गया है। यदि केवल उस मकान के अन्दर रहनेवाले हमारे दुश्मन हैं तो हिम्मत हारने की कोई ज़रूरत नहीं, इसी समय उन्हें जीतकर किशोरी को छुड़ा लाऊँगा, और यदि उन लोगों के पास फौज होगी तो ज़रूर मकान के बाहर टिकी हुई होगी, जिसका पता लगाना कुछ कठिन न होगा, उस समय जोकुछ आप लोग राय देंगे, किया जायगा।

इसी तरह की बातचीत करने में पहर रात बीत गयी। आख़िर वही निश्चय ठहरा जो कुमार ने सोचा था अर्थात् इसी समय सब कोई उस मकान की तरफ़ जाने के लिए मुस्तैद हुए और पहाड़ी के नीचे उतर आये। पेड़ों के साथ बागडोर से बँधे हुए घोड़े वहीं पर चर रहे थे, जो अपने सवारों को देखकर हिनहिनाने लगे, जिससे जाना गया कि वे इस समय फिर सफ़र को तैयार हैं और पहर-भर चरने और आराम करने से उनकी थकावट कम हो चुकी है। सब लोग घोड़ों पर सवार होकर वहाँ से रवाना हुए।

जोकुछ उस चीठी में लिखा था वह ठीक मालूम होने लगा अर्थात् पूरब पाँच कोस चले जाने के बाद एक नाला मिला और उसी के किनारे-किनारे दो कोस दक्खिन जाने के बाद, एक मकान की सुफ़ेदी दिखायी पड़ी। मालूम होता था कि यह मकान अभी नया बना है या आज-ही-कल में इसके ऊपर चूना फेरा गया है। रात दो पहर से ज़्यादा जा चुकी थी, चन्द्रमा अपनी पूर्ण कला से आकाश के बीच में दिखायी दे रहे थे, शीतल किरणें चारों तरफ़ फैली हुई थीं और मालूम होता था कि ज़मीन पर चाँदी का पत्र जड़ा हुआ है। ये लोग घना

जंगल पीछे छोड़ आये थे और इस जगह पेड़ बहुत कम और छोटे-छोटे थे, उस मकान के चारों तरफ़ दो-सौ बिगहे के लगभग साफ़ मैदान था ।

अच्छी तरह जाँच करने और ख़याल दौड़ाने से मालूम हो गया कि इस जगह पर फौज नहीं है और न लड़ाई का कुछ सामान ही है, अगर कुछ है तो उसी मकान के अन्दर होगा । आख़िर थोड़ी देर तक सोच-विचार कर ये लोग मकान के पास पहुँचे ।

यह मकान बहुत बड़ा न था, लगभग पचास गज़ के लम्बा और इसी क़दर चौड़ा होगा । इसकी ऊँचाई भी पैंतीस गज़ से ज़्यादे न होगी । चारों तरफ़ की दीवारें साफ़ थीं, न तो किसी तरफ़ कोई दरवाज़ा था और न कोई खिड़की । ये लोग चारों तरफ़ घूमे मगर अन्दर जाने का रास्ता न मिला, आख़िर सब लोग घोड़ों पर से उतरकर एक तरफ़ खड़े हो गये, देवीसिंह ने कमन्द फेंका और उसके सहारे से दीवार पर चढ़कर देखना चाहा कि अन्दर क्या है ।

ऊपर की दीवार बहुत चौड़ी थी । सभों ने देखा कि देवीसिंह दीवार पर खड़े होकर अन्दर की तरफ़ बड़े ग़ौर से देख रहे हैं। यकायक देवीसिंह खिलखिलाकर हँसे और बिना कुछ कहे उस मकान के अन्दर कूद पड़े ।

यह देख सभों को ताज्जुब हुआ, कमलिनी ने तारा के कान में कुछ कहा, जिसके जवाब में उसने सिर हिला दिया । थोड़ी देर तक देवीसिंह की राह देखी गयी, आखिर उसी कमन्द के सहारे शेरसिंह चढ़ गये और उनकी भी वही अवस्था देखने में आयी अर्थात् कुछ देर तक ग़ौर से देखने के बाद देवीसिंह की तरह हँसकर, शेरसिंह भी उस मकान के अन्दर कूद गये ।

अब तो कुमार के आश्चर्य की कोई हद न रही, वे ताज्जुब में आकर सोचने लगे कि यह क्या मामला है और इस मकान के अन्दर क्या है, जिसे देख दोनों ऐयारों ने ऐसा किया ? "जो हो, अब मैं भी ऊपर चढ़ूँगा और देखूँगा कि क्या है !"—कहकर कुमार भी उसी कमन्द के सहारे ऊपर चढ़ने को तैयार हुए, मगर कमलिनी ने हाथ पकड़ लिया और कहा, "ऐसा नहीं हो सकता, अभी हमारे कई आदमी मौजूद हैं, पहिले इन्हें जा लेने दीजिए ।" लाचार कुमार को रुकना पड़ा । कमलिनी ने अपने उन सवारों की तरफ़ देखा, जो उसके साथ आये थे और कहा, "तुम लोगों में से एक आदमी ऊपर जाकर देखो कि क्या है ?"

हुक्म पाकर उसी कमन्द के सहारे एक आदमी ऊपर गया और उसकी भी वही दशा हुई, दूसरा गया वह भी कूद पड़ा, तीसरा गया वह

भी न लौटा, यहाँ तक कि कमलिनी के कुल आदमी इसी तरह उस मकान के अन्दर जा दाखिल हुए। कमलिनी ने बहुत रोका और मना किया मगर कुमार ने उसकी बात पर ध्यान न दिया, वे भी उसी कमन्द के सहारे ऊपर चढ़ गये और अपने साथियों की तरह गौर से थोड़ी देर तक देखने के बाद हँसते हुए मकान के अन्दर कूद पड़े।

अब सवेरा हो गया, आसमान पर पूरब तरफ़ सूर्य की लालिमा दिखायी देने लगी, कमलिनी ने हँसकर अपनी ऐयारा तारा की तरफ़ देखा, वह गर्दन हिलाकर हँसी और बोली, "चलिए अब देर करने की कोई ज़रूरत नहीं।"

बाक़ी घोड़े उसी तरह उसी जगह छोड़ दिये गये, दो घोड़ों पर कमलिनी और तारा सवार हुईं और हँसती हुई एक तरफ़ को चली गयीं।

पाँचवाँ बयान

अब हम फिर रोहतासगढ़ की तरफ मुड़ते हैं और वहाँ राजा बीरेन्द्रसिंह के ऊपर जो-जो आफतें आयीं, उन्हें लिखकर इस क़िस्से के बहुत से भेद, जो अभी तक छिपे पड़े हैं खोलते हैं। हम ऊपर लिख आये हैं कि रोहतासगढ़ फतह करने के बाद राजा बीरेन्द्रसिंह वग़ैरह उसी किले में जाकर मेहमान हुए, वहीं एक छोटी-सी कमेटी की गयी तथा उसी समय कुँअर इन्द्रजीतसिंह का पता लगाने और उन्हें ले आने के लिए शेरसिंह और देवीसिंह रवाना किये गये।

उन दोनों के चले जाने के बाद यह राय ठहरी कि यहाँ का हाल-चाल और रोहतासगढ़ फतह होने का समाचार चुनारगढ़ महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास भेजना चाहिए। यद्यपि यह ख़बर उन्हें पहुँच गयी होगी तथापि किसी ऐयार को वहाँ भेजना मुनासिब है और इस काम के लिए भैरोसिंह चुने गये। राजा बीरेन्द्रसिंह ने अपने हाथ से पिता को पत्र लिखा और भैरोसिंह को तलब करके चुनारगढ़ जाने के लिए कहा।

भैरो : मैं चुनारगढ़ जाने के लिए तो तैयार हूँ परन्तु दो बातों की हवस जी में रह जायेगी।

बीरेन्द्र : वह क्या ?

भैरो : एक तो फ़तह की खुशी का इनाम बँटने के समय मैं न रहूँगा, इसका···

बीरेन्द्र : यह हवस तो अभी पूरी हो जायगी, दूसरी क्या है ?

तेज : यह लड़का बहुत ही लालची है, यह नहीं सोचता कि यदि मैं न रहूँगा तो मेरे बदले का इनाम मेरे पिता तो पावेंगे !

भैरो : (हाथ जोड़कर और तेजसिंह की तरफ़ देखकर) यह उम्मीद तो हुई है, परन्तु इस समय मैं आपसे भी कुछ इनाम लिया चाहता हूँ।

बीरेन्द्र : अवश्य ऐसा होना चाहिए क्योंकि तुम्हारे लिए हम और ये एक समान हैं।

तेज : आप और भी शह दीजिए, जिसमें यदि और कुछ न मिल सके तो मेरा ऐयारी का बटुआ ही ले ले।

भैरो : मेरे लिए वही बहुत है।

बीरेन्द्र : दो, अब सस्ते में छूटते हो, बटुआ देने में उज्र न करो।

तेज : जब आप ही इसकी मदद पर हैं तो लाचार होकर देना ही पड़ेगा।

र जा बीरेन्द्रसिंह ने अपना खास सन्दूक मँगाया और उसमें से एक जड़ाऊ डिब्बा जिसके अन्दर न मालूम क्या चीज़थी निकाल, बिना खोले, भैरोसिंह को दे दिया। भैरोसिंह ने इनाम पाकर सलाम किया और अपनें पिता तेजसिंह की तरफ़ देखा, उन्हें भी लाचार होकर ऐयारी का बटुआ जिसे वे हरदम अपने पास रखते थे, भैरोसिंह के हवाले करना ही पड़ा।

राजा बीरेन्द्रसिंह ने भैरोसिंह से कहा, "इनाम तो तुम पा चुके, अब बताओ तुम्हारी दूसरी हवस क्या है, जो पूरी की जाय ?"

भैरो : मेरे जाने के बाद आप यहाँ के तहख़ाने की सैर करेंगे, अफ़-सोस यही है कि इसका आनन्द मुझे कुछ भी न मिलेगा।

बीरेन्द्र : ख़ैर, इसके लिए भी हम वादा करते हैं कि जब तुम चुनार-गढ़ से लौट आओगे, तब यहाँ के तहख़ाने की सैर करेंगे, मगर जहाँ तक हो सके तुम जल्द लौटना।

भैरोसिंह सलाम करके बिदा हुए मगर दो-ही-चार क़दम आगे बढ़े थे कि तेजसिंह ने पुकारा और कहा, "सुनो सुनो, बटुए में से एक चीज़ मुझे ले लेने दो क्योंकि वह मेरे ही काम की है।"

भैरो : (लौटकर और बटुआ तेजसिंह के सामने रखकर) बस, अब मैं यह बटुआ न लूंगा, जिसके लोभ से मैंने बटुआ लिया, जब वही आप निकाल लेंगे तो इसमें रही क्या जायगा !

बीरेन्द्र : नहीं जी, ले जाओ, अब तेजसिंह उसमें से कोई चीज़ न निकालने पायेंगे, जो चीज़ यह निकालना चाहते हैं, तुम भी उस चीज़ को रखने योग्य पात्र हो !

भैरोसिंह ने खुश होकर बटुआ उठा लिया और सलाम करने के बाद तेज़ी के साथ वहाँ से रवाना हो गये।

पाठक तो समझ ही गये होंगे कि इस बटुए में कौन-सी ऐसी चीज थी, जिसके लिए इतनी खिचा-खिची हुई! ख़ैर, शक मिटाने के लिए हम उस भेद को खोल ही देना मुनासिब समझते हैं। इस बटुए में वे ही तिलिस्मी फूल थे, जो चुनारगढ़ के इलाके में तिलिस्म के अन्दर से तेजसिंह के हाथ लगे थे और जिसे किसी प्राचीन वैद्य ने बड़ी मेहनत से तैयार किया था।

अब हम भैरोसिंह के चले जाने के बाद तीसरे दिन का हाल लिखते हैं। दिग्विजयसिंह अपने कमरे में मसहरी पर लेटा-लेटा न मालूम क्या-क्या सोच रहा है, रात आधी से ज़्यादे जा चुकी है, मगर अभी तक उसकी आँखों में नींद नहीं है, दर्वाज़े के तरफ़ मुँह किये हुए मालूम होता है, किसी के आने की राह देख रहा है, क्योंकि किसी तरह की ज़रा-सी भी आहट आने पर चौंक जाता है और चैतन्य होकर दर्वाज़े की तरफ़ देखने लगता है। यकायक चौखट के अन्दर पैर रखते हुए, एक वृद्ध बाबाजी की सूरत दिखायी पड़ी। उनकी अवस्था अस्सी वर्ष से ज्यादे होगी, नाभी तक लम्बी दाढ़ी और सर के फैले हुए बाल रूई की तरह सुफ़ेद हो रहे थे, कमर में केवल एक कोपीन पहिने और शेर की खाल ओढ़े कमरे के अन्दर आ पहुँचे। उन्हें देखते ही राजा दिग्विजयसिंह उठ खड़े हुए और मुस्कुराते हुए दण्डवत करके बोले, "आज बहुत दिनों के बाद दर्शन हुए हैं, समय टल जाने पर सोचता था कि शायद आज आना न हो!"

बाबाजी ने आशीर्वाद देकर कहा—"राह में एक आदमी से मुलाकात हो गयी, इसी से विलम्ब हुआ।"

इस समय कमरे में एक सिंहासन मौजूद था। दिग्विजयसिंह ने उसी सिंहासन पर साधु को बैठाया और स्वयम् नीचे फर्श पर बैठ गया, इसके बाद यों बातचीत होने लगी—

साधु : कहो क्या निश्चय किया?

दिग्विजय : (हाथ जोड़कर) किस विषय में?

साधु : यही बीरेन्द्रसिंह के विषय में।

दिग्विजय : सिवाय ताबेदारी क़बूल करने के और कर ही क्या सकता हूँ?

साधु : सुना है, तुम उन्हें तहख़ाने की सैर कराना चाहते हो? क्या यह बात सच है?

दिग्विजय : मैं उन्हें रोक ही क्योंकर सकता हूँ ?

साधु : ऐसा कभी नहीं होना चाहिए । तुम्हें मेरी बातों का विश्वास है कि नहीं ?

दिग्विजय : विश्वास क्यों न होगा ? आपको मैं गुरु के समान मानता हूँ और आज तक जोकुछ मैंने किया, आप ही की सलाह से किया ।

साधु : केवल यही आख़िरी काम बिना मुझसे राय लिये किया सो उसमें यहाँ तक धोखा खाया कि राज्य से हाथ धो बैठे !

दिग्विजय : बेशक ऐसा ही हुआ, ख़ैर, अब जो आज्ञा हो किया जाय ।

साधु : मैं नहीं चाहता कि तुम बीरेन्द्रसिंह के ताबेदार बनो, इस समय वे तुम्हारे कब्ज़े में हैं और तुम उन्हें हर तरह से क़ैद कर सकते हो ।

दिग्विजय : (कुछ सोचकर) जैसी आज्ञा, परन्तु मेरा लड़का अभी तक उनके कब्ज़े में है ।

साधु : उसे यहाँ लाने के लिए बीरेन्द्रसिंह का आदमी जा ही चुका है, बीरेन्द्रसिंह वग़ैरह के गिरफ़्तार होने की ख़बर जब तक चुनार पहुँचेगी, उसके पहिले ही कुमार वहाँ से रवाना हो जायेगा । फिर वह उन लोगों के कब्ज़े में नहीं फँस सकता, उसको ले आना, मेरा जिम्मा ।

दिग्विजय : हरएक बात को विचार लीजिए, मैं आज्ञानुसार चलने को तैयार हूँ ।

इसके बाद घण्टे-भर तक साधु महाराज और राजा दिग्विजयसिंह में बातें होती रहीं, जिसे यहाँ लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है । पहर-रात रहे बाबाजी वहाँ से बिदा हुए ।

उसके दूसरे ही दिन राजा बीरेन्द्रसिंह को ख़बर मिली कि लाली का पता नहीं लगता, न मालूम वह किस तरह क़ैद से निकलकर भाग गयी, उसका पता लगाने के लिए कई जासूस चारों तरफ रवाना किये गये ।

अब महाराज दिग्विजयसिंह की नीयत खराब हो गयी और वे इस बात पर उतारू हो गये कि राजा बीरेन्द्रसिंह, उनके लड़के और दोस्तों को गिरफ़्तार कर लेना चाहिए, खाली गिरफ़्तार नहीं मार डालना चाहिए ।

राजा बीरेन्द्रसिंह तहख़ाने में जाकर वहाँ का हाल देखा और जानना चाहते थे । मगर दिग्विजयसिंह हीले-हवाले में दिन काटने लगा । आख़िर यह निश्चय हुआ कि कल तहख़ाने में अवश्य चलना चाहिए । उसी दिन रात को दिग्विजयसिंह की फिर ज्याफ़त की और खाने की चीज़ों में बेहोशी

की दवा मिलाने का हुक्म अपने ऐयार रामानन्द को दिया । बेचारे राजा बीरेन्द्रसिंह इन बातों से बिल्कुल बेख़बर थे और उनके ऐयारों को भी ऐसी उम्मीद न थी, आख़िर नतीजा यह हुआ कि रात को भोजन करने के बाद सभी पर दवा ने असर किया । उस समय तेजसिंह चौंके और समझ गये कि दिग्विजयसिंह ने दग़ा दिया, मगर अब क्या हो सकता था ? थोड़ी देर बाद राजा बीरेन्द्रसिंह, कुँअर आनन्दसिंह, तेजसिंह, पण्डित बद्रीनाथ, ज्योतिषीजी और तारासिंह वग़ैरह बेहोश होकर ज़मीन पर लेट गये और बात-की-बात में हथकड़ियों और बेड़ियों से बेबस कर उसी तिलिस्मी तहख़ाने में कैद कर दिये गये । उस तहख़ाने से बाहर निकलने के लिए जो दो रास्ते थे, उनका हाल पाठक जान ही गये हैं, क्योंकि ऊपर उसका बहुतकुछ हाल लिखा जा चुका है । उन दोनों रास्तों में से एक रास्ता जिससे हमारे ऐयार लोग और कुँअर आनन्दसिंह गये थे, बख़ूबी बन्द कर दिया गया, मगर दूसरा रास्ता जिधर से कुन्दन (धनपति) किशोरी को लेकर निकल गयी थी ज्यों-का त्यों रहा क्योंकि उसकी ख़बर राजा दिग्विजयसिंह को न थी, उस रास्ते का हाल वह कुछ भी न जानता था ।

राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके लड़के और साथी लोग जब क़ैदखाने में भेज दिये गये, उस समय राजा बीरेन्द्रसिंह के थोड़े-से फौजी आदमी, जो उनके साथ किले में आ चुके, यह दग़ाबाजी देखकर जान देने के लिए तैयार हो गये । उन्होंने राजा दिग्विजय के बहुतसे आदमियों को मारा और जब तक जीते रहे, मालिक के नमक का ध्यान उनके दिल में बना रहा, पर आख़िर कहाँ तक लड़ सकते थे, शेष में सब-के-सब बहादुरी के साथ लड़कर बैकुण्ठ चले गये । राजा दिग्विजयसिंह ने किले का फाटक बन्द करवा दिया, सफ़ीलों पर तोपें चढ़वा दीं और राजा बीरेन्द्रसिंह के लश्कर से, जो पहाड़ के नीचे था, लड़ाई का हुक्म दिया । राजा बीरेन्द्र-सिंह के लश्कर में दो सरदार मौजूद थे, जो अभी तक रोहतासगढ़ में नहीं आये थे, एक नाहरसिंह और दूसरे फ़तहसिंह, ये दोनों सेनापति थे ।

पाठक, देखिए ज़माने ने कैसा पलटा खाया ! किशोरी की धुन में कुँअर इन्द्रजीतसिंह अपने दो ऐयारों के साथ ऐसी जगह जा फँसे कि उनका पता लगना भी मुश्किल है, इधर राजा बीरेन्द्रसिंह वग़ैरह की यह दशा हुई, अगर भैरोसिंह चीठी लेकर चुनार न भेज दिये गये होते तो वह भी फँस जाते । आप भूले न होंगे कि रामनारायण और चुन्नीलाल चुनारगढ़ में है और पन्नालाल को राजा बीरेन्द्रसिंह गयाजी में छोड़ आये हैं, राज-गृही भी उन्हीं के सुपुर्द है, वे किसी तरह वहाँ से टल नहीं सकते, क्योंकि

वह शहर नया फतह हुआ है और वहाँ एक सरदार का हरदम बने रहना बहुत ही मुनासिब हैं।

जिस समय रोहतासगढ़ किले से तोप की आवाज़ आयी, दोनों सेनापति बहुत घबराए और पता लगाने के लिए जासूसों को किले में भेजा, मगर उनके लौट आने पर दिग्विजय की दग़ाबाजी का हाल दोनों सेनापतियों को मालूम हो गया, उन्होंने उसी समय इस हाल की चीठी लिख दो सवार चुनारगढ़ रवाना किये और इसके बाद सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

छठवाँ बयान

आज बहुत दिनों के बाद हम कमला को आधी रात के समय रोहतासगढ़ पहाड़ी के ऊपर पूरब तरफ़वाले जंगल में घूमते देख रहे हैं। यहाँ से किले की दीवार बहुत दूर और ऊँचे पर है। कमला न मालूम किस फ़िक्र में है या क्या ढूँढ़ रही है। यद्यपि रात चाँदनी थी, परन्तु ऊँचे-ऊँचे और घने पेड़ों के कारण जंगल में एक प्रकार से अन्धकार ही था। घूमते-घूमते कमला के कानों में किसी के पैर की आहट मालूम हुई, वह रुकी और एक पेड़ की आड़ में खड़ी होकर दाहिनी तरफ़ देखने लगी, जिधर से आहट मिली थी। दस-पन्द्रह क़दम की दूरी से दो आदमी जाते हुए दिखायी पड़े, बात और चाल से दोनों औरतें मालूम पड़ीं। कमला भी पैर दबाये और अपने को हर तरह से छिपाये, उन्हीं दोनों के पीछे-पीछे धीरे-धीरे रवाना हुई। लगभग आध कोस जाने के बाद ऐसी जगह पहुँची, जहाँ पेड़ बहुत कम थे, बल्कि उसे एक प्रकार से मैदान ही कहना चाहिए। थोड़ी-थोड़ी दूर पर पत्थर के बड़े-बड़े अनगढ़ ढोंके पड़े हुए थे, जिनकी आड़ में कई आदमी छिप सकते थे। सघन पेड़ों की आड़ में से निकलकर मैदान में कई क़दम जाने के बाद वे दोनों अपने ऊपर से स्याह चादर उतार कर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गयीं। कमला ने भी अपने को बड़ी चालाकी से उन दोनों के क़रीब पहुँचाया और एक पत्थर की आड़ में छिपकर उन दोनों की बातचीत सुनना चाही। चन्द्रमा अपनी पूर्ण किरणों से उदय हो रहे थे और निर्मल चाँदनी इस समय अपना पूरा जोबन दिखा रही थी, हरएक चीज़ अच्छी तरह और साफ़ नज़र आती थी। जब वे दोनों औरतें चादर उतारकर पत्थर की चट्टान पर बैठ गयीं, तब कमला ने उनकी सूरत देखी। बेशक, वे दोनों नौजवान औरतें थीं, जिनमें से एक तो बहुत ही हसीन थी और दूसरी के विषय में कह सकते

हैं कि शायद उसकी लौंडी या ऐयारा हो ।

कमला बड़े ग़ौर से उन दोनों औरतों की तरफ़ देख रही थी कि इतने ही में सामने से एक लम्बे कद का आदमी आता हुआ दिखायी पड़ा, जिसे देख कमला चौंकी और उस समय तो कमला का कलेजा बेहिसाब धड़कने लगा, जब वह आदमी उन दोनों औरतों के पास आकर खड़ा हो गया और उनसे डपटकर बोला, "तुम दोनों कौन हो?" उस आदमी का चेहरा चन्द्रमा के सामने था, विमल चाँदनी उसके नक्शे को अच्छी तरह दिखा रही थी, इसलिए कमला ने उसे तुरन्त पहिचान लिया और उसे विश्वास हो गया कि वह लम्बे कद का आदमी वही है, जो खँडहर वाले तहखाने के अन्दर शेरसिंह से मिलने गया था और जिसे देख, उनकी अजब हालत हो गयी थीं तथा जिद्द करने पर भी उन्होंने न बताया कि यह आदमी कौन है ।

कमला ने अपने धड़कते हुए कलेजे को बायें हाथ से दबाया और गौर से देखने लगी कि अब क्या होता है । यद्यपि कमला उन दोनों औरतों से बहुत दूर न थी और इस रात के सन्नाटे में उनकी बातचीत बख़ूबी सुन सकती थी, तथापि उसने अपने को बड़ी सावधानी से उस तरफ़ लगाया और सुनना चाहा कि दोनों औरतों और लम्बे व्यक्ति में क्या बातचीत होती है ।

उस आदमी के डपटते ही ये दोनों औरतें चैतन्य होकर खड़ी हो गयीं और उनमें से एक ने जो सरदार मालूम होती थी, जवाब दिया

औरत : (अपने कमर से खंजर निकालकर) हम लोग अपना परिचय नहीं दे सकतीं और न हमें यही पूछने से मतलब है कि तुम कौन हो ?

आदमी : (हँसकर) क्या तू समझती है कि मैं तुझे नहीं पहिचानता ? मुझे खूब मालूम है कि तेरा नाम गौहर है, मैं तेरी सात पुश्त को जानता हूँ, मगर आजमाने के लिए पूछता था कि देखूँ तू अपना सच्चा हाल मुझे कहती है या नहीं ! क्या कोई अपने को भूतनाथ से छिपा सकता है ?

'भूतनाथ' नाम सुनते ही वह औरत घबड़ा गयी, डर से बदन काँपने लगा और खंजर उसके हाथ से गिर पड़ा । उसने मुश्किल से अपने को सम्हाला और हाथ जोड़कर बोली, "बेशक मेरा नाम गौहर है, मगर......"

भूतनाथ : तू यहाँ क्यों घूम रही है ? शायद इस फिक्र में है कि इस किले में पहुँचकर आनन्दसिंह से अपना बदला ले !

गौहर : (डरी हुई आवाज़ से) जी हाँ ।

भूतनाथ : पहिले भी तो तू उन्हें फँसा चुकी थी, मगर उनका ऐयार

देवीसिंह उन्हें छुड़ा ले गया। हाँ, तेरी छोटी बहिन कहाँ है ?

गौहर : वह तो गया की रानी माधवी के हाथ से मारी गयी।

भूतनाथ : कब ?

गौहर : जब वह इन्द्रजीतसिंह को फँसाने के लिए चुनारगढ़ के जंगल में गयी थी, तो मैं अपनी छोटी बहिन को साथ लेकर आनन्दसिंह की धुन में उसी जंगल में गयी हुई थी। दुष्टा माधवी ने व्यर्थ ही मेरी बहिन को मार डाला। जब वह जंगल काटा गया तो बीरेन्द्रसिंह के आदमी लोग उसकी लाश उठाकर चुनार ले गये थे, मगर (अपनी साथिन की तरफ़ इशारा करके) बड़ी चालाकी से यह ऐयारा उस लाश को उठा लायी थी*।

भूतनाथ : हाँ ठीक है, अच्छा तो तू इस किले में घुसा चाहती है और आनन्दसिंह की जान लिया चाहती है।

गौहर : यदि आप अप्रसन्न न हों तो।

भूतनाथ : मैं क्यों अप्रसन्न होने लगा ? मुझे क्या ग़रज़ पड़ी है कि मना करूँ। जो तेरा जी चाहे कर। अच्छा, अब मैं जाता हूँ लेकिन एक दफ़े फिर तुझसे मिलूँगा।

वह आदमी तुरत चला गया और देखते-देखते नज़रों से ग़ायब हो गया। इसके बाद उन दोनों औरतों में बातचीत होने लगी।

गौहर : गिल्लन, इसकी सूरत देखते ही मेरी जान निकल गयीं थी, न मालूम यह कमबख्त कहाँ से आ गया।

गिल्लन : तुम्हारी तो बात ही दूसरी है, मैं ऐयारा होकर अपने को सम्हाल न सकी, देखो अभी तक कलेजा धड़-धड़ करता है।

गौहर : मुझको तो यही डर लगा हुआ था कि कहीं वह मुझे आनन्दसिंह से बदला लेने के बारे में मना न करे।

गिल्लन : सो तो उसने न किया मगर एक दफ़े मिलने के लिए कह गया है, अच्छा अब यहाँ ठहरना मुनासिब नहीं।

वे दोनों औरतें अर्थात् गौहर तथा गिल्लन वहाँ से चली गयीं और कमला ने भी एक तरफ़ का रास्ता लिया। दो घण्टे के बाद कमला उस क़ब्रिस्तान में पहुँची, जो रोहतासगढ़ के तहख़ाने में आने-जाने का रास्ता था। इस समय चन्द्रमा अस्त हो चुका था और क़ब्रिस्तान में भी सन्नाटा था। कमला बीचवाली क़ब्र के पास गयी और तहख़ाने में जाने के लिए दरवाज़ा खोलने लगी, मगर खुल न सका। आधे घण्टे तक वह इसी फ़िक्र

---

* देखिए चन्द्रकान्ता सन्तति, पहिला भाग, चौथा बयान।

में लगी रही पर कोई काम न चला, लाचार उठ खड़ी हुई और क़ब्रिस्तान के बाहर की तरफ़ चली। फाटक के पास पहुँचते ही वह अटकी, क्योंकि सामने की तरफ़ थोड़ी ही दूर पर कोई चमकती हुई चीज़ उसे दिखायी पड़ी, जो इसी तरफ़ बढ़ी आ रही थी। आगे जाने पर मालूम हुआ कि यह बिजली की तरह चमकनेवाली चीज़ एक नेजा है, जो किसी औरत के हाथ में है। वह नेजा कभी तेज़ी के साथ चमकता है और इस सबब से दूर-दूर तक चीज़ें दिखाई भी देती हैं और कभी उसकी चमक बिल्कुल ही जाती रहती है और यह भी नहीं मालूम होता है कि नेजा या नेजे को हाथ में रखनेवाली औरत कहाँ है। थोड़ी देर में वह औरत इस क़ब्रिस्तान के बहुत पास आ गयी और नेजे की चमक ने कमला को उस औरत की सूरत-शक्ल अच्छी तरह दिखा दी। उस औरत का रंग स्याह था, सूरत डरावनी और बड़े-बड़े दो-तीन दाँत मुँह के बाहर निकले हुए थे, काली साड़ी पहिने हुए वह औरत पूरी राक्षसी मालूम होती थी। यद्यपि कमला ऐयारा और बहुत दिलेर थी, मगर इसकी सूरत देखते ही थर-थर काँपने लगी। उसने चाहा कि क़ब्रिस्तान के बाहर निकलकर भाग जाय, मगर वह इतना डर गयी थी कि पैर न उठा सकी। देखते-ही-देखते वह भंयकर मूर्ति कमला के सामने आकर खड़ी हो गयी और कमला को डर के मारे काँपते देखकर बोली, "डर मत होश ठिकाने कर, और जो कुछ मैं कहती हूँ ध्यान देकर सुन !"

सातवाँ बयान

रोहतासगढ़ फतह होने की ख़बर लेकर भैरोंसिंह चुनार पहुँचे और उसके दो-ही-तीन दिन बाद राजा दिग्विजयसिंह की बेईमानी की ख़बर लिए हुए कई सवार भी जा पहुँचे। इस समाचार के पहुँचते ही चुनारगढ़ में खलबली पड़ गयी। फौज के साथ-ही-साथ रिआया भी राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके खानदान को दिल से चाहती थी, क्योंकि उनके ज़माने में अमीर और ग़रीब सभी खुश रहते थे। आलिम और कारीगरों की क़दर की जाती थी, अदना-से-अदना भी अपनी फ़रियाद राजा के कान तक पहुँचा सकता था, उद्योगियों और व्यापारियों को दर्बार से मदद मिलती थी, ऐयार और जासूस लोग छिपे-छिपे रिआया के दुःख-सुख का हाल मालूम करते और राजा को हर तरह की खबर पहुँचाते थे। शादी-ब्याह में इज़्ज़त के माफिक हरएक को मदद मिलती थी और इसी से रिआया भी तन-मन-धन राजा के लिए अर्पण करने को तैयार मिलती थी। राजा बीरेन्द्रसिंह

क़ैद हो गये, इस खबर को सुनते ही रिआया जोश में आ गयी और इस फिक्र में हुई कि जिस तरह हो राजा को छुड़ाना चाहिए।

रोहतासगढ़ के बारे में क्या करना चाहिए और दुश्मनों पर क्योंकर फ़तह पानी चाहिए, यह सब सोचने-विचारने के पहिले महाराज सुरेन्द्रसिंह और जीतसिंह ने भैरोसिंह, रामनारायण और चुन्नीलाल को हुक्म दिया कि तुम लोग तुरन्त रोहतासगढ़ जाओ और जिस तरह हो सके अपने को किले के अन्दर पहुँचाकर राजा बीरेन्द्रसिंह को रिहा करो, हम दोनों में से भी कोई आदमी मदद लेकर शीघ्र पहुँचेगा।

हुक्म पाते ही तीनों ऐयार तेज़ और मज़बूत घोड़ों पर सवार हो रोहतासगढ़ की तरफ़ रवाना हुए और दूसरे दिन शाम को अपनी फौज में पहुँचे। राजा बीरेन्द्रसिंह की आधी फौज अर्थात् पचीस हज़ार फौज तो पहाड़ी के नीचे किले के दरवाज़े की तरफ़ खड़ी हुई थी और बाक़ी आधी फौज पहाड़ी के चारों तरफ़ इसलिए फैला दी गयी थी कि राजा दिग्विजयसिंह को बाहर से किसी तरह की मदद न पहुँचने पाये। पाँच-पाँच सात-सात सौ बहादुरों को लेकर नाहरसिंह कई दफ़े पहाड़ी पर चढ़ा और किले के दरवाज़े तक पहुँचना चाहा, मगर किले के बुर्जों पर से आये हुए तोप के गोलों ने उन्हें वहाँ तक पहुँचने न दिया और हर दफ़े लौटना पड़ा। जाहिर में तो वे लोग सामने की तरफ़ अड़े हुए थे और घड़ी-घड़ी हमला करते थे, मगर नाहरसिंह के हुक्म से पाँच-पाँच सात-सात करके जंगल-ही-जंगल रात के समय छिपे हुए रास्तों से बहुतसे सिपाही जासूस और सुरंग खोदनेवाले पहाड़ पर चढ़ गये थे तथा बराबर चढ़े चले जाते थे और उम्मीद पायी जाती थी कि दो-ही-तीन दिन में हज़ार-दो-हज़ार आदमी पहाड़ के ऊपर हो जायेंगे। तब नाहरसिंह छिपकर अकेला पहाड़ पर चढ़ जायगा और अपने आदमियों को बटोरकर किले के दरवाज़े पर हमला करेगा। पहाड़ पर पहुँचकर सुरंग खोदनेवाले सुरंग खोदकर बारूद के ज़ोर से किले का फाटक तोड़ने की धुन में लगे हुए थे और इन बातों की खबर राजा दिग्विजयसिंह को बिल्कुल न थी।

भैरोसिंह ने पहुँचकर यह सब हाल सुना और खुश होकर सेनापतियों की तारीफ़ की तथा कहा कि 'यद्यपि पहाड़ के ऊपर का घना जंगल ऐसा बेढब है कि मुसाफ़िरों को जल्दी रास्ता नहीं मिल सकता तथापि हमारे आदमी यदि ऊँचाई की तरफ़ ध्यान न देकर चढ़ना शुरू करेंगे तो लुढ़कते-पुड़कते किले के पास पहुँच ही जायेंगे। ख़ैर, आप लोग जिस काम में लगे हैं, लगे रहिए, हम तीनों ऐयार पहाड़ पर जाते हैं और किसी तरह किले के अन्दर पहुँचने का बन्दोबस्त करते हैं।'

पहर रात बीत गयी थी जब भैरोसिंह, रामनारायण और चुन्नीलाल पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे। भैरोसिंह कई दफ़े उस पहाड़ी पर जा चुके थे और उस जंगल में अच्छी तरह घूम चुके थे, इसलिए इन्हें भूलने और धोखा खाने का डर न था। ये लोग बेधड़क पहाड़ पर चले गये और रोहतासगढ़ के रास्तेवाले क़ब्रिस्तान में ठीक उस समय पहुँचे, जिस समय कमला धड़कते हुए कलेजे के साथ उस राक्षसी के सामने खड़ी थी, जिसके हाथ में बिजली की तरह चमकता हुआ नेजा था। जिस समय वह नेजा चमकता था, देखनेवाले की आँखें चौंधिया जाती थीं। भैरोसिंह ने दूर से चमकते नेजे को देखा और उसके साथी दोनों ऐयार भी डरकर खड़े हो गये। भैरोसिंह चाहते थे कि जब वह औरत वहाँ से चली जाय तो क़ब्रिस्तान में जायँ, मगर वे ऐसा न कर सके क्योंकि नेजे की चमक में उन्होंने कमला की सूरत देखी, जो इस समय जान से हाथ धोकर उस राक्षसी के सामने खड़ी थी।

हम ऊपर कई जगह इशारा कर आये हैं कि भैरोसिंह कमला को चाहते थे और वह भी इनसे मुहब्बत रखती थी। इस समय कमला को एक राक्षसी के सामने देख, उसकी मदद न करना भैरोसिंह से कब हो सकता था? वे लपककर कमला के पास पहुँचे। दो ऐयारों को साथ लिये भैरोसिंह को अपने पास मौजूद देखकर कमला का जी ठिकाने हुआ और उसने जल्दी से भैरोसिंह का हाथ पकड़के कहा—"खूब पहुँचे!"

भैरो : तुम यहाँ क्यों खड़ी हो और तुम्हारे सामने यह औरत कौन है?

कमला : मैं इसे नहीं पहिचानती।

राक्षसी : मेरा हाल कमला से क्यों पूछते हो, मुझसे पूछो। इस समय तुम्हें देखकर मैं बहुत खुश हुई, मैं भी इसी फ़िक्र में थी कि किसी तरह भैरोसिंह से मुलाक़ात हो।

भैरो : तुमने मुझे क्योंकर पहिचाना, क्योंकि आज तक मैंने तुम्हें कभी नहीं देखा!

इतना सुनकर वह औरत बड़ी ज़ोर से हँसी और उसने नेजे को हिलाया। हिलाने के साथ ही नेजे में चमक पैदा हुई और उसकी डरावनी हँसी से क़ब्रिस्तान गूँज उठा, इसके बाद उस औरत ने कहा—

राक्षसी : ऐसा कौन है, जिसे मैं नहीं पहिचानती होऊँ? खैर, इन बातों से कोई मतलब नहीं, यह कहो कि अपने मालिकों के छुड़ाने की क्या फ़िक्र कर रहे हो? दिग्विजयसिंह दो-ही-तीन दिन में तुम्हारे मालिक को मारकर निश्चिन्त हुआ चाहता है।

भैरोसिंह उस राक्षसी से बातें करने को तैयार थे, परन्तु यह नहीं जानते थे कि वह इनकी दोस्त है या दुश्मन और उससे अपने भेदों को छिपाना चाहिए कि नहीं। यह सोच ही रहे थे कि इसकी बातों का क्या जवाब दिया जाय कि इतने में कई आदमियों के आने की आहट मालूम हुई। उस औरत ने घूमकर देखा तो चार आदमियों को इसी तरफ़ आते पाया। उन पर निगाह पड़ते ही वह क्रोध में आकर गरजी और नेजे को हिलाती हुई उसी तरफ़ लपकी। नेजे की चमक ने उन चारों की आँखें बन्द कर दीं। औरत ने बड़ी फुर्ती से उन चारों को नेजे से घायल किया। हिलाने के साथ-ही-साथ उस नेजे में ग़ज़ब की चमक पैदा होती थी, मालूम होता था कि आँखों के आगे बिजली दौड़ गयी। वे बेचारे देख भी न सके कि उनको मारनेवाला कौन या कहाँ पर है। मालूम होता है कि वह नेजा ज़हर में बुझाया हुआ था क्योंकि वे चारों ज़ख्मी होकर ज़मीन पर ऐसा गिरे कि फिर उठने की नौबत न आयी।

इस तमाशे को देखकर भैरोसिंह डरे और सोचने लगे कि इस औरत के हाथ में तो बड़ा विचित्र नेजा है। इससे तो यह बात-की-बात में सैकड़ों आदमियों का नाश कर सकती है, कहीं ऐसा न हो कि हम लोगों को भी सतावे।

उन चारों को ज़ख़मी करने के बाद वह औरत फिर भैरोसिंह की तरफ लौटी। अब उसने अपने नेजे को आड़ा किया अर्थात् उसे इस तरह थामा कि उसका एक सिरा बायीं तरफ़ और दाहिनी तरफ़ रहे, तब तीनों ऐयारों और कमला को नेजे का धक्का देकर, एक साथ पीछे की तरफ़ हटाना चाहा। यह नेजा एक साथ चारों के बदन में लगा, उसके छूते ही बदन में एक तरह की झनझनाहट पैदा हुई और सब आदमी बदहवास होकर ज़मीन पर गिर पड़े।

जब उन चारों अर्थात् भैरोसिंह, रामनारायण, चुन्नीलाल और कमला की आँखें खुलीं तो उन्होंने अपने को क़िले के अन्दर राजमहल के पिछ-वाड़े की तरफ़ एक दीवार की आड़ में पड़े पाया। उस समय सुबह की सुफ़ेदी आसमान पर धीरे-धीरे अपना दख़ल जमा रही थी।

आठवाँ बयान

बहुत दिनों से कामिनी का हाल कुछ भी मालूम न हुआ, आज उसकी सुध लेना भी मुनासिब है। आपको याद होगा कि जब कामिनी को साथ लेकर कमला अपने चाचा शेरसिंह से मिलने के लिए उजाड़ खण्डहर और

तहख़ाने में गयी थी तो वहाँ से विदा होते समय शेरसिंह ने कमला से कहा था कि 'कामिनी को मैं ले जाता हूँ, अपने एक दोस्त के यहाँ रख दूँगा, जब सब तरह का फ़साद मिट जायगा तब यह भी अपनी मुराद को पहुँच जायगी।' अब हम उसी जगह से कामिनी का हाल लिखना शुरू करते हैं।

गयाजी से थोड़ी दूर पर लालगंज नाम से मशहूर एक गाँव फलगू नदी के किनारे ही पर है। उसी जगह के एक नामी ज़मींदार के यहाँ जो शेरसिंह का दोस्त था, कामिनी रक्खी गयी थी। वह ज़मींदार बहुत ही नेक और रहमदिल था तथा उसने कामिनी को बड़ी हिफ़ाज़त से अपनी लड़की के समान ख़ातिर करके रक्खा, मगर उस ज़मींदार का एक नौजवान और खूबसूरत लड़का भी था, जो कामिनी पर आशिक हो गया। उसके हाव-भाव और कटाक्ष को देखकर कामिनी को उसकी नीयत का हाल मालूम हो गया। वह कुँअर आनन्दसिंह के प्रेम में अच्छी तरह रँगी हुई थी, इसलिए उसे इस लड़के की चाल-ढाल बहुत ही बुरी मालूम हुई। ऐसी अवस्था में उसने अपने दिल का हाल किसी से कहना मुनासिब न समझा, बल्कि इरादा कर लिया कि जहाँ तक जल्द हो सके, इस मकान को छोड़ ही देना मुनासिब है और अन्त में लाचार होकर, उसने ऐसा ही किया।

एक दिन मौक़ा पाकर आधी रात के समय कामिनी उस घर से बाहर निकली और सीधे रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुई। इस समय वह तरह-तरह की बातें सोच रही थी। एक दफ़े उसके दिल में आया कि बिना कुछ सोचे-विचारे बीरेन्द्रसिंह के लश्कर में चले चलना ठीक होगा, मगर साथ ही यह भी सोचा कि यदि कोई सुनेगा तो मुझे अवश्य ही निर्लज्ज कहेगा और आनन्दसिंह की आँखों में मेरी कुछ इज्ज़त न रहेगी।

इसके बाद उसने सोचा कि जिस तरह हो कमला से मुलाकात करनी चाहिए मगर कमला से मुलाकात क्योंकर हो सकती है? न मालूम अपने काम की धुन में वह कहाँ-कहाँ घूम रही होगी? हाँ, अब याद आया, जब मैं कमला के साथ शेरसिंह से मिलने के लिए उस तहख़ाने में गयी थी तो शेरसिंह ने उससे कहा था कि मुझसे मिलने की जब जरूरत हो तो इसी तहख़ाने में आना। अब मुझे भी उसी तहख़ाने में चलना चाहिए, वहाँ कमला या शेरसिंह से ज़रूर मुलाकात होगी और वहाँ दुश्मनों के हाथ से भी निश्चिन्त रहूँगी। जब तक कमला से मुलाकात न हो, वहाँ टिके रहने में भी कोई हर्ज़ नहीं है, वहाँ खाने के लिए जंगली फल और पीने के लिए पानी की भी कोई कमी नहीं।

इन सब बातों को सोचती हुई बेचारी कामिनी उसी तहख़ाने की तरफ़ रवाना हुई और अपने को छिपाती हुई जंगल-ही-जंगल चलकर तीसरे दिन पहर रात जाते-जाते वहाँ पहुँची। रास्ते में जंगली फल और चश्मे के पानी के सिवाय और कुछ उसे न मिला और न उसे किसी चीज़ की इच्छा ही थी।

वह खण्डहर कैसा था और उसके अन्दर तहख़ाने में जाने के लिए छिपा हुआ रास्ता किस ढंग का बना हुआ था यह पहिले लिखा जा चुका है, पुनः यहाँ लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है। कमला या शेरसिंह से मिलने की उम्मीद में उसी खण्डहर और तहख़ाने को कामिनी ने अपना घर बनाया और तपस्विनियों की तरह कुँअर आनन्दसिंह के नाम की माला जपती हुई दिन बिताने लगी। बहुत-सी ज़रूरी चीज़ों के अतिरिक्त ऐयारी के सामान से भरा हुआ एक बाँस का पेटारा शेरसिंह का रक्खा हुआ उस तहख़ाने में मौजूद था, जो कामिनी के हाथ लगा। यद्यपि कामिनी कुछ ऐयारी भी जानती थी परन्तु इस समय उसे ऐयारी के सामान की विशेष ज़रूरत न थी, हाँ शेरसिंह की जायदाद में से एक कुप्पी तेल की कामिनी ने बेशक खर्च की क्योंकि चिराग़ जलाने की नित्य ही आवश्यकता पड़ती थी।

कमला और शेरसिंह से मिलने की उम्मीद में कामिनी ने उस तहख़ाने में रहना स्वीकार किया परन्तु कई दिन बीत जाने पर भी किसी से मुलाकात न हुई। एक दिन सूरत बदलकर कामिनी तहख़ाने से निकली और खण्डहर के बाहर हो सोचने लगी कि किधर जाय और क्या करे। एकाएक कई आदमियों के बातचीत की आवाज उसके कानों में पड़ी और मालूम हुआ कि वे लोग आपस में बातचीत करते हुए इसी खण्डहर की तरफ़ आ रहे हैं। थोड़ी ही देर में चार आदमी भी दिखायी पड़े। उस समय कामिनी अपने को बचाने के लिए खण्डहर के अन्दर घुस गयी और राह देखने लगी कि वे लोग आगे बढ़ जायँ तो फिर निकलूँ, मगर ऐसा न हुआ क्योंकि बात-की-बात में वे चारों आदमी एक लाश उठाये हुए इसी खण्डहर के अन्दर आ पहुँचे।

इस खण्डहर में अभी तक कई कोठरियाँ मौजूद थीं। यद्यपि उनकी अवस्था बहुत ही ख़राब थी, किवाड़ के पल्ले तक उनमें न थे, जगह-जगह पर कंकड़ पत्थर कतवार के ढेर लगे हुए थे, परन्तु मसाले की मज़बूती पर ध्यान दे आँधी-पानी अथवा तूफ़ान में भी बहुत आदमी उन कोठरियों में रहकर अपनी जान की हिफ़ाज़त कर सकते थे। खण्डहर के चारों तरफ़ की दीवार यद्यपि कहीं-कहीं से टूटी हुई थी तथापि बहुत ही

मज़बूत और चौड़ी थी। कामिनी एक कोठरी में घुस गयी और छिपकर देखने लगी कि वे चारों आदमी उस खण्डहर में आकर क्या करते और उस लाश को कहाँ रखते हैं।

लाश उठाये हुए चारों आदमी इस खण्डहर में जाकर इस तरह घूमने लगे जैसे हर एक कोठरी-दालान बल्कि यहीं की बित्ता-बित्ता-भर ज़मीन उन लोगों की देखी हुई हो। चूने पत्थर के ढेरों में घूमते और रास्ता निकालते हुए वे लोग एक कोठरी के अन्दर घुसे गये, जो उस खण्डहर-भर में सब कोठरियों से छोटी थी और दो घण्टे तक बाहर न निकले, इसके बाद जब वे लोग बाहर आये तो खाली हाथ थे अर्थात् लाश न थी, शायद उस कोठरी में गाड़ या रख आये हों।

जब वे आदमी खण्डहर से बाहर हो मैदान की तरफ़ चले गये बल्कि बहुत दूर निकल गये, तब कामिनी भी कोठरी में से निकली और चारों तरफ देखने लगी। उसे आज तक यही विश्वास था कि इस खण्डहर का हाल शेरसिंह कमला मेरे और उस लम्बे आदमी के सिवाय जो शेरसिंह से मिलने के लिए यहाँ आया था किसी पाँचवें को मालूम नहीं है, मगर आज की क़ैफ़ियत देखकर उसका ख़याल बदल गया और वह तरह-तरह के सोच-विचार में पड़ गयी। थोड़ी देर बाद वह उसी कोठरी की तरफ़ बढ़ी, जिसमें वे लोग लाश छोड़ गये थे, मगर उस कोठरी में ऐसा अन्धकार था कि अन्दर जाने का साहस न पड़ा। आख़िर अपने तहखाने में गयी और शेरसिंह के पेटारे में से एक मोमबत्ती निकालकर और बाल-कर बाहर निकली। पहिले उसने रोशनी के आगे हाथ की आड़ देकर चारों तरफ देखा और फिर उस कोठरी की तरफ रवाना हुई। जब कोठरी के दरवाज़े पर पहुँची तो उसकी निगाह एक आदमी पर पड़ी, जिसे देखते ही चौंकी और डरकर दो क़दम पीछे हट गयी, मगर उसकी होशियार आँखों ने तुरन्त पहिचान लिया कि वह आदमी असल में मुर्दे से भी बढ़कर है अर्थात् पत्थर की एक खड़ी मूरत है, जो सामने की दीवार के साथ चिपकी हुई है। आज के पहिले इस कोठरी के अन्दर कामिनी नहीं आयी थी, इसलिए वह हर एक तरफ़ अच्छी तरह ग़ौर से देखने लगी परन्तु उसे इस बात का खटका बराबर लगा रहा कि कहीं वे चारों आदमी फिर न आ जाँय।

कामिनी को उम्मीद थी कि इस कोठरी के अन्दर वह लाश दिखायी देगी जिसे चारों आदमी उठाकर लाये थे, मगर कोई लाश दिखायी न पड़ी, आख़िर उसने ख़याल किया कि शायद वे लोग लाश की जगह मूरत को लाये हो, जो सामने दीवार के साथ खड़ी है। कामिनी उस

कोठरी के अन्दर घुसकर मूरत के पास जा खड़ी हुई और उसे अच्छी तरह देखने लगी। उसे बड़ा ताज्जुब हुआ जब उसने अच्छी तरह जाँच करने पर निश्चय कर लिया कि वह मूरत दीवार के साथ है अर्थात् इस तरह पर जड़ी हुई है कि बिना टुकड़े-टुकड़े हुए किसी तरह दीवार से अलग नहीं हो सकती। कामिनी की चिन्ता और बढ़ गयी। अब उसे इसमें किसी तरह का शक न रहा कि वे चारों आदमी ज़रूर किसी की लाश को उठा लाये थे इस मूरत को नहीं, मगर वह लाश गयी कहाँ ? क्या ज़मीन खा गयी या किसी चूने के ढेर के नीचे दबा दी गयी ! नहीं मिट्टी या चून के नीचे वह लाश दाबी नहीं गयी, अगर ऐसा होता तो ज़रूर देखने में आता, उन लोगों ने जो कुछ किया इसी कोठरी के अन्दर किया।

कामिनी उस मूरत के पास खड़ी देर तक सोचती रही, आखिर वहाँ से लौटी और धीरे-धीरे अपने तहख़ाने में आकर बैठ गयी, वहाँ एक ताक (आले) पर चिराग़ जल रहा था इसलिए मोमबत्ती बुझाकर बिछौने पर जा लेटी और फिर सोचने लगी।

इसमें कोई शक नहीं कि वे लोग कोई लाश उठाकर लाये थे, मगर वह लाश कहाँ गयी। ख़ैर, इससे कोई मतलब नहीं, मगर अब यहाँ रहना भी कठिन हो गया क्योंकि यहाँ कई आदमियों की आमदरफ़्त शुरू हो गयी, शायद कोई मुझे देख ले तो मुश्किल होगी, अब होशियार हो जाना चाहिए क्योंकि मुझे बहुतकुछ काम करना है। कमला या शेरसिंह भी अभी तक न आये, अब उनसे भी मुलाकात होने की कोई उम्मीद न रही, अच्छा दो-तीन दिन और यहाँ रहकर देखा चाहिए कि वे लोग फिर आते हैं या नहीं।

कामिनी इन सब बातों को सोच ही रही थी कि एक आवाज़ उसके कान में आयी। उसे मालूम हुआ कि किसी औरत ने दर्दनाक आवाज़ में यह कहा, "क्या दुःख ही भोगने के लिए मेरा जन्म हुआ था।" यह आवाज़ ऐसी दर्दनाक थी कि कामिनी का कलेजा काँप गया। इस छोटी ही उम्र में वह भी बहुत तरह के दुःख भोग चुकी थी और उसका कलेजा ज़ख्मी हो चुका था इसलिए बर्दाश्त न कर सकी, आँखें भर आयीं और आँसू की बूँदें टपाटप गिरने लगीं। फिर आवाज़ आयी, "हाय मौत को भी मौत आ गयी !" अबकी दफ़े कामिनी बेतरह चौंकी और यकायक बोल उठी, "इस आवाज़ को तो मैं पहिचानती हूँ, ज़रूर उसीं की आवाज़ है !"

कामिनी उठ खड़ी हुई और सोचने लगी कि यह आवाज किधर से

आयी ? बन्द कोठरी में आवाज आना असम्भव है, कहीं खिड़की, सूराख या दीवार में दरार हुए बिना आवाज़ किसी तरह नहीं आ सकती। वह कोठरी में हर तरफ़ घूमने और देखने लगी। यकायक उसकी निगाह एक तरफ़ की दीवार के ऊपरी हिस्से पर जा पड़ी और वहाँ एक सूराख़, जिसमें आदमी का हाथ बखूबी जा सकता था, दिखायी पड़ा। कामिनी ने सोचा कि बेशक इसी सूराख़ में से आवाज़ आयी है। वह सूराख़ की तरफ़ देखने लगी, फिर आवाज़ आयी—"हाय, न मालूम मैंने किसी का क्या बिगाड़ा है !"

अब कामिनी को विश्वास हो गया कि यह आवाज़ उसी सूराख में से आयी है। वह बहुत ही बेचैन हुई और धीरे-धीरे कहने लगी, "बेशक यह उसी की आवाज़ है। हाय मेरी प्यारी बहिन किशोरी, मैं तुझे क्योंकर देखूँ और किस तरह मदद करूँ ? इस कोठरी के बग़ल में ज़रूर कोई दूसरी कोठरी है, जिसमें तू क़ैद है, मगर न मालूम उसका रास्ता किधर से है ? मैं क्योंकर तुझ तक पहुँचूँ और इस आफ़त से तुझे छुड़ाऊँ ? इस कोठरी की कमबख्त संगीन दीवार भी ऐसी मज़बूत है कि मेरे उद्योग से सेंध भी नहीं लग सकती। हाय, अब मैं क्या करूँ ? भला पुकारके देखूँ तो सही कि आवाज़ भी उसके कानों तक पहुँचती है या नहीं ?"

कामिनी ने मोखे (सूराख़) की तरफ़ मुँह करके कहा, "क्या मेरी प्यारी बहिन किशोरी की आवाज़ आ रही है ?"

जवाब : हाँ, क्या तू कामिनी है ? बहिन कामिनी, क्या तू भी मेरी ही तरह इस मकान में क़ैद है ?

कामिनी : नहीं बहिन मैं क़ैद नहीं हूँ, मगर···

कामिनी और कुछ कहा ही चाहती थी कि धमधमाहट की आवाज़ सुनकर रुक गयी और डरकर सीढ़ी की तरफ देखने लगी। उसे मालूम हुआ कि कोई यहाँ आ रहा है।

नौवाँ बयान

गिल्लन को साथ लिये हुए, बीबी गौहर रोहतासगढ़ किले के अन्दर जा पहुँची। किले के अन्दर जाने में किसी तरह का जाल फैलाना न पड़ा और न किसी तरह की कठिनाई हुई। वह बेधड़क किले के उस फाटक पर चली आयी, जो शिवालय के पीछे की तरफ़ था और छोटी खिड़की के पास खड़ी होकर खिड़की (छोटा दरवाज़ा) खोलने के लिए दर्बान को पुकारा, जब दर्बान ने पूछा, "तू कौन है ?" तो उसने जवाब दिया कि 'मैं शेरअलीखाँ

की लड़की गौहर हूँ'।

उन दिनों शेरअलीखाँ पटने का नामी सूबेदार था। वह शख्स बड़ा ही दिलेर जवाँमर्द और बुद्धिमान था, साथ ही इसके दग़ाबाज़ भी कुछ-कुछ था, मगर इसे वह राजनीति का एक अंग मानता था। उसके इलाक़े-भर में जोकुछ उसका रोआब था इसे कहाँ तक कहा जाय, दूर-दूर तक के आदमी उसका नाम सुनकर काँप जाते थे। उसके पास फौज तो केवल पाँच ही हजार थी, मगर वह उससे पचीस हज़ार फौज का काम लेता था क्योंकि उसने अपने ढंग के आदमी चुन-चुनकर अपनी फौज में भरती किये थे। गौहर उसी शेरअलीखाँ की लड़की थी और वह गौहर की मौसेरी बहिन थी, जो चुनारगढ़ के पासवाले जंगल में माधवी के हाथ से मारी गयी थी।

शेरअलीखाँ अपनी जोरू को बहुत चाहता था और उसी तरह अपनी लड़की गौहर को भी हद्द से ज़्यादे प्यार करता था। गौहर को दस वर्ष की छोड़कर उसकी माँ मर गयी थी। माँ के ग़म में गौहर दीवानी-सी हो गयी। लाचार दिल बहलाने के लिए शेरअलीखाँ ने ग़ौहर को आज़ाद कर दिया और वह थोड़े से आदमियों को साथ लेकर दूर-दूर सैर करती फिरती थी। पाँच वर्ष तक वह इसी अवस्था में रही, इसी बीच में आज़ादी मिलने के कारण उसकी चाल-चलन में भी फर्क पड़ गया था। इस समय गौहर की उम्र पन्द्रह वर्ष की है। शेरअलीखाँ दिग्विजयसिंह का दिली दोस्त था और दिग्विजयसिंह भी उसका बहुत भरोसा रखता था।

गौहर का नाम सुनते ही दर्बान चौंका और उसने उस अफ़सर को इत्तिला दी, जो कई सिपाहियों को साथ लेकर फाटक की हिफ़ाज़त पर मुस्तैद था। अफ़सर तुरन्त फाटक पर आया और उसने पुकारकर पूछा, "आप कौन हैं ?"

गौहर : मैं शेरअलीखाँ की लड़की गौहर हूँ।

अफ़सर : इस समय आपको संकेत बताना चाहिए।

गौहर : हाँ बताती हूँ,—'जोगिया'।

'जोगिया' सुनते ही अफ़सर ने दरवाजा खोलने का हुक्म दिया और गिल्लन को साथ लिये हुए गौहर किले के अन्दर पहुँच गयी। मगर गौहर बिल्कुल नहीं जानती थी कि थोड़ी ही दूर पर एक लम्बे कद का आदमी दीवार के साथ चिपका खड़ा है और उसकी बातें जो दर्बान के साथ हो रही थीं सुन रहा है।

जब गौहर क़िले के अन्दर चली गयी उसके आधे घण्टे बाद एक

लम्बे क़द का आदमी जिसे अब भूतनाथ कहना उचित है, उसी फाटक पर पहुँचा और दरवाज़ा खोलने के लिए उसने दर्बान को पुकारा।

दर्बान : तुम कौन हो ?

भूतनाथ : मैं शेरअलीखाँ का जासूस हूँ।

दर्बान : संकेत बताओ।

भूतनाथ : 'जोगिया'।

दरवाज़ा तुरत खोल दिया गया और भूतनाथ भी किले के अन्दर जा पहुँचा। गौहर वही परिचय देती हुई राजमहल तक चली गयी, जब उसके आने की ख़बर राजा दिग्विजयसिंह को दी गयी, उस समय रात बहुत कम बाक़ी थी और दिग्विजयसिंह मसहरी पर बैठा हुआ राजकीय विषयों में तरह-तरह की बातें सोच रहा था। गौहर के आने की ख़बर सुनते ही दिग्विजयसिंह ताज्जुब में आकर उठ खड़ा हुआ, उसे अन्दर आने की आज्ञा दी, बल्कि ख़ुद भी दरवाज़े तक इस्तक़बाल के लिए आया और बड़ी ख़ातिरदारी से उसे अपने कमरे में ले गया। आज पाँच वर्ष बाद दिग्विजयसिंह ने गौहर को देखा, इस समय, इसकी खूबसूरती और उठती हुई जवानी ग़ज़ब करती थी। उसे देखते ही दिग्विजयसिंह की तबीयत डोल गयी मगर शेरअलीखाँ के डर से रंग न बदल सका।

दिग्विजय : इस समय आपका आना क्योंकर हुआ और यह दूसरी औरत आपके साथ कौन है ?

गौहर : यह मेरी ऐयारा है। कई दिन हुए केवल आपसे मिलने के लिए सौ सिपाहियों को साथ लेकर मैं यहाँ आ रही थी, इत्तिफाक से बीरेन्द्रसिंह के ज़ालिम आदमियों ने मुझे गिरफ़्तार कर लिया। मेरे साथियों में से कई मारे गये और कई क़ैद हो गये। मैं भी चार दिन तक क़ैद रही, आख़िर इस चालाक ऐयारा ने, जो क़ैद होने से बच गयी थी, मुझे छुड़ाया। इस समय सिवाय इसके कि मैं इस किले में आ घुसूँ और कोई तदबीर जान बचाने की न सूझी। सुना है कि बीरेन्द्रसिंह वग़ैरह आजकल आपके यहाँ क़ैद हैं।

दिग्विजय : हाँ, वे लोग आजकल यहाँ क़ैद हैं। मैंने यह ख़बर आपके पिता को भी लिखी है।

गौहर : हाँ, मुझे मालूम है। वे भी आपकी मदद को आनेवाले हैं, उनका इरादा है कि बीरेन्द्रसिंह के लश्कर पर जो इस पहाड़ी के नीचे है, छापा मारें।

दिग्विजय : हाँ, मुझे तो एक उन्हीं का भरोसा है।

यद्यपि शेरअलीख़ाँ के डर से दिग्विजयसिंह गौहर के साथ अदब का

बर्ताव करता रहा मगर कमबख्त गौहर को यह मंजूर न था। उसने यहाँ तक हाव-भाव और चुलबुलापन दिखाया कि दिग्विजयसिंह की नीयत बदल गयी और वह एकान्त खोजने लगा।

गौहर तीन दिन से ज़्यादे अपने को बचा न सकी। इस बीच में उसने अपना मुँह काला करके दिग्विजयसिंह को क़ाबू में कर लिया और दिग्विजयसिंह से इस बात की प्रतिज्ञा करा ली कि बीरेन्द्रसिंह वग़ैरह जितने आदमी यहाँ क़ैद हैं, सभों का सिर काटकर किले के कँगूरों पर लटका दिया जायेगा और इसका बन्दोबस्त भी होने लगा। मगर इसी बीच में भैरोसिंह, रामनारायण और चुन्नीलाल ने जो किले के अन्दर पहुंच गये थे, वह धूम मचायी कि लोगों की नाक में दम कर दिया और मज़ा तो यह कि किसी को कुछ पता न लगता था कि यह कार्रवाई कौन कर रहा है।

दसवाँ बयान

बीरेन्द्रसिंह के तीनों ऐयारों ने रोहतासगढ़ के किले के अन्दर पहुँचकर अन्धेर मचाना शुरू किया। उन लोगों ने निश्चय कर लिया कि अगर दिग्विजयसिंह हमारे मालिकों को न छोड़ेगा तो ऐयारी के क़ायदे के बाहर काम करेंगे और रोहतासगढ़ का सत्यानाश करके छोड़ेंगे।

जिस दिन दिग्विजयसिंह की मुलाक़ात गौहर से हुई थी, उसके दूसरे ही दिन दरबार के समय दिग्विजयसिंह को ख़बर पहुँची कि शहर में कई जगह हाथ के लिखे हुए काग़ज़ दीवारों पर चिपके हुए दिखायी देते हैं, जिनमें लिखा है—"बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग इस किले में आ पहुँचे। यदि दिग्विजयसिंह अपनी भलाई चाहें तो चौबीस घण्टे के अन्दर राजा बीरेन्द्रसिंह वग़ैरह को छोड़ दें, नहीं तो देखते-देखते रोहतासगढ़ सत्यानाश हो जायगा और यहाँ का एक आदमी जीता न बचेगा।"

राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐय़ारों का हाल दिग्विजयसिंह अच्छी तरह जानता था। उसे विश्वास था कि उन लोगों का मुकाबला करनेवाला दुनिया में कोई नहीं है। विज्ञापन का हाल सुनते ही वह काँप उठा और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए। इस विज्ञापन की ख़बर बात-की-बात शहर-भर में फैल गयी, मारे डर के वहाँ की रिआया का दम निकला जाता था। सबकोई अपने राजा दिग्विजयसिंह की शिकायत करते थे और कहते थे कि कमबख्त ने बेफ़ायदे राजा बीरेन्द्रसिंह से वैर बाँधकर हम लोगों की जान ली।

तीनों ऐयारों ने तीन काम बाँट लिये । रामनारायण ने इस बात का जिम्मा लिया कि किसी लोहार के यहाँ चोरी करके बहुत-सी कीलें इकट्ठी करेंगे और रोहतासगढ़ में जितनी तोपें हैं, सभी में कील ठोंक देंगे,* चुन्नीलाल ने वादा किया कि तीन दिन के अन्दर रामानन्द ऐयार का सिर काट शहर के चौमुहाने पर रक्खेंगे, और भैरोसिंह ने तो रोहतासगढ़ ही को चौपट करने का प्रण किया था ।

हम ऊपर लिख आये हैं कि जिस समय कुन्दन (धनपति) ने तहख़ाने में से किशोरी को निकाल ले जाने का इरादा किया था तो बारह नम्बर की कोठरी में पहुँचने के पहले तहख़ाने के दरवाज़े में ताला लगा दिया था, मगर रोहतासगढ़ दख़ल होने के बाद तहख़ानेवाली किताब की मदद से जो दारोग़ा के पास रहा करती थी, वे दरवाजे पुनः खोल लिये गये थे और इसलिए दीवानख़ाने की राह से तहख़ाने में फिर आमदरफ़्त शुरू हो गयी थी ।

एक दिन आधी रात के बाद राजा दिग्विजयसिंह के पलंग पर बैठी हुई गौहर ने इच्छा प्रकट की कि मैं तहख़ाने में चलकर राजा बीरेन्द्रसिंह वग़ैरह को देखा चाहती हूँ । राजा दिग्विजयसिंह उसकी मुहब्बत में चूर हो रहे थे, दीन-दुनिया की ख़बर भूले हुए थे, तहख़ाने के क़ायदे पर ध्यान न देकर गौहर को तहख़ाने में ले चले ।

अभी पहिला दरवाज़ा भी खोला न था कि यकायक भयानक आवाज़ आयी । मालूम हुआ कि मानों हज़ारों तोपें एक साथ छूटी हैं, तमाम किला हिल उठा, गौहर बदहवास होकर ज़मीन पर गिर पड़ी, दिग्विजय-सिंह भी खड़ा न रह सका ।

जब दिग्विजयसिंह को होश आया, छत पर चढ़ गया और शहर की तरफ देखने लगा । शहर में बेहिसाब आग लगी हुई थी, सैकड़ों घर जल रहे थे, अग्निदेव ने अपना पूरा दख़ल जमा लिया था, आग के बड़े-बड़े शोले आसमान की तरफ उठ रहे थे । यह हाल देखते ही दिग्विजयसिंह ने सर पीटा और कहा, "यह सब फ़साद बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का है ! बेशक उन लोगों ने मेगजीन में आग लगा दी और वह भयंकर आवाज़ मेगजीन के उड़ने की ही थी । हाय, सैकड़ों घर तबाह हो गये होंगे ! इस समय वह कमबख्त साधू अगर मेरे सामने होता तो मैं उसकी दाढ़ी नोच लेता, जिसके बहकाने से बीरेन्द्रसिंह वग़ैरह को क़ैद किया !"

---

* तोप में रञ्जक देने की जो प्याली होती है, उसके छेद में कील ठोंक देने से तोप बेकाम हो जाती है ।

दिग्विजयसिंह घबड़ाकर राजमहल के बाहर निकला और तब उसे निश्चय हो गया कि जोकुछ उसने सोचा था ठीक है। नौकरों ने ख़बर दी कि न मालूम किसने मेगजीन में आग लगा दी, जिसके सबब से सैकड़ों घर तबाह हो गये, उसी समय शहर में आग लग गयी, जो अभी तक बुझाये नहीं बुझती। इस ख़बर के सुनते ही दिग्विजयसिंह अपने कमरे में लौट गया और बदहवास होकर गद्दी पर गिर पड़ा।

बेशक, यह सब काम बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का था। इस आगलगी में रामनारायण को भी तोपों में कीलें ठोंकने का खूब मौका हाथ लगा। रामानन्द दीवान घबड़ाकर घर से बाहर निकला और तहकीक़ात करने के लिए अकेला ही शहर की तरफ़ चला। रास्ते में चुन्नीलाल ने हाथ पकड़ लिया और कहा, "दीवानजी, बन्दगी!" बेमौक़े की बन्दगी से रामानन्द कुढ़ उठा और उसने चुन्नीलाल पर तलवार चलायी। चुन्नीलाल उछलकर दूर जा खड़ा हुआ और उस वार को बचा गया, मगर चुन्नीलाल के वार ने रामानन्द का काम तमाम कर दिया, उसकी भुजाली रामानन्द की गर्दन पर ऐसी बैठी कि सर कटकर दूर जा गिरा।

अब हमको यह भी लिखना चाहिए कि भैरोंसिंह ने किस तरह मेगजीन में आग लगायी। भैरोंसिंह ने एक मोमबत्ती ऐसी तैयार की जो केवल दो घण्टे तक जल सकती थी अर्थात् उसमें दो घण्टे से ज्यादे देर तक जलने लायक मोम न था, और उस मोमबत्ती के बीचोंबीच में आतिशबाजी का एक अनार बनाया जिसमें आधी मोमबत्ती जब जल जाय तो आप-से-आप अनार में आग लगे। जब इस तरह की मोमबत्ती तैयार हो गयी तो उसने अपने दोनों साथियों से कहा कि 'मैं मेगजीन में आग लगाने जाता हूँ, अपनी फिक्र आप कर लूँगा। तुम लोग किसी ऐसी जगह जाकर छिपो, जहाँ मैदान या किले की मजबूत दीवार हो, मगर इसके पहिले शहर में आग लगा दो।' इसके बाद भैरोंसिंह मेगजीन के पास पहुँचे और इस फिक्र में लगे कि मौक़ा मिले तो कमन्द लगाकर उसके अन्दर जाँय।

यह इमारत बहुत बड़ी तो न थी मगर मजबूत थी, दीवार बहुत चौड़ी और ऊँची थी, फाटक बहुत बड़ा और लोहे का था, पहरे पर पचास आदमी नंगी तलवार लिये, हर वक्त मुस्तैद रहते थे। इस मेगजीन के चारों तरफ से कोई आदमी आग लेकर जाने नहीं पाता था।

चन्द्रमा अस्त हो गया और पिछली रात की अँधेरी चारों तरफ फैल गयी, निद्रादेवी की हुकूमत में सभी पड़े हुए थे, यहाँ तक कि पहरेवालों की आँखें भी झिपी पड़ती थीं, उस समय मौका पाकर भैरोंसिंह ने मेगजीन के पिछली तरफ कमन्द लगायी। दीवार के ऊपर चढ़ जाने बाद

कमन्द खैंच ली और फिर उसी के सहारे उतर गये। मेगजीन के अन्दर हज़ारों थैले बारूद के गँजे हुए पड़े थे, तोप के गोलों का ढेर लगा हुआ था, बहुत-सी तोपें भी पड़ी हुई थीं। भैरोंसिंह ने यह मोमबत्ती जलायी और बारूद के थैलों के पास ज़मीन पर लगाकर खड़ी कर दी, इसके बाद फुर्ती से मेगजीन के बाहर हो गये और जहाँ तक दूर निकल जाते बना, निकल गये। उसी के घण्टे-भर बाद (जब मोमबत्ती का अनार छूटा होगा) बारूद में आग लगी और मेगजीन की इमारत जड़-बुनियाद से सत्यानाश हो गयी, हज़ारों आदमी मरे और सैकड़ों मकान गिर पड़े, बल्कि यों कहना चाहिए कि उसकी आवाज़ से रोहतासगढ़ का किला दहल उठा, ज़रूर कई कोस तक इसकी भयानक आवाज़ गयी होगी। पहाड़ी के नीचे बीरेन्द्रसिंह के लश्कर में जब यह आवाज़ पहुँची तो दोनों सेनापति समझ गये कि मेगजीन में अ ग लगी, क्योंकि ऐसी भयानक आवाज़ सिवाय मेगजीन उड़ने के और किसी तरह की नहीं हो सकती, बेशक यह काम भैरोंसिंह का है।

मेगजीन उड़ने का निश्चय होते ही दोनों सेनापति बहुत प्रसन्न हुए और समझ गये कि अब रोहतासगढ़ का किला फ़तह कर लिया, क्योंकि जब बारूद का खजाना ही उड़ गया तो किलेवाले तोपों के ज़रिये से हमें क्योंकर रोक सकते हैं। दोनों सेनापतियों ने यह सोचकर कि अब विलम्ब करना मुनासिब नहीं है किले पर चढ़ाई कर दी और दो हज़ार आदमियों को साथ ले नाहरसिंह पहाड़ पर चढ़ने लगा। यद्यपि दोनों सेनापति इस बात को समझते थे कि मेगजीन उड़ गयी है, तो भी कुछ बारूद तोपखाने में जरूर होगी, मगर यह ख़याल उनके बढ़े हुए हौसले को किसी तरह रोक न सका।

इधर दिग्विजयसिंह अपनी ज़िन्दगी से बिल्कुल नाउम्मीद हो बैठा। जब उसे यह ख़बर पहुँची कि रामानन्द दीवान या ऐयार भी मारा गया और बहुत-सी तोपें भी कील ठुक जाने के कारण बर्बाद हो गयीं तब वह और बेचैन हो गया और मालूम होने लगा कि मौत नंगी तलवार लिये सामने खड़ी है। वह पहर-दिन चढ़े तक पागलों की तरह चारों तरफ दौड़ता रहा और तब एकान्त में बैठकर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए। जब उसे जान बचाने की तरकीब न सूझी और यह निश्चय हो गया कि अब रोहतासगढ़ का किला किसी तरह नहीं रह सकता और दुश्मन लोग भी मुझे किसी तरह जीता नहीं छोड़ सकते तब वह हाथ में नंगी तलवार लेकर उठा और तहख़ाने की ताली निकालकर यह कहता हुआ तहखाने की तरफ़ चला कि 'जब मेरी जान बच ही नहीं सकती तो

बीरेन्द्रसिह और उनके लड़के वग़ैरह को क्यों जीता छोड़ूँ ? आज मैं अपने हाथ से उन लोगों का सिर काटूँगा' ।

दिग्विजयसिंह हाथ में नंगी तलवार लिये हुए अकेला ही तहखाने में गया, मगर जब उस दालान में पहुँचा, जिसमें हथकड़ियों और बेड़ियों से कसे हुए बीरेन्द्रसिंह वग़ैरह रक्खे गये थे, तो उसको खाली पाया । वह ताज्जुब में आकर चारों तरफ देखने और सोचने लगा कि कैदी लोग कहाँ गायब हो गये । मालूम होता है कि यहाँ भी ऐयार लोग आ पहुँचे मगर देखना चाहिए कि किस राह से पहुँचे ?

दिग्विजयसिंह उस सुरंग में गया जो कब्रिस्तान की तरफ निकल गयी थी, वहाँ का दरवाजा उसी तरह बन्द पाया जैसा उसने अपने हाथ से बन्द किया था । आखिर लाचार सिर पीटता हुआ लौट आया और दीवानख़ाने में बदहवास होकर गद्दी पर गिर पड़ा ।

ग्यारहवाँ बयान

इस जगह मुख़्तसर ही में यह भी लिख देना मुनासिब मालूम होता है कि रोहतासगढ़ तहख़ाने में से राजा बीरेन्द्रसिंह, कुँअर आनन्दसिंह और उनके ऐयार लोग क्योंकर छूटे और कहाँ गये ।

हम ऊपर लिख आये हैं कि जिस समय गौहर 'जोगिया' का संकेत देकर रोहतासगढ़ किले में दाख़िल हुई, उसके थोड़ी ही देर बाद एक लम्बे क़द का आदमी भी जो असल में भूतनाथ था, 'जोगिया' का संकेत देकर किले के अन्दर चला गया । न मालूम उसने वहाँ क्या-क्या कार्रवाई की, मगर जिस समय मेगजीन उड़ायी गयी थी, उस समय वह एक चोबदार की सूरत बना राजमहल के आस-पास घूम रहा था । जब राजा दिग्विजय-सिंह घबड़ाकर महल के बाहर निकला था और चारों तरफ़ कोलाहल मचा हुआ था, वह इस तरह महल के अन्दर घुस गया कि किसी को गुमान भी न हुआ । इसके पास ठीक वैसी ही ताली मौजूद थी, जैसी तहख़ाने की ताली राजा दिग्विजयसिंह के पास थी । भूतनाथ जल्दी-ज़ल्दी उस घर में पहुँचा, जिसमें तहख़ाने के अन्दर जाने का रास्ता था । उसने तुरन्त दरवाजा खोला और अन्दर जाकर उसी ताली से फिर बन्द कर दिया । उस दरवाज़े में एक ही ताली बाहर-भीतर दोनों तरफ़ से लगती थी । कई दरवाज़ों को खोलता हुआ यह उस दालान में पहुँचा, जिसमें बीरेन्द्रसिंह वग़ैरह क़ैद थे और राजा बीरेन्द्रसिंह के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया । राजा बीरेन्द्रसिंह उस समय बड़ी चिन्ता में थे । मेगजीन

उड़ने की आवाज़ उनके कान तक भी पहुँची थी, बल्कि मालूम हुआ कि उस आवाज़ के सदमे से समूचा तहख़ाना हिल गया। वे भी यही सोच रहे थे कि शायद हमारे ऐयार लोग किले के अन्दर पहुँच गये। जिस समय भूतनाथ हाथ जोड़कर उनके सामने जा खड़ा हुआ वे चौंके और भूतनाथ की तरफ़ देखकर बोले, "तू कौन है और यहाँ क्यों आया ?"

भूतनाथ : यद्यपि मैं इस समय एक चोबदार की सूरत में हूँ मगर मैं हूँ कोई दूसरा ही, मेरा नाम भूतनाथ है, मैं आप लोगों को इस क़ैद से छुड़ाने आया हूँ और इसका इनाम पहिले ही ले लिया चाहता हूँ।

बीरेन्द्र : (ताज्जुब में आकर) इस समय मेरे पास क्या है जो मैं इनाम में दूँ ?

भूतनाथ : जो मैं चाहता हूँ वह इस समय भी आपके पास मौजूद है।

बीरेन्द्र : यदि मेरे पास मौजूद है तो मैं देने को तैयार हूँ, माँग क्या माँगता है !

भूतनाथ : बस मैं यही माँगता हूँ कि आप मेरा क़सूर माफ़ कर दें, और कुछ नहीं चाहता।

बीरेन्द्र : मगर मैं कुछ नहीं जानता कि तू कौन है और तूने क्या अपराध किया है, जिसे मैं माफ़ कर दूँ।

भूतनाथ : इसका जवाब मैं इस समय नहीं दे सकता, बस आप देर न करें, मेरा कसूर माफ़ कर दें, जिससे आप लोगों को यहाँ से जल्द छुड़ाऊँ, समय बहुत कम है, विलम्ब करने से पछताना पड़ेगा।

तेजसिंह : पहिले तुम्हें कसूर साफ़-साफ़ कह देना चाहिए।

भूतनाथ : ऐसा नहीं हो सकता !

भूतनाथ की बातें सुनकर सभी हैरान थे और सोचते थे कि यह विचित्र आदमी है, जो ज़बर्दस्ती अपना कसूर माफ करा रहा है और यह भी नहीं कहता कि उसने क्या किया है। इसमें शक नहीं कि यदि हम लोगों को यहाँ से छुड़ा देगा तो भारी एहसान करेगा, मगर इसके बदले में यह केवल इतना ही माँगता है कि इसका कसूर माफ़ कर दिया जाय तो यह मामला क्या है ! आखिर बहुत कुछ सोच-समझकर राजा बीरेन्द्रसिंह ने भूतनाथ से कहा, "खैर जो हो, मैंने तेरा कसूर माफ किया।"

इतना सुनते ही भूतनाथ हँसा और बारह नम्बर की कोठरी के पास जाकर उसी ताली से जो उसके पास थी, कोठरी का दरवाजा खोला। पाठक महाशय भूले न होंगे, उन्हें याद होगा कि इसी कोठरी में किशोरी को दिग्विजयसिंह ने डाल दिया था और इसी कोठरी में से उसे कुन्दन

ले भागी थी ।

कोठरी का दरवाजा खुलते ही हाथ में नेजा लिये वही राक्षसी दिखायी पड़ी, जिसका हाल ऊपर लिख चुके हैं और जिसके सबब से कमला, भैरोसिंह, रामनारायण और चुन्नीलाल किले के अन्दर पहुँचे थे। इस समय तहखाने में केवल एक चिराग़ जल रहा था, जिसकी कुछ रोशनी चारों तरफ फैली हुई थी, मगर जब वह राक्षसी कोठरी के बाहर निकली तो उसके नेजे की चमक से तहखाने में दिन की तरह उजाला हो गया। भयानक सूरत के साथ उसके नेजे ने सभों को ताज्जुब में डाल दिया। उस औरत ने भूतनाथ से पूछा, "तुम्हारा काम हो गया?" इसके जवाब में भूतनाथ ने कहा—"हाँ।"

उस राक्षसी ने राजा बीरेन्द्रसिंह की तरफ देखकर कहा, "सभों को लेकर आप इस कोठरी में आवें और तहखाने के बाहर निकल चलें, मैं इसी राह से आप लोगों को तहखाने के बाहर कर देती हूँ।" यह बात सभों को मालूम ही थी कि इसी बारह नम्बर की कोठरी में से किशोरी गायब हो गयी थी, इसलिए सभों को विश्वास था कि इस कोठरी में से कोई रास्ता बाहर निकल जाने के लिए जरूर है।

सभों की हथकड़ी-बेड़ी खोल दी गयी, इसके बाद सबकोई उस कोठरी में घुसे और राक्षसी की मदद से तहखाने के बाहर हो गये। जाते समय राक्षसी ने उस कोठरी को बन्द कर दिया। बाहर होते ही राक्षसी और भूतनाथ राजा बीरेन्द्रसिंह वग़ैरह से बिना कुछ कहे चले गये और जंगल में घुसकर देखते-ही-देखते नजरों से गायब हो गये। उन दोनों के बारे में सभों को शक बना ही रहा।

बारहवाँ बयान

दो पहर दिन चढ़ने के पहिले ही फौज लेकर नाहरसिंह, रोहतासगढ़ पहाड़ी के ऊपर चढ़ गया। उस समय दुश्मनों ने लाचार होकर फाटक खोल दिया और लड़-भिड़कर जान देने पर तैयार हो गये। किले की कुल फौज फाटक पर उमड़ आयी और फाटक के बाहर मैदान में घोर युद्ध होने लगा। नाहरसिंह की बहादुरी देखने योग्य थी। वह हाथ में तलवार लिये जिस तरफ़ को निकल जाता था, सफ़ाई कर देता था। उसकी बहादुरी देखकर उसके मातहत फौज की भी हिम्मत दूनी हो गयी और ककड़ी की तरह दुश्मनों को काटने लगे। उसी समय पाँच-सौ बहादुरों को साथ लिये राजा बीरेन्द्रसिंह, कुँअर आनन्दसिंह और तेजसिंह वगैरह भी आ

पहुँचे और उस फौज में मिल गये, जो नाहरसिंह की मातहती में लड़ रही थी। ये पाँच-सौ आदमी उन्हीं की फौज के थे, जो दो-दो चार-चार करके पहाड़ के ऊपर चढ़ाये गये थे। तहख़ाने से बाहर निकलने पर राजा बीरेन्द्रसिंह से इनकी मुलाक़ात हुई थी और सब एक जगह हो गये थे।

जिस समय किलेवालों को यह मालूम हुआ कि राजा बीरेन्द्रसिंह वग़ैरह भी उस फौज में आ मिले, उस समय उनकी हिम्मत बिल्कुल जाती रही। बिना दिल का हौसला निकाले ही उन लोगों ने हथियार रख दिये और सुलह का डंका बजा दिया। पहाड़ी के नीचे से और फौज भी पहुँच गयी और रोहतासगढ़ में राजा बीरेन्द्रसिंह की अमलदारी हो गयी। जिस समय राजा बीरेन्द्रसिंह दीवानखाने में पहुँचे, वहाँ राजा दिग्विजयसिंह की लाश पायी गयी। मालूम हुआ कि उसने आत्मघात कर लिया। उसकी हालत पर राजा बीरेन्द्रसिंह देर तक अफ़सोस करते रहे।

राजा बीरेन्द्रसिंह ने कुँअर आनन्दसिंह को गद्दी पर बैठाया। सभों ने नज़रें दीं। उसी समय कमला भी आ पहुँची। उसने किले में पहुँचकर कोई ऐसा काम नहीं किया था, जो लिखने लायक़ हो, हाँ गिल्लन के सहित गौहर को जरूर गिरफ़्तार कर लिया था। दिग्विजयसिंह की रानी अपने पति के साथ सती हुई। रामानन्द की स्त्री भी अपने पति के साथ जल मरी। शहर में कुमार के नाम की मुनादी करा दी गयी और यह कहला दिया गया कि जो रोहतासगढ़ से निकल जाना चाहे, वह खुशी से चला जाय। दिग्विजयसिंह के मरने से जिसे कष्ट हुआ हो, वह यदि हमारे भरोसे पर यहाँ रहेगा तो उसे किसी तरह का दुःख न होगा, हरएक की मदद की जायगी और जो जिस लायक है, उसकी ख़ातिर की जायगी। इन सब कामों के बाद राजा बीरेन्द्रसिंह ने कुल हाल की चीठी लिखकर अपने पिता के पास रवाना की।

दूसरे दिन राजा बीरेन्द्रसिंह ने एकान्त में कमला को बुलाया। उस समय उनके पास कुँअर आनन्दसिंह, तेजसिंह, भैरोसिंह, तारासिंह वग़ैरह ऐयार लोग ही बैठे थे, अर्थात् सिवाय आपुसवालों के बाहरी आदमी कोई भी न था। राजा बीरेन्द्रसिंह ने कमला से पूछा, "कमला तू इतने दिनों तक कहाँ रही, तेरे ऊपर क्या-क्या मुसीबतें आयीं, और तू किशोरी का क्या-क्या हाल जानती है सो मैं सुना चाहता हूँ।"

कमला : (हाथ जोड़कर) जोकुछ मुसीबतें मुझ पर आयीं और जो-कुछ किशोरी का हाल मैं जानती हूँ, सब अर्ज़ करती हूँ। अपनी प्यारी किशोरी से छूटने बाद मैं बहुत ही परेशान हुई। अग्निदत्त की लड़की कामिनी ने जब किशोरी को अपने बाप के पंजे से छुड़ाया और खुद भी

निकल खड़ी हुई तो पुनः मैं उन लोगों से जा मिली और बहुत दिनों तक गयाजी में रही और वहीं बहुत-सी विचित्र बातें हुईं।

बीरेन्द्र : हाँ, गयाजी का बहुतकुछ हाल तुम लोगों के बारे में देवीसिंह की ज़ुबानी मुझे मालूम हुआ था और यह भी जाना गया था कि जिन दिनों इन्द्रजीत बीमार था, उसके कमरे में जो-जो अद्भुत बातें देखने-सुनने में आयीं, वह सब कामिनी ही की कार्रवाई थीं, मगर उनमें से कई बातों का भेद अभी तक मालूम नहीं हुआ।

कमला : वह क्या ?

बीरेन्द्र : एक तो यह कि तुम लोग उस कोठरी में किस रास्ते से आती-जाती थीं, दूसरे लड़ाई किससे हुई थी, वह कटा हाथ जो कोठरी में पाया गया था किसका था, और बिना सिर की लाश किसकी थी ?

कमला : वह भेद भी मैं आपसे कहती हूँ। गयाजी में फलगू नदी के किनारे एक मन्दिर श्री राधाकृष्णजी का है। उसी मन्दिर में से एक रास्ता महल में जाने का है जो उस कोठरी में निकला है, जिसका हाल माधवी, अग्निदत्त और कामिनी के सिवाय किसी को मालूम नहीं, कामिनी की बदौलत मुझे और किशोरी को मालूम हुआ। उसी रास्ते से हम लोग आते-जाते थे। वह रास्ता बड़ा ही विचित्र है, उसका हाल मैं ज़ुबानी नहीं समझा सकती, गयाजी चलने बाद जब मौका मिलेगा तो ले चलकर उसे दिखाऊँगी। हम लोगों का उस मकान में आना-जाना नेकनीयती के साथ होता था मगर जब माधवी गयाजी में पहुँची तो बदला लेने की नीयत से एक आदमी और अपनी ऐयारा को साथ ले उसी राह से महल की तरफ़ रवाना हुई। उसे उस समय तक शायद हम लोगों का हाल मालूम न था। इत्तिफाक से हम तीनों आदमी भी उसी समय सुरंग में घुसे, आखिर नतीजा यह हुआ कि उस कोठरी में पहुँचकर लड़ाई हो गयी, माधवी के साथ का आदमी मारा गया। वह कलाई माधवी की थी और मेरे हाथ से कटी थी। अन्त में उसकी ऐयारा उस आदमी का सर और माधवी को लेकर चली गयी, हम लोगों ने उस समय रोकना मुनासिब न समझा।

बीरेन्द्र : हाँ, ठीक है, ऐसा ही हुआ है, यह हाल मुझे मालूम था, मगर शक मिटाने के लिए तुमसे पूछा था।

कमला : (ताज्जुब में आकर) आपको कैसे मालूम हुआ ?

बीरेन्द्र : मुझसे देवीसिंह ने कहा था और देवीसिंह को उस साधु ने कहा था, जो रामशिला पहाड़ी के सामने फलगू नदी के बीचवाले भयानक टीले पर रहता था। देवीसिंह की ज़ुबानी बाबाजी ने मुझे एक सन्देशा भी

कहला भेजा था, मौक़ा मिलने पर मैं जरूर उनके हुक्म की तामील करूँगा।

कमला : वह सन्देशा क्या था ?

बीरेन्द्र : सो इस समय न कहूँगा। हाँ, यह तो बता कि कामिनी का और उन डाकुओं का साथ क्योंकर हुआ, जो गयाजी की रिआया को दुःख देते थे।

कमला : कामिनी का उन डाकुओं से मिलना केवल उन लोगों को धोखा देने के लिए था। वे डाकू सब अग्निदत्त की तरफ़ से तनख्वाह और लूट के माल में कुछ हिस्सा भी पाते थे। वे लोग कामिनी को पहिचानते थे और उसकी इज्ज़त करते थे। उस समय उन लोगों को यह नहीं मालूम था कि कामिनी अपने बाप से रंज होकर घर से निकली है, इसलिए उससे डरते थे और जो वह कहती थी, करते थे। आखिर कामिनी ने धोखा देकर उन लोगों को मरवा डाला और मेरे ही साथ से उन डाकुओं को जानें गयीं। वे डाकू लोग जहाँ रहते थे, आपको मालूम हुआ ही होगा।

बीरेन्द्र : हाँ मालूम हुआ है, जोकुछ मेरा शक था, मिट गया, अब उस विषय में विशेष कुछ मालूम करने की कोई जरूरत नहीं है। अब मैं यह पूछता हूँ कि इस रोहतासगढ़वाले आदमी जब किशोरी को ले भागे, तब तेरा और कामिनी का क्या हाल हुआ ?

कमला : कामिनी को साथ लेकर मैं उस खण्डहर से, जिसमें नाहरसिंह से और कुँअर इन्द्रजीतसिंह से लड़ाई हुई थी, बाहर निकली और किशोर को छुड़ाने की धुन में रवाना हुई, मगर कुछ कर न सकी, बल्कि यों कहना चाहिए कि अभी तक मारी फिरती हूँ। यद्यपि इस रोहतासगढ़ के महल तक पहुँच चुकी थी, मगर मेरे हाथ से कोई काम न निकला।

बीरेन्द्र : ख़ैर, कोई हर्ज़ नहीं, अच्छा यह बता कि अब कामिनी कहाँ है ?

कमला : कामिनी को मेरे चाचा शेरसिंह ने अपने एक दोस्त के घर में रक्खा है, मगर मुझे यह नहीं मालूम कि वह कौन है और कहाँ रहता है।

बीरेन्द्र : शेरसिंह से कामिनी क्योंकर मिली ?

कमला : यहाँ से थोड़ी ही दूर पर एक खण्डहर है। शेरसिंह से मिलने के लिए कामिनी को साथ लेकर में उसी खण्डहर में गयी थी। मगर अब सुनने में आया है कि शेरसिंह ने आपकी तावेदारी क़बूल कर ली और आपने उन्हें कहीं भेजा है।

बीरेन्द्र : हाँ, वह देवीसिंह को साथ लेकर इन्द्रजीत को छुड़ाने के लिए गये हैं, मगर न मालूम क्या हुआ कि अभी तक नहीं लौटे।

कमला : कुँअर इन्द्रजीतसिंह तो यहाँ से दूर न थे और चाचा को वह जगह मालूम थी, अब तक उन्हें लौट आना चाहिए था।

बीरेन्द्र : क्या तुझे भी वह जगह मालूम है ?

कमला : जी हाँ, यहाँ से शायद पच्चीस या तीस कोस से ज़्यादे दूर न होगा। एक छोटा-सा तालाब है, जिसके बीच में एक खूबसूरत मकान बना हुआ है, कुमार उसी में हैं।

बीरेन्द्र : क्या तू वहाँ तक मुझे ले जा सकती है ?

कमला : जी हाँ, आप जब चाहें चलें, मुझे रास्ता बखूबी मालूम है।

इस समय कुँअर आनन्दसिंह ने जो सिर झुकाये सब बातें सुन रहे थे, अपने पिता की तरफ़ देखा और कहा, "यदि आज्ञा हो तो मैं कमला के साथ भाई की खोज में जाऊँ ?" इसके जवाब में राजा बीरेन्द्रसिंह ने सिर हिलाया अर्थात् उनकी अर्ज़ी नामंज़ूर की।

राजा बीरेन्द्रसिंह और कमला में जोकुछ बातें हो रही थीं, सब कोई ग़ौर से सुन रहे थे। यह कहना ज़रा-मुश्किल है कि उस समय कुँअर आनन्दसिंह की क्या दशा थी। कामिनी के वे सच्चे आशिक थे, मगर वाह रे दिल, इस इश्क को उन्होंने जैसा छिपाया, उन्हीं का काम था। इस समय वे कमला की बातें बड़े ग़ौर से सुन रहे थे। उन्हें निश्चय था कि जिस जगह शेरसिंह ने कामिनी को रक्खा है, वह जगह कमला को मालूम है, मगर किसी कारण से बताती नहीं, इसलिए कमला के साथ भाई की खोज में जाने के लिए पिता से आज्ञा माँगी। इसके सिवाय कामिनी के विषय में और भी बहुत-सी बातें कमला से पूछा चाहते थे, मगर क्या करें, लाचार कि उनकी अर्ज़ी नामंज़ूर की गयी और वे कलेजा मसोसकर रह गये।

इसके बाद आनन्दसिंह फिर अपने पिता के सामने गये और हाथ जोड़कर बोले, "मैं एक बात और अर्ज़ किया चाहता हूँ।"

बीरेन्द्र : वह क्या ?

आनन्द : इस रोहतासगढ़ की गद्दी पर मैं बैठाया गया हूँ, परन्तु मेरी इच्छा है कि बतौर सूबेदार के यहां का राज्य किसी के सुपुर्द कर दिया जाय।

आनन्दसिंह की बात सुन राजा बीरेन्द्रसिंह ग़ौर में पड़ गये और कुछ देर तक सोचने के बाद बोले, "हाँ, मैं तुम्हारी इस राय को पसन्द

करता हूँ और इसका बन्दोबस्त तुम्हारे ही ऊपर छोड़ता हूँ, तुम जिसे चाहो इस काम के लिए चुन लो ।"

आनन्दसिंह ने झुककर सलाम किया और उन लोगों की तरफ देखा, जो वहाँ मौजूद थे। इस समय सभों के दिल में खुटका पैदा हुआ और सभी इस बात से डरने लगे कि कहीं ऐसा न हो कि यहाँ का बन्दोबस्त मेरे सुपुर्द किया जाय, क्योंकि उन लोगों में से कोई भी ऐसा न था, जो अपने मालिक का साथ छोड़ना पसन्द करता। आखिर आनन्दसिंह ने सोच-समझकर अर्ज़ किया—

आनन्द : मैं इस काम के लिए पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी को पसन्द करता हूँ।

बीरेन्द्र : अच्छी बात है, कोई हर्ज नहीं !

ज्योतिषीजी ने बहुत कुछ उज्र किया, बावेला मचाया, मगर कुछ सुना नहीं गया। उसी दिन से मुद्दत तक रोहतासगढ़ ब्राह्मणों की हुकूमत में रहा और यह हुकूमत हुमायूँ के ज़माने में 944 हिजरी तक कायम रही, इसके बाद 945 में दग़ाबाज शेरखाँ ने (यह दूसरा शेरखाँ था) रोहतासगढ़ के राजा चिन्तामन ब्राह्मण को धोखा देकर किले पर अपना कब्ज़ा कर लिया।

तेरहवाँ बयान

तहखाने में बैठी हुई कामिनी को जब किसी के आने की आहट मालूम हुई, तब वह सीढ़ी की तरफ देखने लगी, मगर आनेवाले अभी छत ही पर थे। उसने समझा कि कमला या शेरसिंह आते होंगे, मगर जब उसे कई आदमियों के पैर की धमधमाहट मालूम हुई, तब वह घबरायी। उसका खयाल दुश्मनों की तरफ गया और वह अपने बचाव का ढंग करने लगी।

ऊपर के कमरे से तहखाने में उतरने के लिए, जो सीढ़ियाँ थीं उसके नीचे एक छोटी कोठरी बनी हुई थी। इसी कोठरी में शेरसिंह का असबाब रहा करता था और इस समय भी उनका असबाब इसी के अन्दर था। इसके अन्दर जाने के लिए एक छोटा-सा दरवाजा था और लोहे का मजबूत मगर हल्का पल्ला लगा हुआ था। दरवाजा बन्द करने के लिए बाहर की तरफ कोई ज़ंजीर या कुण्डी न थी, मगर भीतर की तरफ एक अड़ानी लगी हुई जो दरवाजा बन्द करने के लिए काफी थी। दरवाज़े के पल्ले में एक सूराख था, जिस पर गौर करने से मालूम होता था कि

वह ताली लगाने की जगह है।

कामिनी ने तुरन्त चिराग बुझा दिया और अपने बिछावन को बगल में दबाकर उसी कोठरी के अन्दर चले जाने बाद भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया। यह काम कामिनी ने बड़ी जल्दी और दबे पैर किया। थोड़ी ही देर में कामिनी को मालूम हुआ कि आनेवाले सब सीढ़ी उतर रहे हैं और साथ ही इसके ताली लगानेवाले छेद में से मशाल की रोशनी भी उस कोठरी के अन्दर पहुँची, जिसमें कामिनी छिपी हुई थी। वह छेद में आँख लगाकर देखने लगी कि कौन आया है और क्या करता है।

सिपाहियाना ठाठ के पाँच आदमी ढाल तलवार लगाये हुए दिखायी पड़े। एक के हाथ में मशाल थी और चार आदमी एक सन्दूक को उठाकर लाये थे। ज़मीन पर सन्दूक रख देने बाद पाँचों आदमी बैठकर दम लेने और आपुस में यों बातचीत करने लगे—

मशाल वाला : जहन्नुम में जाय ऐसी नौकरी, दौड़ते-दौड़ते हैरान हो गये, ओफ।

दूसरा : खैर, दौड़ना और हैरान होना भी सुफल होता अगर कोई नेक काम हम लोगों के सुपुर्द होता।

तीसरा : भाई चाहे जो हो, मगर बेगुनाहों का खून नाहक मुझसे तो नहीं किया जाता!

चौथा : मुश्किल तो यह है कि हम लोग इनकार भी नहीं कर सकते और भाग भी नहीं सकते।

पाँचवाँ : परसों जो हुक्म हुआ है, सो तुमने सुना या नहीं!

मशाल : हाँ, मुझे मालूम है।

तीसरा : मैंने नहीं सुना, क्योंकि मैं नानक का पता लगाने गया था।

पाँचवाँ : परसों यह हुक्म दिया गया है कि जो कोई कामिनी को पकड़ लायेगा या पता लगा देगा, उसे मुँहमाँगी चीज़ इनाम में दी जायगी।

तीसरा : हम लोगों की ऐसी किस्मत कहाँ कि कामिनी हाथ लगे!

दूसरा : (चौंककर) चुप रहो, देखो किसी की आवाज़ आ रही है।

किशोरी से बात करते-करते जब किसी के आने की आहट मालूम हुई तो कामिनी चुप कर गयी थी। किशोरी को ताज्जुब मालूम हुआ कि यकायक कामिनी चुप कर गयी थी। किशोरी को ताज्जुब मालूम हुआ कि यकायक कामिनी चुप क्यों हो गयी? थोड़ी देर तक राह देखती रही कि शायद अब बोले, मगर जब देर हो गयी तो उसने खुद

पुकारा और कहा, "क्यों बहिन, चुप क्यों हो गयी ? यही आवाज उन पाँचों आदमियों ने सुनी थी । उन लोगों ने बातें करना छोड़ दिया और आवाज की तरफ ध्यान लगाया। फिर आवाज आयी—"बहिन कामिनी, कुछ कहो तो सही, तुम चुप क्यों हो गयीं ? क्या ऐसे समय में तुमने भी मुझे छोड़ दिया ! बात करना भी बुरा मालूम होता है !"

किशोरी की बातें सुनकर पाँचों आदमी ताज्जुब में आ गये और उन लोगों को किस प्रकार की खुशी हुई ।

एक : उसी किशोरी की आवाज़ है, मगर वह कामिनी को क्यों पुकार रही है ? क्या कामिनी उसके पास पहुँच गयी ?

दूसरा : क्या पागलपन की बातें कर रहे हो ? कामिनी अगर किशोरी के पास पहुँच जाती तो वह पुकारती क्यों, धीरे-धीरे आपुस में बात करती या इस तरह उसे लानतें देती ।

तीसरा : अजी यह तो वही हैं, मैं समझता हूँ कि कामिनी इस कोठरी में जरूर आयी थी ।

दूसरा : आयी थी तो गयी कहाँ ?

चौथा : हम लोगों के आने के पहिले ही कहीं चली गयी होगी ।

दूसरा : (हँसकर) क्या खूब ! अजी किशोरी का यह कहना कि—"क्यों बहिन, चुप क्यों हो गयी !" इस बात को साबित करता है कि वह अभी-अभी इस कोठरी में मौज़ूद थी ।

पाँचवाँ : तुम्हारा कहना ठीक है मगर यहाँ तो कामिनी की बू तक नहीं आती ।

दूसरा : (चारों तरफ देख और उस कोठरी की तरफ इशारा करके) इसी में होगी ।

पाँचों ही यह कहने लगे कि 'कामिनी जरूर इसी कोठरी में होगी, हम लोगों के आने की आहट पाकर छिप गयी है ।' आखिर सब उस कोठरी के पास गये । एक ने दरवाज़े में धक्का मारा और किवाड़ बन्द पाकर कहा—"है है, जरूरी इसी में है !"

कोठरी के अन्दर छिपकर बैठी बेचारी कामिनी सब बातें सुन रही थी और ताली के छेद में से सभों को देख भी रही थी । ऊपर लिखी बातों ने उसका कलेजा दहला दिया, यहाँ तक कि वह अपनी ज़िन्दगी से नाउम्मीद हो गयी और उसे निश्चय हो गया कि अब ये लोग मुझे गिरफ़्तार कर लेंगे ।

पाँचों आदमी इस फिक्र में लगे कि किस तरह दरवाज़ा खुले और कामिनी को गिरफ़्तार कर लें । एक ने कहा, "दरवाजा तोड़ दो !"

दूसरे ने हँसकर जवाब दिया—"शायद यह तुम्हारे किये हो सकेगा।"

उन पाँचों ने बहुतकुछ ज़ोर मारा, कामिनी को पुकारा, दिलासा दिया, धमकी दी, जान बचा देने का वादा किया और समझाया मगर कुछ काम न चला। कामिनी बोली तक नहीं। आख़िर उनमें से एक ने जो सभों से चालाक और होशियार था कहा, "अगर इस दरवाज़े को हम पहिले कभी बन्द देखते तो जरूर समझते कि किसी जानकार ने बाहर से ताला लगाकर बन्द किया है, मगर अभी थोड़े ही दिन हुए इस कोठरी को मैंने खुला देखा था, इसमें किसी का असबाब पड़ा हुआ था। जो हो, यह तो निश्चय हो गया कि कामिनी इस कोठरी के अन्दर घुसकर बैठी है, अब बाबाजी आवें तो इस कोठरी का दरवाजा खुले। (कुछ सोचकर) अब तो यही मुनासिब है कि हम लोगों में से एक आदमी जाय और बाकी चार आदमी बारी-बारी से यहाँ पहरा दें, जिसमें कामिनी निकलकर भाग न जाय। आख़िर इस कोठरी में कब तक छिपकर बैठी रहेगी या अपनी भूख-प्यास का क्या बन्दोबस्त करेगी ?"

सभों ने इस राय को पसन्द किया। एक आदमी अपने मालिक को ख़बर करने चला गया, एक तहख़ाने में उसी जगह बैठा रहा और तीन आदमी बाहर खण्डहर में निकल आये और इधर-उधर टहलने लगे। सवेरा हो गया और पूरब तरफ सूर्य की लालिमा दिखायी देने लगी।

बेचारी कामिनी की जान आफ़त में फँस गयी, देखा चाहिए क्या होता है, मगर उसने निश्चय कर लिया है कि भूख और प्यासे से चाहे जान निकल जाय मगर कोठरी के बाहर न निकलूंगी।

उस बेचारी को कोठरी के अन्दर घुसकर बैठे तीन दिन हो गये। भूख और प्यास से उस बेचारी की क्या अवस्था हो गयी होगी यह पाठक स्वयं समझ सकते हैं, लिखने की कोई आवश्यकता नहीं।

हम ऊपर लिख आये हैं कि उन पाँचों में से एक आदमी अपने मालिक को ख़बर करने चला गया और बाक़ी चार इसलिए रह गये कि बारी-बारी से पहरा दें जिसमें कामिनी निकलकर भाग न जाये।

तीसरे दिन इनमें से तीन आदमी आपुस में बातें करते और घूमते-फिरते खण्डहर के बाहर निकले और फाटक पर खड़े होकर बातें करने लगे।

एक : इसमें कोई शक नहीं कि हम लोगों का नसीब जाग गया।

दूसरा : नसीब जागा तो हम नहीं कह सकते, हाँ इतनी बात है कि रक़म गहरी हाथ लगेगी।

तीसरा : मुँहमाँगा इनाम क्या हम लोग नहीं पा सकते ?

दूसरा : नहीं ।

तीसरा : सो क्यों ?

दूसरा : हम लोग कामिनी को अगर पकड़ ले जाते तो मुँहमाँगा इनाम पाते, सो तो हुआ नहीं, कामिनी कोठरी के अन्दर घुस बैठी और हम लोग दरवाजा खोलकर उसे निकाल न सके, लाचार बाबाजी को बुलाना पड़ा, ऐसी अवस्था में जोकुछ इनाम मिल जाय वही बहुत है ।

पहिला : इतना तो कहला भेजा कि हम लोगों ने कामिनी को इस तहखाने में फँसा रक्खा है ।

दूसरा : खैर जो होगा देखा जायेगा, इस समय तो हम लोगों की जीत-ही-जीत मालूम होती है । कामिनी और किशोरी दोनों ही को हमारे मालिक की किस्मत ने इस तहखाने में क़ैद कर रक्खा है ।

तीसरा : (चौंककर) ज़रा इधर तो देखो ये लोग कौन हैं, मालूम होता है कि इन लोगों ने हमारी बातें सुन लीं ।

खण्डहर के बाहर बायें तरफ़ कुछ हटकर एक नीम का पेड़ था और उस पेड़ के नीचे एक कुआँ था । इस समय दो साधू उस कुएँ पर बैठे इन तीनों की बातें सुन रहे थे । जब उन तीनों को यह बात मालूम हुई तो डरे और उन साधुओं के पास जाकर बातचीत करने लगे—

एक आदमी : तुम दोनों यहाँ क्यों बैठे हो ?

एक साधु : हमारी खुशी !

एक आदमी : अच्छा अब हम कहते हैं कि उठो और यहाँ से चले जाओ ।

एक आदमी : (तलवार खैंचकर) यह न जानना कि साधु समझके छोड़ दूँगा, नाहक गुस्सा मत दिलाओ ।

साधु : (हँसकर) वाह रे बन्दर घुड़की ! अबे क्या तू हम लोगों को साधु समझ रहा है ?

इतना सुनते ही तीनों आदमियों ने ग़ौर करके साधुओं को देखा और यकायक यह कहते हुए कि 'हाय ग़ज़ब हो गया, यहाँ से भागो, यहाँ से भागो' वहाँ से भागे । जहाँ तक हो सका उन लोगों ने भागने में कसर न की । दोनों साधुओं ने उन लोगों को रोकना मुनासिब न समझा और भागने दिया ।

अब वे दोनों साधु वहाँ से उठे और बातें करते हुए खण्डहर के अन्दर घुसे । घूमते-फिरते दालान में पहुँचे और दरवाज़ा खोलते हुए उस तहख़ाने में उतर गये जिसमें कामिनी थी । इस तहख़ाने और दरवाज़े का हाल हम ऊपर लिख आये हैं, पुनः लिखने की कोई ज़रूरत नही मालूम

होती, हाँ, इतना ज़रूर कहेंगे कि रंग-ढंग से मालूम होता था कि ये दोनों साधु तहख़ाने और उसके रास्ते को बखूबी जानते हैं नहीं तो ऐसा आदमी जो दरवाज़े का भेद न जानता हो, उस तहखाने में किसी तरह नहीं पहुँच सकता था।

जब दोनों साधु तहखाने में पहुँचे तो वहाँ एक सिपाही को पाया और सन्दूक पर भी नज़र पड़ी। एक मोमबत्ती आले पर जल रही थी। वह सिपाही इन दोनों को देख चौंका और तलवार खैंचकर सामना करने पर मुस्तैद हुआ। एक साधु ने झपटकर उसकी कलाई पकड़ ली और दूसरे ने उसकी गर्दन में एक ऐसा घूँसा जमाया कि वह चक्कर खाकर गिर पड़ा। उसकी तलवार छीन ली गयी और बेहोश कर चादर से जो कमर में लपेटी हुई थी, उसकी मुश्कें बाँध दी गयीं। इसके बाद दोनों साधु उस सन्दूक की तरफ़ बढ़े। सन्दूक में ताला लगा हुआ न था बल्कि एक रस्सी उसके चारों तरफ़ लपेटी हुई थी। रस्सी खोली गयी और उस सन्दूक का पल्ला उठाया गया, एक साधु ने मोमबत्ती हाथ में ली और झाँककर सन्दूक के अन्दर देखा, देखते ही "हाय !" कहकर ज़मीन पर गिर पड़ा। इसके बाद दूसरे ने देखा और उसकी भी यही अवस्था हुई।

छठवाँ भाग

पहिला बयान

वे दोनों साधु जो सन्दूक के अन्दर झाँक न मालूम क्या देखकर बेहोश हो गये थे, थोड़ी देर बाद होश में आये और चीख-चीखकर रोने लगे। एक ने कहा, "हाय, इन्द्रजीतसिंह तुम्हें क्या हो गया! तुमने तो किसी के साथ बुराई न की थी, फिर किस कमबख्त ने तुम्हारे साथ बदी की? प्यारे कुमार, तुमने बड़ा बुरा धोखा दिया, हम लोगों को छोड़कर चले गये, क्या दोस्ती का हक इसी तरह अदा करते हैं? हाय, अब हम लोग जीकर क्या करेंगे, अपना काला मुँह लेकर कहाँ जायेंगे? हमको अपने भाई से बढ़कर मानने-वाला अब दुनिया में कौन रह गया! तुम हमें किसके सुपुर्द करके चले गये?"

दूसरा बोला—"प्यारे कुमार, कुछ तो बोलो, जरा अपने दुश्मन का नाम तो बताओ, कुछ कहो तो सही कि किस बेईमान ने तुम्हें मारकर इस सन्दूक में डाल दिया? हाय, अब हम तुम्हारी माँ बेचारी चन्द्रकान्ता के पास कौन मुँह लेकर जायेंगे? किस मुँह से कहेंगे कि तुम्हारे प्यारे होनहार लड़के को किसी ने मार डाला! नहीं नहीं, ऐसा न होगा, हम लोग जीतेजी लौटकर घर न जायेंगे, इसी जगह जान दे देंगे? नहीं नहीं, अभी तो हमें उससे बदला लेना है, जिसने हमारा सर्वनाश कर डाला। प्यारे कुमार, जरा तो मुँह से बोलो, जरा आँखें खोलकर देखो तो सही तुम्हारे पास कौन खड़ा रो रहा है। क्या तुम हमें भूल गये? हाय, यह यकायक कहाँ से गजब आकर टूट पड़ा!"

अब तो पाठक समझ गये होंगे कि इस सन्दूक में कुँअर इन्द्रजीतसिंह की लाश थी और ये दोनों साधु उनके दोस्त भैरोसिंह और तारासिंह थे। इन दोनों के रोने से कामिनी असल बात समझ गयी, झट कोठरी के बाहर निकल आयी और मोमबत्ती की रोशनी में कुमार की लाश देख जोर-जोर

से रोने लगी। किशोरी इस तहखाने के बगलवाली कोठरी में थी। उसने जो कुँअर इन्द्रजीतसिंह का नाम ले-लेकर रोने की आवाज सुनी तो उसकी अजब हालत हो गयी। उसका पका हुआ दिल इस लायक न था कि इतनी ठेस सम्हाल सके, बस एक दफे 'हाय' की आवाज तो उसके मुँह से निकली मगर फिर तनोबदन की सुध न रही। वह ऐसी जगह न थी कि कोई उसके पास जाय या उसे सम्हाले और देखे कि उसकी क्या हालत है।

भैरोसिंह और तारासिंह ने जो कामिनी को देखा तो वह लोग फूट-फूटकर रोने लगे। तहखाने में हाहाकार मच गया। घण्टे-भर यही हालत रही। जब कामिनी ने रोकर यह कहा कि 'इसी के बगलवाली कोठरी में बेचारी किशोरी भी है, हाय, हम लोगों का रोना सुनकर उस बेचारी की क्या अवस्था हुई होगी'। तब भैरोसिंह और तारासिंह चुप हुए और कामिनी का मुँह देखने लगे।

भैरो : तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि यहाँ किशोरी भी है ?

कामिनी : मैं उससे बातें कर चुकी हूँ।

तारा : क्या तुम बड़ी देर से इस तहखाने में हो ?

कामिनी : देर क्या, मैं तो कई दिनों से भूखी-प्यासी इस तहखाने में कैद हूँ। (उस आदमी की तरफ इशारा करके) यह मेरा पहरा देता था।

भैरो : खैर, जो होना था सो हो गया, अब हम लोग अगर रोने-धोने में लगे रहेंगे तो इनके दुश्मन का पता न लगा सकेंगे और न उससे बदला ही ले सकेंगे। यों तो जन्म-भर रोना हुई है परन्तु जब इनके दुश्मन से बदला ले लेंगे तो कलेजे में कुछ ठण्डक पड़ेगी। तुम यहाँ कैसे आयीं और इन दुष्टों के हाथ क्योंकर फँसीं खुलासा कहो तो शायद कुछ पता लगे।

कामिनी ने अपना खुलासा हाल कहा और इसके बाद पूछा, "तुम दोनों का आना कैसे हुआ ?"

भैरो : कमला ने इस तहखाने का पता देकर हम लोगों को भेजवाया है, थोड़ी ही देर में राजा बीरेन्द्रसिंह और कुँअर आनन्दसिंह भी बहुत से आदमियों को साथ लिये आया ही चाहते हैं, कमला भी उनके साथ होगी, हम लोग कुँअर इन्द्रजीतसिंह को छुड़ाने के लिए किसी दूसरी जगह जानेवाले थे, मगर हाय, यह क्या खबर थी कि रास्ते में ही हम लोगों पर यह पहाड़ टूट पड़ेगा। हाय, जब महाराज यहाँ आयेंगे तो हम किस मुँह से कहेंगे कि तुम्हारे प्यारे लड़के की लाश इस तहखाने में पायी गयी।

इसके बाद भैरोसिंह ने इस तहखाने में आने का बाकी हाल कहा तथा यह भी बताया कि 'जब खण्डहर के बाहर कुएँ पर हम दोनों आदमी बैठे थे, तभी तीन आदमियों की बातचीत से मालूम हो गया कि तुमको उन लोगों

ने कैद कर लिया है परन्तु यह आशा न थी कि तुम्हें इस अवस्था में देखेंगे। उन लोगों ने मुझे देखा तो पहिचान कर डरे और भाग गये मगर मुझे यह न मालूम हुआ कि वे लोग कौन हैं और उन्होंने मुझे कैसे पहिचाना'?

कामिनी : (हाथ का इशारा करके) उन्हीं लोगों में से एक यह भी है, जिसे तुमने बाँध रक्खा है।

भैरो : (उस आदमी से) बता तू कौन है?

आदमी : बताने को तो मैं सबकुछ बता सकता हूँ, परन्तु मेरी जान किसी तरह न बचेगी।

भैरो : क्या तुझे अपने मालिक का डर है?

आदमी : जी हाँ।

भैरो : मैं वादा करता हूँ कि तेरी जान बचाऊँगा और तुझे बहुतकुछ इनाम भी दिलाऊँगा।

आदमी : इस वादे से मेरी तबीयत नहीं भरती, क्योंकि मुझे तो आप लोगों ही के बचने की उम्मीद नहीं। हाय, क्या आफत में जान फँसी है! अगर कुछ कहें तो मालिक के हाथ से मारे जाँय और न कहें तो इन लोगों के हाथ से दुःख भोगें!

भैरो : तेरी बातों से मालूम होता है कि तेरा मालिक बहुत जल्द यहाँ आया चाहता है?

आदमी : बेशक ऐसा ही है।

यह सुनते ही भैरोसिंह ने तारासिंह के कान में कुछ कहा और उनका ऐयारी का बटुआ लेकर; अपना बटुआ उन्हें दे दिया, जिसे ले वे तुरन्त वहाँ से रवाना हुए और तहखाने के बाहर निकल गये। तारासिंह ने जल्दी-जल्दी खँडहर के बाहर होकर उस कुएँ में से एक लुटिया पानी खींचा और बटुए में से कोई चीज निकालकर पत्थर पर रगड़ जल में घोलकर पीया, फिर एक लुटिया जल निकालकर वही चीज पत्थर पर घिस उस पानी में मिलायी और बहुत जल्द तहखाने में पहुँचे, जल की लुटिया भैरोसिंह के हाथ में दी, भैरोसिंह ने बटुए से कुछ खाने की चीज निकाली और कामिनी से कहा, "इसे खाकर यह जल पी लो।"

कामिनी : भला खाने और जल पीने का यह कौन-सा मौका है? यद्यपि मैं कई दिनों से भूखी हूँ परन्तु क्या कुमार की लाश के सिरहाने बैठकर खा सकूगी, क्या यह अन्न मेरे गले के नीचे उतरेगा?

भैरो : हाय, इस बात का मैं कुछ भी जवाब नहीं दे सकता। खैर, इस पानी में से थोड़ा तुम्हें पीना ही पड़ेगा। अगर इससे इन्कार करोगी तो हम सब लोग मारे जाँयगे। (धीरे से कुछ कहकर) बस देर न करो।

कामिनी : अगर ऐसा है तो मैं इन्कार नहीं कर सकती।

भैरोसिंह ने उस लुटिया में से आधा जल कामिनी को पिलाया और आधा आप पीकर लुटिया तारासिंह के हवाले की। तारासिंह तुरन्त तहखाने में से बाहर निकल आये और जहाँ तक जल्द हो सका, इधर-उधर से सूखी हुई लकड़ियाँ और कण्डे बटोरकर खँडहर के बीच में एक जगह रक्खा, तब बटुए में से चकमक पत्थर निकाला और उसमें से आग झाड़कर गोठों और लकड़ियों को सुलगाया।

तारासिंह यह सब काम बड़ी फुर्ती से कर रहे थे और घड़ी-घड़ी खँडहर के बाहर मैदान की तरफ देखते भी जाते थे। आग सुलगाने के बाद, जब तारासिंह ने मैदान की तरफ देखा तो बहुत दूर पर गर्द उड़ती हुई दिखायी दी। वह अपने काम में फिर जल्दी करने लगे। बटुए में से एक शीशी निकाली, जिसमें किसी प्रकार का तेल था, वह तेल आग में डाल दिया, आग पर दो-तीन दफे पानी का छींटा दिया, फिर मैदान की तरफ देखा। मालूम हुआ कि दस-पन्द्रह आदमी घोड़ों पर सवार बड़ी तेजी से इसी तरफ आ रहे हैं। उस समय तारासिंह के मुँह से यकायक निकल पड़ा—"ओफ, अगर ज़रा भी देर होती तो काम बिगड़ ही चुका था, खैर, अब ये लोग कहाँ जा सकते हैं!"

आग में से बहुत ज्यादे धूआँ निकला और खँडहर-भर में फैल गया। इसके बाद तारासिंह खँडहर के बाहर निकले और कूएँ के पास जाकर नीम के पेड़ पर चढ़ गये तथा अपने को घने पत्तों की आड़ में छिपा लिया। वह पेड़ इतना ऊँचा था कि उस पर से खँडहर के भीतर का मैदान साफ नजर पड़ता था। वे सवार जिन्हें तारासिंह ने दूर से देखा था अब खँडहर के पास आ पहुँचे, तारासिंह ने पेड़ पर चढ़े-चढ़े गिना तो मालूम हुआ कि बारह सवार हैं। उनमें सबके आगे एक साधु था जिसकी सफेद दाढ़ी नाभी तक पहुँच रही थी।

पाठक, यह वही बाबाजी हैं, जिन्होंने रोहतासगढ़ में राजा दिग्विजयसिंह के पास रात के समय पहुँचकर उन्हें भड़काया और राजा बीरेन्द्रसिंह वगैरह को कैद कराया था।

खँडहर के पास पहुँचकर वे लोग रुके। घोड़ों की बागडोरें पत्थरों से अटकाकर दस आदमी तो खँडहर के अन्दर घुसे और दो आदमी घोड़ों की हिफाजत के लिए बाहर रह गये।

खँडहर के अन्दर धूआँ देखकर बुड्ढे साधु ने कहा, "यह धूआँ कैसा है!"

एक : किसी मुसाफिर ने आकर रसोई बनायी होगी।

दूसरा : मगर धूआँ बहुत कड़ुआ है।

तीसरा : ओफ, आँख-नाक से पानी बहने लगा।

साधु : अगर किसी मुसाफिर ने यहाँ आकर रसोई पकायी होती तो हाँडी पत्तल और पानी का बर्तन इत्यादि कुछ और भी तो यहाँ दिखायी देता ! (एक आदमी की तरफ देखकर) हमें इस धूएँ का रंग बेढब मालूम होता है, इसकी कड़वाहट इसकी रंगत और इसकी बू कहे देती है कि धूएँ में बेहोशी का असर है। है, है, जरूर ऐसा ही है, कुछ अमल भी आ चला और सिर भी घूमने लगा ! (जोर से) अरे बहादुरो, बेशक तुम लोग धोखे में डाले गये, यहाँ कोई ऐयार आ पहुँचा है, क्या ताज्जुब है अगर तहखाने में से कामिनी को निकालकर ले गया हो।

नीम के पेड़ पर बैठे हुए तारासिंह उस साधु की सब बातें सुन रहे थे, क्योंकि वह नीम का पेड़ खंडहर के फाटक के पास ही था। साधु की बातें अभी पूरी न होने पायी थीं कि खंडहर के पिछवाड़े की तरफ से एक आदमी दौड़ता हुआ आया। मालूम होता है कि साधू की आखिरी बात उसने सुन ली थी क्योंकि पहुँचने के साथ ही उसने पुकारकर कहा, "नहीं नहीं, कामिनी को कोई निकालकर नहीं ले गया, मगर इसमें भी सन्देह नहीं कि बीरेन्द्रसिंह के दो ऐयार यहाँ आये हैं, एक तहखाने के अन्दर है, दूसरा (हाथ का इशारा करके) उस नीम के पेड़ पर चढ़ा हुआ है।"

साधु : बस, तब तो मार लिया। बेशक, हम लोग आफत में फँस गये हैं परन्तु कामिनी और इन्द्रजीत, जिन्हें तुम लोग तहखाने में पहुँचा चुके हो, अब बाहर नहीं जा सकते। ताज्जुब नहीं कि इन ऐयारों ने इन्द्रजीतसिंह को मुर्दा समझ लिया हो ! देखो मैं शाहदरवाजे को अभी ऐसा बन्द करता हूँ कि फिर ऐयार का बाप भी तहखाने में न जा सकेगा।

इसके जवाब में उस आदमी ने जो अभी दौड़ता हुआ आया था कहा, "हमारा एक आदमी भी तहखाने में ही है।"

साधु : खैर, अब तो उसका भी उसी तहखाने में घुटकर मर जाना बेहतर है।

तारासिंह ने उस आदमी को पहिचान लिया जो खँडहर के पिछवाड़े की तरफ से दौड़ता हुआ आया था। यह उन्हीं दोनों आदमियों में से था, जो भैरोसिंह और तारसिंह को कुएँ पर देख डर के मारे भाग गये थे, न मालूम कहाँ छिप रहा था, जो इस समय बाबाजी को देखकर बेधड़क आ पहुँचा।

साधु ने धूएँ का खयाल बिल्कुल ही न किया और खण्डहर के अन्दर जाकर न मालूम किस कोठरी में घुस गया।

तारासिंह को कुँअर इन्द्रजीतसिंह के मरने का जितना गम था, उसे पाठक स्वयं समझ सकते हैं, परन्तु उनको उस समय बड़ा ही आश्चर्य हुआ, जब साधु के मुँह से यह सुना कि 'ताज्जुब नहीं कि ऐयारों ने इन्द्रजीतसिंह को मुर्दा समझ लिया हो' ! बल्कि यों कहना चाहिए कि इस बात ने तारासिंह को खुश कर दिया। वे अपने दिल में सोचने लगे कि बेशक हम लोगों ने धोखा खाया मगर न मालूम उन्हें कैसी दवा खिलायी गयी, जिसने बिल्कुल मुर्दा ही बना दिया ! यदि इस समय भैरोसिंह के पास पहुँचकर यह खुशखबरी सुनायी जाती तो क्या ही अच्छी बात थी, मगर कमबख्त साधु तो कहता है कि मैं शाहदरवाजा बन्द कर देता हूँ, जिसमें फिर कोई आदमी तहखाने में न जा सके। यदि ऐसा हुआ तो बड़ी ही मुश्किल होगी, इन्द्रजीतसिंह अगर जीते भी हैं तो अब मर जायेंगे ! न मालूम यह शाह-दरवाजा कौन है और किस तरह खुलता और बन्द होता है ?

वे लोग तो सुन ही चुके थे कि बीरेन्द्रसिंह का एक ऐयार नीम के पेड़ पर चढ़ा हुआ है। बाबाजी शाह-दरवाजा बन्द करने चले गये, मगर तारासिंह को इसकी कुछ भी चिन्ता नहीं थी, क्योंकि वे इस बात को बखूबी जानते थे कि बेहोशी का धूआँ जो इस खँडहर में फैला हुआ है, अब इन लोगों को ज्यादे देर तक ठहरने न देगा, थोड़ी ही देर में बेहोशी आ जायगी और फिर किसी योग्य न रहेंगे, और आखिर वैसा ही हुआ।

यद्यपि वे लोग ज्यादे धूएँ में नहीं फँसे थे तो भी जोकुछ उन लोगों की आँखों में लगा था और नाक की राह से पेट में गया था, वही उन लोगों को वेदम करने के लिए काफी था। वे लोग कूएँ पर आ पहुंचे और चारों तरफ से उस नीम के पेड़ को घेर लिया। इस समय उन लोगों की अवस्था शराबियों की-सी हो रही थी। उसी समय तारासिंह ने पेड़ पर से चिल्लाकर कहा, "ओ हो हो हो, क्या अच्छे वक्त पर हमारा मालिक आ पहुँचा। अब जरूर इन कमबख्तों की जान जायगी !!"

तारासिंह की बात सुनते ही वे लोग ताज्जुब में आ गये और मैदान की तरफ देखने लगे। वास्तव में पूरब की तरफ गर्द उठ रही थी और मालूम होता था कि किसी राजा की सवारी इस तरफ आ रही है। उन लोगों के दिमाग में अब बेहोशी का असर अच्छी तरह हो चुका था। वे लोग बैठ गये और फिर जमीन पर लेटकर दीन-दुनिया से बेखबर हो गये।

तारासिंह की निगाह उसी गर्द की तरफ थी। धीरे-धीरे आदमी और घोड़े दिखायी देने लगे और जब थोड़ी दूर रह गये तो साफ मालूम हो गया कि कई सवारों को साथ लिये राजा बीरेन्द्रसिंह आ पहुँचे। ऐयारों में तेजसिंह और पण्डित बद्रीनाथ उनके साथ थे और मुश्की घोड़े पर सवार

कमला आगे-आगे आ रही थी। जब तक वे लोग खँडहर के पास आवें, तब तक तारासिंह पेड़ के नीचे उतरे, कूएँ में से एक लुटिया जल निकालकर मुँह-हाथ धोया और कुछ आगे बढ़कर उन लोगों से मिले। बीरेन्द्रसिंह ने तारासिंह से पूछा, "कहो क्या हाल है?"

तारा : विचित्र हाल है।

बीरेन्द्र : सो क्या, भैरो कहाँ है?

तारा : भैरोसिंह इसी खँडहर के तहखाने में हैं, और किशोरी, कामिनी तथा कुँअर इन्द्रजीतसिंह भी उसी तहखाने में कैद हैं।

तारासिंह ने कुँअर इन्द्रजीतसिंह का जोकुछ हाल तहखाने में देखा था, वह किसी से कहना मुनासिब न समझा, क्योंकि सुनते ही वे लोग अधमरे हो जाते और किसी काम लायक न रहते और बीरेन्द्रसिंह की तो न मालूम क्या हालत होती, सिवाय इसके यह भी मालूम हो ही चुका था कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह मरे नहीं हैं, ऐसी अवस्था में उन लोगों को बुरी खबर सुनाना बुद्धिमानी के बाहर था, इसलिए तारासिंह ने इन्द्रजीतसिंह के बारे में बहुत-सी बातें बनाकर कहीं जैसाकि आगे चलकर मालूम होगा।

कुँअर आनन्दसिंह ने जब तारासिंह की जुबानी यह सुना कि कामिनी भी इसी तहखाने में कैद है तो बहुत ही खुश हुए और सोचने लगे कि अब थोड़ी देर में माशूका से मुलाकात हुआ ही चाहती है, ईश्वर ने बड़ी कृपा की कि ढूँढ़ने और पता लगाने की नौबत न पहुँची। उन्होंने सोचा कि बस अब हमारे दु:खान्त नाटक का अन्त हुआ ही चाहता है।

बीरेन्द्रसिंह ने फिर तारा से पूछा, "क्या तुमने अपनी आँखों से उन लोगों को इस तहखाने में कैद देखा है?"

तारा : जी हाँ, कुँअर इन्द्रजीतसिंह और कामिनी से तो हम दोनों आदमी मिल चुके हैं और भैरोसिंह उन दोनों के पास ही हैं, मगर किशोरी को हम लोग न देख सके, कामिनी की जुबानी मालूम हुआ कि जिस तहखाने में वह है, उसी के बगलवाली कोठरी में किशोरी भी कैद है। पर कोई तरकीब ऐसी न निकली, जिससे हम लोग किशोरी तक पहुँच सकते।

बीरेन्द्र : क्या यहाँ की कोठरियों और दरवाजों में किसी तरह का भेद है?

तारा : भेद क्या मुझे तो यह एक छोटा तिलिस्म ही मालूम होता है।

बीरेन्द्र : भला तुम और भैरोसिंह इन्द्रजीतसिंह के पास तक पहुँच गये तो उसे तहखाने के बाहर क्यों न ले आये?

तारा : (कुछ अटककर) मुलाकात होने पर हम लोग उसी तहखाने में बैठकर बातें करने लगे। दुश्मन का एक आदमी उस तहखाने में कैदियों की

निगहबानी कर रहा था। कैदी हथकड़ी और बेड़ी के सबब के बेबस थे। जब हम दोनों ने उस आदमी को गिरफ्तार किया और हाल जानने के लिए बहुत कुछ मारा-पीटा तब वह राह पर आया। उसकी जुबानी मालूम हुआ कि हम लोगों का दुश्मन अर्थात् उसका मालिक बहुतसे आदमियों को साथ ले यहाँ आया ही चाहता है। तब भैरोसिंह ने मुझे कहा कि इस समय हम लोगों का इस तहखाने से बाहर निकलना मुनासिब नहीं है, कौन ठिकाना, बाहर निकलकर दुश्मनों से मुलाकात हो जाय। वे लोग बहुत होंगे और हम लोग केवल तीन आदमी हैं ताज्जुब नहीं कि तकलीफ उठानी पड़े, इससे यही बेहतर है कि तुम बाहर जाओ और जब दुश्मन लोग इस खँडहर में आ जायें तो, तो उन्हें किसी तरह गिरफ्तार करो। उन्हीं की आज्ञा पाकर मैं अकेला तहखाने के बाहर निकल आया और मैंने दुश्मनों को गिरफ्तार भी कर लिया।

तेज : (खुश होकर और हाथ का इशारा करके) मालूम होता है कि वे लोग जो उस पेड़ के नीचे पड़े हैं और कुछ खँडहर के दरवाजे पर दिखायी देते हैं, सब तुम्हारी ही कारीगरी से बेहोश हुए हैं, उन्हें किस तरह बेहोश किया ?

तारा : खँडहर के अन्दर आग सुलगायी और उसमें बेहोशी की दवा डाली, जब तक वे लोग आवें तब तक धुआँ अच्छी तरह फैल गया, ऐसी कडुवीदवा से वे लोग क्योंकर बच सकते थे, जरा-सा धुआँ आँख में लगना बहुत था। दुश्मनों के केवल दो आदमी बच गये (घोड़ों की तरफ देखकर) हैं, मालूम होता है आपको आते देख वे लोग भाग गये, यह क्या हुआ !

तेज : (चारों तरफ देखकर) खैर, जाने दो क्या हर्ज है। हाँ, तो अब हम लोगों को तहखाने में चलना चाहिए।

तारा : शायद अब हम लोग तहखाने में न जा सकें।

कमला : सो क्यों ?

तारा : उन लोगों में एक साधु भी था, वह बड़ा ही चालाक और होशियार था। आँख में धुआँ लगते ही समझ गया कि इसमें बेहोशी का असर है, अब दम-के-दम में हम लोग बेहोश हो जायँगे। उसी समय एक आदमी ने जो पहिले हम लोगों को देखकर भाग गया था और छिपकर मेरी कार्रवाई देख रहा था, पहुँचकर उसे हम लोगों के आने की खबर दे दी और यह भी कह दिया कि अभी तक कामिनी, किशोरी और इन्द्रजीतसिंह तह-खाने में हैं, बल्कि राजा बीरेन्द्रसिंह का एक ऐयार भी तहखाने में है। यह सुनते ही वह कुछ खुश हुआ और बोला, "अब हम लोग तो बेहोश हुआ ही चाहते हैं, धोखे में पड़ ही चुके हैं, मगर अब हम यहाँ के शाह-दरवाजे को

बन्द कर देते हैं, फिर किसी की मजाल नहीं कि तहखाने में जा सके और उन लोगों को निकाल सके जो तहखाने के अन्दर अभी तक बैठे हुए हैं।" इस बात को सुनकर उस जासूस ने कहा कि 'हम लोगों का एक आदमी भी उसी तहखाने में है'। साधु ने जवाब दिया कि 'अब उसका भी उसी में घुटकर मर जाना बेहतर होगा'। फिर न मालूम क्या हुआ और उस साधु ने क्या किया अथवा शाह-दरवाजा कौन है और किस तरह खुलता या बन्द होता है!

तारासिंह की इस बात ने सभों को तरद्दुद में डाल दिया और थोड़ी देर तक वे लोग सोच-विचार में पड़े रहे, इसके बाद कमला ने कहा, "पहिले खँडहर में चलकर तहखाने का दरवाजा खोलना चाहिए, देखें खुलता है या नहीं, अगर खुल गया तो सोच-विचार की कुछ जरूरत नहीं, यदि न खुल सका तो देखा जायगा।"

इस बात को सभों ने पसन्द किया और राजा बीरेन्द्रसिंह ने कमला को आगे चलने और तहखाने का दरवाजा खोलने के लिए कहा। खँडहर में इस समय धुआँ कुछ भी न था, सब साफ हो चुका था। कमला सभों को साथ लिये हुए उस दालान में पहुँची, जहाँ से तहखाने में जाने का रास्ता था। मोमबत्ती जलाकर हाथ में ली और बगलवाली कोठरी में जाकर मोमबत्ती तारासिंह के हाथ में दे दी। इस कोठरी में एक आलमारी थी, जिसके पल्लों में दो मुट्ठे लगे हुए थे, इन्हीं मुट्ठों के घुमाने से दरवाजा खुल जाता था और फिर एक कोठरी में पहुँच जाने से तहखाने में उतरने के लिए सीढ़ियाँ मिलती थीं। इस समय कमला ने इन्हीं दोनों मुट्ठों को कई बार घुमाया, वे घूम तो गये मगर दरवाजा न खुला। इसके बाद तारासिंह ने और फिर तेजसिंह ने भी उद्योग किया मगर कोई काम न चला। तब तो सभों का जी बेचैन हो गया और विश्वास हो गया कि उस बेईमान साधु ने जोकुछ कहा, सो किया। इस खँडहर में कोई शाह-दरवाजा जरूर है, जिसे साधु ने बन्द कर दिया और जिसके सबब से यह दरवाजा अब नहीं खुलता।

सब लोग उस कोठरी से बाहर निकले और साधु को ढूँढ़ने लगे। खँडहर में और नीम के पेड़ के नीचे आठ आदमी बेहोश पड़े हुए थे, जो सब इकट्ठे किये गये। दो आदमी जो घोड़ों की हिफाजत करने के लिए रह गये थे और बेहोश नहीं हुए थे, वे तो न मालूम कहाँ भाग ही गये थे, अब साधु रह गये सो उनके शरीर का कहीं पता न लगा। चारों तरफ खोज होने लगी।

राजा बीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह और तारासिंह को साथ लिये हुए कमला उस कोठरी में पहुँची, जिसमें दीवार के साथ लगी हुई पत्थर की मूरत थी,

जिसमें एक दफे रात के समय कामिनी जा चुकी थी और जिसका हाल ऊपर के किसी बयान में लिखा जा चुका है। इसी कोठरी में पत्थर की मूरत के पास ही साधु महाशय बेहोश पड़े हुए थे।

तेज : (मूरत को अच्छी तरह देखकर) मालूम होता है कि शाह-दरवाजे से इस मूरत का कोई सम्बन्ध है।

बीरेन्द्र : शायद ऐसा ही हो, क्योंकि मुझे यह खँडहर तिलिस्मी मालूम होता है। हाय, बेचारा लड़का इस समय कैसी मुसीबत में पड़ा हुआ है। अब दरवाजा खुलने की तरकीब किससे पूछी जाय और उसका कैसे पता लगे? मेरी राय तो यह है कि इस खँडहर में जो कुछ मिट्टी-चूना पड़ा है, सब बाहर फिंकवाकर जगह साफ करा दी जाय और दीवार तथा जमीन भी खोदी जाय।

तेज : मेरी भी यही राय है।

तारा : जमीन और दीवार खुदने से जरूर काम चल जायगा। तहखाने की दीवार खोदकर हम लोग अपना रास्ता निकाल लेंगे, बल्कि और भी बहुत-सी बातों का पता लग जायगा।

बीरेन्द्र : (तेजसिंह की तरफ देखके) बहुत जल्द बन्दोबस्त करो और दो आदमी रोहतासगढ़ भेजकर एक हजार आदमी की फौज बहुत जल्द मँगवाओ। वह फौज ऐसी हो कि सब काम कर सके अर्थात् जमीन खोदने, सेंध लगाने, सड़क बनाने इत्यादि का काम बखूबी जानती हो।

तेज : बहुत खूब!

राजा बीरेन्द्रसिंह के साथ-साथ सौ आदमी आये हुए थे, वे सब-के-सब काम में लग गये। बेहोश दुश्मनों के हाथ-पैर बाँध दिये गये और उन्हें उठाकर एक दालान में रख देने बाद सब लोग खँडहर की मिट्टी उठा-उठाकर बाहर फेंकने लगे, जल्दी के मारे मालिकों ने भी काम में हाथ लगाया।

रात हो गयी, कई मशाल भी जलाये गये, मिट्टी की सफाई बराबर जारी रही, मगर तारासिंह का विचित्र हाल था, घड़ी-घड़ी रुलाई आती थी और उसे वे बड़ी मुश्किल से रोकते थे। यद्यपि तारासिंह ने कुँअर इन्द्रजीतसिंह का हाल बहुत कुछ झूठ-सच मिलाकर राजा बीरेन्द्रसिंह से कहा था, मगर वे बखूबी जानते थे कि इन्द्रजीतसिंह की अवस्था अच्छी नहीं है, उनकी लाश तो अपनी आँखों से देख ही चुके थे, परन्तु साधु की बातों ने उनकी कुछ तसल्ली कर दी थी। वे समझ गये थे कि इन्द्रजीतसिंह मरे नहीं बल्कि बेहोश हैं, मगर अफसोस तो यह है कि यह बात केवल तारासिंह ही को मालूम है, भैरोसिंह को भी यदि इस बात की खबर होती तो तहखाने में बैठे-बैठे कुमार को होश में लाने का कुछ उद्योग करते।

कहीं ऐसा न हो कि बेहोशी में ही कुमार की जान निकल जाय, ऐसी कड़ी बेहोशी का नतीजा अच्छा नहीं होता है, इसके अतिरिक्त कई दिनों से कुमार बेहोशी की अवस्था में पड़े हैं, बेहोशी भी ऐसी कि जिसने बिल्कुल ही मुर्दा बना दिया, क्या जाने जीते भी हैं या वास्तव में मर ही गये।

ऐसी-ऐसी बातों के विचार से तारासिंह बहुत ही बेचैन थे, मगर अपने दिल का हाल किसी से कहते नहीं थे।

यहाँ से थोड़ी दूर पर एक गाँव था, कई आदमी दौड़ गये और कुदाल, फरसा इत्यादि जमीन खोदने का सामान वहाँ से ले आये और बहुत-से मजदूरों को साथ लिवाते आये। रात-भर काम लगा रहा और सवेरा होते-होते तक खँडहर साफ हो गया।

अब उस दालान की खुदाई शुरू हुई, जिसके बगलवाली कोठरी के अन्दर से तहखाने में जाने का रास्ता था। हाथ-भर तक जमीन खुदने के बाद लोहे की सतह निकल आयी, जिसमें छेद होना भी मुश्किल था। यह देख बीरेन्द्रसिंह को भी बहुत रंज हुआ और उन्होंने खँडहर के बीच की जमीन अर्थात् चौक खोदने का हुक्म दिया।

दूसरे दिन चौक की खुदाई से छुट्टी मिली, खुद जाने पर वहाँ एक छोटी-सी खूबसूरत बावली निकली, जिसके चारों तरफ छोटी-छोटी संग-मरमर की सीढ़ियाँ थीं। यह बावली दस गज से ज्यादे गहरी न थी और इसके नीचे की सतह तीन गज चौड़ी और इतनी ही लम्बी होगी। दो पहर दिन चढ़ते-चढ़ते उस बावली की मिट्टी निकल गयी और नीचे की सतह में पीतल की एक मूरत दिखाई पड़ी। मूरत बहुत बड़ी न थी, एक हरिन का शेर ने शिकार किया था, हरिन की गर्दन का आधा हिस्सा शेर के मुँह में था। मूरत बहुत ही खूबसूरत और कीमती थी मगर मिट्टी के अन्दर बहुत दिनों तक दबे रहने से मैली और खराब हो रही थी। वीरेन्द्र-सिंह ने उसे अच्छी तरह झाड़-पोंछकर साफ करने का हुक्म दिया।

बीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह से कहा, "इस खुदाई में समय भी नष्ट हुआ और कुछ काम भी न निकला।"

तेज : मैं इस मूरत पर अच्छी तरह गौर कर रहा हूं, मुझे आशा है कि कोई अनूठी बात जरूरी दिखायी पड़ेगी।

वीरेन्द्र : (ताज्जुब में आकर) देखो देखो, शेर की आँखें इस तरह घूम रही हैं, जैसे वह इधर-उधर देख रहा हो!

आनन्द : (अच्छी तरह देखकर) हाँ, ठीक तो है!

इसी समय एक आदमी दौड़ता हुआ आया और हाथ जोड़कर बोला, "महाराज, चारों तरफ से दुश्मन की फौज ने आकर हम लोगों को घेर

लिया, दो हजार सवारों के साथ शिवदत्त आ पहुँचा, ज़रा मैदान की तरफ देखिए।"

न मालूम शिवदत्त इतने दिनों तक कहाँ छिपा हुआ था और क्या कर रहा था। इस समय दो हजार फौज के साथ उसका यकायक आ पहुँचना और चारों तरफ से खंडहर को घेर लेना बड़ा ही दुःखदायी हुआ, क्योंकि बीरेन्द्रसिंह के पास इस समय केवल सौ सिपाही थे।

सूर्य अस्त हो चुका था, चारों तरफ से अँधेरी घिरी चली आती थी। फौज सहित राजा शिवदत्त जब तक खँडहर के पास पहुँचे, तब तक रात हो गयी। राजा शिवदत्त को यह तो मालूम ही हो चुका था कि केवल सौ सिपाहियों के साथ राजा बीरेन्द्रसिंह, कुँअर आनन्दसिंह और उनके ऐयार लोग इसी खँडहर में हैं, परन्तु राजा बीरेन्द्रसिंह, कुमार और उनके ऐयारों की वीरता और साहस को भी वह अच्छी तरह जानता था, इसलिए रात के समय खँडहर के अन्दर घुसने की उसकी हिम्मत न पड़ी। यद्यपि उसके साथ दो हजार सिपाही थे, मगर खँडहर के अन्दर डेढ़-दो सौ सिपाहियों से ज्यादे नहीं जा सकते थे, क्योंकि उसके अन्दर ज्यादे जमीन न थी और बीरेन्द्रसिंह तथा उनके साथी इतने आदमियों को कुछ भी न समझते, इसलिए शिवदत्त ने सोचा कि रात-भर इस खँडहर को घेरकर चुपचाप पड़े रहना ही उत्तम होगा। वास्तव में शिवदत्त का विचार बहुत ठीक था और उसने ऐसा ही किया। राजा बीरेन्द्रसिंह को भी रात-भर सोचने-विचारने की मोहलत मिली। उन्होंने कई सिपाहियों को फाटक पर मुस्तैद कर दिया और उसके बाद अपने बचाव का ढंग सोचने लगे।

दूसरा बयान

इस समय शिवदत्त की खुशी का अन्दाज करना मुश्किल है और यह कोई ताज्जुब की बात भी नहीं है, क्योंकि लड़कों और दोस्त-ऐयारों के सहित राजा बीरेन्द्रसिंह को उसने ऐसा बेबस कर दिया कि उन लोगों को जान बचाना कठिन हो गया है। शिवदत्त के आदमियों ने उस खँडहर को चारों तरफ से घेर लिया और उसे निश्चय हो गया कि अब हम पुनः चुनार की गद्दी पावेंगे और इसके साथ नौगढ़, विजयगढ़, गयाजी और रोहतासगढ़ की हुकूमत भी बिना परिश्रम हाथ लगेगी।

एक घने वटवृक्ष के नीचे अपने दोस्तों और ऐयारों को साथ लिये बैठा शिवदत्त गप्पें उड़ा रहा है। ऊपर एक सफेद चँदवा तना हुआ है। बिछावन और गद्दी उसी प्रकार की है, जैसी मामूली सरदार अथवा डाकुओं के भारी

गरोह के अफसर की होनी चाहिए। दो मशालची हाथ में मशाल लिये सामने खड़े हैं और इधर-उधर कई जगह आग सुलग रही है। बाकरअली, खुदाबक्श, यारअली और अजायबसिंह ऐयार शिवदत्त के दोनों तरफ बैठे हैं और सभों की निगाह उन शराब की बोतलों और प्यालों पर बराबर पड़ रही है, जो शिवदत्त के सामने काठ की चौकी पर रक्खे हुए हैं। धीरे-धीरे शराब पीने के साथ-साथ सबकोई शेखी बघार रहे हैं। कोई अपनी बहादुरी की तारीफ कर रहा है, तो कोई बीरेन्द्रसिंह वग़ैरह को सहज ही गिरफ्तार करने की तरकीब बता रहा है। शिवदत्त ने सिर उठाया और बाकरअली ऐयार की तरफ देखकर कुछ कहना चाहा परन्तु उसी समय उसकी निगाह सामने मैदान की तरफ जा पड़ी और वह चौंक उठा। ऐयारों ने भी पीछे फिरकर देखा और देर तक उसी तरफ देखते रहे।

दो मशालों की रोशनी जोकुछ दूर पर थी, इसी तरफ आती दिखायी पड़ी। वे दोनों मशाल मामूली न थे, बल्कि मालूम होता था कि लम्बे नेजे या छोटे-से बाँस के सिरे पर बहुत-सा कपड़ा लपेटकर मशाल का काम लिया गया है और उसे हाथ में लिये बल्कि ऊँचा किये हुए दो सवार घोड़ा दौड़ाते इसी तरफ आ रहे हैं। उन्हीं मशालों को देखकर शिवदत्त चौंका था।

बाकरअली ऐयार पेड़ के ऊपर चढ़ गया और थोड़ी देर में नीचे उतरकर बोला, "मशाल लेकर केवल दो सवार ही नहीं हैं, बल्कि और भी कई सवार उनके साथ मालूम होते हैं।"

थोड़ी ही देर में शिवदत्त के कई आदमी उन सवारों को अपने साथ लिये हुए वहीं आ पहुँचे, जहाँ शिवदत्त बैठा हुआ था। उन सवारों में से एक ने घोड़े पर से उतरने में शीघ्रता की। शिवदत्त ने पहिचान लिया कि वह उसका लड़का भीमसेन है। भीमसेन दौड़कर शिवदत्त के कदमों पर गिर पड़ा, शिवदत्त ने प्रेम के साथ उठाकर गले लगा लिया, दोनों की आँखों में आँसू भर आये और देर तक मुहब्बत-भरी निगाहों से एक दूसरे को देखते रह गये। इसके बाद लड़के का हाथ थामे हुए शिवदत्त अपनी गद्दी पर जा बैठा और भीमसेन से बातचीत करने लगा। उन सवारों ने भी कमर खोली जो भीमसेन के साथ आये थे।

भीमसेन : (गद्गद् स्वर में) इन चरणों के दर्शन की कदापि आशा न थी।

शिवदत्त : ठीक है, केवल मेरी ही भूल ने यह सब किया, परन्तु आज मुझ पर ईश्वर की दया हुई है, जिसका सबूत इससे बढ़कर और क्या हो सकता है कि बीरेन्द्रसिंह को मैंने फाँस लिया और मेरा प्यारा लड़का भी

मुझसे आ मिला। हाँ, यह कहो तुम्हें छुट्टी क्योंकर मिली ?

भीमसेन : (अपने साथियों में से एक की तरफ इशारा करके) केवल इनकी बदौलत मेरी जान बची।

भीमसेन ने उस आदमी को जिसकी तरफ इशारा किया था, अपने पास बुलाया और बैठने का इशारा किया, वह अदब के साथ सलाम करने बाद बैठ गया। उसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष के होगी, शरीर दुबला और कमजोर था। रंग यद्यपि गोरा और आँखें बड़ी थीं परन्तु चेहरे से उदासी और लाचारी पायी जाती थी और यह भी मालूम होता था कि कमजोर होने पर भी क्रोध ने उसे अपना सेवक बना रक्खा है।

भीमसेन : इसी ने मेरी जान बचायी है। यद्यपि यह दुबला और कम-जोर मालूम होता है, परन्तु परले सिरे का दिलावर और बात का धनी है और मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूँ कि इसके ऐसा चतुर और बुद्धिमान होना आजकल के जमाने में कठिन है। यह ऐयार नहीं है, मगर ऐयारों को कोई चीज नहीं समझता ! यह रोहतासगढ़ का रहनेवाला है, बीरेन्द्रसिंह के कारिन्दों के हाथ से दु:खी होकर भागा और इसने कसम खा ली है कि जब तक बीरेन्द्रसिंह और उनके खानदान का नाम-निशान न मिटा लूँगा, अन्न न खाऊँगा, केवल कन्दमूल खाकर जान बचाऊँगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह जोकुछ चाहे कर सकता है। रोहतासगढ़ के तहखाने और (हाथ का इशारा करके) इस खँडहर का भेद भी यह बखूबी जानता है, जिसमें बीरेन्द्रसिंह वगैरह लाचार और आपके सिपाहियों से घिरे पड़े हैं। इसने मुझे जिस चालाकी से निकाला उसका हाल इस समय कहकर समय नष्ट करना उचित नहीं जान पड़ता, क्योंकि आज ही इस थोड़ी-सी बची हुई रात में इसकी मदद से एक भारी काम निकलने की उम्मीद है। अब आप स्वयं इससे बातचीत कर लें।

भीमसेन की बात जो उस आदमी की तारीफ से भरी हुई थी, सुनकर शिवदत्त खुशी के मारे फूल उठा और उससे स्वयं बातचीत करने लगा।

शिवदत्त : सबके पहिले मैं आपका नाम सुनना चाहता हूँ।

वह : (धीरे-से कान की तरफ झुककर) मुझे लोग बाँकेसिंह कहके पुका-रते थे, परन्तु अब कुछ दिनों के लिए मैंने अपना नाम बदल दिया है। आप मुझे 'रूहा' कहकर पुकारा कीजिये, जिसमें किसी को मेरा असल नाम मालूम न हो।

शिवदत्त : जैसा आपने कहा वैसा ही होगा। इस समय तो हमने बीरेन्द्रसिंह को अच्छी तरह घेर लिया है, उनके साथ सिपाही भी बहुत कम हैं, जिन्हें हम लोग सहज ही गिरफ्तार कर लेंगे। आपका प्रण भी अब पूरा

हुआ ही चाहता है।

रूहा : (मुस्कुराकर) इस बन्दोबस्त से आप बीरेन्द्रसिंह का कुछ भी नहीं कर सकते।

शिवदत्त : सो क्यों ?

रूहा : क्या आप इस बात को नहीं जानते कि इस खँडहर की दीवार बड़ी मजबूत है ?

शिवदत्त : बेशक मजबूत है, मगर इससे क्या हो सकता है।

रूहा : क्या इस खंडहर के भीतर घुसकर आप उनका मुकाबला कर सकेंगे ?

शिवदत्त : क्यों नहीं ?

रूहा : कभी नहीं। इसके अन्दर सौ आदमियों से ज्यादे के जाने की जगह नहीं है और इतने आदमियों को बीरेन्द्रसिंह के साथी सहज ही में काट गिरावेंगे।

शिवदत्त : हमारे आदमी दीवारों पर चढ़कर हमला करेंगे और सबसे भारी बात यह है कि वे लोग दो ही तीन दिन में भूख-प्यास से तंग होकर लाचार बाहर निकलेंगे, उस समय उनको मार लेना कोई बड़ी बात नहीं है।

रूहा : सो भी नहीं हो सकता क्योंकि यह खँडहर एक छोटा-सा तिलिस्म हैं, जिसका रोहतासगढ़ के तहखानेवाले तिलिस्म से सम्बन्ध है। इसके अन्दर घुसना और दीवारों पर चढ़ना खेल नहीं है। बीरेन्द्रसिंह और उनके लड़कों को इस खँडहर का बहुतकुछ भेद मालूम है और आप कुछ भी नहीं जानते, इसी से समझ लीजिये कि आपमें, उनमें क्या फर्क है, इसके अतिरिक्त इस खंडहर में बहुत-से तहखाने और सुरंगें भी हैं, जिनसे वे लोग बहुत फायदा उठा सकते हैं।

शिवदत्त : (कुछ सोचकर) आप बड़े बुद्धिमान हैं और इस खँडहर का हाल अच्छी तरह जानते हैं। अब मैं अपना बिल्कुल काम आप ही की राय पर छोड़ता हूँ, जो आप कहेंगे मैं वही करूँगा, अब आप ही कहिये क्या किया जाय ?

रूहा : अच्छा, मैं आपकी मदद करूँगा और राय दूँगा, पहिले आप बतावें कि बीरेन्द्रसिंह के यहाँ आने का सबब आप जानते हैं ?

शिवदत्त : नहीं।

रूहा : इसका असल हाल मुझे मालूम हो चुका है। (भीमसेन की तरफ देखकर) उस आदमी का कहना बहुत ठीक है।

भीमसेन : बेशक, ऐसा ही है, वह आपका शागिर्द होकर आपसे झूठ

कभी नहीं बोलेगा।

शिवदत्त : क्या बात है ?

रूहा : हम लोग यहाँ आ रहे थे तो रास्ते में मेरा एक चेला मिला था, जिसकी जुबानी बीरेन्द्रसिंह के यहाँ आने का सबब हम लोगों को मालूम हो गया।

शिवदत्त : क्या मालूम हुआ ?

रूहा : इस खँडहर के तहखाने में कुँअर इन्द्रजीतसिंह न मालूम क्यों-कर जा फँसे हैं, जो किसी तरह निकल नहीं सकते, उन्हीं को छुड़ाने के लिए ये लोग आये हैं। मैं खँडहर के हर एक तहखाने और उसके रास्ते को जानता हूँ, अगर चाहूँ तो कुँअर इन्द्रजीतसिंह को सहज ही में निकाल लाऊँ।

शिवदत्त : ओ हो, यदि ऐसा हो तो क्या बात है। परन्तु आपको इस खँडहर में कोई जाने क्यों देगा और बिना खँडहर में गये आप तहखाने के अन्दर पहुँच नहीं सकते।

रूहा : नहीं-नहीं, खँडहर में जाने की कोई जरूरत नहीं है, मैं बाहर-ही-बाहर अपना काम कर सकता हूँ।

शिवदत्त : तो फिर ऐसे काम में क्यों न जल्दी की जाय ?

रूहा : मेरी राय है कि आप या आपके लड़के भीमसेन पाँच-सौ बहादुरों को साथ लेकर मेरे साथ चलें, यहाँ से लगभग दो कोस जाने के बाद एक छोटा-सा टूटा-फूटा मकान मिलेगा, पहिले उसे घेर लेना चाहिए।

शिवदत्त : उसके घेरने से क्या फायदा होगा ?

रूहा : इस खँडहर में से एक सुरंग गयी है, जो उसी मकान में निकली है, ताज्जुब नहीं है कि बीरेन्द्रसिंह वगैरह उस राह से भाग जायँ, इसलिए उस पर कब्जा कर लेना चाहिए। सिवाय इसके एक बात और है।

शिवदत्त : वह क्या ?

रूहा : उसी मकान में से एक दूसरी सुरंग उस तहखाने में गयी है, जिसमें कुँअर इन्द्रजीतसिंह हैं। यद्यपि उस सुरंग की राह से इस तहखाने तक पहुँचते-पहुँचते पाँच दरवाजे लोहे के मिलते हैं, जिनका खोलना अति कठिन है, परन्तु उनके खोलने की तरकीब मुझे मालूम है। वहाँ पहुँचकर मैं और भी कई काम करूँगा।

शिवदत्त : (खुश होकर) तब तो सबके पहिले हमें वहाँ ही पहुँचना चाहिए।

रूहा : बेशक ऐसा ही होना चाहिए, पाँच सौ सिपाही लेकर आप

मेरे साथ चलिए या भीमसेन चलें, फिर देखिए मैं क्या करता हूँ।

शिवदत्त : अब भीमसेन को तकलीफ देना तो मैं पसन्द नहीं करता।

रूहा : यह बहुत थक गये हैं और कैद की मुसीबत उठाकर कमजोर भी हो गये हैं, यहाँ का इन्तजाम इन्हें सुपुर्द कीजिए और आप मेरे साथ चलिए।

इसके कुछ ही देर बाद शिवदत्त पाँच सौ की फौज लेकर रूहा के साथ उत्तर की तरफ रवाना हुआ। इस समय पहर-भर रात बाकी थी, चाँद ने भी अपना चेहरा छिपा लिया था, मगर रहमदिल तारे डबडबायी हुई आँखों से दुष्ट शिवदत्त और उसके साथियों की तरफ देख-देख अफसोस कर रहे थे।

ये पाँच सौ लड़ाके घोड़ों पर सवार थे, रूहा और शिवदत्त अरबी घोड़ों पर सवार सबके आगे-आगे जा रहे थे। रूहा केवल एक तलवार कमर से लगाये हुए था, मगर शिवदत्त पूरे ठाठ से था। कमर में कटार और तलवार तथा हाथ में नेजा लिये हुए बड़ी खुशी से घुल-घुलकर बातें करता जाता था। सड़क पथरीली और ऊँची-नीची थी इसलिए ये लोग पूरी तेजी के साथ नहीं जा सकते थे, तिस पर भी घण्टे-भर चलने के बाद एक छोटे से टूटे-फूटे मकान की दीवार पर रूहा की नजर पड़ी और उसने हाथ का इशारा करके शिवदत्त से कहा, ''बस अब हम लोग ठिकाने आ पहुँचे, यही मकान है।''

शिवदत्त के साथी सवारों ने उस मकान को चारों तरफ से घेर लिया।

रूहा : इस मकान में कुछ खजाना भी है, जिसका हाल मुझे अच्छी तरह मालूम है।

शिवदत्त : (खुश होकर) आजकल मुझे रुपये की जरूरत भी है।

रूहा : मैं चाहता हूँ कि पहिले केवल आपको इस मकान में ले चलकर दो-एक जगह निशान और वहाँ का कुछ भेद बता दूँ, फिर जैसा मुनासिब होगा वैसा किया जायगा। आप मेरे साथ अकेले चलने के लिए तैयार हैं, डरते तो नहीं ?

शिवदत्त : (घमण्ड के साथ) क्या तुमने मुझे डरपोक समझ लिया है ? और फिर ऐसी अवस्था में जबकि हमारे पाँच सौ सवारों से यह मकान घिरा हुआ है ?

रूहा : (हँसकर) नहीं-नहीं, मैंने इसलिए टोका कि शायद इस पुराने मकान में आपको भूत-प्रेत का गुमान पैदा हो।

शिवदत्त : छिः, मैं ऐसे खयाल का आदमी नहीं हूँ, बस देर न कीजिए, चलिए।

रूहा ने पथरी से आग झाड़कर मोमबत्ती जलायी, जो उसके पास थी और शिवदत्त को साथ लेकर मकान के अन्दर घुसा। इस समय उस मकान की अवस्था बिल्कुल खराब थी, केवल तीन कोठरियाँ बची हुई थीं, जिनकी तरफ इशारा करके रूहा ने शिवदत्त से कहा, "यद्यपि यह मकान बिल्कुल टूट-फूट गया है, मगर इन तीनों कोठरियों को अभी तक किसी तरह का सदमा नहीं पहुँचा है, मुझे केवल इन्हीं कोठरियों से मतलब है। इस मकान की मजबूत दीवारें अभी दो-तीन बरसातें सम्हालने की हिम्मत रखती हैं।

शिवदत्त : मैं देखता हूँ कि वे तीनों कोठरियाँ एक के साथ एक सटी हुई हैं और इसका भी कोई सबब जरूर होगा।

रूहा : जी हाँ, मगर इन तीन कोठरियों से इस समय तीन काम निकलेंगे।

इसके बाद रूहा एक कोठरी के अन्दर घुसा। इसमें एक तहखाना था और नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ नजर आती थीं। शिवदत्त ने पूछा, "मालूम होता है, इसी सुरंग की राह आप मुझे ले चलेंगे?" इसके जवाब में रूहा ने कहा, "हाँ, इन्द्रजीतसिंह को गिरफ्तार करने के लिए इसी सुरंग में चलना होगा, मगर अभी नहीं, मैं पहिले आपको दूसरी कोठरी में ले चलता हूँ, जिसमें खजाना है, मेरी तो यही राय है कि पहिले खजाना निकाल लेना चाहिए, आपकी क्या राय है?"

शिवदत्त : (खुश होकर) हाँ हाँ, पहिले खजाना अपने कब्जे में कर लेना चाहिए, कहिए तो कुछ आदमियों को अन्दर बुलाऊँ?

रूहा : अभी नहीं, पहिले आप स्वयं चलकर उस खजाने को देख तो लीजिए।

शिवदत्त : अच्छा चलिए।

अब ये दोनों कोठरी में पहुँचे। इसमें भी एक वैसा ही तहखाना नजर आया, जिसमें उतरने के लिए सीढ़ियाँ मौजूद थीं। शिवदत्त को साथ लिये हुए रूहा उस तहखाने में उतर गया। यह ऐसी जगह थी कि यदि सौ आदमी एक साथ मिलकर चिल्लाएँ तो भी मकान के बाहर आवाज न जाय। शिवदत्त को उम्मीद थी कि अब रुपये और अशर्फियों से भरे हुए देग दिखायी देंगे, मगर उसके बदले यहाँ दस सिपाही ढाल-तलवार लिये मुँह पर नकाब डाले दिखायी पड़े और साथ ही इसके एक सुरंग पर भी नजर पड़ी, जो मालूम होता था कि अभी खोदकर तैयार की गयी है। शिवदत्त एकदम काँप उठा, उसे निश्चय हो गया कि रूहा ने मेरे साथ दगा की, और ये लोग मुझे मारकर इसी गड़हे में दबा देंगे। उसने एक लाचारी की निगाह रूहा पर डाली और कुछ कहना चाहा मगर खौफ ने उसका

गला ऐसा दबा दिया कि एक शब्द भी मुँह से न निकाल सका।

उन दसों ने शिवदत्त को गिरफ्तार कर लिया और मुश्कें बाँध लीं। रूहा ने कहा, "बस अब आप चुपचाप इन लोगों के साथ इस सुरंग में चले चलिए नहीं तो इसी जगह आपका सिर काट लिया जायगा।"

इस समय शिवदत्त रूहा और उसके साथियों का हुक्म मानने के सिवाय और कुछ भी न कर सकता था। सुरंग में उतरने के बाद लगभग आध कोस के चलना पड़ा, इसके बाद सब लोग बाहर निकले और शिवदत्त ने अपने को एक सूनसान मैदान में पाया। यहाँ पर कई साईसों की हिफाजत में बारह घोड़े कसे-कसाये तैयार थे। एक पर शिवदत्त को सवार कराया गया और नीचे से उसके दोनों पैर बाँध दिये गये, बाकी पर रूहा और वे दसों नकाबपोश सवार हुए और शिवदत्त को लेकर एक तरफ को चलते हुए।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह पर आफत आने से बीरेन्द्रसिंह दुखी होकर उनको छुड़ाने का उद्योग कर ही रहे थे, परन्तु बीच में शिवदत्त का आ जाना बड़ा ही दुखदायी हुआ। ऐसे समय में जबकि यह अपनी फौज से बहुत ही दूर पड़े हैं सौ-दो-सौ आदमियों को लेकर शिवदत्त की दो हजार फौज से मुकाबला करना बहुत ही कठिन मालूम पड़ता था, साथ ही इसके यह सोचकर कि जब तक शिवदत्त यहाँ है, कुँअर इन्द्रजीतसिंह के छुड़ाने की कार्रवाई किसी तरह नहीं हो सकती, वे और भी उदास हो रहे थे। यदि उन्हें कुँअर इन्द्रजीतसिंह का खयाल न होता तो शिवदत्त का आना उन्हें न गढ़ाता और वे लड़ने से बाज न आते, मगर इस समय राजा बीरेन्द्रसिंह बड़े फिक्र में पड़ गये और सोचने लगे कि क्या करना चाहिए। सबसे ज्यादा फिक्र तारासिंह को थी, क्योंकि वह कुँअर इन्द्रजीतसिंह का मृत शरीर अपनी आँखों से देख चुका था। राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके साथी लोग तो अपनी फिक्र में लगे हुए थे और खँडहर के दरवाजे पर तथा दीवारों पर से लड़ने का इन्तजाम कर रहे थे, परन्तु तारासिंह उस छोटी-सी बावली के किनारे, जो अभी जमीन खोदने से निकली थी, बैठा अपने खयाल में ऐसा डूबा था कि उसे दीन-दुनिया की खबर न थी। वह नहीं जानता था कि हमारे संगी-साथी इस समय क्या कर रहे हैं। रात आधी से ज्यादे जा चुकी थी, मगर वह अपने ध्यान में डूबा हुआ बावली के किनारे बैठा है। राजा बीरेन्द्रसिंह ने भी यह सोचकर कि शायद वह इसी बावली के विषय में कुछ सोच रहा है, तारासिंह को कुछ न टोका और न कोई काम उसके सुपुर्द किया।

हम ऊपर लिख आये हैं कि इस बावली में से कुल मिट्टी निकल जाने पर बावली के बीचोबीच में पीतल की मूरत दिखायी पड़ी। उस मूरत का भाव यह था कि एक हिरन का शेर ने शिकार किया है और हिरन की

गर्दन का आधा भाग शेर के मुँह में है। मूरत बहुत ही खूबसूरत बनी हुई थी।

जिस समय का हाल हम लिख रहे हैं अर्थात् आधी रात गुजर जाने के बाद यकायक उस मूरत में एक प्रकार की चमक पैदा हुई और धीरे-धीरे वह चमक यहाँ तक बढ़ी कि तमाम बावली बल्कि तमाम खंडहर में उजियाला हो गया, जिसे देख सब-के-सब घबरा गये। बीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह और कमला तीनों आदमी फुर्ती के साथ उस जगह पहुँचे, जहाँ तारासिंह बैठा हुआ ताज्जुब में आकर उस मूरत को देख रहा था।

घण्टा-भर बीतते-बीतते मालूम हुआ कि वह मूरत हिल रही है। उस समय शेर की दोनों आँखें ऐसी चमक रही थीं कि निगाह नहीं ठहरती थी। मूरत को हिलते देख सभों को बड़ा ताज्जुब हुआ और निश्चय हो गया कि अब तिलिस्म की कोई-न-कोई कार्रवाई हम लोग जरूर देखेंगे।

यकायक मूरत बड़े जोर से हिली और तब एक भारी आवाज के साथ जमीन के अन्दर धँस गयी। खंडहर में चारों तरफ अंधेरा हो गया। कायदे की बात है कि आँखों के सामने जब थोड़ी देर तक कोई तेज रोशनी रहे और वह यकायक गायब हो जाय या बुझा दी जाय तो आँखों में मामूली से ज्यादा अँधेरा छा जाता है, वही हालत इस समय खँडहरवालों की हुई। थोड़ी देर तक उन लोगों को कुछ भी नहीं सूझता था। आधी घड़ी गुजर जाने के बाद वह गड़हा दिखायी देने लगा, जिसके अन्दर मूरत धँस गयी थी। अब उस गड़हे के अन्दर भी एक प्रकार की चमक मालूम होने लगी और देखते-देखते हाथ में चमकता हुआ नेजा लिये, वह राक्षसी उस गड़हे में से बाहर निकली, जिसका जिक्र ऊपर कई दफे किया जा चुका है।

हमारे बीरेन्द्रसिंह और उनके ऐयार लोग उस औरत को कई दफे देख चुके थे और वह औरत इनके साथ अहसान भी कर चुकी थी, इसलिए उसे यकायक देखकर वे लोग कुछ प्रसन्न हुए और उन्हें विश्वास हो गया कि इस समय यह औरत जरूर हमारी कुछ-न-कुछ मदद करेगी और थोड़ा-बहत यहाँ का हाल भी हम लोगों को जरूर मालूम होगा।

उस औरत ने नेजे को हिलाया। हिलने के साथ ही बिजली-सी चमक उसमें पैदा हुई और तमाम खँडहर में उजाला हो गया। वह बीरेन्द्रसिंह के पास आयी और बोली, "आपको पहर-भर की मोहलत दी जाती है। इसके अन्दर इस खँडहर के हर एक तहखाने में यदि रास्ता मालूम है, तो आप घूम सकते हैं। शाह-दरवाजा जो बन्द हो गया था, उसे आपके खातिर से पहर-भर के लिए मैंने खोल दिया। इससे विशेष समय लगाना अनर्थ करना है।"

इतना कह वह राक्षसी उसी गड़हे में घुस गयी और वह पीतलवाली मूरत, जो जमीन के अन्दर धँस गयी थी, फिर अपने स्थान पर आकर बैठ गयी, इस समय उसमें किसी तरह की चमक न थी।

अब बीरेन्द्रसिंह और आनन्दसिंह वगैरह को कुँअर इन्द्रजीतसिंह से मिलने की उम्मीद हुई।

बीरेन्द्र : कुछ मालूम नहीं होता कि यह औरत कौन है और समय-समय पर हम लोगों की सहायता क्यों करती है।

तारा : जब तक वह स्वयं अपना हाल न कहे हम लोग उसे किसी तरह नहीं जान सकते, परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह औरत तिलिस्मी है और कोई भारी सामर्थ्य रखती है।

कमला : परन्तु सूरत इसकी भयानक है।

तेज : यदि यह सूरत बनावटी हो तो भी कोई आश्चर्य नहीं।

बीरेन्द्र : हो सकता है, खैर, अब हमको तहखाने के अन्दर चलना और इन्द्रजीत को छुड़ाना चाहिए, पहर-भर का समय हम लोगों के लिए कम नहीं है, मगर शिवदत्त के लिए क्या किया जाय। यदि वह इस खँडहर में घुस आने और लड़ने का उद्योग करेगा तो यह अमूल्य समय पहर-भर यों ही नष्ट हो जायगा।

तेज : इसमें क्या सन्देह है? ऐसे समय में इस कमबख्त का चढ़ आना बड़ा ही दुःखदायी हुआ।

इतना कहकर तेजसिंह गौर में पड़ गये और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए। इसी बीच में खँडहर के फाटक की तरफ से सिपाहियों के चिल्लाने की आवाज आयी और यह भी मालूम हुआ कि वहाँ लड़ाई हो रही है।

जिस समय शिवदत्त के चढ़ आने की खबर मिली थी, उसी समय राजा बीरेन्द्रसिंह के हुक्म से पचास सिपाही खँडहर के फाटक पर मुस्तैद कर दिये गये थे और उन सिपाहियों ने आपस में निश्चय कर लिया था कि जब तक पचास में से एक भी जीता रहेगा फाटक के अन्दर कोई घुसने न पावेगा।

फाटक पर कोलाहल सुनकर तेजसिंह और तारासिंह दौड़े गये और थोड़ी देर में वापस आकर खुशी भरी आवाज में तेजसिंह ने बीरेन्द्रसिंह से कहा, "बेशक फाटक पर लड़ाई हो रही है। न मालूम हमारे किस दोस्त ने किस ऐयारी से शिवदत्त को गिरफ्तार कर लिया, जिससे उसकी फौज हताश हो गयी। थोड़े आदमी तो फाटक पर आकर लड़ रहे हैं और बहुत-से भागे जा रहे हैं। मैंने एक सिपाही से पूछा तो उसने कहा कि मैं अपने

साथियों के साथ फाटक पर पहरा दे रहा था कि यकायक कुछ सवार इसी तरफ से मैदान की ओर भागे जाते दिखायी दिये। वे लोग चिल्ला-चिल्लाकर यह कहते जाते थे कि 'तुम लोग भागो और अपनी जान बचाओ। शिवदत्त गिरफ्तार हो गया, अब तुम उसे किसी तरह से नहीं छुड़ा सकते'। इसके बाद बहुत से तो भाग गये और भाग रहे हैं मगर थोड़े आदमी यहाँ आ गये जो लड़ रहे हैं।''

तेजसिंह की बात सुनकर बीरेन्द्रसिंह वीर भाव से यह कहते हुए फाटक की तरफ लपके कि 'तब तो पहिले उन्हीं लोगों को भगाना चाहिए, जो भागने से बच रहे हैं, जब तक दुश्मन का कोई आदमी गिरफ्तार न होगा खुलासा हाल मालूम न होगा'।

खँडहर के फाटक पर से लौटकर तेजसिंह ने जोकुछ हाल राजा बीरेन्द्रसिंह से कहा, वह बहुत ठीक था। जब रूहा अपनी बातों में फँसाकर शिवदत्त को ले गया, उसके दो घण्टे बाद भीमसेन ने अपने साथियों को तैयार होने और घोड़े कसने की आज्ञा दी। शिवदत्त के ऐयारों को ताज्जुब हुआ, उन्होंने भीमसेन से इसका सबब पूछा, जिसके जवाब में भीमसेन ने केवल इतना ही कहा कि 'हम क्या करते हैं सो अभी मालूम हो जायगा'। जब घोड़े तैयार हो गये तो साथियों को कुछ इशारा करके भीमसेन घोड़े पर सवार हो गया और म्यान से तलवार निकाल शिवदत्त के आदमियों को जख्मी करता और यह कहता हुआ कि 'तुम लोग भागो और अपनी जान बचाओ, तुम्हारा शिवदत्त गिरफ्तार हो गया, अब तुम उसे किसी तरह नहीं छुड़ा सकते' मैदान की तरफ भागा। उस समय शिवदत्त के ऐयारों की आँखें खुलीं और वे समझ गये कि हम लोगों के साथ ऐयारी की गयी तथा यह भीमसेन नहीं है, बल्कि कोई ऐयार है! उस समय शिवदत्त की फौज हर तरह से गाफिल और बेफिक्र थी। शिवदत्त के ऐयारों के हुक्म से यद्यपि कई आदमियों ने घोड़ों की नंगी पीठ पर सवार होकर नकली भीमसेन का पीछा किया मगर अब क्या हो सकता था, बल्कि उसका नतीजा यह हुआ कि फौजी आदमी अपने साथियों को भागता हुआ समझ खुद भी भागने लगे। ऐयारों ने रोकने के लिए बहुत उद्योग किया, परन्तु बिना मालिक की फौज कब तक रुक सकती थी, बड़ी मुश्किल से थोड़े आदमी रुके और खँडहर के फाटक पर आकर हुल्लड़ मचाने लगे, परन्तु उस समय उन लोगों की हिम्मत भी जाती रही, जब बहादुर बीरेन्द्रसिंह, आनन्दसिंह उनके ऐयार तथा शेरदिल साथी और सिपाही हाथों में नंगी तलवार लिये उन लोगों पर आ टूटे। राजा बीरेन्द्रसिंह और कुँअर आनन्दसिंह शेर की तरह जिस तरफ झपटते थे, सफाई हो जाती थी, जिसे देख शिवदत्त के आदमियों

में से बहुतों की तो यह अवस्था हो गयी कि खड़े होकर उन दोनों की बहादुरी देखने के सिवाय कुछ भी न कर सकते थे। आखिर यहाँ तक नौबत पहुँची कि सभों ने पीठ दिखा दी और मैदान का रास्ता लिया।

इस लड़ाई में जो घण्टे-भर से ज्यादे तक होती रही राजा बीरेन्द्रसिंह के दस आदमी मारे गये और बीस जख्मी हुए। शिवदत्त के चालीस मारे गये और साठ जख्मी हुए, जिनसे दरियाफ्त करने पर राजा बीरेन्द्रसिंह को भीमसेन और शिवदत्त का खुलासा हाल जैसाकि हम ऊपर लिख आये हैं मालूम हो गया, मगर इसका पता न लगा कि शिवदत्त को किसने किस रीति से गिरफ्तार कर लिया।

बीरेन्द्रसिंह ने अपने कई आदमी लाशों को हटाने और जख्मियों की हिफाजत के लिए तैनात किये और इसके बाद कुँअर इन्द्रजीतसिंह को छुड़ाने के लिए खँडहर के तहखाने में जाने का इरादा किया।

जिस तहखाने में कुँअर इन्द्रजीतसिंह थे, उसके रास्ते का हाल कई दफे लिखा जा चुका है, पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं, इसलिए केवल इतना ही लिखा जाता है कि वे दरवाजे, जिनका खुलना शाह-दरवाजा बन्द हो जाने के कारण कठिन हो गया था, अब सुगमता से खुल गये, जिससे सभों को खुशी हुई और केवल बीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह, कमला और तारासिंह मशाल लेकर, उस तहखाने के अन्दर उतर आये।

इस समय तारासिंह की अजब हालत थी। उसका कलेजा काँपता और उछलता था। वह सोचता था कि देखें कुँअर इन्द्रजीतसिंह, भैरोसिंह और कामिनी को किस अवस्था में पाते हैं। ताज्जुब नहीं कि हमारे पाठकों की भी इस समय वही अवस्था हो और वे भी इसी सोच-विचार में हों, मगर वहाँ तहखाने में तो मामला ही दूसरे ढंग का था।

तहखाने में उतर जाने के बाद राजा बीरेन्द्रसिंह, आनन्दसिंह और ऐयारों ने चारों तरफ देखना शुरू किया, मगर कोई आदमी दिखायी न पड़ा और न कोई ऐसी चीज नजर पड़ी, जिससे उन लोगों का पता लगता, जिनकी खोज में वे लोग तहखाने के अन्दर गये थे। न तो वह सन्दूक था, जिसमें इन्द्रजीतसिंह की लाश थी और न भैरोसिंह, कामिनी या उस सिपाही की सूरत नजर आयी, जो उस सन्दूक के साथ तहखाने में आया था, जिसमें कुँअर इन्द्रजीतसिंह की लाश थी।

वीरेन्द्र : (तारासिंह की तरफ देखकर) यहाँ तो कोई भी नहीं है! क्या तुमने उन लोगों को किसी दूसरे तहखाने में छोड़ा था।

तारा : जी नहीं, मैंने उन सभों को इसी जगह छोड़ा। (हाथ से इशारा करके) इसी कोठरी में कामिनी ने अपने को बन्द कर रक्खा था!

बीरेन्द्र : कोठरी का दरवाजा खुला हुआ है, उसके अन्दर जाकर देखो तो शायद कोई हो।

कमला ने कोठरी का दरवाजा खोला और अन्दर झाँककर देखा। इसके बाद कोठरी के अन्दर घुसकर उसने आनन्दसिंह और तारासिंह को पुकारा और उन दोनों ने भी कोठरी के अन्दर पैर रक्खा।

कमला, तारासिंह और आनन्दसिंह को कोठरी के अन्दर घुसे आधी घड़ी से ज्यादे गुजर गयी, मगर उन तीनों में से एक भी बाहर न निकला। आखिर तेजसिंह ने पुकारा, परन्तु जवाब न मिलने पर लाचार हो हाथ में मशाल लेकर तेजसिंह खुद कोठरी के अन्दर गये और इधर-उधर ढूँढ़ने लगे।

वह कोठरी बहुत छोटी और संगीन थी। चारों तरफ पत्थर की दीवारों पर खूब ध्यान देने से कोई खिड़की या दरवाजे का निशान नहीं पाया जाता था, हाँ ऊपर की तरफ एक छोटा-सा छेद दीवार में था, मगर वह भी इतना छोटा था कि आदमी का सिर किसी तरह उसके अन्दर नहीं जा सकता था और दीवार में कोई ऐसी रुकावट भी न थी, जिस पर चढ़के या पैर रखकर कोई आदमी अपना हाथ उस मोखे (छेद) तक पहुँचा सके। ऐसी कोठरी में से यकायक कमला, तारासिंह और आनन्दसिंह का गायब हो जाना, बड़े ही आश्चर्य की बात थी। तेजसिंह ने इसका सबब बहुत कुछ सोचा, मगर अक्ल ने कुछ मदद न की। बीरेन्द्रसिंह भी कोठरी के अन्दर गये और तलवार के कब्जे से हर एक दीवार को टोंक-ठोंककर देखने लगे, जिसमें मालूम हो जाय कि किसी जगह से दीवार पोली तो नहीं है, मगर इससे भी कोई काम न चला। थोड़ी देर तक दोनों आदमी हैरान हो चारों तरफ देखते रहे। आखिर किसी आवाज ने उन्हें चौकन्ना कर दिया और वे दोनों ध्यान देकर उस छेद की तरफ देखने लगे, जो उस कोठरी के अन्दर ऊँची दीवार में था और जिसमें से आवाज आ रही थी। वह आवाज यह थी—

"बस, जहाँ तक जल्द हो सके तुम दोनों आदमी इस तहखाने से बाहर निकल जाओ नहीं तो व्यर्थ तुम दोनों की जान चली जायेगी, अगर बचे रहोगे तो दोनों कुमारों को छुड़ाने का उद्योग करोगे और पता लगा ही लोगे। मैं वही बिजली की तरह चमकनेवाला नेजा हाथ में रखनेवाली औरत हूँ, पर लाचार इस समय किसी तरह तुम्हारी मदद नहीं कर सकती। अब तुम लोग बहुत जल्द रोहतासगढ़ चले जाओ, उसी जगह आकर मैं तुमसे मिलूँगी और सब हाल खुलासा कहूँगी। अब मैं जाती हूँ, क्योंकि इस समय मुझे भी अपनी जान की पड़ी है।"

इस बात को सुनकर दोनों आदमी ताज्जुब में आ गये और कुछ देर

तक सोचने के बाद तहखाने के बाहर निकल आये।

डबडबायी आँखों के साथ उसाँसें लेते हुए राजा बीरेन्द्रसिंह रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुए। कैदियों और अपने कुल आदमियों को साथ लेते गये, मगर तेजसिंह ने न मालूम क्या कह-सुनकर और क्यों छुट्टी ले ली और राजा बीरेन्द्रसिंह के साथ रोहतासगढ़ न गये।

राजा बीरेन्द्रसिंह, रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुए, तेजसिंह ने दक्खिन का रास्ता लिया। इस वारदात को कई महीने गुजर गये और इस बीच में कोई बात ऐसी नहीं हुई जो लिखने योग्य हो।

तीसरा बयान

अब हम अपने पाठकों को फिर उस मैदान के बीचवाले अद्‌भुत मकान के पास ले चलते हैं, जिसके अन्दर इन्द्रजीतसिंह, देवीसिंह, शेरसिंह और कमलिनी के सिपाही लोग जा फँसे थे अर्थात् कमन्द के सहारे दीवार पर चढ़कर अन्दर की तरफ झाँकने के बाद हँसते-हँसते उस मकान में कूद पड़े थे। हम लिख आये हैं कि जब वे लोग मकान के अन्दर कूद गये तो न मालूम क्या समझकर कमलिनी हँसी और अपनी ऐयारा तारा को साथ ले वहाँ से रवाना हो गयी।

तारा को साथ लिये और बातें करती हुई कमलिनी दक्खिन की तरफ रवाना हुई, जिधर का जंगल घना और सोहावना था। लगभग दो कोस चले जाने बाद जंगल बहुत ही रमणीक मिला, बल्कि यों कहना चाहिए कि जैसे-जैसे वे दोनों बढ़ती जाती थीं, जंगल सोहावना और खूशबूदार जंगली फूलों की महक से बसा हुआ मिलता जाता था, यहाँ तक कि दोनों एक ऐसे सुन्दर चश्मे के किनारे पहुँचीं, जिसका जल बिल्लौर की तरह साफ था और जिसके दोनों किनारों पर दूर-दूर तक मौलसिरी के पेड़ लगे हुए थे। इस चश्मे का पाट दस हाथ का होगा और गहराई दो हाथ से ज्यादे न होगी। यहाँ की जमीन पथरीली और पहाड़ी थी।

अब ये दोनों उस चश्मे के किनारे-किनारे जाने लगीं। ज्यों-ज्यों आगे जाती थीं, जमीन ऊँची मिलती जाती थी, जिससे समझ लेना चाहिए कि यह मुकाम किसी पहाड़ी की तराई में है। लगभग आधा कोस जाने बाद वे दोनों ऐसी जगह पहुँचीं, जहाँ चश्मे के दोनों किनारेवाले मौलसिरी* के पेड़ झुककर आपुस में मिल गये थे और जिसके सबब से चश्मा अच्छी तरह

---

* इसका नाम 'मालश्री' भी है।

से ढँककर मुसाफिरों का दिल लुभा लेनेवाली छटा दिखा रहा था। इस जगह चश्मे के किनारे एक छोटा-सा चबूतरा था, जिसकी ऊँचाई पुर्सा-भर से कम न होगी। चबूतरे पर एक छोटी-सी पिण्डी इस ढब से बनी हुई थी, जिसे देखते ही लोगों को विश्वास हो जाय कि किसी साधु की समाधि है।

इस ठिकाने पहुँचकर वे दोनों रुकीं और घोड़े से नीचे उतर पड़ीं। तारा ने अपने घोड़े का असबाब नहीं उतारा अर्थात् उसे कसा-कसाया छोड़ दिया परन्तु कमलिनी ने अपने घोड़े का चारजामा उतार लिया और लगाम उतारकर घोड़े को यों ही छोड़ दिया। घोड़ा पहिले तो चश्मे के किनारे आया और पानी पीने बाद कुछ दूर जाकर सब्ज जमीन पर चरने और खुशी-खुशी घूमने लगा। तारा ने भी अपने घोड़े को पानी पिलाया और बागडोर के सहारे एक से पेड़ बाँध दिया। इसके बाद कमलिनी और तारा चश्मे के किनारे पत्थर की एक चट्टान पर बैठ गयीं और यों बातचीत करने लगीं—

कमलिनी : अब इसी जगह से मैं तुमसे अलग होऊँगी !

तारा : अफसोस, यह दुश्मनी अब हद से ज्यादे बढ़ चली ?

कमलिनी : फिर क्या किया जाय, तू ही बता इसमें मेरा क्या कसूर है ?

तारा : तुम्हें कोई भी दोषी नहीं ठहरा सकता, इसमें कोई सन्देह नहीं कि महारानी अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मार रही हैं।

कमलिनी : हर एक लक्षण पर ध्यान देने से महारानी को भी निश्चय हुआ है कि ये ही दोनों भाई तिलिस्म के मालिक होंगे, फिर उसके लिए जिद करना और उन दोनों की जान लेने का उद्योग करना भूल नहीं तो क्या है ?

तारा : बेशक भूल है और इसकी वह सजा पावेंगी। तुमने बहुत अच्छा किया कि उनका साथ छोड़ दिया। (मुस्कुराकर) इसके बदले में जरूर तुम्हारी मुराद पूरी होगी।

कमलिनी : (ऊँची साँस लेकर) देखें क्या होता है।

तारा : होना क्या है ? क्या उनकी आँखों ने उनके दिल का हाल तुमसे नहीं कह दिया ?

कमलिनी : हाँ ठीक है, खैर, इस समय तो उन पर भारी मुसीबत आ पड़ी है, जहाँ तक जल्द हो सके, उन्हें बचाना चाहिए।

तारा : मगर मुझे ताज्जुब मालूम पड़ता है कि उनके छुड़ाने का कोई उद्योग किये बिना ही तुम यहाँ चली आयीं ?

कमलिनी : क्या तुझे मालूम नहीं कि नानक ने इसी ठिकाने मुझसे मिलने का वादा किया है ? उसने कहा था कि जब मिलना हो इसी ठिकाने

आना।

तारा : (कुछ सोचकर) हाँ हाँ, ठीक है, अब याद आया, तो क्या वह यही जगह है ?

कमलिनी : हाँ, यही जगह है।

तारा : मगर तुम तो इस तरह घोड़ा फेंके चली आयीं, जैसे कई दफे आने-जाने के कारण यहाँ का रास्ता तुम्हें बखूबी याद हो।

कमलिनी : बेशक मैं यहाँ कई दफे आ चुकी हूँ, बल्कि नानक को इस ठिकाने का पता पहिले मैंने ही बताया था, और यहाँ का कुछ भेद भी कहा था।

तारा : अफसोस, इस जगह का भेद तुमने आज तक मुझसे कुछ नहीं कहा।

कमलिनी : यद्यपि तू ऐयारा है और मैं तुझे चाहती हूँ, परन्तु तिलिस्मी कायदे के मुताबिक मेरे भेदों को तू नहीं जान सकती।

तारा : सो तो मैं भी जानती हूँ, मगर अफसोस इस बात का है कि मुझसे तो तुमने छिपाया और नानक को यहाँ का भेद बता दिया। न मालूम नानक की कौन-सी बात पर तुम रीझ गयी हो ?

कमलिनी : (कुछ हँसकर और तारा के गाल पर धीरे-से चपत मारकर) बदमाश कहीं की, मैं नानक पर क्यों रीझने लगी ?

तारा : (झुँझलाकर) तो फिर ऐसा क्यों किया ?

कमलिनी : अरे, उससे उस कोठरी की ताली लेनी है न, जिसमें खून से लिखी हुई किताब रक्खी है।

तारा : तो फिर ताली लेने के पहिले ही यहाँ का भेद उसे क्यों बता दिया ? अगर वह ताली न दे तब ?

कमलिनी : ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि भूतनाथ ने मेरी दिलजमई कर दी है और वह भूतनाथ के कब्जे में है।

"हाँ हाँ, वह मेरे कब्जे में है—" उसी समय यह आवाज पेड़ों के झुरमुट में से जो कमलिनी के पीछे की तरफ था आयी और कमलिनी ने फिरकर देखा तो भूतनाथ की सूरत दिखायी पड़ी।

कमलिनी : अजी आओ भूतनाथ, तुम कहाँ थे ? मैं बड़ी देर से यहाँ बैठी हूँ, नानक कहाँ है ?

भूतनाथ : (पास आकर) आ ही तो गये, (हाथ का इशारा करके) वह देखो नानक भी आ रहा है।

बात-की-बात में नानक भी वहाँ आ पहुँचा और कमलिनी को सलाम करके खड़ा हो गया।

कमलिनी : कहो जी नानकप्रसाद, अब वादा पूरा करने में क्या देर है ?

नानक : कुछ देर नहीं, मैं तैयार हूँ, परन्तु आप भी अपना वादा पूरा कीजिए और समाधि पर हाथ रखकर कसम खाइए ।

कमलिनी : हाँ हाँ, लो मैं अपना वादा पूरा करती हूँ ।

भूतनाथ : मेरा भी ध्यान रखना ।

कमलिनी : अवश्य !

कमलिनी उठी और समाधि के पास जाकर खड़ी हो गयी । पहिले तो उसने समाधि के सामने अदब से सिर झुकाया और तब उस पर हाथ रखकर यों बोली—

''मैं उस महात्मा की समाधि पर हाथ रखकर कसम खाती हूँ, जो अपना सानी नहीं रखता था, हर एक शास्त्र का पूरा पण्डित, पूरा योगी, भूत, भविष्य और वर्तमान का हाल जाननेवाला और ईश्वर का सच्चा भक्त था । यद्यपि यह उसकी समाधि है परन्तु मुझे विश्वास है कि योगिराज सजीव हैं और मेरी रक्षा का ध्यान उन्हें सदैव बना रहता है (हाथ जोड़कर) योगिराज से मैं प्रार्थना करती हूँ कि मेरी प्रतिज्ञा को निबाहें । (समाधि पर हाथ रखकर) यदि नानक मुझे वह ताली दे देगा तो मैं उसके साथ कभी दगा न करूँगी, उसे अपने भाई के समान मानूंगी और उसी काम में उद्योग करूँगी, जिसमें उसकी खुशी हो । मैं उस आदमी के लिए भी कसम खाती हूँ, जिसने अपना नाम भूतनाथ रक्खा हुआ है । उसे मैं अपने सहोदर भाई के समान मानूंगी और जब तक वह मेरे साथ बुराई न करेगा, मैं उसकी भलाई करती रहूँगी ।''

इतना कहकर कमलिनी समाधि से अलग हो गयी । नानक ने एक छोटी-सी डिबिया कमलिनी के हाथ में दी और उसके पैरों पर गिर पड़ा । कमलिनी ने पीठ ठोंककर उसे उठाया और उस डिबिया को इज्जत के साथ सिर से लगाया । इसके बाद चारों आदमी फिर उस पत्थर की चट्टान पर आकर बैठ गये और बातचीत होने लगी ।

भूतनाथ : (कमलिनी से) जब आपने मुझे और नानक को अपने भाई के समान मान लिया तो मुझे जोकुछ आपसे कहना हो दिल खोलकर कह सकता हूँ और जोकुछ माँगना हो माँग सकता हूँ, चाहे आप दें अथवा न दें ।

कमलिनी : (मुस्कराकर) हाँ हाँ, जोकुछ कहना हो कहो और माँगना हो माँगो ।

भूतनाथ : इसमें कोई सन्देह नहीं कि आपके पास एक-से-एक बढ़कर अनमोल चीजें होंगी । अस्तु, मुझे और नानक को कोई ऐसी चीज दीजिए

जो समय पर काम आये और दुश्मनों को धमकाने और उन पर फतह पाने के लिए बेनजीर हो।

कमलिनी : इसके कहने की तो कोई जरूरत न थी, मैं स्वयं चाहती थी कि तुम दोनों को कोई अनमोल वस्तु दूँ, खैर, ठहरो मैं अभी ला देती हूँ।

इतना कहकर कमलिनी उठी और चश्मे के जल में कूद पड़ी। उस जगह जल बहुत गहरा था, इसलिए मालूम न हुआ कि वह कहाँ चली गयी। कमलिनी के इस काम ने सभों को ताज्जुब में डाल दिया और तीनों आदमी टकटकी बाँधकर उसी तरफ देखने लगे।

आधे घण्टे बाद कमलिनी जल के बाहर निकली। उसके एक हाथ में छोटी-सी कपड़े की गठरी और दूसरे हाथ में लोहे की जंजीर थी। यद्यपि कमलिनी जल में से निकली थी और उसके कपड़े गीले हो रहे थे तथापि उस कपड़े की गठरी पर जल ने कुछ भी असर न किया था, जिसे कमलिनी लायी थी!

कमलिनी ने कपड़े की गठरी पत्थर की चट्टान पर रख दी और लोहे की जंजीर भूतनाथ के हाथ में देकर बोली, "इसे तुम दोनों आदमी मिलकर खींचो।" उस जंजीर के साथ एक छोटा-सा लोहे का मगर हलका सन्दूक बँधा हुआ था, जिसे भूतनाथ और नानक ने खैंचकर बाहर निकाला।

कमलिनी ने एक खटका दबाकर सन्दूक खोला। इसके अन्दर चार ख़ंजर, एक नेजा और पाँच अँगूठियाँ थीं। कमलिनी ने पहिले एक अँगूठी निकाली और अपनी अंगुली में पहिर लिया, इसके बाद एक खंजर निकाला और उसे म्यान से वाहर कर तारा, भूतनाथ और नानक को दिखाकर बोली, "देखो इस खंजर का लोहा कितना उम्दा है।"

भूतनाथ : बेशक वहुत उम्दा लोहा है।

कमलिनी : अब इसके गुण सुनो। यह खंजर जिस चीज पर पड़ेगा, उसे दो टुकड़े कर देगा चाहे वह चीज लोहा, पत्थर, अष्टधातु या फौलादी हर्बा क्यों न हो। इसके अतिरिक्त जब इसका कब्जा दबाओगे तो इसमें बिजली की तरह चमक पैदा होगी, उस समय यदि सौ आदमी भी तुम्हें घेरे हुए होंगे तो चमक से सभी की आँखें बन्द हो जाँयगी। यद्यपि इस समय दिन है और किसी तरह की चमक सूर्य का मुकाबला नहीं कर सकती तथापि इसका मजा मैं तुम्हें दिखाती हूँ।

इतना कहकर कमलिनी ने खंजर का कब्जा दबाया, यकायक इतनी ज्यादे चमक उसमें से पैदा हुई कि दिन का समय होने पर भी उन तीनों की आँखें बन्द हो गयीं, मालूम हुआ कि एक बिजली-सी आँख के सामने चमक गयी।

कमलिनी : सिवाय इसके इस खंजर को जो कोई छुएगा या जिसके बदन से यह खंजर छुला दोगे, उसके खून में एक प्रकार की बिजली दौड़ जायगी और वह तुरत बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ेगा। लो, इसे तुम लोग छूकर देखो, यही अद्भुत खंजर मैं तुम लोगों को दूँगी।

कमलिनी ने खंजर भूतनाथ के आगे रख दिया, भूतनाथ ने उसे उठाना चाहा मगर हाथ लगाने के साथ ही वह काँपा और बदहवास होकर जमीन पर गिर पड़ा। कमलिनी ने अपना दूसरा हाथ, जिसमें अँगूठी थी, उसके बदन पर फेरा तब उसे होश आया।

भूतनाथ : चीज तो बहुत अच्छी है, मगर इसका छूना गजब है।

कमलिनी : (सन्दूक में से कई अँगूठियाँ निकालकर) पहिले इन अँगूठियों को तुम लोग पहिरो तब इस खंजर को हाथ में ले सकोगे और तब इसकी तेज चमक भी तुम्हारी आँखों पर अपना पूरा असर न कर सकेगी अर्थात् जो कोई मुकाबले में या तुम्हारे चारों तरफ होगा, उसकी आँखें तो बन्द हो जायेंगी मगर तुम्हारी आँखें खुली रहेंगी और तुम दुश्मनों को बखूबी मार सकोगे।

इतना कहकर कमलिनी ने एक-एक अँगूठी तीनों को पहिरा दी और इसके बाद एक-एक खंजर तीनों के हवाले किया। तारा, भूतनाथ और नानक ऐसा अद्भुत खंजर पाकर हद से ज्यादे खुश हुए और घड़ी-घड़ी उसका कब्जा दबाकर, उसकी चमक का मजा लेते रहे।

कमलिनी : अब एक खंजर और एक अँगूठी बच गयी, सो कुँअर इन्द्रजीतसिंह के लिए अपने पास रक्खूँगी, जिस समय उनसे मुलाकात होगी, उनके हवाले करूँगी, और यह अँगूठी जो मेरी उँगली में है और यह नेजा जो अपने वास्ते लायी हूँ, इसमें भी वही गुण हैं जो खंजर में है, मगर फर्क इतना है कि बनिस्बत खंजर के इस नेजे में बिजली का असर बहुत ज्यादे है।

उस नेजे के चार टुकड़े थे जो पेंच पर चढ़ाकर एक कर दिये जाते थे। कमलिनी ने इन चारों टुकड़ों को एक कर दिया और अब वह पूरा नेजा हो गया।

भूतनाथ : इसमें कोई सन्देह नहीं कि आपने हम लोगों को अद्भुत और अनमोल चीजें दीं, इसकी बदौलत हम लोगों के हाथ से बड़े-बड़े काम निकलेंगे।

इसके बाद कमलिनी ने वह कपड़े की गठरी खोली। इसमें स्याह रंग की एक साड़ी, एक चोली और एक बोतल थी। कमलिनी उठकर समाधि के पीछे गयी और गीले कपड़े उतारकर वही काली साड़ी और चोली पहिर-

कर अपने ठिकाने आ बैठी। वह साड़ी और चोली रेशमी थी और उसमें एक प्रकार का रोगन चढ़ा हुआ था, जिसके सबब उस कपड़े पर पानी का असर नहीं होता था। कमलिनी ने वह गीली साड़ी और चोली तारा के सामने रख दी और बोली, "इसे तू पेड़ पर डाल दे, जिसमें झटपट सूख जाय, इसके बाद तू कमलिनी बन जा अर्थात् मेरी तरह अपनी सूरत बना ले और इसी साड़ी और चोली को पहिरकर मेरे घर अर्थात् उस तालाबवाले मकान में जाकर बैठ, जिसमें नौकरों को मेरे गायब होने का हाल मालूम न हो, वे यही समझें कि तारा कहीं गयी हुई है!

तारा : बहुत अच्छा, मगर आप कहाँ जायेंगी।

कमलिनी : मेरा कोई ठिकाना नहीं, मुझे बहुत काम करना है। (भूतनाथ और नानक की तरफ देखकर) आप लोग भी जाइए और जहाँ तक हो सके राजा बीरेन्द्रसिंह की भलाई का उद्योग कीजिए।

नानक : बहुत अच्छा। (हाथ जोड़कर) मेरी एक बात का जवाब दीजिए तो बड़ी कृपा होगी।

कमलिनी : वह क्या।

नानक : इस प्रकार का खंजर उन लोगों के पास भी है या नहीं?

कमलिनी : (हँसकर) क्या उन लोगों के पास पुनः जाने की इच्छा है? अपनी रामभोली को देखा चाहता है।

नानक : हाँ, यदि मौका मिलेगा तो।

कमलिनी : अच्छा जा, कोई हर्ज नहीं, इस प्रकार की कोई वस्तु उन लोगों के पास नहीं है और न इसका पता ही उन्हें मिल सकता है, मगर जो कुछ कीजियो होशियारी के साथ।

इसके बाद कमलिनी ने वह बोतल खोली, जो कपड़े की गठरी में थी। उसमें किसी प्रकार का अर्क था। समाधि के पीछे जाकर कमलिनी ने वह अर्क अपने तमाम बदन में लगाया, जिससे बात-की-बात में उसका रंग बहुत ही काला हो गया. तब वह फिर तारा के पास आयी और उससे दो लम्बे बनावटी दाँत लेकर अपने मुँह में लगाने के बाद, नेजा हाथ में लेकर खड़ी हो गयी।

तारा ने भी अपनी सूरत बदली और कमलिनी बनकर तैयार हो गयी। इस काम में भूतनाथ ने उसकी मदद की। कमलिनी के हुक्म से वह सन्दूक और जंजीर पानी में डाल दी गयी।

कमलिनी ने अपने घोड़े को आवाज दी। यद्यपि वह कुछ दूर पर चर रहा था, परन्तु मालिक की आवाज के साथ ही दौड़ता हुआ पास आ गया। तारा ने उसे पकड़ लिया और चारजामा कसकर उस पर सवार हो गयी

तथा कमलिनी, तारा के घोड़े पर सवार हुई। अन्त में चारों आदमी कुछ सलाह करके अलग हुए और चारों ने अपना-अपना रास्ता लिया अर्थात् उसी जगह से चारों आदमी जुदा हो गये।

इस वारदात के कई दिन बाद कमलिनी इसी राक्षसी भेष में नेजा लिये रोहतासगढ़ की पहाड़ी पर कब्रिस्तान में कमला से मिली थी, इसी ने राजा बीरेन्द्रसिंह वगैरह को कैद से छुड़ाया, और फिर भी कई दफे उनके काम आयी थी, जिसका हाल पिछले बयानों में लिखा जा चुका है।

चौथा बयान

अब तो मौसम में फर्क पड़ गया। ठण्डी-ठण्डी हवा जो कलेजे को दहला देती थी और वदन में कँपकँपी पैदा करती थी, अब भली मालूम पड़ती है। वह धूप जिसे देख चित्त प्रसन्न होता था और जो वदन में लगकर रग-रग से सर्दी निकाल देती थी अब बुरी मालूम होती है। यद्यपि अभी आसमान पर बादल के टुकड़े दिखायी नहीं देते तथापि सन्ध्या के समय मैदान, बाग और तराई की ठण्डी-ठण्डी और शीतल तथा मन्द-मन्द वायु सेवन करने को जी चाहता है। वहाँ से हिलते हुए पेड़ों की कोमल-कोमल पत्तियों की बहार आँखों की राह घुसकर अन्दर से दिल को अपनी तरफ खैंच लेती है तथा टकटकी बँधी हुई आँखों को दूसरी तरफ देखने का यकायक मौका नहीं मिलता। यद्यपि सूर्य अस्त हुआ ही चाहता है और आसमान पर उड़नेवाले परिन्दों के उतार और जमीन की तरफ झुके हुए एक ही तरफ उड़े जाने से मालूम होता है कि बात-की-बात में चारों तरफ अँधेरा छा जायगा तथापि हम अपने पाठकों को किसी पहाड़ की तराई में ले चलकर एक-एक अनूठा रहस्य दिखाया चाहते हैं।

तीन तरफ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ और बीच में कोसों तक का मैदान रमणीक तो है परन्तु रात की अवाई और सन्नाटे ने उसे भयानक बना दिया है। सूर्य अस्त होने में अभी विलम्ब है, परन्तु ऊँचे-ऊँचे पहाड़ सूर्य की आखिरी लालिमा को इस मैदान में पहुँचने नहीं देते। चारों तरफ सन्नाटा है, जहाँ तक निगाह काम करती है, इस मैदान में आदमी की सूरत दिखायी नहीं पड़ती, हाँ पश्चिम तरफवाले पहाड़ के नीचे एक छोटा चमड़े का खेमा दिखायी पड़ता है। इस समय हमें इसी खेमे से मतलब है और हम इसी के दरवाजे पर पहुँचकर अपना काम निकाला चाहते हैं।

इस खेमे के दरवाजे पर केवल एक आदमी कमर में खंजर लगाये टहल रहा है। यद्यपि इसकी जवानी ने इसका साथ छोड़ दिया है और फिक्र ने

इसे दुर्बल कर दिया है मगर फुर्ती मजबूती और दिलेरी ने अभी तक इसके साथ दुश्मनी नहीं की और वे इस गयी गुजरी हालत में भी इसका साथ दिये जाती हैं। इस आदमी की सूरत-शक्ल के बारे में हमें कुछ विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हमारे पाठक इसे पहिचानते हैं और जानते हैं कि इसका नाम 'भूतनाथ' है।

भूतनाथ को खेमे के दरवाजे पर टहलते हुए देर हो गयी। वह न मालूम किस सोच में डूबा हुआ था कि सिर नीचा किये हुए सिवाय टहलने के इधर उधर देखने की उसे बिल्कुल फुरसत न थी, हाँ कभी-कभी वह सिर उठाता और एक लम्बी साँस लेकर केवल उत्तर की तरफ देखता और सिर नीचा कर फिर उसी तरह टहलने लगता। अब सूर्य ने अपना मुँह अच्छी तरह जमीन के पर्दे में छिपा लिया और भूतनाथ ने कुछ बेचैन होकर उत्तर की तरफ देख धीरे से कहा, "अब तो बहुत ही विलम्ब हो गया, क्या बेमौके जान आफत में फँसी है।"

यकायक तेजी के साथ घोड़ा दौड़ाता हुआ एक सवार उत्तर की तरफ से आता हुआ दिखायी पड़ा। कुछ और पास आने से मालूम हो गया कि वह औरत है मगर सिपाहियाना ठाठ में, ढाल तलवार के सिवाय उसके पास कोई हर्बा न था। इस औरत की उम्र लगभग चालीस वर्ष की होगी। सूरत-शक्ल से मालूम होता था कि किसी समय में यह बहुत ही हसीन और दिल लुभानेवाली रही होगी। बात-की-बात में यह औरत खेमे के पास आ पहुँची और घोड़े से उतरकर, उसकी लगाम खेमे की एक डोरी से अटका देने के बाद, भूतनाथ के पास आकर बोली, "शाबाश भूतनाथ, बेशक तुम वादे के सच्चे हो।"

भूतनाथ : मगर अभी तक मेरी समझ में यह न आया कि तुम मुझसे दुश्मनी रखती हो या दोस्ती।

औरत : (हँसकर) अगर तुम ऐसे ही समझदार होते तो जीते-जागते और निरोग रहने पर भी मुर्दों में क्यों गिने जाते?

भूतनाथ : (कुछ सोचकर) खैर, जो हुआ सो हुआ, अब मुझसे क्या चाहती हो?

औरत : तुमसे एक काम कराया चाहती हूँ।

भूतनाथ : वह कौन काम है, जिसे तुम स्वयं नहीं कर सकतीं?

औरत : केवल यही एक काम!

भूतनाथ : (आश्चर्य की रीति से गर्दन हिलाकर) खैर, कहो तो सही, करने लायक होगा तो करूँगा।

औरत : मैं खूब जानती हूँ कि तुम उस काम को सहज ही में कर सकते

हो।

भूतनाथ : तब कहने में देर क्यों करती हो ?

औरत : अच्छा सुनो, यह तो जानते ही हो कि कमलिनी को ईश्वर ने अद्भुत बल दे रक्खा है।

भूतनाथ : हाँ, बेशक उसमें कोई दैवी शक्ति है, वह जोकुछ चाहे सो कर सकती है। जो कोई उसे जानता है, वह कहेगा कि कमलिनी को कोई जीत नहीं सकता।

औरत : हाँ, ठीक है परन्तु मैं खूब जानती हूँ कि तुम कमलिनी से ज्यादे ताकत रखते हो।

भूतनाथ : (चौंक और काँपकर) इसका क्या मतलब ?

औरत : यही मतलब कि तुम अगर चाहो तो उसे मार सकते हो।

भूतनाथ : मगर मैं ऐसा क्यों करने लगा ?

औरत : केवल मेरी आज्ञा से।

इतना सुनते ही भूतनाथ के चेहरे पर मुर्दनी छा गयी, उसका कलेजा काँपने लगा और सिर कमजोर होकर चक्कर खाने लगा, यहाँ तक कि वह अपने को सँभाल न सका और जमीन पर बैठ गया। मालूम होता था कि उस औरत की आखिरी बात ने उसका खून निचोड़ लिया है। न मालूम क्या सबब था कि निडर होकर भी एक साधारण और अकेली औरत की बातों का वह जवाब नहीं दे सकता और उसकी सूरत से मजबूरी और लाचारी झलक रही है।

भूतनाथ की ऐसी अवस्था देखकर उस औरत को किसी तरह का रंज नहीं हुआ बल्कि वह मुस्कुरायी और उसी जगह घास पर बैठकर न मालूम क्या सोचने लगी। थोड़ी देर बाद जब भूतनाथ का जी ठिकाने हुआ तो उसने उस औरत की तरफ देखा और हाथ जोड़कर कहा, "क्या सचमुच मुझे ऐसा हुक्म लगाया जाता है ?"

औरत : हाँ, कमलिनी का सिर लेकर मेरे पास हाजिर होना पड़ेगा और यह काम सिवाय तेरे और कोई भी नहीं कर सकता, क्योंकि वह तुझ पर विश्वास रखती है।

भूतनाथ : (कुछ सोचकर) नहीं नहीं, मेरे किये यह काम न होगा। जो कुछ कर चुका हूँ, उसी के प्रायश्चित से आज तक छुट्टी नहीं मिलती।

औरत : क्या तू मेरा हुक्म टाल सकता है ? क्या तुझमें इतनी ताकत है ?

यह सुन भूतनाथ बहुत ही बेचैन हुआ। वह उठ खड़ा हुआ और सिर नीचा किये इधर-उधर टहलने और नीचे लिखी बातें धीरे-धीरे बोलने

लगा—

"आह मुझ-सा वदनसीब भी दुनिया में कोई न होगा। मुद्दत तक मुर्दों में अपनी गिनती करायी, अब ऐसा संयोग हो गया कि अपने को जीता-जागता साबित करूँ, मगर अफसोस, करी-करायी मेहनत मिट्टी हुआ चाहती है। हाय, उस आदमी के साथ, जिसमें नेकी कूट-कूटकर भरी है, मैं बदी करने के लिए मजबूर किया जा रहा हूँ। क्या उसके साथ बदी करनेवाला कभी सुख भोग सकता है? नहीं नहीं, कभी नहीं, फिर मैं ऐसा क्यों करूँ? मगर मेरी जान क्योंकर बच सकती है, इसका हुक्म न मानना मेरी कुदरत के बाहर है। हाय, एक दफे की भूल जन्म-भर के लिए दुःखदायी हो जाती है। शेरसिंह सच कहता था, इन्हीं बातों को सोचकर उसने मेरा नाम 'काल' रख दिया था और उसे मेरी सूरत से घृणा हो गयी थी। (कुछ देर तक चुप रहकर) ओफ, मैं भी व्यर्थ के विचार में पड़ा हूँ, आखिर जान तो जायेगी ही, इसका हुक्म मानूँगा तो भी मारा जाऊँगा और यदि न मानूँगा तो भी मौत की तकलीफ उठाऊँगा और तमाम दुनिया में मेरी बुराई फैलेगी। (चौंककर) राम राम, मुझे क्या हो गया जो···

भूतनाथ : (उस औरत की तरफ देखके) अच्छा मैं कमलिनी को मारने के लिए तैयार हूँ, मगर इसके बदले में मुझे इनाम क्या मिलेगा?

औरत : (हँसकर) तू इस लायक नहीं है कि तुझे इनाम दिया जाय।

भूतनाथ : क्या मैं इस दर्जे को पहुँच गया?

औरत : बेशक।

भूतनाथ : नहीं, कभी नहीं! जा मैं तेरा हुक्म नहीं मानता, देखूँ तू मेरा क्या कर लेती है!

औरत : भूतनाथ, देख खूब सोचकर कोई बात मुँह से निकाल, ऐसा न हो कि अन्त में पछताना पड़े।

भूतनाथ : जा जा, जो करते बने कर ले।

भूतनाथ की आखिरी बात सुनकर वह औरत क्रोध में आकर काँपने लगी। उसके होंठ काँप रहे थे, मगर कुछ कहना मुश्किल हो रहा था।

इस समय चारों तरफ अँधेरा छा चुका था अर्थात् रात बखूबी हो चुकी थी। थोड़ी देर के लिए दोनों आदमी चुप हो गये, यकायक घोड़ों के टापों की आवाज (जो बहुत दूर से आ रही थी) भूतनाथ के कान में पड़ी और साथ ही इसके वह औरत भी बोल उठी, "अच्छा देख मैं तेरी ढिठाई का मजा चखाती हूँ।"

भूतनाथ पहिले तो कुछ घबड़ाया मगर उसने तुरत ही अपने को सँभाला और कमर से खंजर निकालकर उस औरत के सामने खड़ा हो

गया। वह खंजर वही था, जो कमलिनी ने उसे दिया था। कब्जा दबाते ही खंजर में से बिजली की चमक पैदा हुई जिसके सबब से उस औरत की आँखें बन्द हो गयीं और वह बावली-सी हो गयी तथा उस समय तो उसे तनो-बदन की सुध न रही, जब भूतनाथ ने खंजर उसके बदन से छुला दिया।

भूतनाथ ने बड़ी होशियारी से उस बेहोश औरत को उसके घोड़े पर लादा और आप भी उसी पर सवार हो तेजी के साथ मैदान का रास्ता लिया। थोड़ी दूर जाकर भूतनाथ ने बेहोशी की तेज दवा उसे सुँघायी जिससे वह औरत बहुत देर के लिए मुर्दे की-सी हो गयी। हमको इससे कोई मतलब नहीं कि वे सवार, जिनके घोड़ों के टापों की आवाज भूतनाथ के कान में पड़ी थी, कौन थे और उन्होंने वहाँ पहुँचकर क्या किया, जहाँ से भूतनाथ उस औरत को ले भागा था, हम केवल भूतनाथ के साथ चलते हैं, जिसमें उस औरत का और भूतनाथ का हाल मालूम हो।

यद्यपि रात अँधेरी और रास्ता पथरीला था, तथापि भूतनाथ ने चलने में कसर न की। थोड़ी-थोड़ी दूर पर घोड़ा ठोकर खाता था, जिससे भूतनाथ को तकलीफ होती थी और वह बड़ी मुश्किल से उस बेहोश औरत को सँभाले लिये जाता था मगर यह तकलीफ ज्यादे देर के लिए न थी क्योंकि पहर-भर के बाद आसमान पर कुदरती माहताबी जलने लगी और उसकी (चन्द्रमा की) रोशनी ने चारों तरफ ठण्ढक और खूबसूरती के साथ उजाला कर दिया। ऐसी अवस्था में भूतनाथ ने रुकना उचित न समझा और सवेरा होने तक तेजी के साथ बराबर चला गया। जिस समय आस-मान पर सुबह की सुफेदी फैल रही थी, घोड़े ने यहाँ तक हिम्मत हार दी कि दस कदम भी चलना उसके लिए कठिन हो गया। लाचार भूतनाथ घोड़े से नीचे उतरा और उस औरत को भी उतार लिया। घोड़ा उसी समय जमीन पर गिर पड़ा, मगर भूतनाथ ने उसकी कुछ परवाह न की।

कमर से चादर खोल उसने औरत की गठरी बाँधी और पीठ पर लाद आगे का रास्ता लिया।

पहर-भर चले जाने बाद भूतनाथ एक ऐसी पहाड़ी के नीचे पहुँचा, जिसकी ऊँचाई बहुत ज्यादे न थी, मगर खुशनुमा और सायेदार दरख्त पहाड़ी के ऊपर तथा उसकी तराई में बहुत थे। पहाड़ी की चोटी पर सलई का एक ऊँचा पेड़ था और उसके ऊपर लम्बी काँड़ी में लगा हुआ एक लाल फरहरा (ध्वजा) दूर से दिखायी दे रहा था। यह निशान कमलिनी का लगाया हुआ था। भूतनाथ तारा और नानक से मिलने के लिए कमलिनी ने एक यह जगह भी मुकर्रर की थी और निश्चय कर रक्खा था कि जब इन चारों में किसी को किसी से मिलने की आवश्यकता पड़े तो वह इसी

जगह आवे और यदि किसी से मुलाकात न हो तो इस झण्डे को झुका दे और उन चारों में से जो कोई इस झण्डे को झुका हुआ देखे, तुरत इस पहाड़ी के नीचे आवे और नियत स्थान पर अपने साथी को ढूँढ़े। यह फरहरा बहुत दूर से दिखायी देता था और यह पहाड़ी रोहतासगढ़ और गयाजी के बीच में पड़ती थी।

उस औरत को पीठ पर लादे हुए भूतनाथ पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगा। लगभग दो सौ कदम जाने के बाद रास्ता छोड़कर दाहिनी तरफ घूमा, जिधर छोटे-छोटे जंगली पेड़ों की गुंजान झाड़ी दूर तक चली गयी थी। उस झाड़ी में आदमी बखूबी छिप सकता था अर्थात् उस झाड़ी के पेड़ यद्यपि छोटे थे, परन्तु आदमी की ऊँचाई से उन पेड़ों की ऊँचाई कुछ ज्यादे थी। भूतनाथ दोनों हाथ से पेड़ों को हटाता हुआ कुछ दूर तक चला गया। आखिर उसे एक गुफा मिली जिसका मुँह जंगली लताओं ने अच्छी तरह ढाँक रक्खा था। भूतनाथ उस गुफा के अन्दर चला गया और अपना बोझ अर्थात् उस औरत को गुफा के अन्दर छोड़ बाहर निकल आया। इसके बाद पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गया और सलई के पेड़ पर चढ़कर लाल फरहरे (झण्डे) को झुकाने का इरादा किया, परन्तु उसी समय सलई के पेड़ पर चढ़ी हुई कमलिनी उसे दिखायी पड़ी जो फरहरा झुकाने का उद्योग कर रही थी। इस समय भी कमलिनी उसी राक्षसी के भेष में थी, जैसा कि ऊपर के बयानों में लिख आये हैं। भूतनाथ ने कमलिनी को पहिचाना और उसने भी भूतनाथ को देखा। कमलिनी पेड़ के नीचे उतर आयी और बोली—

कमलिनी : खूब पहुँचे, मैं तुमसे मिला चाहती थी, इसीलिए झण्डा झुकाने का उद्योग कर रही थी।

भूतनाथ : मैं खुद तुमसे मिला चाहता था और इसीलिए यहाँ तक आया हूँ, यदि इस समय तुम न मिलतीं तो मैं इस पेड़ पर चढ़कर फरहरा झुकाता।

कमलिनी : कहो क्या बात है और कौन-सी जरूरत आ पड़ी ?

भूतनाथ : पहिले तुम कहो कि मुझसे मिलने की क्या आवश्यकता थी।

कमलिनी : नहीं नहीं, पहिले तुम्हारा हाल सुन लूँगी तब कुछ कहूँगी, क्योंकि तुम्हारे चेहरे पर घबराहट और उदासी हद से ज्यादा पायी जाती है।

भूतनाथ : बेशक ऐसा ही है और मैं तुमसे आखिरी मुलाकात करने आया हूँ क्योंकि अब जीने की उम्मीद नहीं रही और खुली बदनामी, बल्कि

कलंक मंजूर नहीं।

कमलिनी : क्यों क्यों, ऐसी क्या आफत आ गयी, कुछ कहो तो सही ?

भूतनाथ : मेरे साथ पहाड़ी के नीचे चलो। मैं एक औरत को बेहोश करके लाद लाया हूँ, जो उसी खोह के अन्दर है, पहिले उसे देख लो तब मेरा हाल सुनो।

कमलिनी : खैर, ऐसा ही सही, चलो।

भूतनाथ के साथ-ही-साथ कमलिनी पहाड़ी के नीचे उतरी और उस खोह के मुहाने पर आकर बैठ गयी, जिसके अन्दर भूतनाथ ने उस औरत को रक्खा था। भूतनाथ उस बेहोश औरत को खोह के बाहर निकाल लाया। कमलिनी उस औरत को देखते ही चौंकी और उठ खड़ी हुई।

भूतनाथ : इसी के मारे मेरी जिन्दगी बबाल हो रही है, मगर तुम इसे देख चौंकी क्यों ? क्या इस औरत को पहिचानती हो ?

कमलिनी : हाँ, मैं इसे पहिचानती हूँ। यह वह काली नागिन है कि जिसके डसने का मन्त्र ही नहीं ! जिसे इसने काटा वह पानी तक नहीं माँगता, तुमने इसके साथ दुश्मनी की, सो अच्छा नहीं किया।

भूतनाथ : मैंने जान-बूझकर इसके साथ दुश्मनी नहीं की। तुम खुद जानती हो कि मैं इसके काबू में हूँ, किसी तरह इसका हुक्म टाल नहीं सकता, मगर कल इसने जोकुछ काम करने के लिए मुझे कहा, वह मैं किसी तरह नहीं कर सकता था और इनकार की भी हिम्मत न थी, लाचार इसी खंजर की मदद से गिरफ्तारकर लाया हूँ। अब कोई ऐसी तरकीब निकालो, जिसमें मेरी जान बचे और मैं बीरेन्द्रसिंह को मुँह दिखाने लायक हो जाऊँ।

कमलिनी : मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या कह रहे हो ! मुझे कुछ भी नहीं मालूम कि तुम इसके कब्जे में क्योंकर फँसे हो, न तुमने इसके बारे में कभी मुझसे कुछ कहा ही।

भूतनाथ : बेशक मैं इसका हाल तुमसे कह चुका हूँ और यह भी कह चुका हूँ कि इसी की बदौलत मुझे मरना पड़ा, बल्कि तुमने वादा किया था कि इसके हाथ से तुम्हें छुट्टी दिला दूँगी।

कमलिनी : हाँ, वह बात मुझे याद है, मगर तुमने तो श्यामा का नाम लिया था !

भूतनाथ : ठीक है, वह यही श्यामा है।

कमलिनी : (हँसकर) इसका नाम श्यामा नहीं है, मनोरमा है। मैं इसकी सात पुश्त को जानती हूँ। बेशक, इसने अपने नाम में भी तुमको धोखा दिया। खैर, अब मालूम हुआ कि तुम्हें इसी ने सता रक्खा है, तुम्हारे

हाथ की लिखी हुई दस्तावेज इसी के कब्जे में है और इस सबब से तुम इसे जान से मार भी नहीं सकते। इसने मुझे भी कई दफे धोखा देना चाहा था, मगर मैं कब इसके पंजे में आनेवाली हूँ। हाँ, यह तो कहो कि इसने क्या काम करने के लिए कहा था।

भूतनाथ : इसने कहा था कि तू कमलिनी का सिर काटकर मेरे पास ले आ, यह काम तुझसे बखूबी हो सकेगा, क्योंकि वह तुझ पर विश्वास करती है।

कमलिनी : (कुछ देर तक सोचकर) खैर, कोई हर्ज नहीं, पहिले तो मुझे इसकी कोई विशेष फिक्र न थी, परन्तु अब इसके साथ चाल चले बिना काम नहीं निकलता। देखो तो मैं इसे कैसा दुरुस्त करती हूँ और तुम्हारे कागजात भी इसके कब्जे से कैसे निकालती हूँ।

भूतनाथ : मगर इस काम में देर न करनी चाहिए।

कमलिनी : नहीं नहीं, देर न होगी क्योंकि कुँअर इन्द्रजीतसिंह को छुड़ाने के लिए भी मुझे इसी के मकान पर जाना पड़ेगा, बस दोनों काम एक साथ ही निकल जायेंगे।

भूतनाथ : अच्छा तो अब क्या करना चाहिए?

कमलिनी : (हाथ का इशारा करके) तुम इस झाड़ी में छिप रहो, मैं इसे होश में लाकर कुछ बातचीत करूँगी। आज यह मुझे किसी तरह नहीं पहिचान सकती।

भूतनाथ झाड़ी के अन्दर छिप रहा, कमलिनी ने अपने बटुए में से लखलखे की डिबिया निकाली और सुँघाकर उस औरत को होश में लायी। मनोरमा जब होश में आयी, उसने अपने सामने एक भयानक रूपधारी औरत को देखा। वह घबड़ाकर उठ बैठी और बोली—

मनोरमा : तुम कौन हो और मैं यहाँ क्योंकर आयी?

कमलिनी : मैं जंगल की रहनेवाली भिल्लनी हूँ, तुम्हें एक लम्बे कद का आदमी पीठ पर लादे लिये जाता था। मैं इस पहाड़ी के नीचे सूअर का शिकार कर रही थी, जब वह मेरे पास पहुँचा मैंने उसे ललकारा और पूछा कि पीठ पर क्या लादे लिये जाता है? जब उसने कुछ न बताया तो लाचार (नेजा दिखाकर) इसी जहरीले नेजे से उसे जख्मी किया। जब वह बेहोश होकर गिर पड़ा तब मैंने गठड़ी खोली, जब तुम्हारी सूरत नजर आयी तो हाल जानने की इच्छा हुई, लाचारी इस जगह उठा लायी और होश में लाने का उद्योग करने लगी। अब तुम्हीं बताओ कि वह आदमी कौन था और तुम्हें इस तरह क्यों लिये जाता था?

मनोरमा : मैं अपना हाल तुमसे जरूर कहूँगी मगर पहिले यह बताओ

कि वह आदमी तुम्हारे इस जहरीले नेजे के असर से मर गया या जीता है।

कमलिनी : वह मर गया और मेरे साथी लोग उसे जला देने के लिए ले गये।

मनोरमा : (ऊँची साँस लेकर) अफसोस, यद्यपि उसने मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया तथापि उसकी मोहब्बत मेरे दिल से किसी तरह नहीं जा सकती, क्योंकि वह मेरा प्यारा पति था। अफसोस, अफसोस, तुमने उसके हाथ से मुझे व्यर्थ छुड़ाया।

पाठक, झाड़ी के अन्दर छिपा हुआ भूतनाथ भी मनोरमा की बातें सुन रहा था। मनोरमा ने जोकुछ कमलिनी से कहा न मालूम उसमें क्या तासीर थी कि सुनने के साथ ही भूतनाथ का कलेजा काँपने लगा और उसे चक्कर-सा आ गया। बहुत मुश्किल से उसने अपने को सम्हाला और कान लगाकर फिर दोनों की बातें सुनने लगा।

कमलिनी : (कुछ सोचकर) मैं कैसे विश्वास करूँ कि तुमने जोकुछ कहा वह सच है?

मनोरमा : पहिले यह सोचो कि मैं तुमसे झूठ क्यों बोलूंगी?

कमलिनी : इसके कई सबब हो सकते हैं, सबसे भारी सबब यह है कि तुम्हारा भेद एक गैर के सामने खुल जायेगा, जिससे तुम्हें कोई मतलब नहीं। मगर मुझे विश्वास नहीं होता कि जो आदमी तुम्हें इतना कष्ट दे और बेहोश करके गठरी में बाँधकर कहीं ले जाने का इरादा रक्खे, उसे तुम प्यार करो और अपना पति कहकर सम्बोधित करो।

मनोरमा : नहीं नहीं, यों तो शक की कोई दवा नहीं परन्तु मैं इतना अवश्य कहूंगी कि उस आदमी के बारे में मैंने जो कुछ कहा वह सच है।

कमलिनी : खैर, ऐसा ही होगा, मुझे इससे कोई मतलब नहीं, चाहे वह आदमी तुम्हारा पति हो अथवा नहीं, अब तो वह मर चुका किसी तरह जी नहीं सकता। खैर, यह तो बताओ कि अब तुम किया क्या चाहती हो और कहाँ जाने की इच्छा रखती हो?

मनोरमा : मुझे गयाजी का रास्ता बता दो। मेरे माँ-बाप उसी शहर में रहते हैं, अब मैं उन्हीं के पास जाऊँगी।

कमलिनी : अच्छा पहाड़ी के नीचे चलो मैं तुम्हें गयाजी का रास्ता बता देती हूँ। हाँ, मैं तुम्हारा नाम पूछना तो भूल ही गयी।

मनोरमा : मेरा नाम इमामन है।

कमलिनी : (जोर से हँसकर) क्या ठगने के लिए मैं ही थी!

मनोरमा : (चौंककर और कमलिनी को सिर से पैर तक अच्छी तरह देखकर) मुझे तुम पर शक होता है।

कमलिनी : यह कोई ताज्जुब की बात नहीं, मगर शक होने ही से क्या हो सकता है ? आज तक तुमने मुझे कभी नहीं देखा और न फिर देखोगी।

मनोरमा : तब मैं अवश्य ही कह सकती हूँ कि तुम कमलिनी हो !

कमलिनी : नहीं नहीं, मैं कमलिनी नहीं हो सकती, हाँ, कमलिनी को पहिचानती जरूर हूँ क्योंकि वह बीरेन्द्रसिंह और उनके खानदान की दोस्त है, इसलिए मेरी दुश्मन !

मनोरमा : अब मैं तुम्हारी बातों का विश्वास नहीं कर सकती।

कमलिनी : तो इसमें मेरा कोई भी हर्ज नहीं। (आहट पाकर और दाहिनी तरफ देखकर) लो देखो अब तो मैं सच्ची हुई। वह कमलिनी आ रही है !

संयोग से उसी समय तारा भी आ पहुँची जो कमलिनी की सूरत में उसके कहे मुताबिक सब काम किया करती थी। कमलिनी नें गुप्त रीति से तारा को कुछ इशारा किया, जिससे वह कमलिनी का मतलब समझ गयी। कमलिनी रूपी तारा लपककर उन दोनों के पास पहुँची और कमर से खंजर निकालकर और उसे चमकाकर बोली, "इस समय तुम दोनों भले मौके पर मुझे मिल गयी हो, आज मेरा मनोरथ पूर्ण हुआ, अब मैं तुम दोनों से बिना बदला लिये टलनेवाली नहीं !"

तारा की यह बात सुन कमलिनी जान-बूझकर काँपने लगी, मालूम होता था कि वह डर से काँप रही है। मनोरमा भी यकायक कमलिनी को मौजूद देखकर घबड़ा गयी, इसके अतिरिक्त उस चमकते हुए खंजर को देखकर उसे विश्वास हो गया कि अब किसी तरह जान नहीं बचती, क्योंकि इसी तरह का खंजर भूतनाथ के हाथ में वह देख चुकी थी और उसके प्रबल प्रताप का नमूना उसे मालूम हो चुका था, साथ ही उसे इस बात का भी विश्वास हो गया कि राक्षसी (कमलिनी), जिसने उसे भूतनाथ के हाथ से छुड़ाया सच्ची और उसकी खैरखाह है।

कमलिनी ने तारा को फिर इशारा किया जिसे मनोरमा ने नहीं जाना पर तारा ने वह खंजर मनोरमा के बदन से लगा दिया और वह बात-की-बात में बेहोश होकर जमीन पर गिर गयी। झाड़ी में छिपा हुआ भूतनाथ भी निकल आया और कमलिनी से बोला—

भूतनाथ : जो हो, मगर मेरा काम कुछ भी न हुआ।

कमलिनी : इसमें कोई शक नहीं कि तुम बड़े बुद्धिमान हो परन्तु कभी-कभी तुम्हारी अक्ल भी हवा खाने चली जाती है। तुम इस बात को नहीं जानते कि तुम्हारा काम पूरा-पूरा हो गया। यकायक तारा के पहुँच जाने से मालूम हुआ कि तुम्हारी किस्मत तेज है, नहीं तो मुझे बहुतकुछ

बखेड़ा करना पड़ता ।

भूतनाथ : सो क्या, मुझे साफ समझा दो तो जी ठिकाने हो ।

कमलिनी : मेरे पास बैठ जाओ मैं अच्छी तरह समझा देती हूँ । (तारा की तरफ देखकर) कहो तुम्हारा आना क्योंकर हुआ ?

तारा : मुझे एक ऐसा काम आ पड़ा कि बिना तुमसे मिले कठिनता दूर होने की आशा न रही, लाचार झण्डी टेढ़ी करके तुमसे मिलने की उम्मीद में यहाँ आयी थी ।

कमलिनी : अच्छा हुआ कि तुम आयीं, इस समय तुम्हारे आने से बड़ा ही काम चला, अच्छा बैठ जाओ और जोकुछ मैं कहती हूँ, उसे सुनो ।

इसके बाद कमलिनी, तारा और भूतनाथ में देर तक बातचीत होती रही जिसे यहाँ पर लिखना हम मुनासिब नहीं समझते, क्योंकि इन लोगों ने जोकुछ करना विचारा है, वह आगे के बयान में स्वयं खुल जायेगा । जब बातचीत से छुट्टी मिली तो मनोरमा को उठा तीनों आदमी पहाड़ी के नीचे उतरे, मनोरमा एक पेड़ के साथ बाँध दी गयी और इसके बाद कमलिनी भी कैदियों की तरह एक पेड़ के साथ बाँध दी गयी । इस काम से छुट्टी पाकर तारा और भूतनाथ वहाँ से अलग हो गये और किसी झाड़ी में छिपकर दूर से इन दोनों को देखते रहे । थोड़ी ही देर बाद मनोरमा होश में आयी और अपने को बेबस पाकर चारों तरफ देखने लगी । पास ही में पेड़ से बँधी हुई कमलिनी पर भी उसकी निगाह पड़ी और वह अफसोस के साथ कमलिनी की तरफ देखकर बोली—

मनोरमा : बेशक तुम सच्ची हो, मेरी भूल थी जो तुम पर शक करती थी ।

कमलिनी : खैर, इस समय तो तुम्हारे ही सबब से मुझे भी कष्ट भोगना पड़ा ।

मनोरमा : इसमें कोई सन्देह नहीं ।

कमलिनी : तुम्हारा छूटना तो मुश्किल है मगर मैं किसी-न-किसी तरह धोखा देकर छूट ही जाऊँगी और तब कमलिनी से समझूँगी, अब बिना उसकी जान लिये चैन कहाँ ?

मनोरमा : तुम्हारी भी तो वह दुश्मन है, फिर तुम्हें क्योंकर छोड़ देगी ?

कमलिनी : मेरी उसकी दुश्मनी भीतर-ही-भीतर की है, इसके अतिरिक्त एक और सबब ऐसा है कि जिससे मैं अवश्य छूट जाऊंगी, तब तुम्हारे छुड़ाने का भी उद्योग करूँगी ।

मनोरमा : वह कौन-सा सबब है ?

कमलिनी : सो मैं अभी नहीं कह सकती, तुम्हें स्वयं मालूम हो जायगा। (चारों तरफ देखकर) न मालूम वह कमबख्त कहाँ गयी !

मनोरमा : क्या तुम्हें भी नहीं मालूम ?

कमलिनी : नहीं, मुझे जब होश आया, मैंने अपने को इसी तरह बेबस पाया।

मनोरमा : खैर, कहीं भी हो आवे होगी, हाँ, तुम्हें यदि अपने छूटने की उम्मीद है तो कब तक ?

कमलिनी : उसके आने पर दो-चार बातें करने से ही मुझे छुट्टी मिल जायगी और मैं तुम्हें भी अवश्य छुड़ाऊँगी, हाँ, अकेली होने के कारण विलम्ब जोकुछ हो। यदि तुम्हारा कोई मददगार हो तो बताओ ताकि छुट्टी मिलने पर मैं तुम्हारे हाल की उसे खबर दूँ।

मनोरमा : (कुछ सोचकर) यदि कष्ट उठाकर तुम मेरे घर तक जाओ और मेरी सखी को मेरा हाल कह सको तो वह सहज ही में मुझे छुड़ा लेगी।

कमलिनी : इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि मैं अवश्य छूट जाऊँगी। तुम अपने घर का पता और अपनी सखी का नाम बताओ, मैं जरूर उससे मिल-कर तुम्हारा हाल कहूँगी और स्वयं भी जहाँ तक हो सकेगा, तुम्हें छुड़ाने के लिए उसका साथ दूँगी।

मनोरमा : यदि ऐसा करो तो मैं जन्म-भर तुम्हारा अहसान मानूँगी। जब उसके कान तक मेरा हाल पहुँच जायगा तो तुम्हारी मदद की आवश्य-कता न रहेगी।

कमलिनी : खैर, लो अब पता और नाम बताने में विलम्ब न करो, कहीं ऐसा न हो कमलिनी आ जाय, तब कुछ न हो सकेगा।

मनोरमा : हाँ ठीक है—काशीजी में त्रिलोचनेश्वर महादेव के पास लाल रंग का मकान एक छोटे-से बाग के अन्दर है। मछली के निशान की स्याह रंग की झण्डी दूर से ही दिखायी पड़ेगी। मेरी सखी का नाम 'नागर' है, समझ गयी ?

कमलिनी : मैं खूब समझ गयी, मगर उसे मेरी बात का विश्वास कब होगा ?

मनोरमा : इसमें विश्वास की कोई जरूरत नहीं है, वह मुझ पर आफत आने का हाल सुनते ही बेचैन हो जायगी और किसी तरह न रुकेगी।

कमलिनी : तथापि मुझे हर तरह से दुरुस्त रहना चाहिए, शायद वह समझे कि यह मुझे धोखा देने आयी है और चाहती है कि मैं घर के बाहर जाऊँ तो कोई मतलब निकाले।

मनोरमा : (कुछ सोचकर) हाँ, ऐसा हो सकता है, अच्छा मैं तुम्हें एक परिचय बताती हूँ, जब वह बात उसके कान में कहोगी तब वह तुम्हारा पूरा विश्वास कर लेगी, परन्तु उस परिचय को बड़ी होशियारी मे अपने दिल में रखना, खबरदार दूसरा जानने न पावे नहीं तो मुश्किल होगी और मेरी जान किसी तरह न बचेगी।

कमलिनी : तुम विश्वास रक्खो कि वह शब्द सिवाय एक दफे के जब मैं तुम्हारी सखी के कान में कहूँगी, दूसरे दफे मेरे मुँह से न निकलेगा। (इधर-उधर देखकर) जल्द कहो, अब देर न करो।

मनोरमा : (कमलिनी की तरफ झुककर धीरे से) 'विकट' शब्द कहना, बस फिर सन्देह न करेगी और तुम्हें मेरा विश्वासपात्र समझेगी।

कमलिनी : ठीक है, अब जहाँ तक जल्द हो सकेगा मैं तुम्हारी सखी के पास पहुँचूंगी और अपना मतलब निकालूंगी।

मनोरमा : पहिले तो मुझे यह देखना है कि कमलिनी तुम्हें क्योंकर छोड़ती है ! जब तुम छूट जाओगी तब कहीं जाकर मुझे अपने छूटने की कुछ उम्मीद होगी।

कमलिनी : (हँसकर) मैं उतनी ही देर में छूट जाऊँगी, जितनी देर में तुम एक से लेकर निन्यानवें तक गिन सको।

इतना कहकर कमलिनी ने सीटी बजायी। सीटी की आवाज सुनते ही तारा और भूतनाथ जो वहाँ से थोड़ी दूर पर एक झाड़ी के अन्दर छिपे हुए थे, कमलिनी के पास आ पहुँचे। कमलिनी ने मुस्कुराते हुए उनकी तरफ देखा और कहा, "मुझे छोड़ दो।"

भूतनाथ ने कमलिनी को जो पेड़ से बँधी हुई थी, खोल दिया। कमलिनी उठकर मनोरमा के पास आयी और बोली, "क्यों मैं अपने कहे मुताबिक छूट गयी या नहीं !"

कमलिनी की चालाकी के साथ ही भूतनाथ की सूरत देखकर मनोरमा सन्न हो गयी और ताज्जुब के साथ उन तीनों की तरफ देखने लगी। इस समय भूतनाथ के चेहरे पर उदासी के बदले खुशी की निशानी पायी जाती थी। भूतनाथ ने हँसकर मनोरमा की तरफ देखा और कहा, "क्या अब भी भूतनाथ तेरे कब्जे में है ? अगर हो तो कह, इसी समय कमलिनी का सर काटकर तेरे आगे रख दूं, क्योंकि वह यहाँ मौजूद है।"

मनोरमा ने क्रोध के मारे दाँत पीसा और सर नीचा कर लिया। थोड़ी देर बाद बोली, "अफसोस, मैं धोखा खा गयी !"

कमलिनी : (तारा से) अब समय नष्ट करना ठीक नहीं। इस हरामजादी को तुम ले जाओ और लोहेवाले तहखाने में बन्द करो फिर देखा जायगा।

(अपने हाथ का नेजा देकर) इस नेजे को अपने पास रक्खो और वह खंजर मुझे दे दो, अब नेजे के बदले खंजर ही रखना मैं उत्तम समझती हूँ, यद्यपि एक खंजर मेरे पास है, परन्तु वह कुँअर इन्द्रजीतसिंह के लिए है।

तारा : मैं भी यही कहा चाहती थी, क्योंकि खंजर और नेजे में गुण तो एक ही है फिर ढोंढा लेकर घूमने से क्या फायदा, यह लो खंजर अपने पास रक्खो।

कमलिनी : (भूतनाथ से) तुम भी तारा के साथ जाओ और इस हरामजादी को हमारे घर पहुँचाकर बहुत जल्द लौट आओ, तब तक मैं इसी जगह रहूँगी और तुम्हारे आते ही तुम्हें साथ लेकर काशीजी जाऊँगी। पहिले तुम्हारा काम करके कुँअर इन्द्रजीतसिंह से मिलूँगी और मायारानी की मण्डली को जिसने दुनिया में अन्धेर मचा रक्खा है, जहन्नुम में भेजूँगी।

भूतनाथ : (सिर झुकाकर) जो हुक्म।

पाँचवाँ बयान

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है। चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, कभी-कभी कुत्तों के भूँकने की आवाज के सिवाय और किसी तरह की आवाज सुनायी नहीं देती। ऐसे समय में काशी की तंग गलियों में दो आदमी जिनमें एक औरत और दूसरा मर्द है, घूमते हुए दिखाग्गी देते हैं। ये दोनों कमलिनी और भूतनाथ हैं, जो त्रिलोचनेश्वर महादेव के पास मनोरमा के मकान पर पहुँचने की धुन में कदम बढ़ाये हुए तेजी के साथ जा रहे हैं। जब वे दोनों एक चौमुहानी के पास पहुँचे तो देखा कि दाहिनी तरफ से एक आदमी पीठ पर गट्ठर लादे आया और उसी तरफ को घूमा, जिधर ये दोनों जानेवाले थे। कमलिनी ने धीरे से भूतनाथ के कान में कहा, "इस गठरी में जरूर कोई आदमी है।"

भूतनाथ : बेशक ऐसा ही है। इस आदमी की चाल पर भी मुझे कुछ शक पड़ता है, ताज्जुब नहीं कि यह मनोरमा का नौकर श्यामलाल हो।

कमलिनी : तुम्हारा शक ठीक हो सकता है क्योंकि तुम बहुत दिनों तक मनोरमा के मकान पर रह चुके हो और वहाँ के हर एक आदमी को बखूबी जानते हो।

भूतनाथ : कहो तो इसे रोकूँ।

कमलिनी : हाँ हाँ, रोको, जाने न पावे।

भूतनाथ लपककर उस आदमी के सामने गया और कमर से खंजर निकाल उसके सामने चमकाया। उसकी चमक में भूतनाथ और कमलिनी

ने उस आदमी को पहिचान लिया, मगर वह इन दोनों को अच्छी तरह न देख सका, क्योंकि बिजली की तरह चमकनेवाली रोशनी ने उसकी आँखें बन्द कर दीं और वह घबड़ाकर बैठ गया। भूतनाथ ने खंजर उसके बदन से लगाया, जिसकी तासीर से वह एक दफे काँपा और बेहोश होकर जमीन पर लम्बा हो गया। भूतनाथ ने उसे उसी तरह छोड़ दिया और गठरी का कोना खोलकर देखा तो उसमें एक कमसिन औरत बँधी हुई पायी। कमलिनी के हुक्म से भूतनाथ ने वह गठरी अपनी पीठ पर लाद ली और मनोरमा के घर का रास्ता छोड़ दोनों आदमी गंगा किनारे की तरफ रवाना हुए।

बात-की-बात में दोनों गंगा किनारे जा पहुँचे। इस समय चन्द्रमा की रोशनी अच्छी तरह फैली हुई थी। एक मढ़ी के ऊपर बैठने के बाद भूतनाथ ने वह गठरी खोली। उस बेहोश औरत के चेहरे पर चन्द्रमा की रोशनी पड़ते ही भूतनाथ चौंककर बोला, "ओफ, यह तो कमला है!"

कमला होश में लायी गयी। जब उसकी निगाह भूतनाथ के ऊपर पड़ी तो वह एकदम काँप उठी। कमला को उस दिन की बात याद आ गयी, जिस दिन खँडहर के तहखाने में अपने चाचा शेरसिंह के पास भूतनाथ को देखा था, कमला को शक हो गया कि इस समय वह जिसके हुक्म से बेहोश करके लायी गयी, वह भूतनाथ ही है। कमला की दूसरी निगाह कमलिनी पर पड़ी, मगर वह कमलिनी को पहिचान न सकी। यद्यपि कमला, कमलिनी को रोहतासगढ़ पहाड़ी पर देख चुकी थी, परन्तु इस समय कमलिनी उस भयानक राक्षसी के भेष में न थी, रंग काला जरूर था, परन्तु लम्बे-लम्बे दाँत उसके मुँह में न थे, इसी से वह कमलिनी को पहिचान न सकी।

कमलिनी ने जब देखा कि कमला बहुत ही डरी हुई और हैरान मालूम पड़ती है तो उसने कमला का हाथ पकड़ लिया और धीरे से दबाकर कहा, "कमला, तू डर मत। हम लोगों ने इस समय तुझे एक दुश्मन के हाथ से छुड़ाया है।"

कमला : अब मेरा जी ठिकाने हुआ, मुझे उम्मीद है कि आप लोगों की तरफ से मुझे तकलीफ न पहुँचेगी। परन्तु आप लोगों को जानने के लिए मेरा जी बेचैन हो रहा है।

कमलिनी : ठीक है, जरूर तेरा जी चाहता होगा कि हम लोगों का हाल जाने और इसी तरह मैं भी तुझसे बहुत कुछ पूछा चाहती हूँ मगर इस समय केवल चार-पाँच घण्टे के लिए तुझसे जुदा होती हूँ, तब तक तू (भूतनाथ की तरफ इशारा करके) इनके साथ रह। किसी तरह से डर मत, सवेरा होने के पहिले ही मैं तुझसे आकर मिलूँगी और बातचीत के बाद कुँअर इन्द्रजीतसिंह के छुड़ाने का उद्योग करूँगी।

कमला : मैं आपके हुक्म के खिलाफ कुछ न करूँगी। मैं आपसे हर तरह पर भलाई की आशा रखती हूँ, क्योंकि आपने मुझे एक ऐसे दुश्मन के हाथ से छुड़ाया है, जिसका हाल मैं ही जानती हूँ।

कमलिनी : अच्छा तो अब बातों में समय नष्ट करना ठीक नहीं है। (भूतनाथ की तरफ देखकर) भूतनाथ, यहाँ छोटी-छोटी बहुत-सी डोंगियाँ बँधी हुई हैं, सन्नाटा और मौका देखकर कोई एक डोंगी खोल लो और कमला को साथ लेकर गंगा पार चले जाओ। मैं मनोरमा के घर पर जाती हूँ, वहाँ से अपना मतलब साधकर सवेरा होने के पहिले ही तुमसे आ मिलूंगी।

कमला : (चौंककर) क्या नाम लिया, मनोरमा ! हाय हाय, वह तो बड़ी शैतान है, हम लोगों को तो उसने तबाह कर डाला ! क्या तुम उसके···

कमलिनी : डर मत, मनोरमा को मैंने कैद कर लिया है और अब एक जरूरी काम के लिए उसके घर पर जा रही हूँ। (आसमान की तरफ देखकर) ओफ, बहुत विलम्ब हुआ, खैर, अब मैं विदा होती हूँ, पुनः मिलने पर सब हाल कहूँगी।

कमलिनी वहाँ से रवाना हुई और थोड़ी ही देर में उस बाग के फाटक पर जा पहुँची, जिसमें मनोरमा का मकान था। फाटक के साथ लोहे की एक जंजीर लगी हुई थी, जिसे हिलाने से दरबान ने एक छोटे से सूराख में से बाहर की तरफ देखा जो इसी काम के लिए बना हुआ था। केवल एक औरत को दरवाजे पर मौजूद पाकर दरबान ने फाटक खोल दिया और जब कमलिनी अन्दर चली गयी तो फाटक उसी तरह बन्द कर दिया और तब कमलिनी से पूछा, "तुम कौन हो और यहाँ किसलिए आयी हो ?"

कमलिनी : मुझे मनोरमा ने पत्र देकर अपनी सखी नागर के पास भेजा है, तुम मुझे नागर के पास बहुत जल्द ले चलो।

दरबान : वह तो यहाँ नहीं हैं, किसी दूसरी जगह गयी हैं।

कमलिनी : कब आवेंगी ?

दरबान : सो मैं ठीक नहीं कह सकता।

कमलिनी : क्या तुम यह भी नहीं कह सकते कि वे आज या कल तक लौट आवेंगी या नहीं ?

दरबान : हाँ, यह तो मैं कह सकता हूँ कि पाँच-चार दिन तक वे न आवेंगी इसके बाद चाहे जब आवें।

कमलिनी : अफसोस, अब बेचारी मनोरमा नहीं बच सकती।

दरबान : (चौंककर) क्यों क्यों, उन पर क्या आफत आयी ?

कमलिनी : यह एक गुप्त बात है जो मैं तुमसे नहीं कह सकती, हाँ इतना कहने में कोई हर्ज नहीं कि यदि तीन दिन के अन्दर उन्हें बचाने का उद्योग न किया जायगा तो चौथे दिन कुछ नहीं हो सकता, वे अवश्य मार डाली जाँयगी।

दरबान : अफ़सोस, यदि आप एक दिन तक यहाँ अटकना मंजूर करें तो मैं नागरजी के पास जाकर उन्हें बुला लाऊँ, आपको यहाँ किसी तरह की तकलीफ न होगी।

कमलिनी : (कुछ सोचकर) मुझे एक जरूरी काम है, इसलिए अटक तो नहीं सकती, परन्तु कल शाम तक अपना काम करके लौट आ सकती हूँ।

दरबान : यदि आप ऐसा भी कर तो काम चल सकता है, परन्तु आप अटक न जाँय ! यदि आपका काम ऐसा हो, जिसे हम लोंग कर सकते हैं तो आप कहें, उसका बन्दोबस्त कर दिया जायगा।

कमलिनी : नहीं, बिना मेरे गये वह काम नहीं हो सकता, मगर कोई चिन्ता नहीं, मैं कल शाम तक अवश्य आ जाऊँगी।

दरबान : जैसी मर्जी, आपकी मेहरबानी से यदि हमारे मालिक की जान बच जायगी तो हम लोग जन्म-भर के लिए गुलाम रहेंगे।

कमलिनी : मैं अवश्य आऊँगी और उनके लिए हर तरह का उद्योग करूँगी, तुम जाती समय इसका बन्दोबस्त कर जाना कि यदि तुम्हारे लौट आने के पहिले ही मैं यहाँ पहुँच जाऊँ तो मुझे यहाँ रहने में किसी तरह का तरद्दुद न हो।

दरबान : इससे आप बेफिक्र रहें, मैं पूरा-पूरा इन्तजाम करके जाऊँगा और नागरजी को लेकर बहुत जल्द लौटूँगा।

फाटक खोल दिया गया और कमलिनी बाग के बाहर हो गयी। वह अभी बीस कदम भी आगे न गयी होगी कि एक आदमी बदहवास और दौड़ता हुआ उसी बाग के फाटक पर पहुँचा और दरवाजा खुलवाने का उद्योग करने लगा। कमलिनी जान गयी कि यह वही आदमी है, जिसके हाथ से अभी थोड़ी ही देर हुई है कमला को छुड़ाया है। कमलिनी उसी जगह आड़ में खड़ी होकर उसे देखने और कुछ सोचने लगी। जब बाग का फाटक खुल गया और वह आदमी अन्दर चला गया तो न मालूम क्या सोचती-विचारती कमलिनी भी वहाँ से रवाना हुई और थोड़ी रात बाकी थी, जब कमला और भूतनाथ के पास पहुँची, जो गंगा पार उसके आने की राह देख रहे थे। कमलिनी को बहुत जल्द लौट आते देख भूतनाथ को ताज्जुब हुआ और उसने कहा—

भूतनाथ : मालूम होता है कि कुछ काम न हुआ और आपको खाली

ही लौट आना पड़ा।

कमलिनी : हाँ, इस समय तो खाली ही लौटना पड़ा, मगर काम हो जायगा। नागर घर पर मौजूद न थी, उसका आदमी उसे बुलाने के लिए गया है। मैं कल शाम तक फिर वहाँ पहुँचने का वादा कर आयी हूँ, इच्छा तो यही थी कि वहाँ अटक जाऊँ, क्योंकि ऐसा करने से और भी कुछ काम निकलने की उम्मीद थी परन्तु कमला के खयाल से लौट आना पड़ा। मैं चाहती हूँ कि कमला को रोहतासगढ़ रवाना कर दूँ, क्योंकि उसकी जुबानी कुछ हाल सुनकर राजा बीरेन्द्रसिंह को ढाढस होगी और लड़कों के सोच में बहुत व्याकुल न रहेंगे। (कमला की तरफ देखकर) तेरी क्या राय है?

कमला : जो कुछ आप हुक्म दें मैं करने को तैयार हूँ, परन्तु इस समय मैं बहुत-सी बातों का असल भेद जानने के लिए बेचैन हो रही हूँ और सिवाय आपके कोई दूसरा मेरी दिलजमई नहीं कर सकता।

कमलिनी : कोई हर्ज नहीं, मैं हर तरह से तेरी दिलजमई कर दूँगी।

इतना सुनकर कमला भूतनाथ की तरफ देखने लगी। कमलिनी समझ गयी कि यह निराले में मुझसे कुछ पूछा चाहती है अस्तु, उसने भूतनाथ को वहाँ से हट जाने के लिए कहा और जब वह कुछ दूर चला गया तो कमला से बोली, "अब निराला हो गया, जो कुछ पूछना हो पूछो।"

कमला : मुझे आपका कुछ हाल भूतनाथ की जुबानी मालूम हुआ है, परन्तु उससे पूरी दिलजमई नहीं होती। मुझे पूरा-पूरा पता लग चुका था कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह आपके यहाँ कैद हैं, फिर न मालूम उन पर क्या आफत आयी और उनके साथ आपने क्या सलूक किया। यद्यपि उस समय हम लोग आपके नाम से डरते थे, परन्तु जब आपने कई दफे हम लोगों के साथ नेकी की, जिसका हाल आज मालूम हुआ है तो वह बात अब मेरे दिल से जाती रही, फिर भी कुँअर इन्द्रजीतसिंह के बारे में शक बना ही रहा है।

कमलिनी : सुन, मैं तुझसे पूरा-पूरा हाल कहती हूँ। यह तो तुझे मालूम ही हो चुका कि मैं कमलिनी हूँ।

कमला : जी हाँ, यह तो (भूतनाथ की तरफ इशारा करके) इनकी कृपा से मालूम हो गया और इन्हीं के जुबानी यह भी जान गयी कि रोहतासगढ़ में उस कब्रिस्तान के अन्दर हाथ में चमकता हुआ नेजा लेकर आपही ने हम लोगों की मदद की थी और बेहोश करके रोहतासगढ़ किले के अन्दर पहुँचा दिया था। दूसरी दफे राजा बीरेन्द्रसिंह वगैरह को रोहतासगढ़ के कैदखाने से आपही ने छुड़ाया था, और तीसरी दफे उस खँडहर में यकायक विचित्र रीति से आपही को पहुँचते हम लोगों ने देखा था।

कमलिनी : यद्यपि कुछ लोगों ने मुझे बदनाम कर रक्खा है, परन्तु

वास्तव में मैं वैसी नहीं हूँ। मैं नेकों के साथ नेकी करने के लिए हरदम तैयार रहती हूँ, इसी तरह दुष्टों को मजा चखाने की भी नीयत रहती है। मैंने कुँअर इन्द्रजीतसिंह के साथ किसी तरह की बुराई नहीं की, बल्कि उनके साथ नेकी की और उन्हें एक बहुत बड़े दुश्मन के हाथ से छुड़ाया। जब वे तुम लोगों से मिलेंगे और मेरा हाल कहेंगे तब मालूम होगा कि कमलिनी ने सच कहा था !

इसके बाद कमलिनी ने इन्द्रजीतसिंह का अपने लश्कर से गायब होना और उन्हें दुश्मन के हाथ से छुड़ाना, कई दिनों तक अपने मकान में रखना, माधवी को गिरफ्तार करना, किशोरी का रोहतासगढ़ के तहखाने से निकलना और धनपति के कब्जे में पड़ना, तारा के खबर पहुँचाने पर इन्द्रजीतसिंह को साथ लेकर किशोरी को छुड़ाने के लिए जाना, रास्ते में शेरसिंह और देवीसिंह से मिलना, अग्निदत्त का हाल और अन्त में उस तिलिस्मी मकान के अन्दर सभी का कूद जाना, कमला से पूरा-पूरा बयान किया। कमला ताज्जुब से सब बातें सुनती रही और अब कमलिनी पर उसे पूरा-पूरा विश्वास हो गया।

कमला : फिर किशोरी और कुँअर इन्द्रजीतसिंह उस खँडहरवाले तहखाने में क्योंकर पहुँचे।

कमलिनी : वह खँडहर एक छोटे-से तिलिस्म से सम्बन्ध रखता है। एक औरत जो मायारानी के नाम से पुकारी जाती है और जिसका हाल कुछ दिन बाद तुम लोगों को मालूम होगा, उस तिलिस्म पर राज्य करती है। मैं उसकी सगी बहिन हूँ। हमारी तिलिस्मी किताब से साबित होता है कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह उस तिलिस्म को तोड़ेंगे क्योंकि तिलिस्म तोड़नेवालों के जो-जो लक्षण उस किताब में लिखे हैं, वे सब इन दोनों भाइयों में पाये जाते हैं, परन्तु मायारानी चाहती है कि तिलिस्म टूटने न पावे और इसीलिए वह दोनों कुमारों को अपने कैद में रखने अथवा मार डालने का उद्योग कर रही है। मैंने उसे बहुत कुछ समझाया और कहा कि तिलिस्म बनानेवालों के खिलाफ चलने और इन दोनों भाइयों से दुश्मनी रखने का नतीजा अच्छा न होगा, परन्तु उसने न माना, बल्कि मेरी भी दुश्मन बन बैठी, अन्त में लाचार होकर मुझे उसका साथ छोड़ देना पड़ा। मैंने उस तालाबवाले मकान पर अपना कब्जा कर लिया और उसी में रहने लगी। उस मकान में मैं बेफिक्र रहती हूँ। मायारानी के कई आदमियों ने जो नेक और ईमानदार थे मेरा साथ दिया। तिलिस्म का जितना हाल उसे मालूम है, उतना ही मुझे भी मालूम है, यही सबब है कि वह अर्थात् तिलिस्म महारानी (मायारानी) वीरेन्द्रसिंह और उनके खानदान के साथ

दुश्मनी कर रही है और मैं हर तरह से उसकी मदद कर सकती हूँ। उस तिलिस्मी मकान के अन्दर इन्द्रजीतसिंह और उनके साथियों तथा मेरे नौकरों का हँसते-हँसते कूद जाना, उसी तिलिस्मी महारानी की कारंवाई थी और उस खंडहरवाले तहखाने में जो कुछ तुम लोगों ने देखा, वह सब भी उसी की बदौलत था। अफसोस, गुप्त राह से मायारानी के बहुत से आदमियों के पहुँच जाने के कारण मैं कुछ कर न सकी। खैर, कोई हर्ज नहीं, कुँअर इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह और किशोरी तथा कामिनी वगैरह का मायारानी कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती क्योंकि उसकी असल जमा-पूंजी जो थी, वह मेरे हाथ लग चुकी है, जिसका खुलासा हाल इस समय मैं नहीं कह सकती, हाँ इतना प्रतिज्ञा-पूर्वक कहती हूँ कि उन लोगों को मैं बहुत जल्द कैद से छुड़ाऊँगी।

कमला : मैं समझती हूँ कि वह मकान भी तिलिस्मी होगा, जिसके अन्दर कुँअर इन्द्रजीतसिंह वगैरह हंसते-हंसते कूद पड़े थे।

कमलिनी : नहीं, उस मकान का तिलिस्म से कोई सम्बन्ध नहीं, वह नया बनाया गया है। मुझे उसकी खबर न थी, इसी से मैं धोखे में आ गयी, पीछे पता लगाने से मालूम हुआ कि वह भी मायारानी की कारंवाई थी।

कमला : अब मेरा जी ठिकाने हुआ और आपकी बदौलत अपनी प्यारी सखी किशोरी और कुँअर इन्द्रजीतसिंह वगैरह के छूटने की उम्मीद हुई। अब आशा है कि आपकी कृपा से एक दफे मायारानी को भी देखूंगी।

कमलिनी : इसके लिए जल्दी करना मुनासिब नहीं, मैं आज-ही-कल में तुझे अपने साथ मायारानी के घर ले चलती, क्योंकि मुझे वहाँ जाने की बहुत जल्दी है, परन्तु इस समय तेरा रोहतासगढ़ लौट जाना ही ठीक है, क्योंकि राजा बीरेन्द्रसिंह लड़कों की जुदाई में हद से ज्यादे दुखी होंगे, तेरे लौट जाने से उन्हें ढाढ़स होगा और मेरी जुबानी जो कुछ तूने सुना है, जब उनसे बयान करेगी तो उन्हें एक प्रकार की आशा हो जायगी, हाँ एक बात तुझसे पूछना मैं भूल गयी।

कमला : वह क्या?

कमलिनी : तू कहती है कि मैं मायारानी को देखा चाहती हूँ, तो क्या तूने उसे नहीं देखा? उसी के आदमी तो तुझे गिरफ्तार करके ले गये थे, जहाँ तक मैं समझती हूँ तू उसके पास जरूर पहुँचायी गयी होगी।

कमला : हाँ हाँ, मैं एक जनाने दरबार में पहुँचायी गयी थी, मगर यह नहीं कह सकती कि वह मायारानी ही का दरबार था या कोई दूसरा और यदि मायारानी ही का दरबार था तो···

कमलिनी : पहिले तू अपना हाल कह जा कि जब खंडहर के अन्दर

तहखाने में घुसी तो क्या हुआ और क्योंकर गिरफ्तार होकर कहाँ गयी ?

कमला : जब हम लोग राजा बीरेन्द्रसिंह के साथ कुमार को निकालने के लिए उस खँडहरवाले तहखाने में गये तो वहाँ किसी को न पाया। सीढ़ी के नीचे एक छोटी कोठरी थी, मैं उसमें घुस गयी। देखा कि पत्थर की एक सिल्ली दीवार से अलग होकर जमीन पर पड़ी हुई है और उस जगह एक आदमी के जाने लायक रास्ता है। उस दरवाजे के दूसरी तरफ एक और कोठरी नजर आयी, जिसमें चिराग जल रहा था। मैंने आनन्दसिंह और तारासिंह को पुकारा, जब वे आ गये तो तीनों आदमी उस कोठरी के अन्दर घुसे, जब दो-तीन कदम आगे गये तो यकायक पीछे से खटके की आवाज आयी, घूमकर देखा तो उस रास्ते को बन्द पाया जिधर से आये थे। ताज्जुब में आकर हम लोग सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए। यकायक कई आदमी एक तरफ से निकल आये और उन लोगों ने फुर्ती के साथ एक-एक चादर हम लोगों के ऊपर डाल दी। मुझे उस चादर की तेज महक कभी न भूलेगी। सिर पर चादर पड़ते ही अजब हालत हो गयी एक प्रकार की तेज महक नाक के अन्दर घुसी और उसने तनोबदन की सुध भुला दी। न मालूम उसी दिन या दूसरे या कई दिन के बाद जब मैं होश में आयी तो अपने को रात के समय एक जनाने दरबार में पाया।

कमलिनी : वह दरबार कैसा था ?

कमला : वह दरबार एक बारहदरी में था। जड़ाऊ सिंहासन पर एक नौजवान औरत दक्षिणी ढंग की पोशाक पहिने बैठी थी, मैं कह सकती हूँ कि सिवाय किशोरी के उसके मुकाबले की खूबसूरत औरत आज तक किसी ने न देखी होगी।

कमलिनी : बस बस, मैं समझ गयी, वही मायारानी थी, हाँ, और क्या देखा ?

कमला : उसके दाहिनी तरफ सोने की एक चौकी पर मृगछाला बिछा हुआ था, मगर उस पर कोई बैठा न था।

कमलिनी : वह तिलिस्म के दारोगा की जगह थी, जो वृद्ध साधू के भेष में रहता है, मगर आजकल उसे राजा बीरेन्द्रसिंह ने कैद कर लिया है।

कमला : (ताज्जुब से) राजा बीरेन्द्रसिंह ने कब और किस दारोगा को कैद किया है ?

कमलिनी : उस तिलिस्मी खँडहर में जब तुम लोग गये तो किसी साधू को बेहोश पाया था या नहीं ?

कमला : (कुछ सोचकर) हाँ हाँ, एक कोठरी के अन्दर जिसमें एक मूरत थी। क्या वही तिलिस्मी दारोगा है।

कमलिनी : हाँ, वही दारोगा है, वही बहुत से आदमियों को साथ लेकर तहखाने में से कुमार को उठा लाने के लिए उस खँड़हर में गया था, मगर तारासिंह की चालाकी से अपने साथियों के सहित बेहोश हो गया। उस समय भेष बदले मेरा भी एक आदमी वहाँ मौजूद था, मगर दूर ही से सबकुछ देख रहा था। हाँ, तो उस दरबार में और क्या देखा ?

कमला : उस मृगछाला बिछी हुई चौकी के पास अर्धगोलाकार बीस जड़ाऊ कुर्सियाँ और थीं और उसी तरह सिंहासन के बायीं तरफ छोटे जड़ाऊ सिंहासन पर एक खूबसूरत औरत बैठी हुई थी, जिनके बाद फिर बीस या इक्कीस जड़ाऊ कुर्सियाँ थीं, और दोनों तरफवाली जड़ाऊ कुर्सियों पर नौजंवान और खूबसूरत औरतें बड़े ठाठ से बैठी हुई थीं*। मैं उस दरबार को कभी न भूलूँगी।

कमलिनी : ठीक है, तो अब तुझे मायारानी को देखने की कोई आवश्यकता नहीं, खैर, मुख्तसर में कह कि फिर क्या हुआ ?

कमला : पहिले यह बता दीजिए कि मायारानी के बगल में छोटे जड़ाऊ सिंहासन पर कौन औरत थी, क्योंकि वह बड़ी ही खूबसूरत थी।

कमलिनी : वह मेरी छोटी बहिन थी। सबसे बड़ी मायारानी, उससे छोटी मैं और मुझसे छोटी वही औरत है, उसका नाम लाडिली है।

कमला : आपकी और भी कोई बहिन है ?

कमलिनी : नहीं, हम तीनों के सिवाय और कोई बहिन या भाई नहीं है। अब अपना हाल कह, फिर क्या हुआ ?

कमला : मायारानी के सिंहासन के पीछे मनोरमा खड़ी थी। उन्हीं सभों की बातचीत से मुझे मालूम हुआ कि उसका नाम मनोरमा है। वह बड़ी दुष्ट थी ?

कमलिनी : थी नहीं, बल्कि है, हाँ खैर तब क्या हुआ ?

कमला : ऐसे दरबार को देख मैं घबड़ा गयी। जिधर निगाह पड़ती थी उधर ही एक-से-एक बढ़के जड़ाऊ चीजें नजर आती थीं। मैं हैरान थी कि इतनी दौलत इन लोगों के पास कहाँ से आयी और ये लोग कौन हैं। मैं ताज्जुब में आकर चारों तरफ देखने लगी। यकायक मेरी निगाह कुँअर आनन्दसिंह और तारासिंह पर पड़ी। कुँअर आनन्दसिंह हथकड़ी और बेड़ी से लाचार मेरे पीछे की तरफ बैठे थे, उनके पास उन्हीं की तरह हथकड़ी-बेड़ी से बेबस तारासिंह भी बैठे थे, फर्क इतना था कि कुँअर आनन्दसिंह जख्मी न थे, मगर तारासिंह बहुत ही जख्मी और खून से तरबतर हो रहे

---

* इसी दरबार में रामभोली का आशिक नामक गया था।

थे। उनकी पोशाक खून से रंगी हुई मालूम पड़ती थी। यद्यपि उनके जख्मों पर पट्टी बँधी हुई थी, मगर सूरत देखने से साफ मालूम पड़ता था कि उनके बदन से खून बहुत निकल गया है और इसी से वे सुस्त और कमजोर हो रहे हैं। कुमार की अवस्था देखकर मुझे क्रोध चढ़ आया मगर क्या कर सकती थी, क्योंकि हथकड़ी और बेड़ी ने मुझे भी लाचार कर रक्खा था। हाथ में नंगी तलवारें लिये कई औरतें कुँअर आनन्दसिंह, तारासिंह और मुझको घेरे हुए थीं। यह जानने के लिए मेरा जी बेचैन हो रहा था कि जब हम लोग बेहोश करके यहाँ लाये गये तो तारासिंह को जख्मी करने की आवश्यकता क्यों पड़ी। मायारानी ने मनोरमा की तरफ देखा और कुछ इशारा किया, मनोरमा तुरत मेरे पास आयी। उसके एक हाथ में कोई चीठी थी और दूसरे हाथ में कलम और दावात। मनोरमा ने वह चीठी मेरे आगे रख दी और उस पर हस्ताक्षर कर देने के लिए मुझे कहा, मैंने चीठी पढ़ी और क्रोध के साथ हस्ताक्षर करने से इनकार किया।

कमलिनी : उस चीठी में क्या लिखा हुआ था ?

कमला : वह चीठी मेरी तरफ से राजा वीरेन्द्रसिंह के नाम लिखी गयी थी और उसमें यह लिखा हुआ था :—

"आप चीठी देखते ही केवल एक ऐयार को लेकर इस आदमी के साथ बेखौफ चले आइए। कुँअर इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह और किशोरी वगैरह इसी जगह कैद हैं। उनको छुड़ाने का पूरा-पूरा उद्योग मैं कर चुकी हूँ, केवल आपके आने की देर है। यदि आप तीन दिन के अन्दर यहाँ न पहुँचेंगे तो इन लोगों में से एक की भी जान न बचेगी।"

कमलिनी : अच्छा फिर क्या हुआ ?

कमला : जब मैंने दस्तखत करने से इनकार किया तो मनोरमा बहुत बिगड़ी और बोली कि 'यदि तू हस्ताक्षर न करेगी तो तेरे सामने ही कुँअर आनन्दसिंह और तारासिंह का सिर काट लिया जायगा और उसके बाद तुझे भी सूली दे दी जायगी'। यह सुनकर मैं घबड़ा गयी और सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए, इतने में ही तारासिंह ने मुझे पुकारकर कहा, "कमला उस चीठी में जोकुछ लिखा है, मैं अन्दाज से कुछ-कुछ समझ गया, खबरदार इन लोगों के धमकाने में न आइयो और चाहे जो हो उस चीठी पर दस्तखत न कीजियो।" तारासिंह की बात सुनकर मायारानी की तो केवल भृकुटी ही चढ़कर रह गयी परन्तु मनोरमा बहुत ही उछली-कूदी और बकझक करने लगी। उसने मायारानी की तरफ देखकर कहा, "कमबख्त तारासिंह को अवश्य सूली देनी चाहिए, उसने यहाँ का रास्ता भी देख लिया है, इसलिए उसका मारना आवश्यक हो गया है और इस

नालायक कमला को सरकार मेरे हवाले करें, मैं इसे अपने घर ले जाऊँगी।" मायारानी ने इशारे से मनोरमा की बात मंजूर की। मनोरमा ने एक चोबदार औरत की तरफ देखकर कहा, "कमला को ले जाकर कैद में रक्खो। चार-पाँच दिन बाद काशीजी में हमारे घर पर भेजवा देना, क्योंकि इस समय मुझे एक जरूरी काम के लिए जाना है, जहाँ से तीन-चार दिन के अन्दर शायद न लौट सकूँगी।" हुक्म के साथ ही मुझ पर पुनः चादर डाल दी गयी, जिसकी तेज महक ने मुझको बेहोश कर दिया और फिर जब मैं होश में आयी अपने को एक अँधेरी कोठरी में कैद पाया। कई दिन तक उसी कोठरी में कैद रही और इस बीच में जो कुछ रंज और तक-लीफ उठानी पड़ी, उसका कहना व्यर्थ है। आखिर एक दिन भोजन में मुझे बेहोशी की दवा दी गयी और बेहोश होने के बाद जब मैं होश में आयी तो अपने को आपके कब्जे में पाया। अब न मालूम कुँअर इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह, किशोरी और उनके ऐयार लोगों पर क्या मुसीबत आयी और वे लोग किस अवस्था में पड़े हुए हैं।

यहाँ तक कहकर कमला चुप हो गयी, मगर उसकी आँखों से आँसू की बूँदें बराबरी जारी थीं। कमलिनी भी बड़े गौर और अफसोस के साथ उसकी बातें सुनती जाती थी और जब वह चुप हो गयी तो बोली—

कमलिनी : कमला सब्र कर, घबड़ा मत, देख मैं उन लोगों को कैसा छकाती हूँ। उन लोगों की क्या मजाल जो मेरे हाथ से बचकर निकल जाँय। तिलिस्मी मकान के अन्दर जब कुँअर इन्द्रजीतसिंह वगैरह हँसते-हँसते कूद गये थे, तो उन लोगों के पहिले मैंने अपने कई आदमी उस मकान के अन्दर कुदाए थे, जिसका हाल थोड़ी देर हुई, मैं तुझसे कह चुकी हूँ। मैंने उन आदमियों को बेसबब दुश्मनों के हाथ में नहीं फँसाया, कुछ समझ-बूझ के ही ऐसा किया था। वे लोग साधारण मनुष्य न थे, आशा है कि थोड़े दिन में तू सुन लेगी कि उन लोगों ने क्या-क्या कार्रवाई की।

कमला : आज आपके मिलने से और बहुत-सी बातें सुनकर मेरा जी ठिकाने हुआ। आप सरीखा मददगार पाकर मैं भी अपने जी का हौसला निकाला चाहती हूँ और···

कमलिनी : नहीं नहीं, इस समय तू और कुछ मत सोच और सीधे रोहतासगढ़ चली जा। तेरे वहाँ जाने से दो काम निकलेंगे, एक तो तेरी जुबानी सब हाल सुनकर राजा बीरेन्द्रसिंह को बहुत कुछ ढाढ़स होगी, दूसरे तू इस बात से होशियार रहियो और सभों को भी होशियार कर दीजियो कि वह तिलिस्मी दारोगा अर्थात् बूढ़ा साधू कहीं धोखा देकर निकल न जाय। इसमें कोई शक नहीं कि मायारानी ने उसे छुड़ाने के लिए कई

आदमी रोहतासगढ़ भेजे होंगे।

कमला : बहुत अच्छा, मैं रोहतासगढ़ जाती हूँ और उस बुड्ढे कमबख्त से होशियार रहूँगी, मगर एक भेद बहुत दिनों से मेरे दिल में खटक रहा है, यदि आप चाहें तो मेरे दिल से वह खुटका निकाल सकती हैं।

कमलिनी : वह क्या है !

कमला : (भूतनाथ की तरफ इशारा करके) यह कौन हैं। इनका असल भेद मुझको बता दीजिए।

कमलिनी : (हँसकर) इसमें सन्देह नहीं कि भूतनाथ के बारे में तरह-तरह की बातें तू सोचती होगी, परन्तु लाचार हूँ कि इस समय इनका असल भेद तुझसे नहीं कह सकती, थोड़े ही दिनों में इनका हाल तुझे बल्कि सभों को मालूम हो जायगा। हाँ, इतना अवश्य कहूँगी कि तुझे अपने चाचा शेरसिंह की तरह इनसे डरने की कोई जरूरत नहीं, ये तुझे किसी तरह की तकलीफ न देंगे, बल्कि जहाँ तक हो सकेगा मदद करेंगे।

कमलिनी से अपने सवाल का पूरा-पूरा जवाब न पाकर कमला चुप हो रही और कमलिनी की आज्ञानुसार उसको उसी समय रोहतासगढ़ चले जाना पड़ा।

छठवाँ बयान

दूसरे दिन कुछ रात बीते कमलिनी फिर मनोरमा के मकान पर पहुँची। बाग के फाटक पर उसी दरबान को टहलते पाया, जिससे कल बातचीत कर चुकी थी। इस समय बाग का फाटक खुला हुआ था और उस दरबान के अतिरिक्त और भी कई सिपाही वहाँ मौजूद थे। दरबान कमलिनी को देखते ही खुशी से आगे बढ़ा और बोला, "आइए आइए, मैं कब से राह देख रहा हूँ। नागरजी को आये दो घण्टे से ज्यादे हो गये और वे आपसे मिलने के लिए बेताब हो रही हैं।"

दरबान के साथ-ही-साथ कमलिनी बाग के अन्दर गयी और उस आलीशान मकान के सहन में पहुँची जो इस बाग के बीचोबीच में बना हुआ था। इस मकान के कमरों, दालानों, कोठरियों, तहखानों और पेचीले रास्तों का यदि यहाँ पूरा-पूरा बयान किया जाय तो पाठकों का बहुत समय नष्ट होगा, क्योंकि इस हिकमती मकान के हरएक दर्जे और हरएक हिस्से कारीगरी और मतलब के साथ बनाये गये हैं। यदि हमारे पाठकों को तीन-चार बार इस मकान के अन्दर आने और रातभर रहने का मौका मिल जायगा तो उन्हें यहाँ का बहुत भेद मालूम हो जायगा।

कमलिनी ने नागर को सहन में टहलते हुए पाया। वह सिर नीचा किये किसी सोच में डूबी हुई टहल रही थी, कमलिनी के पैर की आहट पाकर चौंकी और बोली—

नागर : क्या मेरी सखी मनोरमा का सन्देशा लेकर तुम ही आयी हो ?

कमलिनी : हाँ !

नागर : तुम कौन और कहाँ की रहनेवाली हो ? मैंने तुम्हें सिवाय आज के पहिले कभी नहीं देखा।

कमलिनी : हाँ, ठीक है, परन्तु मैं अपना परिचय किसी तरह नहीं दे सकती।

नागर : यदि ऐसा है तो मैं तुम्हारी बातों पर क्योंकर विश्वास करूँगी ?

कमलिनी : यदि मेरी बातों पर विश्वास न करोगी तो मेरा कुछ भी न बिगड़ेगा, अगर कुछ बिगड़ेगा तो तुम्हारा या तुम्हारी सखी मनोरमा का। जब मनोरमा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा तो मुझे भी इस बात का तरद्दुद हुआ और मैंने उनसे कहा कि तुम मुझे भेजती तो हो, मगर जाने से कोई काम न निकलेगा, क्योंकि मैं किसी तरह अपना परिचय किसी को नहीं दे सकती और बिना मुझे अच्छी तरह जाँचे, नागर मेरी बातों पर विश्वास न करेंगी। इसके जवाब में मनोरमा ने कहा कि मैं लाचार हूँ, सिवाय तेरे यहाँ पर मेरा हितू कोई नहीं, जिसे नागर के पास भेजूँ, यदि तू न जायगी तो मेरी जान किसी तरह नहीं बच सकती। खैर, तुम्हें मैं एक शब्द बताती हूँ, मगर खबरदार, वह शब्द सिवाय नागर के किसी दूसरे के सामने जुबान से न निकालियो। जिस समय नागर तेरी जुबान से वह शब्द सुनेगी उस समय उसका शक जाता रहेगा और जो कुछ तू उसे कहेगी, वह अवश्य करेगी। आखिर मनोरमा ने वह शब्द मुझे बताया और उसी के भरोसे मैं यहाँ तक आयी हूँ।

नागर : (कुछ सोचकर) वह शब्द क्या है ?

कमलिनी : (चारों तरफ देखकर और किसी को न पाकर) 'विकट'।

नागर : (कुछ देर तक सोचने के बाद) खैर, मुझे तुम पर भरोसा करना पड़ा, अब कहो मनोरमा किस अवस्था में है और मुझे क्या करना चाहिए ?

कमलिनी : मनोरमा भूतनाथ से मिलने के लिए गयी थी, मगर उससे मुलाकात होने पर न मालूम कौन-सा ऐसा सबब आ पड़ा कि उसने भूतनाथ का सिर काट लिया।

नागर : (चौंककर) हैं ! भूतनाथ को मार ही डाला !!

कमलिनी : हाँ, उस समय मैं मनोरमा के साथ, मगर कुछ दूर पर खड़ी यह हाल देख रही थी।

नागर : अफसोस, मनोरमा ने बहुत ही बुरा किया, आजकल भूतनाथ से बहुतकुछ काम निकलने का जमाना था, खैर तब क्या हुआ ?

कमलिनी : मनोरमा को मालूम न था कि राजा बीरेन्द्रसिंह का ऐयार तेजसिंह इस समय थोड़ी ही दूर पर एक पेड़ की आड़ में खड़ा भूतनाथ और मनोरमा की तरफ देख रहा है।

नागर : ओफ, तेजसिंह को भूतनाथ के मरने का सख्त रंज हुआ होगा, क्योंकि इन दिनों भूतनाथ दिलोजान से उन लोगों की मदद कर रहा था, अच्छा तब ?

कमलिनी : तेजसिंह बड़ी फुर्ती से उस जगह जा पहुँचा, जहाँ मनोरमा खड़ी थी और एक लात ऐसी मनोरमा की छाती पर लगायी कि वह बदहवास जमीन पर गिर पड़ी। तेजसिंह ने उसकी मुश्कें बाँध लीं और जफील बजायी, जिसकी आवाज सुन कई आदमी वहाँ आ पहुँचे। उन लोगों ने मनोरमा के साथ मुझे भी गिरफ्तार कर लिया। उसी समय मनोरमा के कई सवार दूर से आते हुए दिखायी पड़े, मगर उन लोगों के पहुँचने के पहिले ही तेजसिंह और उसके साथी हम दोनों को लेकर, वहाँ से थोड़ी दूर पर पेड़ों की आड़ में जा छिपे। दूसरे दिन हम दोनों ने अपने को रोहतासगढ़ के किले के अन्दर पाया। मनोरमा ने अपने छूटने की बहुत कुछ कोशिश की मगर कोई काम काम न चला। आखिर उसने तेजसिंह से कहा कि 'भूतनाथ बड़ा ही शैतान, नालायक और खूनी आदमी था, उसका असल हाल आप लोग नहीं जानते, यदि जानते तो आप लोग खुद भूतनाथ का सिर काट डालते'। इसके जवाब में तेजसिंह ने कहा कि 'यदि इस बात को तू साबित कर दे तो मैं तुझे छोड़ दूँगा'। मनोरमा ने मेरी तरफ इशारा करके कहा कि 'यदि आप इसे छोड़ दें और पाँच दिन की मोहलत दें तो इसे मैं अपने घर भेजकर भूतनाथ के लिखे थोड़े कागजात ऐसे मँगा दूँ कि जिन्हें पढ़ते ही आपको मेरी बातों पर विश्वास हो जाय और भूतनाथ का बहुत कुछ विचित्र हाल भी, जिसे आप लोग नहीं जानते, मालूम हो। यदि मैं झूठी निकलूँ तो जोकुछ चाहें मुझे सजा दीजियेगा'। तेजसिंह ने कुछ देर सोच-विचारकर कहा कि 'हो सकता है मुझसे बहाना करके इसे तुम अपने घर भेजो और किसी तरह की मदद मँगाओ, मगर मुझे इसकी कुछ परवाह नहीं, मैं तुम्हारी बात मंजूर करता हूँ और इसे (मेरी तरफ इशारा करके) छोड़ देता हूँ, जोकुछ चाहे इसे समझा-बूझाकर अपने घर भेजो'। इसके बाद मुझसे निराले में बातचीत करने के लिए आज्ञा माँगी गयी और तेज-

सिंह ने उसे भी मंजूर किया, आखिर मनोरमा ने मुझे बहुतकुछ समझा-बूझाकर तुम्हारे पास रवाना किया। अब मैं तो रोहतासगढ़ जानेवाली नहीं क्योंकि बड़ी मुश्किल से जान बची है, मगर तुम्हें मुनासिब है कि जहाँ तक जल्द हो सके भूतनाथ के कागजात लेकर रोहतासगढ़ जाओ और अपनी सखी के छुड़ाने का बन्दोबस्त करो।

कमलिनी की बातें सुनकर नागर सोच-सागर में डूब गयी। न मालूम उसके दिल में क्या-क्या बातें पैदा हो रही थीं, मगर लगभग आधी घड़ी के वह चुपचाप बैठी रही। इसके वाद उसने सिर उठाया और कमलिनी को देखकर कहा, "खैर, अब मुझे रोहतासगढ़ जाना जरूरी हुआ, रात-भर में सब इन्तजाम करके सवेरे या कुछ दिन चढ़े रवाना हो जाऊंगी।"

कमलिनी : अच्छा तो मेरे जिस्म जोकुछ काम था, उसे मैं कर चुकी, अब तुम जो मुनासिब समझो, करो और मुझे आज्ञा दो कि जाऊं और अपना काम देखूँ।

नागर : इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुमने मुझ पर और मनोरमा पर भारी अहसान किया। अब मैं चाहती हूँ कि आज की रात तुम यहाँ रह जाओ, क्योंकि मनोरमा को छुड़ाने के लिए रात-भर में मैं जोकुछ इन्तजाम करूंगी, उसका हाल सवेरे तुमसे कुछ सलाह करके तब रोहतासगढ़ जाऊंगी।

कमलिनी : मैं इस योग्य नहीं हूँ कि तुम्हें राय दूँ, परन्तु रात-भर के लिए अटक जाने में मेरा कोई हर्ज नहीं है, यदि इससे आप लोगों की कुछ भी भलाई हो।

नागर ने कमलिनी के लिए एक कमरा खोल दिया और उसके खाने-पीने के लिए वखूबी इन्तजाम कर दिया।

सातवाँ बयान

रात आधी जा चुकी है। कमलिनी उस कमरे में जा उसके सोने के लिए मुकर्रर किया गया था, चारपाई पर लेटी हुई करवटें बदल रही है, क्योंकि उसकी आंखों में नींद का नामोनिशान नहीं है। उसके दिल में तरह-तरह की वातें पैदा होतीं और मिटती हैं। उसे इस कोठरी की बनावट ने और भी तरद्दुद में डाल रक्खा है। यद्यपि इस कोठरी में विशेष सामान नहीं और न किसी तरह की सजावट ही है, केवल एक चारपाई जिस पर कमलिनी सोयी है और एक चौकी पड़ी है तथा कोने में एक शमादान जल रहा है, परन्तु तीन तरफ की दीवारों पर वह ताज्जुब और तरद्दुद की निगाह

डाल रही है। इस कमरे के एक तरफ की दीवार, जिधर से इसमें आने के लिए दरवाजा था, ईंट और चूने से बनी हुई थी, परन्तु बाकी तीन तरफ की दीवारें तख्तेबन्दी की थीं अर्थात् लकड़ी से बनी हुई थीं। कमलिनी के दिल में शक पैदा हुआ और उसने सोचा कि इन तख्तेबन्दी की दीवारों में कोई भेद जरूर है। इस मकान का कुछ-कुछ भेद कमलिनी को मालूम था पर यहाँ का पूरा-पूरा हाल वह नहीं जानती थी और जानने की इच्छा रखती थी। आखिर कमलिनी से चुप न रहा गया और वह चारपाई से उठी। पहिले उसने उस दरवाजे को भीतर की तरफ से बन्द किया, जो इस कमरे में आने-जाने के लिए था, इसके बाद कमर से खंजर निकाल लिया और उसके कब्जे से उन तख्तेबन्दी की दीवारों को जगह-जगह से ठोंककर देखने लगी। एक जगह से उसे दीवार पोली मालूम पड़ी और उस पर वह बखूबी गौर करने लगी। जब कुछ मालूम न हुआ तो उसने शमादान उठा लिया और फिर उस जगह को गौर से देखने लगी। थोड़ी ही देर में उसे विश्वास हो गया कि यहाँ पर एक छोटा-सा दरवाजा है, क्योंकि दरवाजे के चारों तरफ की बारीक दरार का निशान बहुत गौर करने पर मालूम होता था कमलिनी ने दरार में खंजर की नोक चुभाई और उसे अच्छी तरह दो-चार दफे हिलाया। दरार बड़ा हो गया और आधा खंजर उसके अन्दर चला गया। फिर से कोशिश करने पर लकड़ी का एक तख्ता अलग हो गया और दूसरी तरफ जाने लायक रास्ता निकल आया।

हाथ में शमादान लिये हुए कमलिनी अन्दर घुसी और एक बहुत लम्बी-चौड़ी कोठरी में पहुँची। इस कोठरी के चारों तरफ की दीवार भी तख्तेबन्दी की थी। इसमें कई चीजें ऐसी पड़ी हुई थीं, जिनके देखने से चाहे कैसा ही संगदिल और दिलावर आदमी क्यों न हो, मगर एक दफे काँप उठे और उसका कलेजा मामूली से चौगुना और आठगुना धड़कने लग जाय।

इस कोठरी में एक घोड़े की लाश थी, मगर वह अजब ढंग से थी। उसके चारों तरफ चार खूँटियाँ जमीन में गड़ी हुई थीं और उन खूँटियों के सहारे उस घोड़े के चारों पैर बँधे हुए थे। उस घोड़े का पेट चीरा हुआ और आँतें निकालकर बाहर रक्खी हुई थीं। चारों तरफ खून फैला हुआ था, मालूम होता था कि यह घोड़ा किसी काम के लिए आज ही मारा गया है। उसके पास ही थोड़ी दूर पर फूलों के कई गमले रक्खे हुए थे और उनके पास ही एक सुन्दर बिछौना जिस पर सुफेद चादर थी बिछा हुआ था तथा उस पर एक आदमी गरदन तक सुफेद ही चादर ओढ़े सो रहा था। घोड़े के पास से लेकर उस बिछावन तक पैर से लगे हुए खून के दाग जमीन पर

दिखायी दे रहे थे और बिछावन की चादर तथा उस चादर में भी जो वह आदमी ओढ़े हुए था, खून के धब्बे लगे हुए थे।

उस आदमी को देखकर कमलिनी इसलिए हिचकी कि कहीं वह जाग कर कमलिनी को देख न ले, मगर थोड़ी देर तक खड़े रहने पर भी उसके हिलने-डुलने अथवा उसकी साँस चलने की आहट न मिली। तब कमलिनी हाथ में शमादान लिए हुए उस बिछावन के पास गयी और रोशनी में उस आदमी की सूरत देखने लगी, जिसका बिल्कुल चेहरा बखूबी खुला हुआ था। सूरत देखते ही कमलिनी चौंक पड़ी और शमादान जमीन पर रख बेधड़क उस आदमी का बाजू पकड़ के हिलाने और यह कहकर उसको जगाने का उद्योग करने लगी कि 'वाह वाह ! तुम यहाँ बेखबर पड़े हुए हो और मुझे इसका जरा भी हाल नहीं मालूम' !!

जब बाजू पकड़ के हिलाने से भी वह आदमी न जागा तब कमलिनी को ताज्जुब हुआ और गौर से उसकी सूरत देखने लगी, मगर नब्ज पर हाथ रक्खा तो मालूम हो गया कि वह जिन्दा नहीं बल्कि मुर्दा है। यह जानते ही कमलिनी का जी भर आया और वह मुर्दे के सर पर हाथ रखकर रोने और गरम-गरम आँसू गिराने लगी। थोड़ी देर तक कमलिनी इसी अवस्था में पड़ी रही, आखिर वह चैतन्य हुई और यह कहकर उठ खड़ी हुई कि 'बात तो बहुत ही बुरी हुई, मगर इस समय मुझे सब्र करना चाहिए नहीं तो कुछ भी न कर सकूँगी। हाय, मेरा दिल और मेरे काबू में न रहे ! नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, मैं पूरा-पूरा सब्र करूँगी और देखूँगी कि क्या कर सकती हूँ। इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि इसकी जान निकले चार पहर से ज्यादे अभी नहीं हुए'। कमलिनी फिर शमादान उठाकर उस कोठरी में घूमने और चारों तरफ देखने लगी। पूरब और दक्खिन के कोने में एक लाश छत से लटकती हुई दिखायी पड़ी, जिसके गले में फाँसी लगी थी। वह ताज्जुब के साथ शमादान ऊँचा करके उसकी सूरत देखने लगी, जब अच्छी तरह पहिचान चुकी तो नफरत के साथ उस लाश पर थूककर अपना मुँह फेर लिया और दूसरी तरफ चली ही थी कि यह आवाज सुनकर ठहर गयी और उस तरफ देखने लगी, जिधर से आवाज आयी थी। आवाज यह थी—'हाय, मौत को भी मौत आ गयी।'' उसे ताज्जुब मालूम हुआ कि यह आवाज क्योंकर आयी। वह यह देखने के लिए उस तरफ बढ़ी, जिधर से आवाज आयी थी कि शायद कोई सूराख या खिड़की दिखायी दे और आखिर ऐसा ही हुआ। दीवार के पास पहुँचते ही एक सूराख ऐसा दिखा जिसमें आदमी की गर्दन बखूबी जा सकती थी, यह टेढ़ा और नीचे की तरफ झुका हुआ सूराख, जिसे किसी कमरे का रोशनदान कहना चाहिए, दीवार के बिल्कुल

नीचे की तरफ था।

कमलिनी ने उस सूराख में झाँककर देखा तो एक छोटे-से मगर सजे हुए कमरे में निगाह गयी। यह कमरा उस कोठरी से एक खण्ड नीचे था, जिसमें से कमलिनी झाँक रही थी। उस कमरे में जो कुछ कमलिनी ने देखा, उससे उसके दिल को बड़ा ही सदमा पहुँचा और जब तक वह देखती रही, उसकी आँखों से आँसू बराबर जारी रहे।

कमलिनी ने देखा कि एक पलँग पर जिसके पास ही शमादान जल रहा है, आफत की मारी बेचारी किशोरी पड़ी हुई है। रंज और गम के मारे सूखकर काँटा हो रही है। चेहरे पर मुर्दनी छायी हुई और कमजोरी की यह अवस्था है कि साँस भी मुश्किल से आती-जाती है। थोड़ी-थोड़ी देर पर उसके होंठ हिलते हैं और धीरे-धीरे कुछ कहती है, मगर जब कहती है तो उसकी आवाज साफ सुनायी देती है। वह कह रही थी—

"हाय, अब इससे बढ़कर दुर्दशा क्या हो सकती है! इन्द्रजीतसिंह, तुम्हारी मुहब्बत में मैं यहाँ तक पहुंच चुकी, कुल में कलंकिनी कहाई, लज्जा जो तिलांजुली दे बैठी, और वह सब दुःख झेलने को तैयार हुई जो तुम्हारी बदौलत···

"(थोड़ी देर चुप रहकर) यहाँ तक रोयी कि अब आँखों में आँसू भी नहीं रहे। खाना-पीना छोड़ देने पर भी निगोड़ी जान नहीं निकलती। हाय, मौत को भी मौत आ गयी। नहीं नहीं, मौत को मौत नहीं आयी, वह देखो मेरे सामने खड़ा हुआ काल मेरी तरफ देख रहा है। अब कुछ दम की मेहमान हूँ। मैं तो जाती हूँ, मगर अफसोस, अपने प्यारे की जुदाई का रंज और उसकी बेवफाई और बेमुरौवती की शिकायत अपने साथ लिये जाती हूँ। हाय, इस समय ऐसा कोई भी नहीं, जो मेरी हालत देखे और मेरे बाद उनसे जाकर···

"(थोड़ी देर चुप रहकर) जब उनको मेरी परवाह ही नहीं है तो मेरा हाल कोई उनसे कहकर करेगा ही क्या? उन्होंने तो खुद कहला भेजा है कि मुझे कुछ भी परवाह नहीं। हाय, मैं ऐसी बात कैसे सुन सकी! उसी समय मेरी जान क्यों न निकल गयी! नहीं नहीं, यह सब ऐयारी है, उन्होंने ऐसी बात कभी न कही होगी। पर इससे क्या हो सकता है, जबकि दम निकलने में कुछ कसर बाकी नहीं है। देखो, देखो, वह काल अब मेरी तरफ बढ़ा चला आता है! अच्छा है, किसी तरह वह सायत आये भी तो। हे सर्वशक्तिमान जगदीश्वर! मैं तुम्हीं को गवाह रखती हूँ क्योंकि तुम खूब जानते हो कि मैं निर्दोष इस दुनिया से उठी जाती हूँ और इन्द्रजीतसिंह की मुहब्बत के सिवाय अपने साथ कुछ भी नहीं लिये जाती। हाँ, उस प्यारे की···"

इसके बाद बहुत देर तक राह देखने पर भी कुछ सुनायी न दिया। कमलिनी ने समझा कि या तो इसे कमजोरी से गश आ गया और या इस बेचारी हसरत की मारी का दम ही निकल गया। इस समय कमलिनी ने जो कुछ देखा या सुना, वह उसे बेसुध करने के लिए काफी था। कमलिनी जार-जार रो रही थी, यहाँ तक कि हिचकी बंध गयी और उसे इस बात का ध्यान बिल्कुल ही जाता रहा कि मैं यहाँ किस काम के लिए आयी हूँ, क्या कर रही हूँ और इस समय कैसे खतरे में फँसी हुई हूँ!

कमलिनी के लिए यह समय बड़े ही संकट का था। वह नहीं चाहती थी कि बेचारी किशोरी का पूरा-पूरा हाल जाने या उसे किसी तरह की मदद पहुंचाए बिना यहाँ से चली जाय और साथ ही इसके भूतनाथ के कागजात को भी, जिनके लेने का वह पूरा-पूरा उद्योग कर चुकी थी, किसी तरह छोड़ नहीं सकती थी, क्योंकि यह मौका निकल जाने पर फिर उनका हाथ लगना बहुत ही कठिन था।

किशोरी की हालत पर अफसोस करती हुई कमलिनी अभी नीचे देख ही रही थी कि यकायक उस कमरे का दरवाजा खुला और एक खूबसूरत नौजवान अमीराना पोशाक पहिरे अन्दर आता हुआ दिखायी पड़ा। उसके पीछे हाथ में पंखा लिये एक लौंडी भी थी, जिसने अन्दर पहुँचने पर उस दरवाजे को उसी तरह बन्द कर दिया।

इस नौजवान की उम्र लगभग पच्चीस वर्ष के होगी। मेयाना कद, गोरा रंग, हाथ-पैर से मजबूत और खूबसूरत था। वह किशोरी के पलँग के पास आकर खड़ा हो गया और गौर से उसकी तरफ देखने लगा। उस पलँग के पास ही एक मोढ़ा कपड़े से मढ़ा हुआ पड़ा था, जिसे लौंडी उठा लायी और पलँग के पास रखकर पंखा झलने लगी। नौजवान ने बड़े गौर से किशोरी की नाड़ी देखी और फिर उस लौंडी की तरफ मुँह करके कहा, "गश आ गया है।"

लौंडी : कमजोरी के सबब से।

नौजवान : एक तो बीमार, दूसरे कई दिन से खाना-पीना सब छोड़ दिया, फिर ऐसी नौबत तो हुआ ही चाहे। अफसोस, यह मेरी बात नहीं मानती और मुफ्त में जान दे रही है।

लौंडी : इस जिद्द का भी कोई ठिकाना है!

नौजवान : खैर, चाहे जो हो, मगर दो बात से तीसरी कभी हो ही नहीं सकती, या तो यह मेरी होकर रहेगी या इसी अवस्था में पड़ी-पड़ी यमलोक को सिधार जायगी। अच्छा इसे होश में लाना चाहिए।

"जो हुक्म" कहकर लौंडी वहाँ से चली गयी और एक आलमारी में

से जो पलंग के सिरहाने की तरफ थी कई बोतलें निकाल लायीं, जिन्हें उस नौजवान के पास रखकर वह फिर पंखा झलने लगी।

नौजवान ने अपनी जेब में से रूमाल निकालकर एक बोतल के अर्क से उसे तर किया और दूसरी बोतल में से थोड़ा-सा अर्क हाथ में लेकर किशोरी के मुँह पर छींटा दिया। इसके बाद वही रूमाल नाक के पास ले जाकर कुछ देर तक सुँघाया। जब उससे कुछ काम न चला तो तीसरी बोतल से अर्क लेकर उसके मुँह पर छींटा दिया। थोड़ा देर में किशोरी का गश जाता रहा और उसने आँखें खोलकर देखा, मगर जैसे ही उस नौजवान पर निगाह पड़ी वह काँप उठी और दोनों हाथों से मुँह ढाँपकर बोली—

"हाय, न मालूम यह चाण्डाल अब क्यों मेरे पास आया है !"

नौजवान : मैं इसी वास्ते आया हूँ कि एक दफे तुमसे और पूछ लूँ।

किशोरी : एक दफे क्या सौ दफे कह चुकी कि तू मुझसे किसी तरह की उम्मीद न रख। मैं तेरी सूरत देखने की बनिस्बत मौत को हजार दर्जे अच्छा समझती हूँ !

नौजवान : क्या अभी तक तुझे इस बात की उम्मीद है कि इन्द्रजीतसिंह आकर तेरी मदद करेंगे और छुड़ा ले जायेंगे ?

किशोरी : मुझे क्या पड़ी है कि इन सब बातों का तुझे जवाब दूँ ? मैं तुझ पर बल्कि तेरी सात पुस्त पर थूकती हूँ। चाण्डाल, हट जा मेरे सामने से !

लौंडी : (नौजवान से) हुजूर, इस कमीनी औरत से क्यों बेइज्जती करा रहे हैं ? इसमें क्या ऐसा हीरा जड़ा है ?

नौजवान क्रोध के मारे काँपने लगा, आँखें लाल हो गयीं, और दाँत पीसता हुआ मोढ़े पर से उठ खड़ा हुआ। दाहिने हाथ से वह छुरा निकाल लिया, जो उसकी कमर में छिपा हुआ था और बायें हाथ से किशोरी का हाथ पकड़ यह कहता हुआ उसकी तरफ झुका, "जब ऐसा ही है तो मैं इसी समय क्यों न तुझे यमलोक पहुँचाऊं !"

उस नौजवान और किशोरी की यह अवस्था देखकर कमलिनी परेशान हो गयी और सोचने लगी कि इस जल्दी में कौन-सी तरकीब की जाय कि किशोरी की जान बचे। मगर वह कर ही क्या सकती थी ? ? एक तो वह स्वयं चोरों की तरह कोठरियों में घूम रही थी, यदि किसी को जरा भी शक हो जाय तो उसकी जान पर आ बने, दूसरे कोई ऐसा रास्ता भी नहीं दिखायी देता था, जिधर से किशोरी के पास पहुंचकर उसकी सहायता करती, मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि कमलिनी बहुत होशियार, चालक और बुद्धिमान थी। उसने बहुत जल्द दिल में इस बात का फैसला कर लिया

कि अब क्या करना चाहिए। एक खयाल बिजली की तरह उसके दिल में दौड़ गया, मगर देखा चाहिए उससे कहाँ तक काम निकलता है।

जिस समय किशोरी को मारने के लिए वह नौजवान झुका और कमलिनी को मालूम हुआ कि अब उस बेचारी का काम तमाम हुआ चाहता है, उसी समय कमलिनी ने अपने कमर से तिलिस्मी खंजर निकाल लिया और जिस मोखे में देख रही थी उसके अन्दर डालकर उसका कब्जा दबाया*। यह खंजर बिजली की तरह चमका और उस कोठरी में इतनी ज्यादे चमक या रोशनी पैदा हुई कि लौंडी, किशोरी और उस नौजवान की आँखें बिल्कुल बन्द हो गयीं, जो किशोरी को मारा चाहता था, इसके साथ ही कमलिनी ने भारी स्वर में यह आवाज दी, "खबरदार! किशोरी की जान लेकर अपनी जान का ग्राहक मत बन!!"

उस बिजली की चमक ने तो नौजवान को परेशान कर ही दिया था, मगर साथ ही कमलिनी की आवाज ने जो गैब की आवाज मालूम होती थी, उसे बदहवास कर दिया और वह इतना डरा और घबराया कि बिना कुछ सोचे और किशोरी को दुःख दिये, उस कोठरी से निकल भागा। कमलिनी ने भी अब उस जगह ठहरना मुनासिब न जाना। जहाँ तक जल्द हो सका अपने कमरे में चली आयी। उस तख्ते के दरवाजे को जिसे खोल दूसरी कोठरी में गयी थी, ज्यों-का त्यों बन्द करने बाद अपने कमरे का दरवाजा भी खोल दिया, जो दूसरी कोठरी में जाने के पहिले भीतर से बन्द कर लिया था।

इस समय रात बहुत थोड़ी रह गयी थी। कमलिनी ने चाहा कि दो घण्टे आराम करे, मगर जो कुछ अद्भुत बातें उसने देखी और सुनी थीं उनके खयाल और विचार ने आराम लेने न दिया और उसे किसी तरह नींद न आयी। अभी आसमान पर सुबह की सुफेदी अच्छी तरह फैलने नहीं पायी थी कि दरवाजा खुलने की आहट मालूम हुई, कमलिनी ने दरवाजे की तरफ देखा तो नागर पर नजर पड़ी।

कमलिनी पहिले ही से सोचे हुए थी कि आज की अद्भुत बातों का असर कुछ-न-कुछ नागर पर जरूर पड़ेगा और वह सवेरा होने के पहिले ही यहाँ पहुँचेगी, वल्कि ताज्जुब नहीं कि वह मुझ पर किसी तरह का शक भी करे। आखिर कमलिनी का सोचना ठीक निकला।

इस समय नागर के चेहरे पर परेशानी और उदासी छायी हुई थी।

---

* पाठकों को याद होगा कि कमलिनी की कमर में इस समय दो तिलिस्मी खंजर मौजूद हैं।

उसने आते ही कमलिनी पर एक तेज निगाह डाली और सवाल करना शुरू किया—

नागर : इस समय तुम्हारी आँखें लाल मालूम होती हैं, क्या नींद नहीं आयी ?

कमलिनी : हाँ, दो घण्टे के लगभग तो मैं सोयी, मगर फिर नींद नहीं आयी, अभी तक डर के मारे मेरा कलेजा काँप रहा है, यह उम्मीद न थी कि तुम मुझे ऐसी भयानक जगह सोने के लिए दोगी, क्योंकि मैंने तुम्हारे साथ किसी तरह की बुराई नहीं की थी।

नागर : (ताज्जुब से) सो क्या ? तुम्हें किस बात की तकलीफ हुई और यहाँ पर क्या भयानक वस्तु देखने में आयी ?

कमलिनी : मैं यहाँ पर अब एक सायत भी नहीं ठहर सकती, केवल तुम्हारी राह देख रही थी।

नागर : आखिर मामला क्या है, कुछ कहो भी तो।

कमलिनी : अच्छा बाहर चलो तो जो कुछ देखा है, तुमसे कहूँ।

इसमें कोई शक नहीं कि नागर बहुत तेजी के साथ आयी थी और उसे कमलिनी पर शक था, मगर कमलिनी ने ऐसे ढंग से बातें कीं कि उसकी हालत बिल्कुल ही बदल गयी और वह तरह-तरह के सोच में पड़ गयी। नागर और कमलिनी बाहर आयीं और सहन में एक संगमर्मर की चौकी पर बैठकर बातचीत करने लगीं।

नागर : हाँ, कहो तुमने क्या देखा ?

कमलिनी : दो घण्टे तो मैं बड़े आराम से सोयी पर यकायक घड़-घड़ाहट की आवाज सुन चौंक पड़ी और घबड़ाकर चारों तरफ देखने लगी।

नागर : घड़घड़ाहट की आवाज कैसी ?

कमलिनी : मालूम होता था कि इस कमरे के नीचे कई गाड़ियाँ दौड़ रही हैं। पहिले तो मुझे शक हुआ कि शायद भूकम्प आनेवाला है, क्योंकि उसके पहिले भी प्रायः ऐसी घटना हुआ करती है, मगर सो न हुआ। आखिर थोड़ी देर तक राह देखकर फिर सो रही। आधा घण्टा भी न हुआ होगा कि मेरी चारपाई हिली, मैं घबराकर उठ बैठी और अपने सामने एक कम उम्र लड़के को देखकर ताज्जुब करने लगी।

नागर : (ताज्जुब से) कम उम्र लड़का ! या कोई औरत थी ? शायद तुमने अच्छी तरह खयाल न किया हो।

कमलिनी : जी नहीं, जहाँ तक मैं समझती हूँ, वह लड़का ही था !

नागर : भला उसकी उम्र क्या होगी ? और सूरत-शक्ल कैसी थी ?

कमलिनी : शायद चौदह-पन्द्रह वर्ष होगी, चेहरा खूबसूरत और रंग

गोरा, सिर पर मुड़ासा बाँधे और हाथ में एक बड़ा-सा डब्बा लिये था।

नागर : (कुछ सोचकर) तुमने धोखा खाया, वह जरूर औरत बल्कि कमलि······अच्छा तब क्या हुआ ?

कमलिनी : उसने आते ही मुझसे पूछा कि 'सच बता किशोरी कहाँ है' ?

नागर : आते ही किशोरी को पूछा !

कमलिनी : जी हाँ। मैंने जवाब दिया कि 'मुझे खबर नहीं'। इतना सुनते ही उसकी आँखें लाल हो गयीं और गुस्से के मारे थरथर काँपने लगा। उसने वह बड़ा डब्बा जो हाथ में लिये था, जमीन पर दे मारा। उस डब्बे में से इतनी तेज चमक पैदा हुई कि जिसे मैं अच्छी तरह बयान नहीं कर सकती। मालूम होता है कि आसमान से उतरकर कई बिजलियाँ एक साथ कमरे के अन्दर आ घुसी हैं। मेरी आँखें एकदम बन्द हो गयीं। और मैं काँपकर चारपाई पर गिर पड़ी। थोड़ी देर बाद मालूम हुआ कि कोई आदमी मेरे बदन पर हाथ फेर रहा है। बस उसी समय मैं बेहोश हो गयी और तनोबदन की सुध जाती रही। मैं समझती हूँ कि कोई पहर-भर के बाद मुझे होश आयी और तबसे बराबर जाग रही हूँ। मैंने बहुत चाहा कि कमरे से निकल भागूँ, मगर डर के मारे हाथ-पैर ऐसे कमजोर हो गये थे कि चारपाई से उठ न सकी, इस समय जब तुम्हारी सूरत देखी तो जरा जी ठिकाने हुआ।

नागर : (कुछ देर सोचने के बाद धीरे से) बेशक, यह काम मझली रानी का है दूसरे का नहीं।

कमलिनी : मझली रानी कौन ?

नागर : तुम उसे नहीं जानती हो।

कमलिनी : खैर, जो हो, मैं तो सोचे हुए थी कि कल या परसों जब मैं अपना काम करके लौटूँगी और एक रात इस शहर में काटने की नौबत आवेगी तो बस इसी मकान में रह जाऊँगी, क्योंकि मनोरमा की मोहब्बत के भरोसे इसे भी अपना घर समझती हूँ, मगर रात की बात ने ऐसा डरा दिया कि अब हिम्मत नहीं पड़ती।

नागर : नहीं नहीं, तुम जब इधर आया-जाया करो तो यहाँ जरूर टिका करो और इस मकान को अपना ही समझो। मैं लौंडियों और नौकरों को इस विषय में पूरा-पूरा हुक्म देती हूँ। यह भयानक घटना जो आज हुई है, रोज नहीं हो सकती इससे निश्चिन्त रहो।

कमलिनी : क्या कहूं अभी तक होशहवास दुरुस्त नहीं हुए।

नागर : जरा ठहरो, मैं इस कमरे में जाती हूँ और एक चीज देखकर

अभी लौट आती हूँ।

नागर उठी और उस कमरे में चली गयी जिसमें कमलिनी सोयी थी, मगर थोड़ी ही देर बाद आकर बोली, "तुम बेखौफ रहो, आज के बाद फिर कभी इस मकान में ऐसी घटना न देखोगी। क्या करूँ, लाचार हूँ, क्योंकि इस समय मुझे झख मारके रोहतासगढ़ मनोरमा को छुड़ाने के लिए जाना ही पड़ेगा, नहीं तो आज एक भारी काम निकालने का मौका आ गया था।"

कमलिनी : तुमने क्या कहा मेरी समझ में कुछ नहीं आया।

नागर : इन बातों को तुम नहीं समझ सकतीं। खैर, अब तुम्हारा क्या इरादा है ? मैं तो रोहतासगढ़ जाने के लिए तैयार हो चुकी हूँ।

कमलिनी : अच्छी बात है। जहाँ तक हो सके जल्दी जाओ, मैं भी एक जरूरी काम के लिए मिर्जापुर जाती हूँ, कल या परसों तक लौटूंगी। मैं तो कल ही चली जाती, मगर तुमने व्यर्थ मुझे रोक लिया।

नागर : मैंने व्यर्थ नहीं रोका था, मगर हाँ, अब उसे व्यर्थ ही कहना चाहिए, खैर, माफ करो और कृपा करके मेरी एक बात स्वीकार करो तो बड़ा अहसान मानूँगी।

कमलिनी : वह क्या ?

नागर : इस समय तो मैं रोहतासगढ़ जाती हूँ, क्या जाने कब तक लौटना हो, मगर तुम पन्द्रह दिन के अन्दर-ही-अन्दर मुझसे एक दफे जरूर मिलो।

कमलिनी : पन्द्रह दिन तक तो मैं इस प्रान्त में नहीं रह सकती, हाँ, पाँच-सात दिन तक में यदि मुझसे मिल सको तो ठीक है।

नागर : शायद पाँच-सात दिन तक मेरा लौटना न हो।

कमलिनी : ऐसा नहीं हो सकता, तुम जिस समय पहुँचोगी और भूतनाथ के कागजात तेजसिंह को दिखाओगी, उसी समय मनोरमा की छुट्टी हो जायगी। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि तेजसिंह बात का बड़ा धनी है।

नागर : यदि ऐसा हो तो मैं अपने तेज घोड़े पर सवार होकर कल बखूबी रोहतासगढ़ पहुँच सकती हूँ।

कमलिनी : ऐसा करो तो तुम चार ही दिन में लौट आओगी। मैं भी कल या परसों मिर्जापुर से आ जाऊँगी और जब तक तुम न लौटोगी, इसी मकान में टिकी रहूँगी, क्योंकि मनोरमा ने पुनः मिलने के लिए मुझसे कसम खिला ली थी, अस्तु, पाँच-चार दिन तक अपना हर्ज करके भी मनोरमा के लिए यहाँ अटकना आवश्यक है।

नागर : बहुत अच्छी बात हैं, जब मनोरमा से वादा कर चुकी हो तो मुझे विशेष कहने की कोई आवश्यकता नहीं।

कमलिनी : अच्छा तो आप अब मेरा एक काम करें।

नागर : कहिए।

कमलिनी : अपने किसी आदमी को भेजकर एक घोड़ा किराये का मँगवा दीजिए, जिस पर सवार होकर मैं मिर्जापुर जाऊँ, क्योंकि यद्यपि मैं ऐयार हूँ, परन्तु रोहतासगढ़ से यहाँ तक तेजी के साथ आने के कारण बहुत सुस्त हो रही हूँ।

नागर : क्या मनोरमा के घर में घाड़ा की कमी है, जो तुम्हारे लिए किराये का घोड़ा मँगाया जाय।

इतना कहकर नागर चली गयी। थोड़ी देर के बाद एक लौंडी आयी, जिसने कमलिनी को स्नान इत्यादि से छुट्टी पा लेने के लिए कहा। कमलिनी ने दो एक जरूरी काम से तो छुट्टी पा ली, मगर स्नान करने से इन्कार किया और अपने बटुए से सामान निकालकर चीठी लिखने लगी।

घण्टे-भर बाद सफर के सामान से लैस होकर कई लौंडियों को साथ लिये हुए नागर भी उसी जगह आ पहुँची, जहाँ कमलिनी बैठायी गयी थी। उस समय कमलिनी चीठी लिख चुकी थी।

नागर : मैंने तुम्हारे पास इसलिए एक लौंडी भेजी थी कि तुम्हें नहला-धुला दे मगर तुमने···

कमलिनी : हाँ, मैंने स्नान नहीं किया क्योंकि इस समय अर्थात् सूर्योदय के पहिले स्नान करने की मेरी आदत नहीं। कहीं स्नान कर लूँगी, और कामों से छुट्टी पा चुकी हूँ।

नागर : खैर, कुछ मेवा खाकर जल पी लो।

कमलिनी : नहीं इस समय माफ करो, हाँ, थोड़ा-सा मेवा साथ रख लूँगी, जो सफर में काम आवेगा।

थोड़ी देर बाद दो घोड़े कसे-कसाये लाये गये, एक पर नागर और दूसरे पर कमलिनी सवार हुई। उस समय कमलिनी ने वह चीठी जो अभी घण्टा-भर हुआ लिखकर तैयार की थी नागर के हाथ में दे दी और कहा, "इसे हिफाजत से रक्खो, मनोरमा को देकर मेरी तरफ से 'जै माया की' कहना।" वह चीठी लिफाफे के अन्दर थी और जोड़ पर मोहर लगायी हुई थी।

बाग के बाहर निकलकर कमलिनी ने पश्चिम का रास्ता लिया और नागर पूरब की तरफ रवाना हुई।

सातवाँ भाग

पहिला बयान

नागर थोड़ी दूर पश्चिम जाकर घूमी और उस सड़क पर चलने लगी, जो रोहतासगढ़ की तरफ गयी थी।

पाठक स्वयं समझ सकते हैं कि नागर का दिल कितना मजबूत और कठोर था। उन दिनों जो रास्ता काशी से रोहतासगढ़ को जाता था, वह बहुत ही भयानक और खतरनाक था। कहीं-कहीं तो बिल्कुल ही मैदान में जाना पड़ता था और कहीं गहन वन में होकर दरिन्दे जानवरों की दिल दहलानेवाली आवाजें सुनते हुए सफर करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त उस रास्ते में लुटेरों और डाकुओं का डर तो हरदम बना ही रहता था। मगर इन सब बातों पर ज़रा भी ध्यान न देकर नागर ने अकेले ही सफर करना पसन्द किया, इसी से कहना पड़ता है कि वह बहुत ही दिलावर, निडर और संगदिल औरत थी। शायद उसे अपनी ऐयारी का भरोसा या घमण्ड हो, क्योंकि ऐयार लोग यमराज से भी नहीं डरते और जिस ऐयार का दिल इतना मज़बूत न हो, उसे ऐयार कहना भी न चाहिए।

नागर एक नौजवान मर्द की सूरत बनाकर तेज और मजबूत घोड़े पर सवार तेजी के साथ रोहतासगढ़ की तरफ जा रही थी। उसकी कमर में ऐयारी का बटुआ, खंजर, कटार और एक पथरकला* भी था। दोपहर होते-होते उसने लगभग पचीस कोस के रास्ता तय किया और उसके बाद एक ऐसे गहन वन में पहुँची, जिसके अन्दर सूर्य की रोशनी बहुत कम पहुँचती थी, केवल एक पगडण्डी सड़क थी, जिस पर बहुत सम्हलकर सवारों को

---

* पथरकला उस छोटी-सी बन्दूक को कहते हैं, जिसके घोड़े में चकमक लगा होता है, जो रंजक पर गिरकर आग पैदा करता है।

सफर करना पड़का था, क्योंकि उसके दोनों तरफ कँटीले दरख्त और झाड़ियाँ थीं। इस जंगल के बाहर एक चौड़ी सड़क भी थी, जिस पर गाड़ी और छकड़ेवाले जाते थे, मगर घुमाव और चक्कर पड़ने के कारण, उस रास्ते को छोड़कर घोड़सवार और पैदल लोग अकसर, इसी जंगल में से होकर जाया करते थे, जिसमें इस समय नागर जा रही है, क्योंकि इधर से कई कोस का बचाव पड़ता था।

यकायक नागर का घोड़ा भड़का और रुककर अपने दोनों कान आगे की तरफ करके देखने लगा। नागर शहसवारी का फन बखूबी जानती और अच्छी तरह समझती थी, इसलिए घोड़े के भड़कने और रुकने से उसे किसी तरह का रंज न हुआ, बल्कि वह चौकन्नी हो गयी और बड़े गौर से चारों तरफ देखने लगी। अचानक सामने की तरफ पगडण्डी के बीचोबीच में बैठे हुए एक शेर पर उसकी निगाह पड़ी, जिसका पिछला भाग नागर की तरफ था, अर्थात् मुँह उस तरफ था, जिधर नागर जा रही थी। नागर बड़े गौर से शेर को देखने और सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए। अभी उसने कोई राय पक्की नहीं की थी कि दाहिनी बगल की झाड़ी में से एक आदमी निकलकर बढ़ा और फुर्ती के साथ घोड़े के पास आ पहुँचा, जिसे देखते ही वह चौंक पड़ी और घबराहट के मारे बोल उठी, "ओफ, मुझे बड़ा भारी धोखा दिया गया !!" साथ ही इसके वह अपना हाथ पथरकले पर ले गयी, मगर उस आदमी ने इसे कुछ भी करने न दिया। उसने नागर का हाथ पकड़कर अपनी तरफ खींचा और एक झटका ऐसा दिया कि वह घोड़े के नीचे आ रही। वह आदमी तुरत उसकी छाती सवार हो गया और उसके दोनों हाथ कब्जे में कर लिये।

यद्यपि नागर को विश्वास हो गया कि अब उसकी जान किसी तरह नहीं बच सकती तो भी उसने बड़ी दिलेरी से अपने दुश्मन की तरफ देखा और कहा—

"बेशक उस हरामजादी ने मुझे पूरा धोखा दिया, मगर भूतनाथ तुम मुझे मारकर जरूर पछताओगे। वह कागज जिसके मिलने की उम्मीद में तुम मुझे मार रहे हो, तुम्हारे हाथ कभी न लगेगा, क्योंकि मैं उसे अपने साथ नही लायी हूँ, यदि तुम्हें विश्वास न हो तो मेरी तलाशी ल लो और बिना वह कागज पाये मेरे या मनोरमा के साथ बुराई करना तुम्हारे हक में ठीक नही है, इसे तुम अच्छी तरह जानते हो।"

भूतनाथ : अब मैं तुझे किसी तरह छोड़ नहीं सकता। मुझे विश्वास है कि वे कागजात जिनके सबब से मैं तुझ ऐसे कमीनों की तावेदारी करने पर मजबूर हो रहा हूँ, इस समय जरूर तेरे पास हैं तथा इसमें भी कोई सन्देह

नहीं कि कमलिनी ने अपना वादा पूरा किया और कागजों के सहित तुझे मेरे हाथ फँसाया। अब तू मुझे धोखा नहीं दे सकती और न तलाशी लेने की नीयत से मैं तुझे कब्जे से छोड़ ही सकता हूँ। तेरा जमीन से उठना मेरे लिए काल हो जायेगा, क्योंकि फिर तू हाथ नहीं आवेगी।

नागर : (चौंककर और ताज्जुब से) हैं, तो क्या वह कमबख्त कमलिनी थी, जिसने मुझे धोखा दिया! अफसोस, शिकार घर में आकर निकल गया। खैर, जो तेरे जी में आवे कर, यदि मेरे मारने ही में तेरी भलाई हो तो मार, मगर मेरी एक बात सुन ले।

भूतनाथ : अच्छा कह क्या कहती है? थोड़ी देर तक ठहर जाने में मेरा कोई हर्ज भी नहीं!

नागर : इसमें तो कोई शक नहीं कि अपने कागजात, जिसे तेरा जीवन-चरित्र कहना चाहिए, लेने के लिए ही तू मुझे मारना चाहता है।

भूतनाथ : बेशक, ऐसा ही है, यदि वह मुट्ठा मेरे हाथ का लिखा हुआ न होता तो मुझे उसकी परवाह न होती।

नागर : हाँ, ठीक है, परन्तु इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि मुझे मारकर तू वे कागजात न पावेगा। खैर, जब मैं इस दुनिया से जाती ही हूँ तो क्या जरूरत है कि तुझे भी बर्बाद करती जाऊँ? मैं तेरी लिखी चीजें खुशी से तेरे हवाले करती हूँ, मेरा दाहिना हाथ छोड़, मैं तुझे बता दूं कि मुझे मारने के बाद वे कागजात तुझे कहाँ से मिलेंगे।

भूतनाथ इतना डरपोक और कमजोर भी न था कि नागर का केवल दाहिना हाथ, जिसमें हर्बे की किस्म से एक काँटा भी न था, छोड़ने से डर जाय, दूसरे उसने यह भी सोचा कि जब यह स्वयं ही कागजात देने को तैयार है तो क्यों न ले लिया जाय, कौन ठिकाना इसे मारने के बाद कागजात हाथ न लगें। थोड़ी देर कुछ सोच-विचारकर भूतनाथ ने नागर का दाहिना हाथ छोड़ दिया, जिसके साथ ही उसने फुर्ती से वह हाथ भूतनाथ के गाल पर दबाकर फेरा। भूतनाथ को ऐसा मालूम हुआ कि नागर ने एक सूई उसके गाल में चुभो दी, मगर वास्तव में ऐसा न था। नागर की उँगली में एक अँगूठी थी, जिस पर नगीने की जगह स्याह रंग का कोई पत्थर जड़ा हुआ था, वही भूतनाथ के गाल में गड़ा, जिससे एक लकीर-सी पड़ गयी और ज़रा खून भी दिखायी देने लगा। पर मालूम होता है कि वह नोकीला स्याह पत्थर जो अँगूठी में जड़ा हुआ था, किसी प्रकार का जहर हलाहल था, जो खून के साथ मिलते ही अपना काम कर गया, क्योंकि उसने भूतनाथ को बात करने की मोहलत न दी। वह एकदम चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ा और नागर उसके कब्जे से छूटकर अलग हो गयी।

नागर ने घोड़े की वागडोर जो चारजामे से बँधी हुई थी, खोली और उसी से भूतनाथ के हाथ-पैर बाँधने के बाद एक पेड़ के साथ कस दिया, इसके बाद उसने अपने ऐयारी के बटुए में से एक शीशी निकाली, जिसमें किसी प्रकार का तेल था। उसने थोड़ा तेल उसमें से भूतनाथ के गाल में उसी जगह जहाँ लकीर पड़ी हुई थी, मला। देखते-ही-देखते उस जगह एक बड़ा फफोला पड़ गया। नागर ने खंजर की नोक से उस फफोले में छेद कर दिया, जिससे उसके अन्दर का बिल्कुल पानी निकल गया और भूतनाथ होश में आ गया।

नागर : क्यों बे कम्बख्त, अपने किये की सजा पा चुका या कुछ कसर है? तूने देखा, मेरे पास कैसी अद्‌भुत चीज है। अगर हाथी भी हो तो इस जहर को बर्दाश्त न कर सके और मर जाय; तेरी क्या हकीकत है!

भूतनाथ : बेशक, ऐसा ही है और अब मुझे निश्चय हो गया कि मेरी किस्मत में जरा भी सुख भोगना बदा नहीं है।

नागर : साथ ही इसके तुझे यह भी मालूम हो गया कि इस जहर को मैं सहज ही में उतार भी सकती हूँ। इसमें सन्देह नहीं कि तू मर चुका था, मगर मैंने इसलिए तुझे जिला दिया कि अपने लिखे हुए कागजों का हाल दुनिया में फैला हुआ तू स्वयं देख और सुन ले, क्योंकि उससे बढ़कर कोई दुःख तेरे लिए नहीं है, पर यह भी देख ले कि उस कमबख्त कमलिनी के साथ मैंने क्या किया, जिसने मुझे धोखे में डाला था। इस समय वह मेरे कब्जे में है, क्योंकि कल वह मेरे घर में जरूर आकर टिकेगी! अहा, अब मैं समझ गयी कि रातवाले अद्‌भुत मामले की जड़ भी वही है। जरूर ही इस मुर्दे शेर को रास्ते में तूने ही बैठाया होगा!

भूतनाथ : (आँखों में आँसू भरकर) अबकी दफे मुझे माफ करो, जोकुछ हुक्म दो मैं करने को तैयार हूँ।

नागर : मैं अभी कह चुकी हूँ कि तुझे मारूँगी नहीं, फिर इतना क्यों डरता है?

भूतनाथ : नहीं नहीं, मैं वैसी जिन्दगी नहीं चाहता, जैसी तुम देती हो, हाँ, यदि इस बात का वादा करो कि वे कागजात किसी दूसरे को न दोगी तो मैं वे सब काम करने के लिए तैयार हूँ, जिनसे पहिले इनकार करता था।

नागर : मैं ऐसा कर सकती हूँ, क्योंकि आखिर तुझे जिन्दा छोड़ूँगी ही और यदि मेरे काम से तू जी न चुरावेगा तो मैं तेरे कागजात भी बड़ी हिफाजत से रक्खूँगी। हाँ, खूब याद आया — उस चीठी को तो जरा पढ़ना चाहिए जो उस कमबख्त कमलिनी ने यह कहकर दी थी कि मुलाकात होने

पर मनोरमा को दे देना।

यह सोचते ही नागर ने बटुए में से वह चीठी निकाली और पढ़ने लगी। यह लिखा हुआ था—

"जिस काम के लिए मैं आयी थी ईश्वर की कृपा से वह काम बखूबी हो गया। वे कागजात इसके पास हैं, ले लेना। दुनिया में यह बात मशहूर है कि उस आदमी का जहान से उठ जाना ही अच्छा है, जिससे भलों को कष्ट पहुँचे। मैं तुमसे मिलने के लिए यहाँ बैठी हूँ।"

नागर : देखो नालायक ने चीठी भी लिखी तो ऐसे ढंग से कि यदि मैं चोरी से पढ़ूँ भी तो किसी तरह का शक न हो और इसका पता भी न लगे कि यह भूतनाथ के नाम लिखी गयी है या मनोरमा के, स्त्रीलिंग और पुलिंग को भी बचा ले गयी है। उसने यही सोचके चीठी मुझे दी होगी कि जब यह भूतनाथ के कब्जे में आ जायगी और वह इसकी तलाशी लेगा तो यह चीठी उसके हाथ लग जायगी और जब वह पढ़ेगा तो नागर को अवश्य मार डालेगा और फिर तुरत आकर मुझसे मिलेगा, जिसमें वह किशोरी को छुड़ा ले। अच्छा कमबख्त देख मैं तेरे साथ क्या सलूक करती हूँ।

भूतनाथ : अच्छा इतना वादा तो मैं कर चुका हूँ कि हर तरह से तुम्हारी ताबेदारी करूँगा और जोकुछ तुम कहोगी बेउज्र बजा लाऊँगा, अब इस समय मैं तुम्हें एक भेद की बात बताता हूँ, जिसे जानकर तुम बहुत प्रसन्न होवोगी।

नागर : कहो क्या कहते हो ? शायद तुम्हारी नेकचलनी का सबूत मिल जाय।

भूतनाथ : मेरे हाथ तो बँधे हैं, खैर, तुम ही आओ, मेरी कमर से खंजर निकालो। उसके साथ एक पुर्जा बँधा है, खोलकर पढ़ो, देखो क्या लिखा है ?

नागर भूतनाथ के पास गयी और उसकी कमर से खंजर निकालना चाहा, मगर खंजर पर हाथ पड़ते ही उसके बदन में बिजली दौड़ गयी और वह काँपकर जमीन पर गिरते ही बेहोश हो गयी। भूतनाथ पुकार उठा—"वह मारा।" उस तिलिस्मी खंजर का हाल जो कमलिनी ने भूतनाथ को दिया था, पाठक बखूबी जानते ही हैं, कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं। इस समय वही खंजर भूतनाथ की कमर में था। उसकी तासीर से नागर बिल्कुल बेखबर थी। वह नहीं जानती थी कि जिसके पास उसके जोड़ की अँगूठी न हो, वह उस खजर को छू नहीं सकता।

अब भूतनाथ का जी ठिकाने हुआ और वह अपने छूटने का उद्योग करने लगा, परन्तु हाथ-पैर बँधे रहने के कारण कुछ कर न सका। आखिर,

वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा, जिससे किसी आते-जाते मुसाफिर के कान में आवाज पड़े तो वह आकर उसको छुड़ावे।

दो घण्टे बीत गये, मगर किसी मुसाफिर के कान में भूतनाथ का आवाज न पड़ी और तब तक नागर भी होश में आकर उठ बैठी।

दूसरा बयान

हम ऊपर लिख आये हैं कि राजा बीरेन्द्रसिंह तिलिस्मी खँडहर से (जिसमें दोनों कुमार और तारासिंह इत्यादि गिरफ्तार हो गये थे) निकलकर रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुए तो तेजसिंह उनसे कुछ कह-सुनकर अलग हो गये और उनके साथ रोहतासगढ़ न गये। अब हम यह लिखना मुनासिब समझते हैं कि राजा बीरेन्द्रसिंह से अलग होकर तेजसिंह ने क्या किया।

एक दिन और रात उस खँडहर के चारों तरफ जंगल और मैदान में तेजसिंह घूमते रहे, मगर कुछ काम न चला। दूसरे दिन वह एक छोटे-से पुराने शिवालय के पास पहुँचे, जिसके चारों तरफ बेल और पारिजात के पेड़ बहुत ज्यादे थे, जिसके सबब से वह स्थान बहुत ठण्डा और रमणीक मालूम होता था। तेजसिंह शिवालय के अन्दर गये और शिवजी का दर्शन करने के बाद बाहर निकल आये, उसी जगह से बेलपत्र तोड़कर शिवजी की पूजा की और फिर उस चश्मे के किनारे, जो मन्दिर के पीछे की तरफ बह रहा था, बैठकर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए। इस समय तेजसिंह एक मामूली जमींदार की सूरत में थे और यह स्थान भी उस खँडहर से बहुत दूर न था।

थोड़ी देर बाद तेजसिंह के कान में आदमियों के बोलने की आवाज आयी। बात साफ समझ में नहीं आती थी, इससे मालूम हुआ कि वे लोग कुछ दूर पर हैं। तेजसिंह ने सिर उठाकर देखा तो कुछ दूर पर दो आदमी दिखायी पड़े, जो उसी शिवालय की तरफ आ रहे थे। तेजसिंह चश्मे के किनारे से उठ खड़े हुए और एक झाड़ी के अन्दर छिपकर देखने लगे कि वे लोग कहाँ जाते और क्या करते हैं। इन दोनों की पोशाकें उन लोगों से बहुतकुछ मिलती थीं, जो तारासिंह की चालाकी से तिलिस्मी खँडहर में बेहोश हुए थे और जिन्हें राजा बीरेन्द्रसिंह साधू बाबा (तिलिस्मी दारोगा) के सहित कैदी बनाकर रोहतासगढ़ ले गये थे, इसलिए तेजसिंह ने सोचा कि ये दोनों आदमी भी जरूर उन्हीं लोगों में से हैं, जिनकी बदौलत हम लोग दुःख भोग रहे हैं, अस्तु, इन लोगों में से किसी को फँसाकर अपना काम निकालना चाहिए।

तेजसिंह के देखते-ही-देखते वे दोनों आदमी वहाँ पहुँचकर उस शिवालय के अन्दर घुस गये और लगभग दो घड़ी के बीत जाने पर भी बाहर न निकले। तेजसिंह ने छिपकर राह देखना उचित न जाना। वह झाड़ी में से निकलकर शिवालय में आये मगर झाँककर देखा तो शिवालय के अन्दर किसी आदमी की आहट न मिली। ताज्जुब करते हुए शिवलिंग के पास तक चले गये, मगर किसी आदमी की सूरत दिखायी न पड़ी। तेजसिंह तिलिस्मी कारखाने और अद्भुत मकानों तथा तहखानों की हालत से बहुत कुछ वाकिफ हो चुके थे, इसलिए समझ गये कि इस शिवालय के अन्दर कोई गुप्त राह, सुरंग या तहखाना अवश्य है और इसी सबब से ये दोनों आदमी गायब हो गये हैं।

शिवालय के सामने की तरफ़ बेल का एक पेड़ था। उसी के नीचे तेजसिंह यह निश्चय करके बैठ गये कि जब तक वे लोग अथवा उनमें से कोई बाहर न आयेगा, तब तक यहाँ से न टलेंगे। आखिर घण्टे-भर के बाद उन्हीं में से एक आदमी शिवालय के अन्दर से बाहर आता हुआ दिखायी पड़ा। उसे देखते ही तेजसिंह उठ खड़े हुए, निगाह मिलते ही झुककर सलाम किया और तब कहा, "ईश्वर आपका भला करे, मेरे भाई की जान बचाइए!"

आदमी : तू कौन है और तेरा भाई कहाँ है?

तेज : मैं जमींदार हूँ, (हाथ का इशारा करके) उस झाड़ी के दूसरी ओर मेरा भाई है। बेचारे को एक बुढ़िया व्यर्थ मार रही है। आप पुजेरी-जी हैं, धर्मात्मा हैं, किसी तरह मेरे भाई को बचाइए। इसीलिए मैं यहाँ आया हूँ। (गिड़गिड़ाकर) बस अब देर न कीजिए, ईश्वर आपका भला करे!

तेजसिंह की बातें सुनकर उस आदमी को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और बेशक ताज्जुब की बात भी थी, क्योंकि तेजसिंह बदन के मजबूत और निरोग मालूम होते थे, देखनेवाला कह सकता था कि बेशक इसका भाई भी वैसा ही होगा, फिर ऐसे दो आदमियों के मुकाबले में एक बूढ़ी औरत का जबर्दस्त पड़ना ताज्जुब नहीं तो क्या है!

आखिर बहुत कुछ सोच-विचारकर उस आदमी ने तेजसिंह से कहा, "खैर, चलो देखें वह बुढ़िया कैसी पहलवान है।"

उस आदमी को साथ लिये हुए तेजसिंह शिवालय से कुछ दूर चले गये और एक गुंजान झाड़ी के पास पहुँचकर इधर-उधर घूमने लगे।

आदमी : तुम्हारा भाई कहाँ है?

तेजसिंह : उसी को तो ढूंढ़ रहा हूँ।

आदमी : क्या तुम्हें याद नहीं कि उसे किस जगह छोड़ गये थे ?

तेजसिंह : राम राम, कैसे बेवकूफ से पाला पड़ा है ! अरे कमबख्त, जब जगह याद नहीं तो यहां तक कैसे आये !

आदमी : पाजी कहीं का ! हम तो तेरी मदद को आये और तू हमें ही कमबख्त कहता है !!

तेज : बेशक, तू कमबख्त बल्कि कमीना है, तू मेरी मदद क्या करेगा, जब तू अपने ही को नहीं बचा सकता ?

इतना सुनते ही वह आदमी चौकन्ना हो गया और बड़े गौर से तेजसिंह की तरफ देखने लगा। जब उसे निश्चय हो गया कि यह कोई ऐयार है, तब उसने खंजर निकालकर तेजसिंह पर वार किया। तेजसिंह ने वार बचाकर उसकी कलाई पकड़ ली और एक झटका ऐसा दिया कि खंजर उसके हाथ से छूटकर दूर जा गिरा। वह और कुछ चोट करने की फिक्र ही में था कि तेजसिंह ने उसकी गर्दन में हाथ डाल दिया और बात-की-बात में जमीन पर दे मारा। वह घबड़ाकर चिल्लाने लगा, मगर इससे भी कुछ काम न चला, क्योंकि उसके नाक में बेहोशी की दवा जबर्दस्ती ठूंस दी गयी और एक छींक मारकर वह बेहोश हो गया।

उस बेहोश आदमी को उठाकर तेजसिंह एक ऐसी झाड़ी में घुस गये, जहाँ से आते-जाते मुसाफिरों को वे बखूबी देख सकते, मगर उन पर किसी की निगाह न पड़ती। उस बेहोश आदमी को जमीन पर लेटा देने बाद तेज-सिंह चारों तरफ देखने लगे और जब किसी को न पाया तो धीरे से बोले, "अफसोस इस समय मैं अकेला हूँ, यदि मेरा कोई साथी होता तो इसे रोहतासगढ़ भेजवाकर बेखौफ हो जाता और बेफिक्री के साथ काम करता ! खैर, कोई चिन्ता नहीं, अब किसी तरह काम तो निकालना ही पड़ेगा।"

तेजसिंह ने ऐयारी का बटुआ खोला और आईना निकालकर सामने रक्खा, अपनी सूरत ठीक वैसी ही बनायी जैसाकि वह आदमी था, इसके बाद अपने कपड़े उतारकर रख दिये और उसके बदन से कपड़े उतारकर आप पहिन लेने के बाद, उसकी सूरत बदलने लगे। किसी तेज दवा से उसके चेहरे पर कई जख्म के दाग ऐसे बनाये कि सिवाय तेजसिंह के दूसरा कोई छुड़ा ही नहीं सकता था और मालूम ऐसा होता था कि ये जख्म के दाग कई वर्षों से उसके चेहरे पर मौजूद हैं। इसके बाद उसका तमाम बदन एक स्याह मसाले से रँग दिया। इसमें यह गुण था कि जिस जगह लगाया जाय वह आबनूस के रंग की तरह स्याह हो जाय और जब तक केले के अर्क से न धोया जाय, वह दाग किसी तरह न छूटे चाहे वर्षों बीत जाँय।

वह आदमी गोरा था, मगर अब पूर्ण रूप से काला हो गया, चेहरे पर

कई जख्म के निशान भी बन गये। तेजसिंह ने बड़े गौर से उसकी सूरत देखी और इस ढंग से गर्दन हिलाकर उठ खड़े हुए कि जिससे उनके दिल का भाव साफ झलक गया। तेजसिंह ने सोच लिया कि बस इसकी सूरत बखूबी बदल गयी, अब और कोई कारीगरी करने की आवश्यकता नहीं है और वास्तव में ऐसा ही था भी, दूसरे की बात तो दूर रही यदि उसकी माँ भी उसे देखती तो अपने लड़के को कभी न पहिचान सकती।

उस आदमी की कमर के साथ ऐयारी का बटुआ था, तेजसिंह ने उसे खोल लिया और अपने बटुए की कुल चीजें उसमें रख अपना बटुआ उसकी कमर से बाँध दिया और वहाँ से रवाना हो गये।

तेजसिंह फिर उसी शिवालय के सामने आये और एक बेल के पेड़ के नीचे बैठकर कुछ गाने लगे। दिन केवल घण्टे-भर बाकी रह गया था, जब वह दूसरा आदमी भी शिवालय के बाहर निकला। तेजसिंह को जो उसके साथी की सूरत में थे, पेड़ के नीचे मौजूद पाकर यह गुस्से में आ गया और उनके पास आकर कड़ी आवाज में बोला, "वाहजी बिहारीसिंह, अभी तक आप यहाँ बैठे गीत गा रहे हैं।"

तेजसिंह को इतना मालूम हो गया कि हम जिसकी सूरत में हैं, उसका नाम बिहारीसिंह है। अब, जब तक ये अपनी असली सूरत में न आवें, हम भी इन्हें बिहारीसिंह के ही नाम से लिखेंगे। हाँ, कहीं-कहीं तेजसिंह लिख जाँय तो कोई हर्ज भी नहीं।

बिहारीसिंह ने अपने साथी की बात सुनकर गाना बन्द किया और उसकी तरफ देखके कहा—

बिहारी : (दो-तीन दफे खाँसकर) बोलो मत, इस समय मुझे खाँसी हो गयी है, आवाज भारी हो रही है, जितना कोशिश करता हूँ, उतना ही गाना बिगड़ जाता है। खैर, तुम भी आ जाओ और ज़रा सुर में सुर मिलाकर साथ गाओ तो!

वह : क्या बात है! मालूम होता है तुम कुछ पागल हो गये हो, मालिक का काम गया जहन्नुम में और हम लोग बैठे गीत गाया करें!!

बिहारी : वाह, ज़रा-सी बूटी ने क्या मजा दिखाया। अहा हा जीते रहो पट्ठे, ईश्वर तुम्हारा भला करे, खूब सिद्धी पिलायी।

वह : बिहारीसिंह, यह तुम्हें क्या हो गया? तुम तो ऐसे न थे!

बिहारी : जब न थे तब बुरे थे, जब हैं तो अच्छे हैं। तुम्हारी बात ही क्या है, सत्रह हाथी जलपान करके बैठा हूँ। कमबख्त ने ज़रा नमक भी नहीं दिया, फीका ही उड़ाना पड़ा। ही-ही-ही-ही, आओ एक गदहा तुम भी खा लो, नहीं नहीं सूअर, अच्छा कुत्ता ही सही। ओ-हो-हो-हो, क्या दूर की सूझी!

बचाजी ऐयारी करने बैठे हैं, हल जोतना आता ही नहीं, जिन्न पकड़ने लगे। हा-हा-हा-हा, वाह रे बूटी, अभी तक जीभ चटचटाती है—लो देख लो (जीभ चटचटाकर दिखाता है)।

वह : अफसोस !

बिहारी : अब अफसोस करने से क्या फायदा ? जो होना था, वह तो हो गया। जाके पिण्डदान करो। हाँ, यह तो बताओ पितर-मिलौनी कब करोगे ? मैं जाता हूँ, तुम्हारी तरफ से ब्राह्मणों को नेवता दे आता हूँ।

वह : (गर्दन हिलाकर) इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम पूरे पागल हो गये हो। तुम्हें जरूर किसी ने कुछ खिला या पिला दिया है।

बिहारी : न इसमें सन्देह, न उसमें सन्देह, पागल की बातचीत तो बिल्कुल जाने दो, क्योंकि तुम लोगों में केवल मैं ही हूँ सो हूँ, बाकी सब पागल। खिलानेवाले की ऐसी-तैसी, पिलानेवाले का बोलबाला। एक लोटा भाँग, दो सौ पैंतीस साढ़े तेरह आना, लोटा निशान। ऐयारी के नुस्खे एक-से-एक बढ़के याद हैं, जहाज की पाल भी खूब ही उड़ती है। वाह, कैसी अँधेरी रात है। बाप-रे-बाप, सूरज भी अस्त हुआ ही चाहता है। तुम भी नहीं हम भी नहीं, अच्छा तुम भी सही, बड़े अकिलमन्द हो, अकिल-अकिल-अकिल मन्द-मन्द-मन्द। (कुछ देर तक चुप रहकर) अरे बाप-रे-बाप, मैया-रे- मैया, बड़ा ही गजब हो गया, मैं तो अपना नाम भी भूल गया ! अभी तक तो याद था कि मेरा नाम बिहारीसिंह है मगर अब भूल गया, तुम्हारे सिर की कसम जोकुछ भी याद हो। भाई यार दोस्त मेरे, ज़रा बता तो दो मेरा नाम क्या है ?

वह : अफसोस, रानी मुझी को दोष देंगी, कहेंगी कि हरनामसिंह अपने साथी की हिफाजत न कर सका।

बिहारी : ही-ही-ही-ही, वाह रे भाई हरनामसिंह, अलिफ बे ते से च छ ज झ, उल्लू की दुम फाख्ता···!

हरनामसिंह को विश्वास हो गया कि जरूर किसी ऐयार की शैतानी से जिसने कुछ खिला या पिला दिया है, हमारा साथी बिहारीसिंह पागल हो गया, इसमें कोई सन्देह नहीं। उसने सोचा कि अब इससे कुछ कहना-सुनना उचित नहीं, इसे इस समय किसी तरह फुसलाकर घर ले चलना चाहिए।

हरनाम : अच्छा यार अब देर हो गयी, चलो घर चलें।

बिहारी : क्या हम औरत हैं कि घर चलें ! चलो जंगल में चलें, शेर का शिकार खेलें, रण्डी का नाच देखें, तुम्हारा गाना सुनें और सब के अन्त में तुम्हारे सिरहाने बैठकर रोएँ। ही-ही-ही-ही···!

हरनाम : खैर, जंगल ही में चलो।

बिहारी : हम क्या साधू-वैरागी या उदासी हैं कि जंगल में जाँय ! बस इसी जगह रहेंगे, भंग पीएँगे, चैन करेंगे, यह भी जंगल ही है। तुम्हारे जैसे गदहों का शिकार करेंगे, गदहे भी कैसे कि बस पूरे अन्धे ! (इधर-उधर देखकर) सात-पाँच बारह पाँच तीन, तीन घण्टे बीत गये अभी तक भंग लेकर नहीं आया, पूरा झूठा निकला, मगर मुझसे बढ़ के नहीं ! बदमाश है, लुच्चा है, अब उसकी राह या सड़क नहीं देखूंगा ! चलो भाई साहब चलें, घर ही की तरफ मुँह करना उत्तम है, मगर मेरा हाथ पकड़ लो, मुझे कुछ सूझता नहीं।

हरनामसिंह ने गनीमत समझा और बिहारीसिंह का हाथ पकड़, घर की तरफ अर्थात् मायारानी के महल की तरफ ले चला। मगर वाह रे तेजसिंह, पागल बनके क्या काम निकाला है ! अब ये चाहे दो सौ दफे चूकें, मगर किसी की मजाल नहीं कि शक करे। बिहारीसिंह को मायारानी बहुत चाहती थी, क्योंकि इसकी ऐयारी खूब चढ़ी-बढ़ी थी, इसलिए हरनामसिंह उसे ऐसी अवस्था में छोड़कर अकेला जा भी नहीं सकता था। मजा तो उस समय होगा, जब नकली बिहारीसिंह मायारानी के सामने होंगे और भूत की सूरत बने असली बिहारीसिंह भी पहुँचेंगे।

बिहारीसिंह को साथ लिये हरनामसिंह जमानिया* की तरफ रवाना हुआ। मायारानी वास्तव में जमानिया की रानी थी, इसके बाप-दादे भी इस जगह हुकूमत कर गये थे। जमानिया के सामने गंगा के किनारे से कुछ दूर हटकर एक बहुत ही खुशनुमा और लम्बा-चौड़ा बाग था, जिसे वहाँवाले "खास बाग" के नाम से पुकारते थे। इस बाग में राजा अथवा राज्य कर्मचारियों के सिवाय कोई दूसरा आदमी जाने नहीं पाता था। इस बाग के बारे में तरह-तरह की गप्पें लोग उड़ाया करते थे, मगर असल भेद यहाँ का किसी को मालूम न था। इस बाग के गुप्त भेदों को राजखानदान और दीवान तथा ऐयारों के सिवाय कोई गैर आदमी नहीं जानता था और न कोई जानने की कोशिश कर सकता था, यदि कोई गैर आदमी इस बाग में पाया जाता तो तुरन्त मार डाला जाता था, और यह कायदा बहुत पुराने जमाने मे चला आता था।

जमानिया में जिस किले के अन्दर मायारानी रहती थी, उसमें से गंगा के नीचे-नीचे एक सुरंग भी इस बाग तक गयी थी और इसी राह से मायारानी वहाँ आती-जाती थी, इस सबब से मायारानी का इस बाग में आना

*जमानिया---इसे लोग जमनिया भी कहते हैं। काशी के पूरब गंगा के दाहिने किनारे पर आबाद है।

या यहाँ से जाना, खास-खास आदमियों के सिवाय किसी गैर को न मालूम होता था। किले और इस बाग का खुलासा हाल पाठकों को स्वयं मालूम हो जायगा, इस जगह विशेष लिखने की कोई आवश्यकता नहीं, हाँ, इस जगह इतना लिख देना मुनासिब मालूम होता है कि रामभोली के आशिक नानक तथा कमला ने इसी बाग में मायारानी का दरबार देखा था।

जमानिया पहुँचने तक बिहारीसिंह ने अपने पागलपन से हरनामसिंह को बहुत ही तंग किया और साबित कर दिया कि पढ़ा-लिखा आदमी किस ढंग का पागल होता है। यदि मायारानी का डर न होता तो हरनामसिंह अपने साथी को बेशक छोड़ देता और हजार खराबी के साथ घर ले जाने की तकलीफ न उठाता।

कई दिन के बाद बिहारीसिंह को साथ लिये हुए हरनामसिंह जमानिया के किले में पहुँच गया। उस समय पहर-भर रात जा चुकी थी। किले के अन्दर पहुँचने पर मालूम हुआ कि इस समय मायारानी बाग में हैं, लाचार बिहारीसिंह को साथ लिये हुए हरनामसिंह को उस बाग में जाना पड़ा और इसलिए बिहारीसिंह (तेजसिंह) ने किले और सुरंग का रास्ता भी बखूबी देख लिया। सुरंग के अन्दर दस-पन्द्रह कदम जाने के बाद बिहारीसिंह ने हरनामसिंह से कहा—

बिहारी : सुनो जी, इस सुरंग के अन्दर सैकड़ों दफे हम आ चुके और आज भी तुम्हारे मुलाहिजे से चले आये, मगर आज के बाद फिर कभी यहाँ लाओगे तो मैं तुम्हें कच्चा ही खा जाऊँगा और इस सुरंग को भी बर्बाद कर दूंगा, अच्छा यह बताओ कि मुझे लिये कहाँ जाते हो?

हरनाम : मायारानी के पास।

बिहारी : तब तो मैं न जाऊँगा क्योंकि मैं सुन चुका हूँ कि मायारानी आजकल आदमियों को खाया करती है, तुम भी तो कल तीन गदहियाँ खा चुके हो! मायारानी के सामने चलो तो सही, देखो मैं तुम्हें कैसे छकाता हूँ, ही-ही-ही, बच्चा तुम्हें छकाने से क्या होगा, मायारानी को छकाऊँ तो कुछ मजा मिले! भज मन राम चरन सुखदाई !! (भजन गाता है)।

बड़ी मुश्किल से सुरंग खतम किया और बाग में पहुँचे। उस सुरंग का दूसरा सिरा बाग में एक कोठरी के अन्दर निकलता था। जिस समय वे दोनों कोठरी के बाहर हुए तो उस दालान में पहुँचे, जिसमें मायारानी का दरबार होता था। इस समय मायारानी उसी दालान में थी, मगर दरबार का सामान वहाँ कुछ न था, केवल अपनी बहन और सखी-सहेलियों के साथ बैठी दिल बहला रही थी। मायारानी पर निगाह पड़ते ही उसकी पोशाक और गम्भीर भाव ने बिहारीसिंह (तेजसिंह) को निश्चय करा दिया कि यहाँ की

मालिक यही है।

हरनामसिंह और बिहारीसिंह को देखकर मायारानी को एक प्रकार की खुशी हुई और उसने बिहारीसिंह की तरफ देखकर पूछा, "कहो क्या हाल है ?"

बिहारी : रात अँधेरी है, पानी खूब बरस रहा है, काई फट गयी, दुश्मन ने सिर निकाला, चोर ने घर देख लिया, भूख के मारे पेट फूल गया, तीन दिन से भूखा हूँ, कल का खाना अभी तक हजम नहीं हुआ। मुझ पर बड़े अन्धेर का पत्थर आ टूटा, बचाओ बचाओ !!

बिहारीसिंह के बेतुके जवाब से मायारानी घबड़ा गयी, सोचने लगी कि इसको क्या हो गया जो बेमतलब की बात बक गया। आखिर हरनामसिंह की तरफ देखकर पूछा, "बिहारी क्या कह गया मेरी समझ में न आया !"

बिहारी : अहा हा, क्या बात है ! तुमने मारा हाथ पसारा, छुरा लगाया खंजर खाया, शेर लड़ाया गीदड़ लाया ! राम लिखाया नहीं मिटाया, फाँस लगाया आप चुभाया, ताड़ खुजाया खून बहाया, समझ खिलाड़ी बूझ मेरे उल्लू, हा-हा-हा, भला समझो तो !

मायारानी और भी घबड़ायी, बिहारीसिंह का मुँह देखने लगी। हरनामसिंह मायारानी के पास गया और धीरे से बोला, "इस समय मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि बेचारा बिहारीसिंह पागल हो गया है, मगर ऐसा पागल नहीं है कि हथकड़ी-बेड़ी की जरूरत पड़े क्योंकि किसी को दुःख नहीं देता, केवल बकता बहुत है और अपने पराये का होश नहीं है, कभी बहुत अच्छी तरह भी बातें करता है। मालूम होता है कि बीरेन्द्रसिंह के किसी ऐयार ने धोखा देकर इसे कुछ खिला दिया।"

माया : तुम्हारा और इसका साथ क्योंकर छूटा और क्या हुआ कुछ खुलासा कहो तो हाल मालूम हो।

हरनाम : पहले इनके लिए कुछ बन्दोबस्त कर दीजिए, फिर सब हाल कहूँगा, वैद्यजी को बुलाकर जहाँ तक जल्द हो इनका इलाज कराना चाहिए !

बिहारी : यह काना फुसकी अच्छी नहीं, मैं समझ गया कि तुम मेरी चुगली खा रहे हो। (चिल्लाकर) दोहाई रानी साहबा की, इस कमबख्त हरनामसिंह ने मुझे मार डाला, जहर खिलाकर मार डाला, मैं जिन्दा नहीं हूँ, मैं तो मरने बाद भूत बनकर यहाँ आया हूँ, तुम्हारी कसम खाकर कहता हूं। मैं अब वह बिहारीसिंह नहीं हूँ, मैं कोई दूसरा ही हूँ। हाय-हाय, बड़ा गजब हुआ। या ईश्वर उन लोगों से तू ही समझियो, जो भले आदमियों को पकड़कर पिंजरे में बन्द किया करते हैं।

माया : अफसोस, इस बेचारे की क्या दशा हो गयी, मगर हरनामसिंह यह तो तुम्हारा ही नाम लेता है, कहता है हरनामसिंह ने जहर खिला दिया !

हरनाम : इस समय मैं इसकी बातों से रंज नहीं हो सकता, क्योंकि इस बेचारे की अवस्था ही दूसरी हो रही है।

माया : इसकी फिक्र जल्द करना चाहिए, तुम जाओ वैद्यजी को बुला लाओ।

हरनाम : बहुत अच्छा।

माया : (बिहारी से) तुम मेरे पास आकर बैठो। कहो तुम्हारा मिजाज कैसा है ?

बिहारी : (मायारानी के पास बैठकर) मिजाज ? मिजाज है, बहुत है, अच्छा है, क्यों अच्छा है, सो ठीक है !

माया : क्या तुम्हें मालूम है कि तुम कौन हो ?

बिहारी : हां, मालूम है, मैं महाराजाधिराज श्री वीरेन्द्रसिंह हूँ। (कुछ सोचकर) नहीं, वह तो अब बुड्ढे हो गये, मैं कुंअर इन्द्रजीतसिंह बनूंगा, क्योंकि वह बड़े खूबसूरत हैं, औरतें देखने के साथ ही उन पर रीझ जाती हैं, अच्छा अब मैं कुंअर इन्द्रजीतसिंह हूँ। (सोचकर) नहीं, नहीं, नहीं, वह तो अभी लड़के हैं और उन्हें ऐयारी भी नहीं आती और मुझे बिना ऐयारी के चैन नहीं, अतएव मैं तेजसिंह बनूंगा। बस यही बात पक्की रही, मुनादी फिरवा दीजिए कि लोग मुझे तेजसिंह कहके पुकारा करें।

माया : (मुस्कुराकर) बेशक, ठीक है, अब हम भी तुमको तेजसिंह ही कहके पुकारेंगे।

बिहारी : ऐसा ही उचित है। जो मजा दिन-भर भूखे रहने में है, वह मजा आपकी नौकरी में है, जो मजा डूब मरने में है, वह मजा आपका काम करने में है।

माया : सो क्यों ?

बिहारी : इतना दुःख भोगा, लड़े-झगड़े, सर के बाल नोच डाले, सब-कुछ किया, मगर अभी तक आँख से अच्छी तरह न देखा। यह मालूम ही न हुआ कि किसके लिए, किसको फाँसा और उस फँसाई से फँसनेवाले की सूरत अब कैसी है !

माया : मेरी समझ में न आया कि इस कहने में तुम्हारा क्या मतलब है ?

बिहारी : (सिर पीटकर) अफसोस, हम ऐसे नासमझ के साथ हैं। ऐसी जिन्दगी ठीक नहीं, ऐसा खून किसी काम का नहीं, जोकुछ मैं कह चुका हूँ

जब तक उसका कोई मतलब न समझेगा और मेरी इच्छा पूरी न होगी तब तक मैं किसी से न बोलूँगा, न खाऊँगा, न सोऊँगा, न एक, न दो, न चार, हजार, पाँच सौ कुछ नहीं चाहे जो हो मैं तो देखूंगा !

माया : क्या देखोगे ?

बिहारी : मुँह से तो मैं बोलनेवाला नहीं, आपको समझने की गौं हो तो समझिए।

माया : भला कुछ कहो भी तो सही।

बिहारी : समझ जाइए।

माया : कौन-सी चीज ऐसी है, जो तुम्हारी देखी नहीं है ?

बिहारी : देखी है, मगर अच्छी तरह देखूंगा।

माया : क्या देखोगे ?

बिहारी : समझिए।

माया : कुछ कहो भी कि समझिए, समझिए ही बकते जाओगे।

बिहारी : अच्छा एक हर्फ कहो तो कह दूं।

माया : खैर यही सही।

बिहारी : कै कै कै कै !!

माया : (मुस्कुराकर) कैदियों को देखोगे ?

बिहारी : हाँ, हाँ, हाँ, बस, बस, बस, वही, वही, वही।

माया : उन्हें तो तुम देख ही चुके हो, तुम्हीं लोगों ने तो गिरफ्तार ही किया है।

बिहारी : फिर देखेंगे, सलाम करेंगे, नाच नचावेंगे, ताक धिनाधिन नाचो भालू (उठकर कूदता है)।

मायारानी बिहारीसिंह को बहुत मानती थी। मायारानी के कुल ऐयारों का वह सरदार था और वास्तव में बहुत ही तेज और ऐयारी के फन में पूरा ओस्ताद भी था। यद्यपि इस समय वह पागल है, तथापि मायारानी को उसकी खातिर मंजूर है। मायारानी हँसकर उठ खड़ी हुई और बिहारीसिंह को साथ लिये हुए उस कोठरी में चली गयी, जिसमें सुरंग का रास्ता था। दरवाजा खोलकर सुरंग के अन्दर गयी। सुरंग में कई शीशे की हाँडियाँ लटक रही थीं और रोशनी बखूबी हो रही थी। मायारानी लगभग पचास कदम के जाकर रुकी, उस जगह दीवार में एक छोटी-सी आलमारी बनी हुई थी। मायारानी की कमर में जो सोने की जंजीर थी, उसके साथ तालियों का एक छोटा-सा गुच्छा लटक रहा था। मायारानी ने वह गुच्छा निकाला और उसमें की एक ताली लगाकर यह आलमारी खोली। आलमारी के अन्दर निगाह करने से सीढ़ियाँ नजर आयीं जो नीचे उतर जाने के लिए

थीं। वहाँ भी शीशे की कन्दील में रोशनी हो रही थी। बिहारीसिंह को साथ लिये हुए मायारानी नीचे उतरी। अब बिहारीसिंह ने अपने को ऐसी जगह पाया, जहाँ लोहे के जंगलेवाली कई कोठरियाँ थीं और हरएक कोठरी का दरवाजा मजबूत ताले से बन्द था। उन कोठरियों में हथकड़ी-बेड़ी से बेवस उदास और दुःखी केवल चटाई पर लेटे अथवा बैठे हुए कई कैदियों की सूरत दिखायी दे रही थी। ये कोठरियाँ गोलाकार ऐसे ढंग से बनी हुई थीं कि हरएक कोठरी में अलग-अलग कैद करने पर भी कैदी लोग आपस में बातें कर सकते थे।

सबसे पहिले बिहारीसिंह की निगाह जिस कैदी पर पड़ी, वह तारासिंह था, जिसे देखते ही बिहारीसिंह खिलखिलाकर हँसा और चारों तरफ देख न मालूम क्या-क्या बक गया, जिसे मायारानी कुछ भी न समझ सकी, इसके बाद बिहारीसिंह ने मायारानी की तरफ देखा और कहा—

"छिः छिः, मुझे आप इन कमबख्तों के सामने क्यों लायीं ? मैं इन लोगों की सूरत नहीं देखा चाहता। मैं तो कै देखूँगा कै, बस केवल कै देखूँगा और कुछ नहीं, आप जब तक चाहें यहाँ रहें, मगर मैं दम-भर नहीं रह सकता, अब कै देखूँगा कै, बस कै देखूँगा, बस कै केवल कै !"

'कै कै' बकता हुआ बिहारीसिंह वहाँ से भागा और उस जगह आकर बैठ गया, जहा मायारानी से पहिले-पहिल मुलाकात हुई थी। बिहारीसिंह की बदहवासी देखकर मायारानी घबरायी और जल्दी-जल्दी सीढ़ियाँ चढ़ कैद-खाने का ताला बन्द करने बाद अपनी जगह पर आयी, जहाँ लम्बी-लम्बी साँसें लेते बिहारीसिंह को बैठे हुए पाया। मायारानी की वे सहेलियाँ भी उसी जगह बैठी थीं, जिन्हें छोड़कर मायारानी कैदखाने की तरफ गयी थी।

मायारानी ने बिहारीसिंह से भागने का सबब पूछा, मगर उसने कुछ जवाब न दिया। मायारानी ने कई तरह के प्रश्न किये, मगर बिहारीसिंह ने ऐसी चुप्पी साधी कि जिसका कोई हिसाब ही नहीं। मालूम होता था कि यह जन्म का गूंगा और बहिरा है, न सुनता है, न कुछ बोल सकता है। मायारानी की सहेलियों ने भी बहुतकुछ जोर मारा, मगर बिहारीसिंह ने मुँह न खोला। इस परेशानी में मायारानी को बिहारीसिंह की हालत पर अफसोस करते हुए घण्टा-भर बीत गया और तब तक वैद्यजी को जिनकी उम्र लगभग अस्सी वर्ष के होगी, अपने साथ लिये हुए हरनामसिंह भी आ पहुँचा।

वैद्यराज ने इस अनोखे पागल की जाँच की और अन्त में यह निश्चय किया कि बेशक इसे कोई ऐसी दवा खिलायी गयी है, जिसके असर से यह

पागल हो गया है और यदि इसी समय इसका इलाज किया जाय तो एक ही दो दिन में आराम हो सकता है। मायारानी ने इलाज करने की आज्ञा दी और वैद्यराज ने अपने पास से एक जड़ाऊ डिबिया निकाली जो कई तरह की दवाओं से भरी हुई हमेशा उनके पास रहा करती थी।

वैद्यराज को उस अनोखे पागल की जाँच में कुछ भी तकलीफ न हुई। बिहारीसिंह ने नाड़ी दिखाने में उज्र न किया और अन्त में दवा की वह गोली भी खा गया, जो वैद्यराज ने अपने हाथ से उसके मुँह में रख दी थी। बिहारीसिंह ने अपने को ऐसा बनाया, जिससे देखनेवालों को विश्वास हो कि वह दवा खा गया, परन्तु उस चालाक पागल ने गोली दाँतों के नीचे छिपा ली और थोड़ी देर बाद मौका पा इस ढब से थूक दी कि किसी को गुमान तक न हुआ।

आधी घड़ी तक उछल-कूद करने बाद बिहारीसिंह जमीन पर गिर पड़ा और सवेरा होने तक उसी तरह पड़ा रहा। वैद्यराज ने नब्ज देखकर कहा कि यह दवा की तासीर से बेहोश हो गया है, इसे कोई छेड़े नहीं, आशा है कि जब इसकी आँख खुलेगी तो अच्छी तरह बातचीत करेगा। बिहारीसिंह चुपचाप पड़ा ये बातें सुन रहा था। मायारानी बिहारीसिंह की हिफाजत के लिए कई लौंडियाँ छोड़ दूसरे कमरे में चली गयी और एक नाज़ुक पलँग पर जो वहाँ बिछा हुआ था सो रही।

सूर्योदय से पहिले ही मायारानी उठी और हाथ-मुँह धोकर उस जगह पहुँची, जहाँ बिहारीसिंह को छोड़ गयी थी। हरनामसिंह पहिले ही वहाँ जा चुका था। बिहारीसिंह को जब मालूम हो गया कि मायारानी उसके पास आकर बैठ गयी है तो वह भी दो-तीन करवटें लेकर उठ बैठा और ताज्जुब से चारों तरफ देखने लगा।

माया : अब तुम्हारा क्या हाल है?

बिहारी : हाल क्या कहूँ मुझे ताज्जुब मालूम होता है कि मैं यहाँ क्योंकर आया, मेरी आवाज क्यों बैठ गयी और इतनी कमजोरी क्यों मालूम होती है कि मैं उठकर चल-फिर नहीं सकता!

माया : ईश्वर ने बड़ी कृपा की जो तुम्हारी जान बच गयी, तुम तो पूरे पागल हो गये थे, वैद्यराज ने भी ऐसी दवा दी कि एक ही खूराक में फायदा हो गया। बेशक, उन्होंने इनाम पाने का काम किया। तुम अपना हाल तो कहो, तुम्हें क्या हो गया था?

बिहारी : (हरनामसिंह की तरफ देखकर) मैं एक ऐयार के फेर में पड़ गया था, मगर पहिले आप कहिए कि मुझे इस अवस्था में कहाँ पाया?

हरनाम : आप मुझसे यह कहकर कि तुम थोड़ा-सा काम जो बच रहा

है, उसे पूरा करके जमानिया चले जाना, मैं कमलिनी से मुलाकात करके और जिस तरह होगा उसे राजी करके जमानिया आऊँगा—खँडहरवाले तहखाने से बाहर चले गये, परन्तु काम पूरा करने के बाद मैं सुरंग के बाहर निकला तो आपको शिवालय के सामने पेड़ के नीचे विचित्र दशा में पाया। (पागलपने की बातचीत और मायारानी के पास तक आने का खुलासा हाल कहने के बाद) मालूम होता है, आप कमलिनी के पास नहीं गये ?

बिहारी : (मायारानी से) जैसा धोखा मैंने अबकी खाया आज तक नहीं खाया था। हरनामसिंह का कहना सही है। जब मैं सुरंग से निकलकर शिवालय से बाहर हुआ तो एक आदमी पर नजर पड़ी, जो मामूली जमींदार की सूरत में था। वह मुझे देखते ही मेरे पैरों पर गिर पड़ा और गिड़गिड़ाकर कहने लगा कि 'पुजेरीजी महाराज, किसी तरह मेरे भाई की जान बचाइए'! मैंने उससे पूछा कि 'तेरे भाई को क्या हुआ है' ? उसने जवाब दिया कि 'उसे एक बुढ़िया बेतरह मार रही है, किसी तरह उसके हाथ से छुड़ाइए'। वह जमींदार बहुत ही मजबूत और मोटा-ताजा था। मुझे ताज्जुब मालूम हुआ कि वह कैसी बुढ़िया है, जो ऐसे ऐसे दो भाइयों से नहीं हारती ! आखिर मैं उसके साथ चलने पर राजी हो गया। वह मुझे शिवालय से कुछ दूर एक झाड़ी में ले गया, जहाँ कई आदमी छिपे हुए बैठे थे। उस जमींदार के इशारे से सभों ने मुझे घेर लिया और एक ने चाँदी की एक लुटिया मेरे सामने रखकर कहा 'कि यह भंग है इसे पी जाओ'। मुझे मालूम हो गया कि यह वास्तव में कोई ऐयार है, जिसने मुझे धोखा दिया। मैंने भंग पीने से इनकार किया और वहाँ से लौटना चाहा, मगर उन सभों ने भागने न दिया। थोड़ी देर तक मैं उन लोगों से लड़ा मगर क्या कर सकता था, क्योंकि वे लोग गिनती में पन्द्रह से कम न थे। आखिर में उन लोगों ने पटककर मुझे मारना शुरू किया और जब मैं बेदम हो गया तो भंग या दवा, जोकुछ हो मुझे जबर्दस्ती पिला दी, बस इसके बाद मुझ कुछ भी खबर नहीं कि क्या हुआ।

थोड़ी देर तक इसी तरह की ताज्जुब की बातें कहकर बिहारीसिंह ने मायारानी का दिल बहलाया और इसके बाद कहा, "मेरी तबीयत बहुत खराब हो रही है, यदि कुछ देर तक बाग में टहलूँ तो बेशक जी प्रसन्न हो, मगर कमजोरी इतनी बढ़ गयी है कि स्वयं उठने और टहलने की हिम्मत नहीं पड़ती।" मायारानी ने कहा, "कोई हर्ज नहीं, हरनामसिंह सहारा देकर तुम्हें टहलावेंगे, मैं समझती हूँ कि बाग की ताजी हवा खाने और फूलों की खुशबू सूँघने से तुम्हें बहुतकुछ फायदा पहुँचेगा।"

आखिर हरनामसिंह ने बिहारीसिंह को हाथ पकड़के बाग में अच्छी

तरह टहलाया और इस बहाने से तेजसिंह ने उस बाग को तथा वहाँ की इमारतों को भी अच्छी तरह देख लिया। ये लोग घूम-फिरकर मायारानी के पास पहुँचे ही थे कि एक लौंडी ने जो चोबदार थी, मायारानी के सामने आकर और हाथ जोड़कर कहा, 'बाग के फाटक पर एक आदमी आया है और सरकार में हाजिर हुआ चाहता है। बहुत ही बदसूरत और काला-कलूटा है, परन्तु कहता है कि मैं बिहारीसिंह हूँ, मुझे किसी ऐयार ने धोखा दिया और चेहरे तथा बदन को ऐसे रंग से रँग दिया कि अभी तक साफ नहीं होता !"

माया : यह अनोखी बात सुनने में आयी कि ऐयारों का रँगा हुआ रंग और धोने से नहीं छूटे ! कोई-कोई रंग पक्का जरूर होता है, मगर उसे भी ऐयार लोग छुड़ा सकते हैं। (हँसकर) बिहारीसिंह ऐसा बेवकूफ नहीं है कि अपने चेहरे का रंग न छुड़ा सके !

बिहारी : रहिए रहिए, मुझ शक पड़ता है कि शायद यह वही आदमी हो जिसने मुझे धोखा दिया बल्कि ऐसा कहना चाहिए कि मेरे साथ जबर्दस्ती की। (लौंडी की तरफ देखकर) उसके चेहरे पर जख्म के दाग भी हैं ?

लौंडी : जी हाँ, पुराने जख्म के कई दाग हैं।

बिहारी : भौं के पास भी कोई जख्म का दाग है ?

लौंडी : एक आड़ा दाग है, मालूम होता है कि कभी लाठी की चोट खायी है।

बिहारी : बस बस, यह वही आदमी है, देखो जाने न पावे। चण्डूल को यह खबर ही नहीं कि बिहारीसिंह यहाँ पहुँच गया है। (मायारानी की तरफ देखकर) यहाँ पर्दा करवाकर उसे बुलवाइए, मैं भी पर्दे के अन्दर रहूँगा, देखिए क्या मजा करता हूँ। हाँ, हरनामसिंह पर्दे के बाहर रहें, देखें पहिचानता है या नहीं।

माया : (लौंडी की तरफ देखकर) पर्दा करने के लिए कहो और नियमानुसार आँख में पट्टी बाँधकर उसे यहाँ लिवा आओ।

लौंडी : वह यहाँ की हरएक चीजों का पूरा-पूरा पता देता है और जरूर इस बाग के अन्दर आ चुका है।

बिहारी : पक्का चोर है, ताज्जुब नहीं कि यहाँ आ चुका हो। खैर, तुम लोगों को अपना नियम पूरा करना चाहिए।

हुक्म पाते ही लौंडियों ने पर्दे का इन्तजाम कर दिया और वह लौंडी जिसने बिहारीसिंह के आने की खबर दी थी, इसलिए फाटक की तरफ रवाना हुई कि नियमानुसार आँख पर पट्टी बाँधकर बिहारीसिंह को बाग के

अन्दर ले आवे और मायारानी के सामने हाजिर करे।

इस जगह इस बाग का कुछ थोड़ा-सा हाल लिख देना मुनासिब मालूम होता है। यह दो सौ बिगहे का बाग मजबूत चहारदीवारी के अन्दर था। इसके चारों तरफ की दीवारें बहुत मोटी, मजबूत और लगभग पच्चीस हाथ के ऊँची थीं। दीवार के ऊपरी हिस्से में तेज नोक और धारवाले लोहे के काँटे और फाल इस ढंग से लगे हुए थे कि काबिल ऐयार भी दीवार लाँघ-कर बाग के अन्दर जाने का साहस नहीं कर सकते थे। काँटों के सबब यद्यपि कमन्द लगाने में सुबीता था, परन्तु उसके सहारे ऊपर चढ़ना बिल्कुल ही असम्भव था। इस चहारदीवारी के अन्दर की जमीन जिसे हम बाग कहते हैं, चार हिस्सों में बँटी हुई थी। पूरब तरफ आलीशान फाटक था, जिसके अन्दर जाकर एक बाग जिसे पहिला हिस्सा कहना चाहिए, मिलता था। इसकी चौड़ी-चौड़ी रविशें ईंट और चूने से बनी हुई थीं। पश्चिम तरफ अर्थात् इस हिस्से के अन्त में बीस हाथ मोटी और इससे ज्यादे ऊँची दीवार बाग की पूरी चौड़ाई तक बनी हुई थी, जिसके नीचे बहुत-सी कोठरियाँ थीं जो सिपाहियों के काम में आती थीं। उस दीवार के ऊपर चढ़ने के लिए खूबसूरत सीढ़ियाँ थीं, जिन पर जाने से बाग का दूसरा हिस्सा दिखायी देता था और इन्हीं सीढ़ियों की राह दीवार के नीचे उतरकर उस हिस्से में जाना पड़ता था। सिवा इसके और कोई दूसरा रास्ता उस बाग में, जिसे हम दूसरा हिस्सा कहते हैं, जाने के लिए नहीं था। बाग के इसी दूसरे हिस्से में वह इमारत या कोठी थी, जिसमें मायारानी दरबार किया करती थी, या जिसमें पहुँचकर नानक ने मायारानी को देखा था। पहिले हिस्से की अपेक्षा यह हिस्सा विशेष खूबसूरत और सजा हुआ था। बाग के तीसरे हिस्से में जाने का रास्ता उसी मकान के अन्दर से था, जिसमें मायारानी रहा करती थी। बाग के तीसरे हिस्से का हाल लिखना जरा मुश्किल है, तथापि इमारत के बारे में इतना कह सकते हैं कि इस तीसरे हिस्से के बीचोबीच में एक बहुत ऊँचा बुर्ज था। उस बुर्ज के चारों तरफ कई मकान थे जिनके दालानों, कोठरियों, कमरों और बारहदरियों तथा तहखानों का हाल इस जगह लिखना कठिन है, क्योंकि उन सभी का तिलिस्मी बातों से विशेष सम्बन्ध है। हाँ, इतना कह सकते हैं कि उसी बुर्ज में से बाग के चौथे हिस्से में जाने का रास्ता था, मगर इस बाग के चौथे हिस्से में क्या है, उसका हाल लिखते कलेजा काँपता है। इस जगह हम उसका जिक्र करना मुनासिब नहीं समझते, आगे जाकर किसी मौके पर वह हाल लिखा जायगा।

जब वह लौंडी असली बिहारीसिंह को जो बाग के फाटक पर आया था, लेने चली गयी तो नकली बिहारीसिंह अर्थात् तेजसिंह ने मायारानी से

कहा, "इसे ईश्वर की कृपा ही कहनी चाहिए कि वह शैतान ऐयार, जिसने मेरे साथ जबर्दस्ती की और ऐसी दवा खिलायी कि जिसके असर से मैं पागल ही हो गया था, घर बैठे फन्दे में आ गया।"

माया : ठीक है, मगर देखा चाहिए यहाँ पहुँचकर क्या रंग लाता है।

बिहारी : जिस समय वह यहाँ पहुँचे, सबके पहिले हथकड़ी और बेड़ी उसके नजर करनी चाहिए, जिसमें मुझे देखकर भागने का उद्योग न करे।

माया : जो मुनासिब हो करो, मगर मुझे यह आश्चर्य जरूर मालूम होता है कि वह ऐयार जब तुम्हारे साथ बुरा वर्ताव कर ही चुका और तुम्हें पागल बनाकर छोड़ ही चुका था तो बिना अपनी सूरत बदले, यहाँ क्यों चला आया। ऐयारों से ऐसी भूल न होनी चाहिए, उसे मुनासिब था कि तुम्हारी या मेरे किसी और आदमी की सूरत बनाकर आता।

बिहारी : ठीक है, मगर जोकुछ उसने किया, वह भी उचित ही किया। मेरी या यहाँ के किसी और नौकर की सूरत बनकर उसका यहाँ आना तब अच्छा होता, जब मुझे गिरफ्तार रखता!

माया : मैं यह भी सोचती हूँ कि तुम्हें गिरफ्तार करके केवल पागल ही बनाकर छोड़ देने में उसने क्या फायदा सोचा था? मेरी समझ में तो यह उसने भूल की।

इतना कहकर मायारानी ने टटोलने की नीयत से नकली बिहारीसिंह अर्थात् तेजसिंह पर एक तेज निगाह डाली। तेजसिंह भी समझ गये कि मायारानी को मेरी तरफ से कुछ शक हो गया है और इस शक को मिटाने के लिए वह किसी तरह की जाँच जरूर करेगी, तथापि इस समय बिहारी-सिंह (तेजसिंह) ने ऐसा गम्भीर भाव धारण किया कि मायारानी का शक बढ़ने न पाया। थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं और इसके बाद लौंडी असली बिहारीसिंह को लेकर आ पहुँची। आज्ञानुसार असली बिहारीसिंह पर्दे के बाहर बैठाया गया। अभी तक उसकी आँखों पर पट्टी बँधी हुई थी।

असली बिहारीसिंह की आँखों से पट्टी खोली गयी और उसने चारों तरफ अच्छी तरह निगाह दौड़ाने बाद कहा, "बड़ी खुशी की बात है कि मैं जीता-जागता अपने घर में आ पहुँचा। (हाथ का इशारा करके) मैं इस बाग को और अपने साथियों को खुशी की निगाह से देखता हूँ। इस बात का अफसोस नहीं है कि मायारानी ने मुझसे पर्दा किया क्योंकि जब तक मैं अपना बिहारीसिंह होना साबित न कर दूं, तब तक इन्हें मुझ पर भरोसा न करना चाहिए, मगर मुझे (हरनामसिंह की तरफ देखकर और इशारा करके) अपने इस अनूठे दोस्त हरनामसिंह पर अफसोस होता है कि इन्होंने मेरी

कुछ भी परवाह न की और मुझे ढूँढ़ने का भी कष्ट न उठाया। शायद इसका सबब यह हो कि वह ऐयार मेरी सूरत बनकर इनके साथ हो लिया हो, जिसने मुझे धोखा दिया। अगर मेरा खयाल ठीक है तो वह ऐयार यहाँ जरूर आया होगा, मगर ताज्जुब की बात है कि मैं चारों तरफ निगाह दौड़ाने पर भी उसे नहीं देखता। खैर, यदि यहाँ आया तो देख ही लूँगा कि बिहारीसिंह वह है, या मैं हूँ। केवल इस बाग के चौथे भाग के बारे में थोड़े सवाल करने से ही सारी कलई खुल जायगी।"

असली बिहारीसिंह की बातों ने जो इस जगह पहुँचने के साथ ही उसने कहीं सभों पर अपना असर डाला। मायारानी के दिल पर तो उसका बहुत ही गहरा असर पड़ा मगर उसने बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हाला और तब एक निगाह तेजसिंह के ऊपर डाली। तेजसिंह को यह क्या खबर थी कि यहाँ कोई ऐसा विचित्र बाग देखने में आवेगा और उसके भाग अथवा दर्जों के बारे में सवाल किये जाँयगे। उन्होंने सोच लिया कि अब मामला बेढब हो गया, काम निकालना अथवा राजकुमारों को छुड़ाना तो दूर रहा कोई दूसरा उद्योग करने के लिए मेरा बचकर यहाँ से निकल जाना भी मुश्किल हो गया, क्योंकि मैं किसी तरह उसके सवालों का जवाब नहीं दे सकता और न उस बाग के गुप्त भेदों की मुझे खबर ही है।

असली बिहारीसिंह अपनी बात कहकर चुप हो गया और इस फिक्र में हुआ कि मेरी बात का कोई जवाब दे ले तो मैं कुछ कहूँ, मगर मायारानी की आज्ञा बिना कोई भी उसकी बातों का जवाब न दे सकता था। चालाक और धूर्त मायारानी न मालूम क्या सोच रही थी कि आधी घड़ी तक उसने सिर न उठाया। इसके बाद उसने एक लौंडी की तरफ देखकर कहा, "हरनामसिंह को यहाँ बुलाओ।"

हरनामसिंह पर्दे के अन्दर आया और मायारानी के सामने खड़ा हो गया।

माया : यह ऐयार जो अभी आया है और बड़ी तेजी से बोलकर चुप बैठा है, बड़ा ही शैतान और धूर्त मालूम होता है। मैं इससे बहुतकुछ पूछना चाहती हूँ, परन्तु इस समय मेरे सर में दर्द है, बात करना या सुनना मुश्किल है। तुम इस ऐयार को ले जाओ, चार नम्बर के कमरे में इसके रहने का बन्दोबस्त कर दो, जब मेरी तबीयत ठीक होगी तो देखा जायगा।

हरनाम : बहुत मुनासिब है और मैं सोचता हूँ कि बिहारीसिंह को भी···

माया : हाँ, बिहारीसिंह भी दो-चार दिन इसी बाग में रहें तो ठीक है, क्योंकि यह इस समय बहुत ही कमजोर और सुस्त हो रहे हैं, यहाँ की

आबहवा से दो-तीन दिन में यह ठीक हो जांयगे। इनके लिए बाग के तीसरे हिस्से का दो नम्बरवाला कमरा ठीक है, जिसमें तुम रहा करते हो।

हरनाम : मैं सोचता हूँ कि पहले बिहारीसिंह का बन्दोबस्त कर लूं, तब शैतान ऐयार की फिक्र करूँ।

माया : हाँ, ऐसा ही होना चाहिए।

हरनाम : (नकली बिहारीसिंह अर्थात् तेजसिंह की तरफ देखकर) चलिए, उठिए।

यद्यपि तेजसिंह को विश्वास हो गया कि अब बचाव की सूरत मुश्किल है तथापि उन्होंने हिम्मत न हारी और अपनी कार्रवाई सोचने से बाज न आये। इस समय चुपचाप हरनामसिंह के साथ चले जाना ही उन्होंने मुनासिब जाना।

तेजसिंह को साथ लेकर हरनामसिंह उस कोठरी में पहुँचा, जिसमें सुरंग का रास्ता था। इस कोठरी में दीवार के साथ लगी हुई छोटी-छोटी कई आलमारियाँ थीं। हरनामसिंह ने उनमें से एक आलमारी खोली, मालूम हुआ कि यह दूसरी कोठरी में जाने का दरवाजा है। हरनामसिंह और तेजसिंह दूसरी कोठरी में गये। यह कोठरी बिल्कुल अँधेरी थी। अस्तु, तेजसिंह को मालूम न हुआ कि यह कितनी लम्बी और चौड़ी है। दस-बारह कदम आगे बढ़कर हरनामसिंह ने तेजसिंह की कलाई पकड़ी और कहा, "बैठ जाइए।" यहाँ की जमीन कुछ हिलती हुई मालूम हुई और इसके बाद इस तरह की आवाज आयी, जिससे तेजसिंह ने समझा कि हरनामसिंह ने किसी कल या पुर्जे को छेड़ा है।

वह जमीन का टुकड़ा, जिस पर दोनों ऐयार बैठे थे, यकायक नीचे की तरफ धँसने लगा और थोड़ी देर के बाद किसी दूसरी जमीन पर पहुँचकर ठहर गया। हरनामसिंह ने हाथ पकड़कर तेजसिंह को उठाया और दस कदम आगे बढ़ाकर हाथ छोड़ दिया, इसके बाद फिर घड़घड़ाहट की आवाज आयी, जिससे तेजसिंह ने समझ लिया कि वह जमीन का टुकड़ा जो नीचे उतर आया था फिर ऊपर की तरफ चढ़ गया। यहाँ तेजसिंह को सामने की तरफ कुछ उजाला मालूम हुआ। ये उसी तरफ बढ़े मगर अपने साथ हरनामसिंह के आने की आहट न पाकर उन्होंने हरनामसिंह को पुकारा पर कुछ जवाब न मिला। अब तेजसिंह को विश्वास हो गया कि हरनामसिंह मुझे इस जगह कैद करके चलता बना, लाचार वे उसी तरफ रवाना हुए, जिधर कुछ उजाला मालूम होता था। लगभग पचास कदम के जाने बाद दरवाजा मिला और उसके पार होने पर तेजसिंह ने अपने को एक बाग में

पाया।

यह बाग भी हरा-भरा था और मालूम होता था कि इसकी रविशों पर अभी छिड़काव किया गया है, मगर माली या किसी दूसरे आदमी का नाम भी न था। इस बाग में बनिस्बत फूलों के मेवों के पेड़ बहुत ज्यादे थे और एक छोटी-सी नहर भी जारी थी, जिसका पानी मोती की तरह साफ था, सतह की कंकड़ियाँ भी साफ दिखायी देती थीं। बाग के बीचोबीच में एक ऊँचा बुर्ज था और उसके चारों तरफ कई मकान कमरे और दालान इत्यादि थे, जैसाकि हम ऊपर लिख आये हैं। तेजसिंह सुस्त और उदास होकर नहर के किनारे बैठ गये और न मालूम क्या-क्या सोचने लगे। और चाहे जोकुछ भी हो, मगर अब तेजसिंह इस योग्य न रहे कि अपने को बिहारीसिंह कहें। उनकी बची-बचायी कलई भी हरनामसिंह के साथ इस बाग में आने से खुल गयी। क्या बिहारीसिंह, तेजसिंह की तरह चुपचाप हरनामसिंह के साथ अनजान आदमियों की तरह चला आता? क्या माया-रानी अथवा उसका कोई ऐयार, अब तेजसिंह को बिहारीसिंह समझ सकता है? कभी नहीं! कभी नहीं! इन सब बातों को तेजसिंह भी बखूबी समझ सकते थे और उन्हें विश्वास हो गया कि अब हम कैद कर लिये गये।

थोड़ी देर बाद यहाँ के मकानों को घूम-घूमकर देखने के लिए तेजसिंह उठे, मगर सिवाय एक कमरे के जिसके दरवाजे पर मोटे अक्षर में दो (2) का अंक लिखा हुआ था बाकी सब कमरे और मकान बन्द पाये। दो का नम्बर देखते ही तेजसिंह को ध्यान आया कि मायारानी ने इसी कमरे में मुझे रखने का हुक्म दिया है। उस कमरे में एक दरवाजा और छोटी-छोटी कई खिड़कियाँ थीं, अन्दर फर्श बिछा हुआ और कई तकिये भी मौजूद थे। तेजसिंह को भूख लगी हुई थी, बाग में मेवों की कमी न थी, उन्हीं से पेट भरा और नहर का पानी पीकर, उसी दो नम्बरवाले कमरे को अपना मकान या कैदखाना समझा।

तीसरा बयान

रात पहर-भर से ज्यादे जा चुकी है। तेजसिंह उसी दो नम्बरवाले कमरे के बाहर सहन में तकिया लगाये सो रहे हैं। चिराग बालने का कोई सामान यहाँ मौजूद नहीं, जिससे रोशनी करते, पास में कोई आदमी नहीं, जिससे दिल बहलाते, बाग से बाहर निकलने की उम्मीद नहीं कि कुमारों को छुड़ाने के लिए कोई बन्दोबस्त करते, लाचार तरह-तरह के तरद्दुदों में पड़े उन पेड़ों पर नजर दौड़ा रहे हैं, जो सहन के सामने बहुतायत से लगे हुए थे।

यकायक पेड़ों की आड़ में रोशनी मालूम पड़ी। तेजसिंह घबड़ाकर ताज्जुब के साथ उसी तरफ देखने लगे। थोड़ी ही देर में मालूम हुआ कि कोई आदमी हाथ में चिराग लिये तेजी के साथ कदम बढ़ाता उनकी तरफ आ रहा है। देखते-देखते वह आदमी तेजसिंह के पास आ पहुँचा और चिराग एक तरफ रखकर सामने खड़ा होके बोला, "जय माया की !"

यह आदमी सिपाहियाना ठाठ में था। छोटी-छोटी स्याह दाढ़ी से इसके चेहरे का ज्यादा हिस्सा ढँका हुआ था। मेयाना कद और शरीर से हृष्ट-पुष्ट था। तेजसिंह ने भी यह समझकर कि कोई ऐयार है, जवाब में कहा, "जय माया की !"

सिपाही : (जो अभी आया है) ओस्ताद तुमने चालाकी तो खूब की थी मगर जल्दी करके काम बिगाड़ दिया।

तेज : चालाकी क्या और जल्दी कैसी ?

सिपाही : इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि मायारानी के बाग में रूप बदलकर आनेवाला ऐयार पागल बने बिना किसी दूसरी रीति से काम चला ही नहीं सकता था, परन्तु आपने जल्दी कर दी, दो-चार दिन और पागल बने रहते तो ठीक था, असली बिहारीसिंह की बातों का जवाब आपको देना न पड़ता और इस बाग के तीसरे या चौथे हिस्से का भेद भी आपसे पूछा न जाता, अब तो सभी को मालूम हो गया कि आप असली बिहारीसिंह नहीं, बल्कि कोई ऐयार हैं।

तेज : सब लोग जो चाहे समझें, मगर तुम मेरे पास क्यों आये हो ?

सिपाही : इसीलिए कि आपका हाल जानूं और जहाँ तक हो सके, आपकी मदद करूं।

तेज : मैं अपना हाल सिवाय इसके और क्या कहूँ कि मैं वास्तव में बिहारीसिंह हूँ।

सिपाही : (हँसकर) क्या खूब, अभी तक आपका मिजाज ठिकाने नहीं हुआ ! मगर मैं फिर कहता हूँ कि मुझ पर भरोसा कीजिए और अपना ठीक-ठीक नाम बताइए।

तेज : जब तुम यह समझते ही हो कि मैं ऐयार हूँ तो क्या यह नहीं जानते कि ऐयार लोग किसी ऐसे बतोलिए पर जैसे कि आप हैं यकायकी कैसे भरोसा कर सकते हैं ?

सिपाही : हाँ, आपका कहना ठीक है, ऐयारों को यकायक किसी का विश्वास न करना चाहिए, मगर मेरे पास एक ऐसी चीज है कि आपको झख मारकर मुझ पर भरोसा करना पड़ेगा।

तेज : (ताज्जुब से) वह ऐसी कौन-सी अनोखी चीज तुम्हारे पास है,

जिसमें इतना बड़ा असर है कि मुझे झख मारकर तुम पर भरोसा करना पड़ेगा ?

सिपाही : नेमची रिक्तगन्थ !*

'नेमची रिक्तगन्थ' इस शब्द में न मालूम कैसा असर था कि सुनते ही तेजसिंह के रोंगटे खड़े हो गये, सिर नीचे कर लिया और न जाने क्या सोचने लगे। थोड़ी देर तक तो ऐसा मालूम होता था कि वह तेजसिंह नहीं हैं, बल्कि पत्थर की कोई मूरत हैं। आखिर वे एक लम्बी साँस लेकर उठ खड़े हुए और सिपाही का हाथ पकड़कर बोले, "अब कहो तुम्हें मैं अपने साथियों में से कोई समझूँ या अपना पक्का दुश्मन जानूँ ?"

सिपाही : दोनों में से कोई भी नहीं।

तेज : यह और भी ताज्जुब की बात है ! (कुछ सोचकर) हाँ, ठीक है, यदि तुम चोर होते तो इतनी दिलावरी के साथ मुझसे बातें न करते, बल्कि मेरे सामने ही न आते, लेकिन यह तो मालूम होना चाहिए कि तुम हो कौन ? क्या रिक्तगन्थ तुम्हारे पास है ?

सिपाही : जी नहीं, यदि वह मेरे पास होता तो अब तक राजा बीरेन्द्रसिंह के पास पहुँच गया होता।

तेज : फिर यह शब्द तुमने कहाँ से सुना ?

सिपाही : यह वही शब्द है, जिसे आप लोग समय पड़ने पर आपस में कहकर इस बात का परिचय देते हैं कि हम राजा बीरेन्द्रसिंह के दिली दोस्तों में से कोई हैं।

तेज : हाँ, बेशक यह वही शब्द है, तो क्या तुम राजा बीरेन्द्रसिंह के दिली दोस्तों में से कोई हो।

सिपाही : नहीं, हाँ, होंगे।

तेज : (चिढ़कर) तुम अजब मसखरे हो जी, साफ-साफ क्यों नहीं कहते कि तुम कौन हो ?

सिपाही : (हँसकर) क्या उस शब्द के कहने पर भी आप मुझ पर भरोसा न करेंगे ?

तेज : (मुँह बनाकर और बात पर जोर देकर) हाय हाय, कह तो दिया कि भरोसा किया ! भरोसा किया !! भरोसा किया !!! झख मारा और भरोसा किया ! अब भी कुछ कहोगे या नहीं ? अपना नाम बताओगे या नहीं ?

---

*नेमची रिक्तगन्थ—यह ऐयारी भाषा का शब्द है, इसका अर्थ है—खून से लिखी किताब का घर।

सिपाही : अच्छा तो आप ही पहिले अपना परिचय दीजिए।

तेज : मैं तेजसिंह हूँ—बस हुआ? अब भी तुम अपना कुछ परिचय दोगे या नहीं?

सिपाही : हाँ हाँ, अब मैं अपना परिचय दूंगा, मगर पहिले एक बात का जवाब दे दीजिए।

तेज : अभी एक आँच की कसर रह गयी, अच्छा पूछिए!

सिपाही : यदि कोई ऐसा आदमी आपके सामने आवे जो आपसे मुहब्बत रक्खे, आपके काम में दिलोजान से मदद दे, आपकी भलाई के लिए जान तक देने को तैयार रहे, मगर उसके बाप-दादा-चाचा-भाई इत्यादि में से कोई एक आदमी आपके साथ पूरी-पूरी दुश्मनी कर चुका हो तो आप उसके साथ कैसा बर्ताव करेंगे?

तेज : जो मेरे साथ नेकी करेगा, उसके साथ मैं दोस्ती का बर्ताव करूँगा, चाहे उसके बाप-दादे मेरे साथ पूरी दुश्मनी क्यों न कर चुके हों।

सिपाही : ठीक है ऐसा ही करना चाहिए, अच्छा तो फिर सुनिए—मेरा नाम नानक है और मकान काशीजी।

तेज : नानक!

सिपाही : जी हाँ और मेरा किस्सा बहुत ही अनूठा और आश्चर्यजनक है।

तेज : मैंने यह नाम कहीं सुना है, मगर याद नहीं पड़ता कि कब और क्यों सुना। इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम्हारा हाल आश्चर्य और अद्भुत घटनाओं से भरा होगा। मेरी तबीयत घबड़ा रही है, जहाँ तक जल्दी हो सके अपना ठीक-ठीक हाल कहो।

नानक : दिल लगाकर सुनिए मैं कहता हूँ, यद्यपि उस काम में देर हो जायगी, जिसके लिए मैं आया हूँ तथापि मेरा किस्सा सुनकर आप अपना काम बहुत आसानी से निकाल सकेंगे और यहाँ की बहुत-सी बातें भी आपको मालूम हो जाँयगी।

नानक का किस्सा

लड़कपन में बड़े चैन से गुजरती थी। मेरे घर में किसी चीज की कमी न थी। खाने के लिए अच्छी-से-अच्छी चीजें, पहिरने के लिए एक-से-एक बढ़के कपड़े और वे सब चीजें मुझे मिला करतीं, जिनकी मुझे जरूरत होती या जिनके लिए मैं जिद किया करता। माँ से मुझे बहुत ज्यादे मुहब्बत थी और बाप से कम, क्योंकि मेरा बाप किसी दूसरे शहर में किसी राजा के यहाँ

नौकर था, चौथे पाँचवें महीने और कभी-कभी साल-भर पीछे घर में आता और दस-पाँच दिन रहकर चला जाता था। उसका पूरा हाल आगे चलकर आपको मालूम होगा। मेरा बाप, मेरी माँ को बहुत चाहता था और जब घर आता तो बहुत-सा रुपया और अच्छी-अच्छी चीजें उसे दे जाया करता था और इसलिए हम लोग अमीरी ठाठ के साथ अपना दिन बिताते थे।

जिस बुड्ढी दाई की गोद में मैं खेला करता था, वह बहुत ही नेक थी और उसकी बहिन एक जमींदार के यहाँ जिसका घर मेरे पड़ोस में था, रहती और उसकी लड़की को खिलाया करती थी। मेरी दाई कभी मुझे लेकर उस जमींदार के घर जा बैठा करती और कभी उसकी बहिन उस लड़की को लेकर, जिसके खिलाने पर वह नौकर थी, मेरे घर आ बैठा करती, इसलिए मेरा और उस लड़की का रोज साथ रहता तथा धीरे-धीरे हम दोनों में मुहब्बत दिन-दिन बढ़ने लगी। उस लड़की का नाम, जो मुझसे उम्र में दो वर्ष कम थी, रामभोली था और मेरा नाम नानक, मगर घरवाले मुझे ननकू कहके पुकारा करते। वह लड़की बहुत खूबसूरत थी मगर जन्म की गूंगी-बहरी थी तथापि हम दोनों की मुहब्बत का यह हाल था कि उसे देखे बिना मुझे और मुझे देखे बिना उसे चैन न पड़ता। गुरु के पास बैठकर पढ़ना मुझे बहुत बुरा मालूम होता और उस लड़की से मिलने के लिए तरह-तरह के बहाने करने पड़ते।

धीरे-धीरे मेरी उम्र दस वर्ष की हुई और मैं अपने-पराये को अच्छी तरह समझने लगा। मेरे पिता का नाम रघुबरसिंह था। बहुत दिनों पर उसका घर आया करना मुझ बहुत बुरा मालूम हुआ और मैं अपनी माँ से उसका हाल खोद-खोद के पूछने लगा। मालूम हुआ कि वह अपना हाल बहुत छिपाता है, यहाँ तक कि मेरी माँ भी उसका पूरा-पूरा हाल नहीं जानती, तथापि यह मालूम हो गया कि मेरा बाप ऐयार है और किसी राजा के यहाँ नौकर है। यह भी सुना कि वहाँ मेरी एक सौतेली माँ भी रहती है, जिससे एक लड़का और एक लड़की भी है।

मेरा बाप जब आता तो महीने-दो महीने या कभी-कभी केवल आठ-ही-दस दिन रहकर चला जाता और जितने दिन रहता मुझे ऐयारी सिखाने में विशेष ध्यान देता। मुझे भी पढ़ने-लिखने से ज्यादा खुशी ऐयारी सीखने में होती, क्योंकि रामभोली से मिलने तथा अपना मतलब निकालने के लिए ऐयारी बड़ा काम देती थी। धीरे-धीरे लड़कपन का जमाना बहुत कुछ निकल गया और वे दिन आ गये कि जब लड़कपन नौजवानी के साथ ऊधम मचाने लगा और मैं अपने को नौजवान और ऐयार समझने लगा।

एक रात मैं अपने घर में नीचे के खण्ड में कमरे के अन्दर चारपाई पर

लेटा हुआ रामभोली के विषय में तरह-तरह की बातें सोच रहा था। इश्क के चपेट में नींद हराम हो गयी थी, दीवार के साथ लटकती हुई तस्वीरों की तरफ टकटकी बाँधकर देख रहा था, यकायक ऊपर की छत पर धमधमाहट की आवाज आने लगी। मैं यह सोचकर निश्चिन्त हो रहा कि शायद कोई लौंडी जरूरी काम के लिए उठी होगी, उसी के पैरों की धमधमाहट मालूम होती है, मगर थोड़ी देर बाद ऐसा मालूम हुआ कि सीढ़ियों की राह कोई आदमी नीचे उतरा चला आता है। पैर की आवाज भारी थी, जिससे साफ मालूम हुआ कि यह कोई मर्द है। मुझे ताज्जुब मालूम हुआ कि इस समय मर्द इस मकान में कहाँ से आया क्योंकि मेरा बाप घर में न था, उसे नौकरी पर गये दो महीने से ज्यादे हो चुके थे।

मैं आहट लेने और कमरे से बाहर निकलकर देखने की नीयत से उठ बैठा। चारपाई की चरमराहट और मेरे उठने की आहट पाकर यह आदमी फुर्ती से उतरकर चौक में पहुँचा और जब तक मैं कमरे के बाहर होकर उसे देखूं, तब तक वह सदर दरवाजा खोलकर मकान के बाहर निकल गया। मैं हाथ में खंजर लिये हुए मकान के बाहर निकला और उस आदमी को जाते हुए देखा। उस समय मेरे नौकर और सिपाही जो दरवाजे पर रहा करते थे, बिल्कुल गाफिल सो रहे थे, मगर मैं उन्हें सचेत करके उस आदमी के पीछे रवाना हुआ।

मैं नहीं कह सकता कि उस आदमी को जो स्याह कपड़ा ओढ़े मेरे घर से निकला था, यह खबर थी या नहीं कि मैं उसके पीछे-पीछे आ रहा हूँ क्योंकि वह बड़ी बेफिक्री से कदम बढ़ाता हुआ मैदान की तरफ जा रहा था।

थोड़ी दूर जाने बाद मुझे यह भी मालूम हुआ कि यह आदमी अपनी पीठ पर एक गठरी लादे हुए है, जो एक स्याह कपड़े के अन्दर है। अब मुझे विश्वास हो गया कि यह चोर है और इसने जरूर मेरे यहाँ चोरी की है। जी में तो आया कि गुल मचाऊँ, जिसमें बहुत-से आदमी इकट्ठे होकर उसे गिरफ्तार कर लें, मगर कई बातें सोचकर चुप हो रहा और उसके पीछे-पीछे जाना उचित समझा।

घण्टे-भर तक बराबर मैं उस आदमी के पीछे-पीछे चला गया, यहाँ तक कि वह शहर के बाहर मैदान में एक ऐसी जगह जा पहुँचा, जहाँ इमली के बड़े-बड़े पेड़ इतने ज्यादे लगे हुए थे कि उनके सबब से मामूली से विशेष अन्धकार हो रहा था। जब मैं उन घने पेड़ों के बीच पहुँचा तो मालूम हुआ कि यहाँ लगभग दस-बारह आदमी और भी हैं, जो एक समाधि के बगल में बैठे धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। वह आदमी उसी जगह पहुँचा और उन

लोगों में से दो ने बढ़कर पूछा, "कहो अबकी दफे किसे लाये?" इसके जवाब में उस आदमी ने कहा, "नानक की माँ को।"

आप खयाल कर सकते हैं कि इस शब्द को सुनकर मेरे दिल पर कैसी चोट लगी होगी। अब तक मैं यही समझ रहा था कि वह चोर मेरे यहाँ से माल असबाब चुराकर लाया है, जिसकी मुझे विशेष परवाह न थी और मैं उसका पूरा-पूरा हाल जानने की नीयत से चुपचाप उसके पीछे-पीछे चला गया था, मगर जब यह मालूम हुआ कि वह कमबख्त मेरी माँ को चुरा लाया है, तो मुझे बड़ा ही रंज हुआ और मैं इस बात पर अफसोस करने लगा कि उसे यहाँ तक आने का मौका क्यों दिया, क्योंकि अब इस समय यहाँ मेरे किये कुछ भी नहीं हो सकता था। चारों तरफ ऐसा सन्नाटा था कि अगर गला फाड़कर चिल्लाता तो भी मेरी आवाज किसी के कान तक न पहुँचती, इसके अतिरिक्त वे लोग गिनती में भी ज्यादे थे, किसी तरह उनका मुकाबला नहीं कर सकता था, लाचार उस समय बड़ी मुश्किल से मैंने अपने दिल को सम्हाला और चुपचाप एक पेड़ की आड़ में खड़े रहकर उन लोगों की कार्रवाई देखने और यह सोचने लगा कि क्या करना चाहिए।

वह समाधि जो औंधी हाँड़ी की तरह थी, बहुत बड़ी तथा मजबूत बनी हुई थी और मुझे उसी समय यह भी मालूम हो गया कि उसके अन्दर जाने के लिए कोई रास्ता भी है, क्योंकि मेरे देखते-देखते, वे सब-के-सब उसी समाधि के अन्दर घुस गये और जबतक मैं रहा बाहर न निकले।

घण्टे-भर तक राह देखकर मैं उस समाधि के पास गया और उसके चारों तरफ घूम-घूमकर अच्छी तरह देखने लगा, मगर कोई दरवाजा या छेद ऐसा न दिखायी दिया, जिस राह से कोई उसके अन्दर जा सकता और न मैंने उस जगह कोई दरवाजे का निशान ही पाया। मैं उस समाधि को अच्छी तरह जानता था, उसके बारे में कभी कोई बुरा खयाल किसी के दिल में न हुआ होगा। देहाती लोग वहाँ तरह-तरह की मन्नतें मानते और प्रायः पूजा करने के लिए आया करते थे, परन्तु मुझे आज मालूम हुआ कि वह वास्तव में समाधि नहीं, बल्कि खूनियों का अड्डा है।

मैंने बहुत सर पीटा मगर कुछ काम न निकला, लाचार यह सोचकर घर की तरफ लौटा कि पहिले लोगों को इस मामले की खबर करूँ और इसके बाद आदमियों को साथ लाकर इस समाधि को खुदवा अपनी माँ और बदमाशों का पता लगाऊँ।

रात बहुत थोड़ी रह गयी थी, जब मैं घर पहुंचा। मैं चाहता था कि अपनी परेशानी का हाल नौकरों से कहूँ, मगर वहाँ तो मामला ही दूसरा था। वह बूढ़ी दाई जिसने मुझे गोद में खिलाया था और अब बहुत ही बूढ़ी

और कमजोर-हो रही थी, इस समय दरवाजे पर बैठी नौकरों पर खफा हो रही थी और कह रही थी कि आधी रात के समय तुमने लड़के को अकेले क्यों जाने दिया ? तुम लोगों में से कोई आदमी उसके साथ क्यों न गया ? इतने ही में मुझे देख नौकरों ने कहा, "लो ननकू बाबू आ गये, खफा क्यों होती हो !"

मैंने पास जाकर कहा, "क्या है जो हल्ला मचा रही हो ?"

दाई : है क्या, चुपचाप न जाने कहाँ चले गये, न किसी से कुछ कहा, न सुना ! तुम्हारी माँ बेचारी रो-रोकर जान दे रही है ! ऐसा जाना किस काम का कि एक आदमी भी साथ न ले गये, जा के अपनी माँ का हाल तो देखो।

मैं : माँ कहाँ हैं !

दाई : घर में और कहाँ हैं, तुम जाओ तो सही !

दाई की बात सुनकर मैं बड़ी हैरानी में पड़ गया। वहाँ उस चोर ऐयार की जुबानी जोकुछ सुना था, उससे तो साफ मालूम हुआ था कि वह मेरी माँ को गिरफ्तार करके ले गया है, मगर घर पहुँचकर सुनता हूँ कि माँ यहाँ मौजूद है। खैर, मैंने अपने दिल का हाल किसी से न कहा और चुपचाप मकान के अन्दर उस कमरे में पहुँचा, जिसमें मेरी माँ रहती थी। देखा कि वह चारपाई पर पड़ी रो रही है, उसका सिर फटा हुआ है और उसमें से खून बह रहा है, एक लौंडी हाथ में कपड़ा लिये खून पोंछ रही है। मैंने घबड़ाकर पूछा, "यह क्या हाल है ! सिर कैसे फट गया ?"

माँ : मैंने जब सुना कि तुम घर में नहीं हो तो तुम्हें ढूंढ़ने के लिए घबराकर नीचे उतरी, अकस्मात सीढ़ी पर गिर पड़ी। तुम कहाँ गये थे ?

मैं : हाँ, घर में से एक चोर को कुछ असबाब लेकर बाहर जाते देख मैं उसके पीछे-पीछे चला गया था।

माँ : (कुछ घबड़ाकर) क्या यहाँ से किसी चोर को बाहर जाते देखा था ?

मैं : हा, कहा तो कि उसा के पीछे-पीछे मैं गया था।

माँ : तुम उसके पीछे-पीछे कहाँ तक गये ? क्या उसका घर देख आये ?

मैं : नहीं, थोड़ी दूर जाने बाद गलियों में घूम-फिरकर न मालूम वह कहाँ गायब हो गया, मैंने बहुत ढूंढ़ा मगर पता न लगा, आखिर लाचार होकर लौट आया। (लौंडी को तरफ देखकर) कुछ मालूम हुआ घर में से क्या चीज चोरी गयी ?

लौंडी : (ताज्जुब में आकर और चारों तरफ देखकर) यहाँ से तो कोई चीज चोरी नहीं गयी।

यह जवाब सुन मैं चुपचाप नीचे उतर आया और घर में चारों तरफ घूम-घूमकर देखने लगा। जिस घर में खजाना रहता था, उसमें भी ताला बन्द पाया और कई कीमती चीजें जो मामूली तौर पर भण्डेरियों और खुली आलमारियों में पड़ी रहा करती थीं ज्यों-की-त्यों मौजूद पायीं, लाचार मैं अपनी चारपाई पर जाकर लेट रहा और तरह-तरह की बातें सोचने लगा। उस समय रात बीत चुकी थी और सुबह की सुफेदी घर में घुसकर कह रही थी कि अब थोड़ी ही देर में सूर्य भगवान निकला चाहते हैं।

इस बात को कई महीने बीत गये। मैंने अपने दिल का हाल और वे बातें जो देखी सुनी थीं किसी से न कहीं, हाँ, छिपे-छिपे तहकीकात करता रहा कि असल मामला क्या है। चाल-चलन, बातचीत और मुहब्बत की तरफ ध्यान देने से मुझे निश्चय हो गया कि मेरी माँ जो घर में है, वह असल में मेरी माँ नहीं है बल्कि कोई ऐयारा है। मैं छिपे-छिपे अपनी माँ की खोज करने लगा और इस विषय पर ध्यान देने लगा कि वह ऐयारा घर में मेरी माँ बनकर क्यों रहती है और उसकी नीयत क्या है? इसके अलावे मैं अपनी जान की हिफाजत भी अच्छी तरह करने लगा। इस बीच में रामभोली ने मुझसे मुहब्बत ज्यादे बढ़ा दी। यद्यपि उसकी चाल-चलन में भी मुझे कुछ फर्क मालूम होता था, परन्तु मुहब्बत ने मुझे अन्धा बना रक्खा था और मैं पूरा उसका आशिक बन गया था।

एक पढ़ी-लिखी बुद्धिमान नौजवान औरत ने जिम्मा लिया हुआ था कि यद्यपि रामभोली गूँगी और बहरी है, परन्तु वह उसे इशारे ही में समझा-बुझाकर पढ़ना-लिखना सिखा देगी और वास्तव में उस औरत ने बड़ी चालाकी से रामभोली को पढ़ना-लिखना सिखा दिया। उसी औरत के हाथ रामभोली की लिखी चीठी मेरे पास आती और मैं उसी के हाथ जवाब भेजा करता था। ऊपर कही वारदात के कुछ दिन बाद जो चीठियाँ रामभोली की मेरे पास आने लगीं उनके अक्षरों का ढंग और गढ़न कुछ निराले ही तौर का था परन्तु मैंने उस समय उस पर कुछ विशेष ध्यान न दिया।

अब ऊपरवाले मामले को छः महीने से ज्यादे गुजर गये। इस बीच में मेरा बाप कई दफे घर में आया और थोड़े-थोड़े दिन रहकर चला गया। घर की बातों में सिर्फ इतना फर्क पड़ा कि मेरा बाप मेरी माँ से मुहब्बत ज्यादे करने लगा, मगर मेरी नकली माँ तरह-तरह की बेढब फरमाइशों से उसे तंग करने लगी।

एक दिन जब मेरा बाप घर ही में था, आधी रात के समय मेरे बाप और मेरी माँ में कुछ खटपट होने लगी। उस समय मैं जागता था। मेरे जी

में आया कि किसी तरह इस झगड़े का सबब मालूम करना चाहिए। आखिर ऐसा ही किया, मैं चुपके से उठा और धीरे-धीरे उस कमरे के पास गया, जिसके अन्दर वे दोनों जली-कटी बातें कर रहे थे। उस कमरे में तीन दरवाजे थे, जिनमें से एक खुला हुआ, मगर उसके आगे पर्दा गिरा हुआ था और दो दरवाजे बन्द थे। मैं एक बन्द दरवाजे के आगे जाकर (जो खुले दरवाजे के ठीक दूसरी तरफ था) लेट रहा और उन दोनों की बातें सुनने लगा। जोकुछ मैंने सुना उसे ठीक-ठीक बयान करता हूँ—

माँ : जब तुम्हें मेरा विश्वास नहीं तो किस मुँह से कहते हो कि मैंने तेरे लिए यह किया और वह किया ?

बाप : बेशक, मैंने तेरे लिए अपनी जान खतरे में डाली और जनम-भर के लिए अपने नाम पर धब्बा लगाया और अब तू चाहती है कि मैं न मरने लायक रहूँ और न जीते रहकर किसी को मुँह दिखा सकूँ।

माँ : अपने मुँह से तुम जो चाहे कहो, मगर मैं ऐसा नहीं चाहती जो तुम कहते हो। क्या मैं वह किताब खा जाऊँगी या किसी दूसरे को दे दूँगी ? जाओ, अपनी किताब ले जाओ और अपनी चहेती बेगम को नजर कर दो !

बाप : मेरी वह जोरू, जिसे तुम ताना देकर बेगम कहती हो, तुम्हारे ऐसी जिद्दी नहीं। उसने मुझे राजा बीरेन्द्रसिंह के यहाँ चोरी करने के लिए नहीं कहा और न वह तिलिस्म का तमाशा ही देखा चाहती है।

माँ : उसको इतना दिमाग ही नहीं, कंगाल की लड़की का हौसला ही कितना !

बाप : हाँ, वेशक उसका इतना बड़ा हौसला नहीं कि मेरी जान की ग्राहक बन बैठे।

इसके बाद थोड़ी-सी बातें बहुत ही धीरे-धीरे हुईं, जिन्हें मैं अच्छी तरह सुन न सका। अन्त में मेरा बाप इतना कहकर चुप हो रहा—"खैर, फिर जोकुछ भाग्य में बदा है, वह भोगूंगा। लो यह खूनी किताब तुम्हारे हवाले करता हूँ, पाँच रोज में लौटके आऊँगा तो तिलिस्म का तमाशा दिखा दूंगा और फिर यह किताब राजा बीरेन्द्रसिंह के यहाँ किसी ढंग से पहुँचा दूंगा।"

मैं यह सोचकर कि अब मेरा बाप बाहर निकलना ही चाहता है, उठ खड़ा हुआ और चुपचाप नीचे उतर अपने कमरे में चला आया। मगर मेरे दिल की अजब हालत थी, मैं खूब जानता था कि वह मेरी माँ नहीं है और अब तो मालूम हो गया कि उस कमबख्त के फेर में पड़कर मेरा बाप अपने ऊपर कोई आफत लाया चाहता है, इसलिए यह सोचने लगा कि किसी तरह अपने बाप को इसके फरेब से बचाना और अपनी असली माँ का पता

लगाना चाहिए।

दो घण्टे बीत गये मगर मेरा बाप नीचे न उतरा। मेरी चिन्ता और भी बढ़ गयी। मैं सोचने लगा कि शायद फिर कुछ खटपट होने लगी। आखिर मुझसे रहा न गया, मैंने अपने कमरे से बाहर निकल के बाप को आवाज दी। आवाज सुनते ही वे मेरे पास चले आये और धीरे से बोले, "क्यों बेटा क्या है ?"

मैं : आपसे एक बात कहा चाहता हूँ, मगर बहुत छिपाकर।

बाप : कहो, यहाँ तो कोई ऐसा सुननेवाला नहीं है, ऐसा ही डर है तो ऊपर चले चलो।

मैं : (धीरे से) नहीं, मैं उस दुष्टा के सामने कुछ भी कहा नहीं चाहता, जिसे आप मेरी माँ समझते हैं।

बाप : (ताज्जुब में आकर) क्या वह तुम्हारी माँ नहीं है !

मैं : नहीं !

बाप : आज क्या है, जो तुम ऐसी बातें कर रहे हो ? क्या उसने तुम्हें कुछ तकलीफ दी है ?

मैं : आप इस जगह मुझसे कुछ भी न पूछिए, निराले में जब मेरी बातें सुनियेगा तो असल भेद मालूम हो जायगा !

इतना सुनते ही मेरे बाप ने घबड़ाकर मेरा हाथ पकड़ लिया और मकान के बाहर अपने खास बैठके में ले जाकर दरवाजा बन्द करने के बाद पूछा, "कहो क्या बात है ?" मैंने वे कुल बातें जो देखी-सुनी थीं और जो ऊपर बयान कर चुका हूँ, कह सुनायीं जिनके सुनते ही मेरे बाप की अजब हालत हो गयी, चेहरे पर उदासी और तरद्दुद की निशानी मालूम होने लगी, थोड़ी देर तक चुप रहने और कुछ गौर करने बाद बोले, "बेशक धोखा हो गया ! अब जो गौर करता हूँ तो इस कमबख्त की बातचीत और चाल-चलन में बेशक बहुत कुछ फर्क पाता हूँ। मगर अफसोस तुमने इतने दिनों तक न मालूम क्या समझकर यह बात छिपा रक्खी और अपनी माँ की तरफ से भी गाफिल रहे ! न जाने वह बेचारी जीती भी है, या इस दुनिया से ही उठ गयी !"

मैं : जरा-सा गौर करने पर आप खुद समझ सकते हैं कि इस बात को इतने दिनों तक मैं क्यों छिपाये रहा। माँ की तरफ से भी गाफिल न रहा, जहाँ तक हो सका पता लगाने के लिए परेशान हुआ मगर अभी तक कोई अच्छा नतीजा न निकला। तथापि मुझे विश्वास है कि वह इस दुनिया में जीती-जागती मौजूद है।

बाप : तुम्हारा खयाल ठीक है और इसका सबूत इससे बढ़कर और

क्या होगा कि एक ऐयारा उसकी सूरत बनकर अपना काम निकाला चाहती है और इस घर में अभी तक मौजूद है, जब तक इसका काम न निकलेगा बेशक, उसकी जान बची रहेगी। मगर अफसोस, मैंने बड़ा धोखा खाया और अपने को किसी लायक न रक्खा। अच्छा यह कहो कि इस समय तुम्हें क्या सूझी जो यह सब कहने के लिए तैयार हो गये ?

मैं : खुटका तो बहुत दिनों से लगा हुआ था, मगर इस समय कुछ तकरार की आहट पाकर मैं ऊपर चढ़ गया और बड़ी देर तक छिपकर आप लोगों की वातें सुनता रहा, ज्यादे तो समझ में न आया, मगर इतना मालूम हो गया कि आप उसकी खातिर से राजा बीरेन्द्रसिंह के यहाँ से कोई किताब चुरा लाये हैं और अब कोई काम ऐसा किया चाहते हैं, जो आपके लिए बहुत बुरा नतीजा पैदा करेगा, अस्तु, ऐसे समय में चुप रहना मैंने उचित न जाना। अब आप कृपा करके यह कहिए कि वह किताब जो आप चुरा लाये हैं, कैसी है ?

बाप : इस समय खुलासा हाल कहने का मौका तो नहीं है, परन्तु संक्षेप में कुछ हाल कह तुम्हें होशियार कर देना भी बहुत जरूरी है, क्योंकि अब मेरी जिन्दगी का कोई ठिकाना नहीं, हाँ, अगर यह औरत तुम्हारी माँ होती तो कोई हर्ज न था। वह एक प्राचीन समय की किसी के खून से लिखी हुई किताब है, जो राजा बीरेन्द्रसिंह को विक्रमी तिलिस्म से मिली थी। उस तिलिस्म में स्याह पत्थर के दालान में एक सिंहासन के ऊपर छोटा-सा पत्थर का सन्दूक था, जिसके छूने से आदमी बेहोश हो जाता था।

मैं : हाँ, यह किस्सा आप पहिले भी मुझसे कह चुके हैं, बल्कि आपने यह भी कहा था कि सिंहासन के ऊपर जो पत्थर था और जिसके छूने से आदमी बेहोश हो जाता था। वास्तव में वह एक सन्दूक था और उसके अन्दर से कोई नायाब चीज राजा बीरेन्द्रसिंह को मिली थी।

बाप : ठीक है, ठीक है, इस समय मेरी अक्ल ठिकाने नहीं, इसी से बहुत-सी बातें भूल रहा हूँ, हाँ, तो उसी पत्थर के टुकड़े में से जिसे छोटा सन्दूक कहना चाहिए, यह किताब और हीरे का एक सरपेंच निकला था।

मैं : उस किताब में क्या बात लिखी है ?

बाप : उस किताब में उस तिलिस्म के भेद लिखे हुए हैं, जो राजा बीरेन्द्रसिंह के हाथ से न टूट सका और जिसके विषय में मशहूर है कि राजा बीरेन्द्रसिंह के लड़के उस तिलिस्म को तोड़ेंगे।

मैं : यदि उस पुस्तक में उस भारी तिलिस्म के भेद लिखे हुए थे तो राजा बीरेन्द्रसिंह ने उस तिलिस्म को क्यों छोड़ दिया ?

बाप : केवल उस किताब की सहायता से यह तिलिस्म टूट नहीं सकता,

हाँ, जिसके पास वह पुस्तक हो उसे तिलिस्म का कुछ हाल जरूर मालूम हो सकता है और यदि वह चाहे तो तिलिस्म में जाकर वहाँ की सैर भी कर सकता है। इस कमबख्त औरत ने यही कहा कि मुझे तिलिस्म की सैर करा दो। उसी जिद्द नें मुझसे यह अपराध कराया, लाचार मैंने वह किताब चुरायी। मैंने सोच लिया था कि इसकी इच्छा पूरी करने बाद मैं वह पुस्तक जहाँ-की-तहाँ रख आऊँगा, मगर जब यह औरत कोई दूसरी ही है तो बेशक मुझे धोखा दिया गया तथा इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि यह औरत उस तिलिस्म से कोई सम्बन्ध रखती है और यदि ऐसा है तो अब उस पुस्तक का मिलना मुश्किल है। अफसोस, जब मैं किताब चुराकर राजा बीरेन्द्रसिंह के शीशमहल से बाहर निकल रहा था तो उनके एक ऐयार ने मुझे देख लिया था। मैं मुश्किल से निकल भागा और यह सोचे हुए था कि यदि मैं पुस्तक फिर वहीं रख आऊँगा तो फिर मेरी खोज न होगी, मगर हाय, यहाँ तो कोई दूसरा ही रंग निकला।

मैं : आपने उस पुस्तक को पढ़ा भी था ?

बाप (आँखों में आँसू भरकर) उसका पहला पृष्ठ देख सका था, जिसमें इतना ही लिखा था कि जिसके कब्जे में यह पुस्तक रहेगी उसे तिलिस्मी आदमियों के हाथ से दुःख नहीं पहुँच सकता। जो हो, परन्तु अब इन सब बातों का समय नहीं है, यदि हो सके तो उस औरत के हाथ से किताब ले लेना चाहिए, उठो और मेरे साथ चलो।

इतना कहकर मेरा बाप उठा और मकान के अन्दर चला, मैं भी उसके पीछे-पीछे था। अन्दर से मकान का दरवाजा बन्द कर लिया गया, मगर जब मेरा बाप ऊपर के कमरे में जाने लगा, जहाँ मेरी माँ रहा करती थी तो मुझे सीढ़ी के नीचे खड़ा कर गया और कहता गया कि देखो जब मैं पुकारूँ तो तुरत चले आना।

घण्टे-भर तक मैं खड़ा रहा। इसके बाद छत पर धमधमाहट मालूम होने लगी, मानो कई आदमी आपस में लड़ रहे हैं। अब मुझसे रहा न गया, हाथ में खंजर लेकर मैं ऊपर चढ़ गया और बेधड़क उस कमरे में घुस गया, जिसमें मेरा बाप था। इस समय धमधमाहट की आवाज बन्द हो गयी थी और कमरे के अन्दर सन्नाटा था। भीतर की अवस्था देखकर मैं घबड़ा गया। वह औरत जो मेरी माँ बनी हुई थी, वहाँ न थी। मेरा बाप जमीन पर पड़ा हुआ था, और उसके बदन से खून बह रहा था। मैं घबड़ाकर उसके पास गया और देखा कि वह बेहोश पड़ा है और उसके सर और बायें हाथ में तलवार की गहरी चोट लगी हुई है, जिसमें से अभी तक खून निकल रहा है। मैंने अपनी धोती फाड़ी और पानी से जख्म धोकर बाँधने के बाद बाप

को होश में लाने की फिक्र करने लगा। थोड़ी देर बाद वह होश में आया और उठ बैठा।

मैं : मुझे ताज्जुब है कि एक औरत के हाथ से आप चोट खा गये !

बाप : केवल औरत ही न थी, यहाँ आने पर मैंने कई आदमी देखे, जिनके सबब से यहाँ तक नौबत आ पहुँची। अफसोस, वह किताब हाथ न लगी और मेरी जिन्दगी मुफ्त में बर्बाद हुई !

मैं : ताज्जुब है कि इस मकान में लोग किस राह से आकर अपना काम कर जाते हैं, पहिले भी कई दफे यह बात देखने में आयी !

बाप : खैर, जो हुआ सो हुआ, अब मैं जाता हूँ गुमनाम रहकर अपने किये का फल भोगूँगा, यदि वह किताब हाथ लग गयी और अपने माथे से बदनामी का टीका मिटा सका तो फिर तुमसे मिलूँगा, नहीं तो हरि-इच्छा। तुम इस मकान को मत छोड़ना और जोकुछ देख-सुन चुके हो, उसका पता लगाना। तुम्हारे घर में जोकुछ दौलत है, उसे हिफाजत से रखना और होशियारी से रहकर गुजारा करना तथा बन पड़े तो अपनी माँ का भी पता लगाना।

बाप की बातें सुनकर मेरी अजब हालत हो गयी, दिल धड़कने लगा, गला भर आया, आँसुओं ने आँखों के आगे पर्दा डाल दिया। मैं बहुत कुछ कहा चाहता था, मगर कह न सका। मेरे बाप ने देखते-देखते मकान के बाहर निकलकर न मालूम किधर का रास्ता लिया। उस समय मेरे हिसाब से दुनिया उजड़ गयी थी और मैं विना माँ-बाप के, मुर्दे से भी बदतर हो रहा था। मेरे घर में जो उपद्रव हुआ था, उसका कुछ हाल नौकरों और लौंडियों को मालूम हो चुका था, मगर मेरे समझाने से उन लोगों ने छिपा लिया और बड़ी कठिनाई से मैं उस मकान में रहने और बीती हुई बातों का पता लगाने लगा।

प्रतिदिन आधी रात के समय मैं ऐयारी के सामान से दुरुस्त होकर उस समाधि के पास जाया करता, जहाँ पहिले दिन उस आदमी के पीछे-पीछे गया था, जो मेरी माँ को चुराकर ले गया था। अब यहाँ से मैं अपने किस्से को बहुत ही संक्षेप में कहा चाहता हूँ, क्योंकि समय बहुत कम है।

एक दिन आधी रात के समय उसी समाधि के पास एक इमली के पेड़ पर चढ़कर मैं बैठा हुआ था और अपनी बदकिस्मती पर रो रहा था कि इतने में उस समाधि के अन्दर से एक आदमी निकला और पूरब की तरफ रवाना हुआ। मैं झटपट पेड़ से उतरा और पैर दबाता हुआ, उसके पीछे-पीछे जाने लगा, इसलिए उसे मेरे आने की आहट कुछ भी मालूम न हुई। उस आदमी के हाथ में एक कपड़े का लिफाफा था। उस लिफाफे की सूरत

ठीक उस खलीते की तरह थी, जैसा प्रायः राजे और बड़े जमींदार लोग राजों-महाराजों के यहाँ चीठी भेजते समय लिफाफे की जगह काम में लाते हैं। यकायक मेरे जी में आया कि किसी तरह यह लिफाफा इसके हाथ से ले लेना चाहिए, इससे मेरा मतलब कुछ-न-कुछ जरूर निकलेगा।

वह लिफाफा अँधेरी रात के सबब मुझे दिखायी न देता, मगर राह चलते-चलते वह एक ऐसी दूकान के पास से होकर निकला, जो बाँस की जाफरीदार टट्टी से बन्द थी, मगर भीतर जलते हुए चिराग की रोशनी बाहर सड़क पर आने-जानेवाले के ऊपर बखूबी पड़ती थी। उसी रोशनी ने मुझे दिखा दिया कि इसके हाथ में एक लिफाफा या खलीता मौजूद है। मैंने उसके हाथ से किसी तरह लिफाफा ले लेने के बारे में अपनी राय पक्की कर ली और कदम बढ़ाकर, उसके पास जा पहुँचा। मैंने उसे धोखे में इस जोर से धक्का दिया कि वह किसी तरह सम्हल न सका और मुँह के बल जमीन पर गिर पड़ा। लिफाफा उसके हाथ से छटककर दूर जा रहा, जिसे मैंने फुर्ती से उठा लिया और वहाँ से भागा। जहाँ तक हो सका मैंने भागने में तेजी की। मुझे मालूम हुआ कि वह आदमी भी उठकर मुझे पकड़ने के लिए दौड़ा पर मुझे पा न सका। गलियों में घूमता और दौड़ता हुआ मैं अपने घर पहुँचा और दरवाजे पर खड़ा होकर दम लेने लगा। उस समय मेरे दरवाजे पर रामधनीसिंह नामी मेरा एक सिपाही पहरा दे रहा था। यह सिपाही नाटे कद का बहुत मजबूत और चालाक था, थोड़े ही दिनों से चौकीदारी के काम पर मेरे बाप ने इसे नौकर रक्खा था।

मुझे उम्मीद थी कि रामधनीसिंह दौड़ते हुए आने का कारण मुझसे पूछेगा, मगर उसने कुछ भी न पूछा। दरवाजा खुलवाकर मैं मकान के अन्दर गया और दरवाजा बन्द करके अपने कमरे में पहुँचा। शमादान अभी तक जल रहा था। उस लिफाफे को खोलने के लिए मेरा जी बेचैन हो रहा था, आखिर शमादान के पास जाकर लिफाफा खोला। उस लिफाफे में एक चीठी और लोहे की एक ताली थी। वह ताली विचित्र ढंग की थी, उसमें छोटे-छोटे कई छेद और पत्तियाँ बनी हुई थीं, वह ताली जेब में रख लेने के बाद मैं चीठी पढ़ने लगा, यह लिखा हुआ था—"श्री 108 मनोरमाजी का सेवा में,—

महीनों की मेहनत आज सफल हुई। जिस काम पर आपने मुझे तैनात किया था वह ईश्वर की कृपा से पूरा हुआ। रिक्तगन्थ मेरे हाथ लगा। आपने लिखा था—'कि हारीत* सप्ताह में मैं रोहतासगढ़ के तिलिस्मी

---

*ऐयारी भाषा में 'हारीत' देवीपूजा को कहते हैं।

तहखाने में रहूँगी, इस बीच में यदि रिक्तगन्थ (खून से लिखी हुई किताब) मिल जाय तो उसी तहखाने के बलिमण्डप में मुझसे मिलकर मुझे देना'। आज्ञानुसार रोहतासगढ़ के तहखाने में गया, परन्तु आप न मिलीं। रिक्त-गन्थ लेकर लौटने की हिम्मत न पड़ी, क्योंकि तेजसिंह की गुप्त अमलदारी तहखाने में हो चुकी थी और उनके साथी ऐयार लोग चारों तरफ ऊधम मचा रहे थे। मैंने यह सोचकर कि यहाँ से निकलते समय शायद किसी ऐयार के पाले पड़ जाऊँ और यह रिक्तगन्थ छिन जाय तो मुश्किल होगी, रिक्तगन्थ को चौबीस नम्बर की कोठरी में, जिसकी ताली आपने मुझे दे रक्खी थी रख दिया और खाली हाथ बाहर निकल आया। ईश्वर की कृपा से किसी ऐयार से मुलाकात न हुई, परन्तु दस्त की बीमारी ने मुझे बेकार कर दिया, मैं आपके पास आने लायक न रहा, लाचार अपने एक दोस्त के हाथ जिससे अचानक मुलाकात हो गयी यह ताली आपके पास भेजता हूँ। मुझे उम्मीद है कि वह आदमी चौबीस नम्बर की कोठरी को कदापि नहीं खोल सकता, जिसके पास यह ताली न हो, अस्तु, अब आपको जब समय मिले रिक्तगन्थ मँगवा लीजियेगा और बाकी हाल पत्र ले जानेवाले के मुँह से सुनियेगा। मुझमें अब कुछ लिखने की ताकत नहीं, बस अब साधोराम की इस दुनिया में रहने की आशा नहीं, अब साधोराम आपके चरणों को नहीं देख सकता। यदि आराम हुआ तो पटने से होता हुआ सेवा में उपस्थित होऊँगा, यदि ऐसा न हुआ तो समझ लीजियेगा कि साधोराम नहीं रहा। इस पत्र को पाते ही नानक की माँ को निपटा दीजियेगा।

आपका—साधोराम।"

इस चीठी के पाते ही मेरे दिल की मुरझायी कली खिल गयी। निश्चय हो गया कि मेरी माँ अभी जीती है, यदि वह चीठी ठिकाने पहुँच जाती तो उस बेचारी का बचना मुश्किल था। अब मैं यह सोचने लगा कि जिसके हाथ से यह चीठी मैंने ली है, वह साधोराम था या उसका कोई मित्र! परन्तु मेरी विचार-शक्ति ने तुरन्त ही उत्तर दिया कि नहीं वह साधोराम नहीं था, यदि वह होता तो अपने लिखे अनुसार उस सड़क से आता, जो पटने की तरफ से आती है। साधोराम के मरने का दूसरा सबूत यह भी है कि यह चीठी और ताली काले खलीते (कपड़े के लिफाफे) के अन्दर है।

चीठी के ऊपर मनोरमा का नाम लिखा था, इससे निश्चय हो गया कि यह बिल्कुल बखेड़ा मनोरमा ही का मचाया हुआ है। मैं मनोरमा को अच्छी तरह जानता था। त्रिलोचनेश्वर महादेव के पास उसका आलीशान मकान देखने से यही मालूम होता था कि वह किसी राजा की लड़की होगी मगर

ऐसा नहीं था, हाँ, उसका खर्च हद से ज्यादे बढ़ा हुआ था और आमदनी का ठिकाना कुछ मालूम नहीं होता था। दूसरी बात यह कि वह प्रचलित रीति पर ध्यान न देकर बेपर्द खुले आम पालकी ताम-झाम और कभी-कभी घोड़े पर सवार होकर बड़े ठाठ से घूमा करती और इसीलिए काशी के छोटे-बड़े सभी मनुष्य उसे पहिचानते थे। उस चीठी के पढ़ने से मुझे विश्वास हो गया कि मनोरमा जरूर तिलिस्म से कुछ सम्बन्ध रखती है और मेरी माँ उसी के कब्जे में है।

इस सोच में कि किस तरह अपनी माँ को छुड़ाना और रिक्तगन्थ पर कब्जा करना चाहिए, कई दिन गुजर गये और इस बीच में उस ताली को मैं अपने मकान के बाहर किसी दूसरे ठिकाने हिफाजत से रख आया।

यहाँ तक अपना हाल कहकर नानक चुप हो रहा और झुककर बाहर की तरफ देखने लगा।

तेज : हाँ हाँ, कहो फिर क्या हुआ! तुम्हारा हाल बड़ा ही दिलचस्प है, बिल्कुल बातें हमारे ही सम्बन्ध की हैं।

नानक : ठीक है, परन्तु अफसोस, इस समय मैं जो कुछ आपसे कह रहा हूँ उससे मेरे बाप का कसूर और···

तेज : मैं समझ गया जो कुछ तुम कहा चाहते हो, मगर मैं सच्चे दिल से कहता हूँ कि यद्यपि तुम्हारे बाप ने भारी जुर्म किया है और उसके विषय में हमारे तरफ से विज्ञापन दिया गया है कि जो कोई रिक्तगन्थ के चोर को गिरफ्तार करेगा, उसे मुँहमाँगा इनाम दिया जायगा, तथापि तुम्हारे इस किस्से को सुनकर, जिसे तुम सचाई के साथ कह रहे हो, मैं वादा करता हूँ कि उसका कसूर माफ कर दिया जायगा और तुम जोकुछ नेकी हमारे साथ किया चाहते हो, या करोगे, उसके लिए धन्यवाद के साथ पूरा-पूरा इनाम दिया जायगा। मैं समझता हूँ कि तुम्हें अपना किस्सा अभी बहुत कुछ कहना है और इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि जोकुछ तुम कहोगे मेरे मतलब की बात होगी, परन्तु इस बात का जवाब मैं सबसे पहिले सुना चाहता हूँ कि वह रिक्तगन्थ तुम्हारे कब्जे में है या नहीं? अथवा हम लोग उसके पाने की आशा कर सकते हैं या नहीं?

इसके पहिले कि तेजसिंह की आखिरी बात का कुछ जवाब नानक दे, बाहर से यह आवाज आयी—"यद्यपि रिक्तगन्थ नानक के कब्जे में अब नहीं है, तथापि तुम उसे उस अवस्था में पा सकते हो, जब अपने को उसके पाने योग्य साबित करो!" इसके बाद खिलखिलाकर हँसने की आवाज आयी।

इस आवाज ने दोनों ही को परेशान कर दिया, दोनों ही को दुश्मन का

शक हुआ। नानक ने सोचा कि शायद मायारानी का कोई ऐयार आ गया और उसने छिपकर मेरा किस्सा सुन लिया, अब यहाँ से निकलना या जान बचाकर भागना बहुत मुश्किल है, तेजसिंह को भी यह निश्चय हो गया कि नानक द्वारा जोकुछ भलाई की आशा हुई थी, अब निराशा के साथ बदल गयी।

दोनों ऐयार उसे ढूँढ़ने के लिए उठे, जिसकी आवाज ने यकायक उन दोनों को चौंका और होशियार कर दिया था। दो कदम भी आगे न बढ़े थे कि फिर आवाज आयी, "क्यों कष्ट करते हो, मैं स्वयं तुम्हारे पास आता हूँ।" साथ ही इसके एक आदमी इन दोनों की तरफ आता हुआ दिखायी पड़ा। जब यह पास पहुँचा तो बोला, "ऐ तेजसिंह और नानक, तुम दोनों मुझे अच्छी तरह देख और पहिचान लो, मैं तुमसे कई दफे मिलूंगा, देखो भूलना मत।"

तेजसिंह और नानक ने उस आदमी को अच्छी तरह देखा। उसका कद नाटा और रंग साँवला था। घनी और स्याह दाढ़ी और मूँछों ने उसका आधा चेहरा छिपा रक्खा था। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी मगर बहुत ही सुर्ख और चमकीली थीं, हाथ-पैर से मजबूत और फुर्तीला जान पड़ता था। माथे पर सफेद चार अंगुल जगह घेरे हुए रामानन्दी तिलक था, जिस पर देखनेवाले की निगाह सबसे पहिले पड़ सकती थी, परन्तु ऐसी अवस्था होने पर भी उसका चेहरा नमकीन और खूबसूरत था तथा देखनेवाले का दिल उसकी तरफ खिच जाना कोई ताज्जुब न था। उसकी पोशाक बेशकीमत और चुस्त मगर कुछ भूंडी थी। स्याह पायजामा, सुर्ख अंगा, जिसमें बड़े-बड़े कई जेब किसी चीज से भरे हुए थे, और सब्ज रंग के मुँड़ासे की तरफ ध्यान देने से हँसी आती थी, एक खंजर बगल में और दूसरा हाथ में लिये हुए था।

तेजसिंह ने बड़े गौर से उसे देखा और पूछा, "क्या तुम अपना नाम बता सकते हो?" जिसके जवाब में उसने कहा, "नहीं, मगर चण्डूल के नाम से आप मुझे बुला सकते हैं।"

तेज : जहाँ तक मैं समझता हूँ, आप इस नाम के योग्य नहीं हैं।

चण्डूल : चाहे न हों।

तेज : खैर, यह भी कह सकते हो कि तुम्हारा आना यहाँ क्यों हुआ?

चण्डूल : इसलिए कि तुम दोनों को होशियार कर दूं कि कल शाम के वक्त आठ आदमियों के खून से इस बाग की क्यारियाँ रँगी जाँयगी जो फँसकर यहाँ आ चुके हैं।

तेज : क्या उनके नाम भी बता सकते हो?

चण्डूल : हाँ, सुनो—राजा बीरेन्द्रसिंह एक, रानी चन्द्रकान्ता दो, इन्द्रजीतसिंह तीन, आनन्दसिंह चार, किशोरी पाँच, कामिनी छः, तेजसिंह सात, नानक आठ।

तेजसिंह : (घबड़ाकर) यह तो मैं जानता हूँ कि दोनों कुमार और उनके ऐयार मायारानी के फन्दे में फँसकर यहाँ आ चुके हैं, मगर राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता तो···

चण्डूल : हाँ हाँ, वे दोनों भी फँसकर यहाँ आ चुके हैं, पूछो नानक से !

नानक : (तेजसिंह की तरफ देखकर) हाँ, ठीक है, अपना किस्सा कहने के बाद राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता का हाल मैं आपसे कहने ही वाला था, मगर मुझे यह बात अच्छी तरह मालूम नहीं है कि वे लोग क्योंकर मायारानी के फन्दे में फँसे !

चण्डूल : (नानक से) अब विशेष बातों का मौका नहीं है, तेजसिंह से जोकुछ करते बनेगा कर लेंगे, मैं इस समय तुम्हारे लिए आया हूँ, आओ और मेरे साथ चलो।

नानक : मैं तुम पर विश्वास करके तुम्हारे साथ क्योंकर चल सकता हूँ?

चण्डूल : (कड़ी निगाह से नानक की तरफ देखके और हुकूमत के साथ) लुच्चा कहीं का ! अच्छा सुन, एक बात मैं तेरे कान में कहा चाहता हूँ।

इतना कहकर चण्डूल चार-पाँच कदम पीछे हट गया। उसकी डपट और बात ने नानक के दिल पर कुछ ऐसा असर किया कि वह अपने को उसके पास जाने से रोक न सका। नानक चण्डूल के पास गया मगर अपने को हर तरह सम्हाले और अपना दाहिना हाथ खंजर के कब्जे पर रक्खे हुए था। चण्डूल ने झुककर नानक के कान में कुछ कहा, जिसे सुनते ही नानक दो कदम पीछे हट गया और बड़े गौर से उसकी सूरत देखने लगा। थोड़ी देर तक यही अवस्था रही, इसके बाद नानक ने तेजसिंह की तरफ देखा और कहा, "माफ कीजियेगा, लाचार होकर मुझे इनके साथ जाना ही पड़ा, अब मैं बिल्कुल इनके कब्जे में हूँ यहाँ तक कि मेरी जान भी इनके हाथ में है।" इसके बाद नानक ने कुछ न कहा। वह चण्डूल के साथ चला गया और पेड़ों की आड़ में घूम-फिरकर देखते-देखते नजरों से गायब हो गया।

अब तेजसिंह फिर अकेले पड़ गये। तरह-तरह के खयालों ने चारों तरफ से आकर उन्हें घेर लिया। नानक की जुबानी जोकुछ उन्होंने सुना था, उससे बहुत-सी भेद की बातें मालूम हुई थीं और अभी बहुतकुछ मालूम होने की आशा थी, परन्तु नानक अपना किस्सा पूरा कहने भी न पाया था कि

इस चण्डूल ने आकर दूसरा ही रंग मचा दिया, जिससे तरद्दुद और घबराहट सौगुनी ज्यादे बढ़ गयी। बिछावन पर पड़े-पड़े वे तरह-तरह की बातें सोचने लगे।

'नानक की बातों से विश्वास होता है कि उसने अपना हाल जोकुछ कहा, सही-सही कहा, मगर उसके किस्से में कोई ऐसा पात्र नहीं आया, जिसके बारे में चण्डूल होने का अनुमान किया जाय। फिर यह चण्डूल कौन है, जिसकी थोड़ी-सी बात से जो उसने झुककर नानक के कान में कही, नानक घबड़ा गया और उसके साथ जाने पर मजबूर हो गया! हाय यह कैसी भयानक खबर सुनने में आयी कि अब शीघ्र ही राजा बीरेन्द्रसिंह, रानी चन्द्रकान्ता तथा दोनों कुमार और ऐयार लोग इस बाग में मारे जायँगे। बेचारे राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता के बारे में भी अब ऐसी बातें! ···ओफ न मालूम अब ईश्वर क्या किया चाहता है! मगर हिम्मत न हारनी चाहिए, आदमी की हिम्मत और बुद्धि की जाँच ऐसी ही अवस्था में होती है। ऐयारी का बटुआ और खंजर अभी मेरे पास मौजूद है, कोई-न-कोई उद्योग करना चाहिए, और वह भी जहाँ तक हो सके शीघ्रता के साथ।'

इन्हीं सब विचारों और गम्भीर चिन्ताओं में तेजसिंह डूबे हुए थे और सोच रहे थे कि अब क्या करना उचित है कि इतने ही में सामने से आती हुई मायारानी दिखायी पड़ी। इस समय वह असली बिहारीसिंह (जिसकी सूरत तेजसिंह ने बदल दी थी और अभी तक खुद जिसकी सूरत में थे) और हरनामसिंह तथा और भी कई ऐयारों और लौंडियों से घिरी हुई थी। इस समय सवेरा अच्छी तरह हो चुका था और सूर्य की लालिमा ऊँचे-ऊंचे पेड़ों की डालियों पर फैल चुकी थी।

मायारानी तेजसिंह के पास आयी और असली बिहारीसिंह ने आगे बढ़कर तेजसिंह से कहा, "धर्मावतार बिहारीसिंहजी, मिजाज दुरुस्त है या अभी तक आप पागल ही हैं?"

तेज : अब मुझे बिहारीसिंह कहकर पुकारने की आवश्यकता नहीं क्योंकि आप जान ही गये हैं कि यह पागल असल में राजा बीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार है और अब आपको यह जानकर हद्द दर्जे की खुशी होगी कि यह पागल बिहारीसिंह वास्तव में ऐयारों के गुरुघण्टाल तेजसिंह हैं, जिनकी बढ़ी हुई हिम्मतों का मुकाबला करनेवाला इस दुनिया में कोई नहीं है और जो इस कैद की अवस्था में भी अपनी हिम्मत और बहादुरी का दावा करके कुछ कर गुजरने की नीयत रखता है।

बिहारी : ठीक है, मगर अब आप ऐयारों के गुरुघण्टाल की पदवी नहीं रख सकते, क्योंकि आपकी अनमोल ऐयारी यहाँ मिट्टी में मिल गयी और

अब शीघ्र ही हथकड़ी-बेड़ी भी आपके नजर की जायगी।

तेज : अगर तुम मेरी ऐयारी चौपट कर चुके थे तो ऐयारी का बटुआ और खंजर भी ले लिये होते ! यह गुरुघण्टाल ही का काम था कि पागल होने पर भी ऐयारी का बटुआ और खंजर किसी के हाथ में जाने न दिया। बाकी रही बेड़ी सो मेरा चरण कोई छू नहीं सकता, जब तक हाथ में खंजर मौजूद है ! (हाथ में खंजर लेकर और दिखाकर) वह कौन-सा हाथ है, जो हथकड़ी लेकर इसके सामने आने की हिम्मत रखता है।

बिहारी : मालूम होता है कि इस समय तुम्हारी आँखें केवल मुझी को देख रही हैं, उन लोगों को नहीं देखतीं जो मेरे साथ हैं अतएव सिद्ध हो गया कि तुम पागल होने के साथ-साथ अन्धे भी हो गये, नहीं तो···

बिहारीसिंह की बात पूरी न हुई थी कि बगल की एक कोठरी का दरवाजा खुला और वही चण्डूल फुर्ती के साथ निकलकर सभों के बीच में आ खड़ा हुआ, जिसे देखते ही मायारानी और उसके साथियों की हैरानी का कोई ठिकाना न रहा। केवल इतना ही नहीं, बल्कि यह भी मालूम हुआ कि उस कोठरी में और भी कई आदमी हैं, जिसके अन्दर से चण्डूल निकला था, क्योंकि उस कोठरी का दरवाजा चण्डूल ने खुला ही छोड़ दिया था और उसके अन्दर के आदमी कुछ-कुछ दिखायी पड़ रहे थे।

चण्डूल : (मायारानी और उसके साथियों की तरफ़ देखकर) यह कहने की कोई जरूरत नहीं कि मैं कौन हूँ, हाँ,अपने आने का सबब जरूर कहूँगा। मुझे एक लौंडी और एक गुलाम की जरूरत है, कहो तुम लोगों में से किसे चुनूँ ? (मायारानी की तरफ इशारा करके) मैं समझता हूँ कि इसी को अपनी लौंडी बनाऊँ, और (बिहारीसिंह की तरफ इशारा करके) इसे गुलाम की पदवी दूँ।

बिहारी : तू कौन है, जो इस बेअदबी के साथ बातें कर रहा है ? (मायारानी की तरफ इशारा करके) तू जानता नहीं कि ये कौन हैं ?

चण्डूल : (हँसकर) मेरी शान में चाहे कोई कैसी ही कड़ी बात कहे, मगर मुझे क्रोध नहीं आता, क्योंकि मैं जानता हूँ कि सिवा ईश्वर के कोई दूसरा मुझसे बड़ा नहीं है, और मेरे सामने खड़ा होकर जो बातें कर रहा है वह तो गुलाम के बराबर भी हैसियत नहीं रखता ! मैं क्या जानूँ कि (मायारानी की तरफ इशारा करके) यह कौन है ? हाँ, यदि मेरा हाल जानना चाहते हो तो मेरे पास आओ और कान में सुनो कि मैं क्या कहता हूँ।

बिहारी : हम ऐसे बेवकूफ नहीं हैं कि तुम्हारे चकमे में आ जावें।

चण्डूल : क्या तू समझता है कि मैं उस समय तुझ पर वार करूँगा, जब

तू कान झुकाये हुए मेरे पास आकर खड़ा होगा ?

बिहारी : बेशक ऐसा ही है।

चण्डूल : नहीं नहीं, यह काम हमारे ऐसे बहादुरों का नहीं है, अगर डरता है तो किनारे चल, मैं दूर ही से जोकुछ कहना है, कह दूं, जिसमें कोई दूसरा न सुने !

बिहारी : (कुछ सोचकर) ओफ, मैं तुझ ऐसे कमजोर से डरनेवाला नहीं, कह क्या कहता है।

यह कहकर बिहारीसिंह उसके पास गया और झुककर सुनने लगा कि यह क्या कहता है।

न मालूम चण्डूल ने बिहारीसिंह के कान में क्या कहा, न मालूम उन शब्दों में कितना असर था, न मालूम वह बात कैसे-कैसे भेदों से भरी हुई थी, जिसने बिहारीसिंह को अपने आपे से बाहर कर दिया। वह घबड़ाकर चण्डूल को देखने लगा, उसके चेहरे का रंग जर्द हो गया और बदन में थर-थराहट पैदा हो गयी।

चण्डूल : क्यों अगर अच्छी तरह न सुन सका हो तो जोर से पुकारके कहूँ, जिसमें और लोग भी सुन लें।

बिहारी : (हाथ जोड़कर) बस बस, क्षमा कीजिए, मैं आशा करता हूँ कि आप अब दोहराकर उन शब्दों को श्रीमुख से न निकालेंगे, मुझे यह जानने की भी आवश्यकता नहीं कि आप कौन हैं, चाहे जो भी हों।

माया : (बिहारी से) उसने तुम्हारे कान में क्या कहा, जिससे तुम घबड़ा गये ?

बिहारी : (हाथ जोड़कर) माफ कीजिए, मैं इस विषय में कुछ भी नहीं कह सकता।

माया : (कड़ी आवाज में) क्या मैं वह बात सुनने योग्य नहीं हूँ ?

बिहारी : कह तो चुका कि उन शब्दों को अपने मुँह से नहीं निकाल सकता।

माया : (आँखें लाल करके) क्या तुझे अपनी ऐयारी पर घमण्ड हो गया ? क्या तू अपने को भूल गया या इस बात को भूल गया कि मैं क्या कर सकती हूँ और मुझमें कितनी ताकत है ?

बिहारी : मैं आपको और अपने को खूब जानता हूँ, मगर इस विषय में कुछ नहीं कह सकता। आप व्यर्थ खफा होती हैं, इसमें कोई काम न निकलेगा।

माया : मालूम हो गया कि तू भी असली बिहारीसिंह नहीं है। खैर, क्या हर्ज है, समझ लूंगी ! (चण्डूल की तरफ देखके) क्या तू भी दूसरे को

वह बात नहीं कह सकता ?

चण्डूल : जो कोई मेरे पास आवेगा, उसके कान में मैं कुछ कहूँगा, मगर इसका वादा नहीं कर सकता कि वही बात कहूँगा या हरएक को नयी-नयी बात का मजा चखाऊँगा।

माया : क्या यह भी नहीं कह सकता कि तू कौन है और इस बाग में किस राह से आया है ?

चण्डूल : मेरा नाम चण्डूल है, आने के विषय में तो केवल इतना ही कह देना काफी है कि मैं सर्वव्यापी हूँ, जहाँ चाहूँ पहुँच सकता हूँ, हाँ, कोई नयी बात सुना चाहती हो तो मेरे पास आओ और सुनो।

हरनाम : (मायारानी से) पहिले मुझे उसके पास जाने दीजिए, (चण्डूल के पास जाकर) अच्छा लो कहो क्या कहते हो ?

चण्डूल ने हरनामसिंह के कान में भी कोई बात कही। उस समय हरनामसिंह चण्डूल की तरफ कान झुकाये जमीन को देख रहा था। चण्डूल कान में कुछ कहके दो कदम पीछे हट गया, मगर हरनामसिंह ज्यों-का-त्यों झुका हुआ खड़ा ही रह गया। यदि उस समय, उसे कोई नया आदमी देखता तो यही समझता कि यह पत्थर का पुतला है। मायारानी को बड़ा ही आश्चर्य हुआ, कई सायत बीत जाने पर भी जब हरनामसिंह वहाँ से न हिला तो उसने पुकारा, "हरनाम !" उस समय वह चौंका और चारों तरफ देखने लगा, जब चण्डूल पर निगाह पड़ी तो मुँह फेर लिया और बिहारीसिंह के पास जा सिर पर हाथ रखकर बैठ गया।

माया : हरनाम, क्या तू भी बिहारी का साथी हो गया ? वह बात मुझसे न कहेगा जो अभी तूने सुनी है ?

हरनाम : मैं इसी वास्ते यहाँ आ बैठा हूँ कि आखिर तुम रंज होकर मेरा सिर काट लेने का हुक्म दोगी ही क्योंकि तुम्हारा मिजाज बड़ा क्रोधी है, मगर लाचार हूँ, मैं वह बात कदापि नहीं कह सकता।

माया : मालूम होता है कि यह आदमी कोई जादूगर है, अस्तु, मैं हुक्म देती हूँ कि यह फौरन गिरफ्तार किया जाय !

चण्डूल : गिरफ्तार होने के लिए तो मैं आया ही हूँ, कष्ट उठाने की क्या आवश्यकता है ? लीजिए स्वयं मैं आपके पास आता हूँ, हथकड़ी-बेड़ी कहाँ है, लाइए !

इतना कहकर चण्डूल तेजी के साथ मायारानी के पास गया और जब तक वह अपने को सम्हाले झुककर उसके कान में न मालूम क्या कह दिया कि उसकी अवस्था बिल्कुल ही बदल गयी। बिहारीसिंह और हरनामसिंह तो बात सुनने के बाद इस लायक भी रहे थे कि किसी की बात सुनें और

उसका जवाब दें, मगर मायारानी इस लायक भी न रही। उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गयी तथा वह घूमकर जमीन पर गिर पड़ी और बेहोश हो गयी। बिहारीसिंह और हरनामसिंह को छोड़कर बाकी जितने आदमी उसके साथ आये थे, सभों में खलबली मच गयी और सभों को इस बात का डर बैठ गया कि चण्डूल उनके कान में भी कोई ऐसी बात न कह दे, जिससे माया-रानी की-सी अवस्था हो जाय।

घण्टा-भर बीत गया पर मायारानी होश में न आयीं। चण्डूल, तेजसिंह के पास गया और उनके कान में भी कोई बात कही, जिसके जवाब में तेज-सिंह ने केवल इतना ही कहा, "मैं तैयार हूँ!"

तेजसिंह का हाथ पकड़े हुए चण्डूल उसी कोठरी में चला गया, जिसमें से बाहर निकला था। अन्दर जाने बाद दरवाजा बखूबी बन्द कर लिया। मायारानी के साथियों में से किसी की भी हिम्मत न पड़ी कि चण्डूल को या तेजसिंह को जाने से रोके। जिस समय चण्डूल यकायक कोठरी का दरवाजा खोलकर बाहर निकला था, उस समय मालूम होता था कि उस कोठरी के अन्दर और भी कई आदमी हैं, मगर उस समय तेजसिंह ने वहाँ सिवाय अपने और चण्डूल के और किसी को भी न पाया। उधर मायारानी जब होश में आयी तो बिहारीसिंह, हरनामसिंह तथा अपने और साथियों को लेकर खास महल में चली गयी। उसके दोनों ऐयार बिहारीसिंह और हरनामसिंह अपने मालिक के वैसे ही ताबेदार और खैरखाह बने रहे, जैसे थे, मगर चण्डूल की कही हुई बात वे दोनों अपने मुँह से कभी भी निकाल नहीं सकते थे। जब-जब चण्डूल का ध्यान आता बदन के रोंगटे खड़े हो जाते थे और ठीक यही अवस्था मायारानी की भी थी। मायारानी को यह भी निश्चय हो गया कि चण्डूल नकली बिहारीसिंह अर्थात् तेजसिंह को छुड़ा ले गया।

चौथा बयान

शाम का वक्त है। सूर्य भगवान अस्त हो चुके हैं, तथापि पश्चिम तरफ आसमान पर कुछ-कुछ लाली अभी तक दिखायी दे रही है। ठण्डी हवा मन्द गति से चल रही है। गरमी तो नहीं मालूम होती लेकिन इस समय की हवा बदन में कँपकँपी भी पैदा नहीं कर सकती। हम इस समय आपको एक ऐसे मैदान की तरफ ध्यान देने के लिए कहते हैं, जिसकी लम्बाई और चौड़ाई का अन्दाज करना कठिन है। जिधर निगाह दौड़ाइए सन्नाटा नजर आता है, कोई पेड़ भी ऐसा नहीं है जिसके पीछे या जिस पर चढ़कर कोई

आदमी अपने को छिपा सके, हाँ, पूरब तरफ निगाह कुछ ठोकर खाती है और एक धुंधली चीज को देखकर गौर करनेवाला कह सकता है कि उस तरफ शायद कोई छोटी-सी पहाड़ी या पुराने जमाने का कोई ऊँचा टीला है।

ऐसे मैदान में तीन औरतें घोड़ियों पर सवार धीरे-धीरे उस तरफ जा रही हैं जिधर उस टीले या छोटी पहाड़ी की स्याही मालूम हो रही है। यद्यपि उन औरतों की पोशाक जनाना वजः की है, मगर फिर भी चुस्त और दक्षिणी ढंग की है। तीनों के चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है तथापि बदन की सुडौली और कलाई तथा नाजुक उँगलियों पर ध्यान देने से देखनेवाले के दिल में यह बात जरूर पैदा होगी कि ये तीनों ही नाजुक, नौजवान और खूबसूरत हैं। इन औरतों के विषय में हम अपने पाठकों को ज्यादा देर तक खुटके में न डालकर, इसी समय इनका परिचय दे देना उत्तम समझते हैं। वह देखिए ऊँची और मुश्की घोड़ी पर जो सवार है वह मायारानी है, चोगर आँखोंवाली सुफेद पचकल्यान घोड़ी पर जो पटरी जमाये है, वह उसकी छोटी बहिन लाडिली है, जिसे अभी तक हम रामभोली के नाम से लिखते चले आये हैं और सब्जी घोड़ी पर सवार चारों तरफ निगाह दौड़ा-दौड़ाकर देखनेवाली धनपति है। ये तीनों आपुस में धीरे-धीरे बातें करती जा रही हैं। लीजिए तीनों ने अपने चेहरों पर से नकाबें उलट दीं, अब हमें इन तीनों की बातों पर ध्यान देना उचित है।

माया : न मालूम, वह चण्डूल कमबख्त तीसरे नम्बर के बाग में क्योंकर जा पहुँचा ! इसमें तो कुछ सन्देह नहीं कि जिस राह से हम लोग आते-जाते हैं, उस राह से वह नहीं गया था।

लाडिली : तिलिस्म बनानेवालों ने वहाँ पहुँचने के लिए और कई रास्ते बनाये हैं, शायद उन्हीं रास्तों में से कोई रास्ता उसे मालूम हो गया हो।

धनपति : मगर उन रास्तों का हाल किसी दूसरे को मालूम हो जाना तो बड़ी भयानक बात है।

माया : और यह एक ताज्जुब की बात है कि उन रास्तों का हाल जब मुझको, जो तिलिस्म की रानी कहलाती हूँ, नहीं मालूम तो किसी दूसरे को कैसे मालूम हुआ !!

लाडिली : ठीक है, तिलिस्म की बहुत-सी बातें ऐसी हैं, जो तुम्हें मालूम हैं, मगर नियमानुसार तुम मुझसे भी नहीं कह सकती हो, हाँ, उन रास्तों

का हाल जीजाजी* को जरूर मालूम था। अफसोस, उन्हें मरे पाँच वर्ष हो गये, अगर जीते होते तो···

माया : (कुछ घबड़ाकर और जल्दी से) तुम कैसे जानती हो कि उन रास्तों का हाल उन्हें मालूम था ?

लाडिली : हँसी-हँसी में उन्होंने एक दिन मुझसे कहा था कि बाग के तीसरे दर्जे में जाने के लिए पाँच रास्ते हैं, बल्कि वे मुझे अपने साथ वहाँ ले चलकर नया रास्ता दिखाने को तैयार भी थे, मगर मैं तुम्हारे डर से उनके साथ न गयी।

माया : आज तक तूने यह हाल मुझसे क्यों न कहा !

लाडिली : मेरी समझ में यह कोई जरूरी बात न थी, जो तुमसे कहती।

लाडिली की बात सुन मायारानी चुप हो गयी और बड़े गौर में पड़ गयी। उसकी अवस्था और उसकी सूरत पर ध्यान देने से मालूम होता था कि लाडिली की बात से उसके दिल पर एक सख्त सदमा पहुँचा है और वह थोड़ी देर के लिए अपने को बिल्कुल ही भूल गयी है। मायारानी की ऐसी अवस्था क्यों हो गयी और इस मामूली-सी बात से उसके दिल पर क्यों चोट लगी, इसका सबब उसकी छोटी बहन लाडिली भी न समझ सकी। कदाचित् यह कहा जाय कि वह अपने पति को याद करके इस अवस्था में पड़ गयी, सो भी नहीं हो सकता, क्योंकि लाडिली खूब जानती थी कि मायारानी अपने खूबसूरत हँसमुख और नेक चाल चलनवाले पति को कुछ भी नहीं चाहती थी। इस समय लाडिली के दिल में एक तरह का खुटका पैदा हुआ और शक की निगाह से मायारानी की तरफ देखने लगी, मगर मायारानी कुछ भी नहीं जानती थी कि उसकी छोटी बहिन उसे किस निगाह से देख रही है। लगभग दो सौ कदम चले जाने बाद वह चौंकी और लाडिली की तरफ ज़रा-सा मुँह फेरकर बोली, "हाँ, तो वह उन रास्तों का हाल जानता था।"

लाडिली के दिल में और भी खुटका हुआ बल्कि इस बात का रंज हुआ कि मायारानी ने अपने पति या लाडिली के प्यारे बहनोई की तरफ ऐसे शब्दों में इशारा किया जो किसी नीच या खिदमतगार तथा नौकर के लिए बर्ता जाता है। लाडिली का ध्यान धनपति की तरफ भी गया जिसके चेहरे पर उदासी और रंज की निशानी मामूली से कुछ ज्यादे पायी जाती थी और जिसकी घोड़ी भी पाँच-सात कदम पीछे रह गयी थी। मगर मायारानी

---

*जीजाजी से मतलब मायारानी के पति से है जो लाडिली का बहनोई था।

और धनपति की ऐसी अवस्था ज्यादे देर तक न रही, उन दोनों ने बहुत जल्द अपने को सम्हाला और फिर मामूली तौर पर बातचीत करने लगीं।

धनपति : अब वह टीला भी आ पहुँचा, देखा चाहिए बाबाजी से मुलाकात होती है या नहीं !

माया : मुलाकात अवश्य होगी क्योंकि वे कहीं जाते नहीं, मगर अब मेरा जी नहीं चाहता कि वहाँ तक जाऊँ या उनसे मिलूँ।

लाडिली : सो क्यों ! तुम तो बड़े उत्साह से उनसे मिलने के लिए आयी हो !

माया : ठीक है, मगर अब जो मैं सोचती हूँ तो यही जान पड़ता है कि बेचारे बाबाजी इन सब बातों का जवाब कुछ भी न दे सकेंगे।

लाडिली : खैर जब इतनी दूर आ चुकी हो तो अब लौट चलना भी उचित नहीं।

माया : नहीं, अब मैं वहाँ न जाऊँगी !

इतना कहकर मायारानी ने घोड़ी फेरी, लाचार होकर लाडिली और धनपति को भी घूमना पड़ा, मगर इस कार्रवाई से लाडिली के दिल का शक और भी ज्यादा हुआ और उसे निश्चय हो गया कि मेरी बात से मायारानी के दिल पर गहरी चोट बैठी है, मगर इसका सबब क्या है, सो कुछ भी नहीं मालूम होता।

मायारानी ने जैसे ही घोड़ी की बाग फेरी वैसे ही उसकी निगाह तेजसिंह पर पड़ी जो तीर और कमान हाथ में लिये बहुत दूर से कदम बढ़ाये इन तीनों के पीछे-पीछे आ रहे थे। मायारानी तेजसिंह को अच्छी तरह जानती थी। यद्यपि इस समय कुछ अँधेरा हो गया था परन्तु माया-रानी की तेज निगाहों ने तेजसिंह को तुरन्त ही पहिचान लिया और इसके साथ ही वह तलवार खैंचकर तेजसिंह पर झपटी।

मायारानी को नंगी तलवार लिये झपटते देख तेजसिंह ने ललकारके कहा, "खबरदार, आगे न बढ़ना, नहीं तो एक ही तीर में काम तमाम कर दूंगा !"

तेजसिंह के ललकारने से मायारानी रुक गयी, मगर धनपति से न रहा गया। वह तलवार खैंचकर यह कहती हुई आगे बढ़ी, "मैं तेरे तीर से डरने-वाली नहीं !"

तेज : मालूम होता है, तुझे अपनी जान प्यारी नहीं है, इसे खूब समझ लीजियो कि तेजसिंह के हाथ से छूटा हुआ तीर खाली न जायगा।

धनपति : मालूम होता है कि तू केवल एक तीर ही से हम तीनों को डराकर अपना काम निकालना चाहता है। अफसोस इस समय मेरे पास

तीर-कमान नहीं है, यदि होता तो तुझे जान पड़ता कि तीर चलाना किसे कहते हैं ?

तेज : (हँसकर) न मालूम तूने औरत होने पर भी अपने को क्या समझ रक्खा है ? खैर, अब मैं एक कमसिन औरत पर तीर न चलाऊँगा।

इतना कहकर तेजसिंह ने तीर तरकस में रख लिया तथा कमान बगल में लटकाने बाद ऐयारी के बटुए में से एक छोटा-सा लोहे का गोला निकालकर सामने खड़े हो गये और धनपति को वह गोला दिखाकर बोले, "तुम लोगों के लिए यही बहुत है, मगर मैं फिर कहे देता हूँ कि मुझ पर तलवार चलाकर भलाई की आशा मत रखियो !"

धनपति : (मायारानी की तरफ इशारा करके) क्या तू जानता नहीं कि यह कौन हैं ?

तेज : मैं तुम तीनों को खूब जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि मायारानी सैंतालीस नम्बर की कोठरी को पवित्र करके देवा हो गयी और इस बात को पाँच वर्ष का जमाना हो गया।

इतना कहकर मुस्कुराते हुए तेजसिंह ने एक भेद की निगाह मायारानी पर डाली और देखा कि मायारानी का चेहरा पीला पड़ गया और शर्म से उसकी आँखें नीचे की तरफ झुकने लगीं। मगर यह अवस्था उसकी बहुत देर तक न रही, तेजसिंह के मुँह से बात निकलने के बाद जैसे ही लाडिली की ताज्जुब-भरी निगाह मायारानी पर पड़ी, वैसे ही मायारानी ने अपने को सम्हालकर धनपति की तरफ देखा।

अब धनपति अपने को रोक न सकी, उसने घोड़ी बढ़ाकर तेजसिंह पर तलवार का वार किया। तेजसिंह ने फुर्ती से वार खाली देकर अपने को बचा लिया और वही लोहे का गोला धनपति की घोड़ी के सर में इस जोर से मारा कि वह सम्हल न सकी और सर हिलाकर जमीन पर गिर पड़ी। लोहे का गोला छिटककर दूर जा गिरा और तेजसिंह ने लपककर उसे उठा लिया।

आशा थी कि घोड़ी के गिरने से धनपति को भी कुछ चोट लगेगी, मगर वह घोड़ी पर से उछल, कुछ दूर जा रही और बड़ी चालाकी से गिरते-गिरते उसने अपने को बचा लिया। तेजसिंह फिर वही गोला लेकर सामने खड़े हो गये।

तेज : (गोला दिखाकर) इस गोले की करामात देखी ? अगर अबकी फिर वार करने का इरादा करेगी तो यह गोला तेरे घुटने पर बैठेगा और तुझे लँगड़ी होकर मायारानी का साथ देना पड़ेगा। मैं यह नहीं चाहता कि तुम लोगों को इस समय जान से मारूँ, मगर हाँ, इस समय जिस काम के

लिए आया हूँ, उसे किये बिना लौट जाना भी मुनासिब नहीं समझता।

माया : अच्छा बताओ तुम हम लोगों के पीछे-पीछे क्यों आये हो और क्या चाहते हो ?

तेज : (लाडिली की तरफ इशारा करके) केवल इनसे एक बात कहनी है और कुछ नहीं।

लाडिली : कहो, क्या कहते हो ?

तेज : मैं इस तरह नहीं कहा चाहता कि तुम्हारे सिवाय कोई दूसरा [illegible] सुन लो, फिर मैं चला जाऊँगा। डरो मत, मैं

भूतनाथ : जो अब तुम्हारी होगी।

नागर : नहीं, जिसके छूने से मैं बेहोश हो गयी, उसे अपने पास क्योंकर रख सकती हूँ ! मगर मालूम होता है कि कोई ऐसी चीज भी तेरे पास जरूर है, जिसके सबब से इस खंजर का असर तुझ पर नहीं होता। खैर, मैं तेरा यह तीसरा कसूर भी माफ करूँगी, यदि तू यह खंजर मुझे दे दे और वह दूसरी चीज भी मेरे हवाले कर दे, जिसके सबब से इस खंजर का असर तुझ पर नहीं होता।

भूतनाथ : मगर मुझे क्योंकर विश्वास होगा कि तुमने मेरा कसूर माफ किया !

नागर : और मुझे क्योंकर विश्वास होगा कि तूने वास्तव में वही चीज

मुझे तुम्हारा अदब करना चाहिए, मगर तुम्हारी बुराइयों पर ध्यान देकर मायारानी ने हुक्म दे रक्खा है कि जो कोई तुम्हारा सिर काटकर उनके पास ले जायेगा, वह मुँहमाँगा इनाम पायेगा। अस्तु, अब मैं तुम्हें किसी तरह छोड़ नहीं सकती। हाँ, अगर तुम खुशी से मायारानी के पास चली चलो तो अच्छी बात है !

कमलिनी : (मुस्कुराकर) ठीक है, मालूम होता है कि तू अभी तक अपने को अपने मकान में मौजूद समझती है और चारों तरफ अपने नौकरों को देख रही है।

नागर : (कुछ शरमाकर) मैं खूब जानती हूँ कि इस मैदान में मैं अकेली हूँ, लेकिन यह भी देख रही हूँ कि तुम्हारे साथ भी कोई दूसरा नहीं है। अगर तुम अपने को हर्बा चलाने और ताकत में मुझसे बढ़कर समझती हो तो यह तुम्हारी भूल है और इसका फैसला हाथ मिलाने ही से हो सकता है (हाथ बढ़ाकर) आइए !

कमलिनी : (हँसकर) वाह, तू समझती है कि मुझे उस अँगूठी की खबर नहीं, जो तेरे इस बढ़े हुए हाथ में देख रही हूँ, अच्छा ले !

"अच्छा ले" कहकर कमलिनी ने दिखा दिया कि उसमें कितनी तेजी और फुर्ती है। घोड़ा आगे बढ़ाया और तिलिस्मी खंजर निकालकर इतनी तेजी के साथ नागर के हाथ पर रख दिया कि वह अपना हाथ हटा भी न सकी और खंजर की तासीर से बदहवास होकर जमीन पर गिर पड़ी। कमलिनी ने घोड़े से उतरकर भूतनाथ को कैद से छुट्टी दी और कहा, "वाह, तुम इतने बड़े चालाक होकर भी इसके फन्दे में आ गये !"

भूतनाथ : मैं इसके फन्दे में न आता यदि उस अँगूठी का गुण जानता, जो इसकी उँगली में चमक रही है, वास्तव में यह अनमोल वस्तु है और कठिन समय पर काम दे सकती है।

कमलिनी : इस कमबख्त के पास यही तो एक चीज है, जिसके सबब से मायारानी की आँखों में इसकी इज्जत है। इसके जहर से कोई बच नहीं सकता, हाँ, यदि यह चाहे तो जहर उतार भी सकती है। न मालूम यह अँगूठी और इसका जहर उतारने की तरकीब मनोरमा ने कहाँ से पायी।

भूतनाथ : मायारानी से और उससे क्या सम्बन्ध ?

कमलिनी : मनोरमा उसकी सखियों में सबसे बड़ा दर्जा रखती है और वह इस कमबख्त को अपनी बहिन से बढ़के मानती है। यह अँगूठी भी मनोरमा ही की है।

भूतनाथ : तो मायारानी ने यह अँगूठी क्यों न ले ली ? उसके तो बड़े काम की चीज थी !

कमलिनी : उसको भी मनोरमा ने ऐसी ही अँगूठी बना दी है और जहर उतारने की दवा भी तैयार कर दी है, मगर इसके बनाने की तरकीब नहीं बताती ।

भूतनाथ : खैर, अब यह अँगूठी आप ले लीजिए ।

कमलिनी : यद्यपि यह मेरे काम की चीज नहीं है, बल्कि इसको अपने पास रखने में मैं पाप समझती हूँ, तथापि जब तक मायारानी से खटपट चली जाती है, तब तक यह अँगूठी अपने पास जरूर रक्खूँगी (तिलिस्मी खंजर की तरफ इशारा करके) इसके सामने यह अँगूठी कोई चीज नहीं है ।

भूतनाथ : बेशक बेशक, जिसके पास यह खंजर है, उसे दुनिया में किसी चीज की परवाह नहीं और वह अपने दुश्मन से चाहे वह कैसा जबर्दस्त क्यों न हो कभी नहीं डर सकता । आपने मुझ पर बड़ी ही कृपा की जो ऐसा खंजर थोड़े दिन के लिए मुझे दिया । आह, वह दिन भी कैसा होगा जिस दिन यह खंजर हमेशा अपने पास रखने की आज्ञा आप मुझे देंगी ।

कमलिनी : (मुस्कुराकर) खैर, वह दिन आज ही समझ लो, मैं हमेशे के लिए यह खंजर तुम्हें देती हूँ, मगर नानक के लिए ऐसा करने की सिफारिश मत करना ।

भूतनाथ ने खुश होकर कमलिनी को सलाम किया । कमलिनी ने नागर की उँगली से जहरीली अँगूठी उतार ली और उसके बटुए में से खोजकर उस दवा की शीशी भी निकाल ली, जो उस अँगूठी के भयानक जहर को बात-की-बात में दूर कर सकती थी । इसके बाद कमलिनी ने भूतनाथ से कहा, "नागर को हमारे अद्‌भुत मकान में ले जाकर तारा के सुपुर्द करो और फिर मुझसे आकर मिलो । मैं फिर वहीं अर्थात् मनोरमा के मकान पर जाती हूँ । अपने कागजात भी उसके बटुए में से निकाल लो और इसी समय उन्हें जलाकर सदैव के लिए निश्चिन्त हो जाओ !"

छठवाँ बयान

मायारानी का डेरा अभी तक खास बाग (तिलिस्मी बाग) में है । रात आधी से ज्यादे जा चुकी है, चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, पहरेवालों के सिवाय सभी को निद्रादेवी ने बेहोश करके डाल रक्खा है, मगर उस बाग में दो औरतों की आँखों में नींद का नाम-निशान भी नहीं । एक तो माया-रानी की छोटी बहिन लाडिली, जो अपने सोनेवाले कमरे में मसहरी के ऊपर पड़ी कुछ सोच रही है, और थोड़ी-थोड़ी देर पर उठकर बाहर

निकलती और सन्नाटे की तरफ ध्यान देकर लौट जाती है, मालूम होता है कि वह मकान या बाग के बाहर जाकर किसी से मिलने का मौका ढूंढ़ रही है और दूसरी मायारानी जो निद्रा न आने के कारण अपने कमरे में टहल रही है। उसे भी तरह-तरह के खयालों ने सता रक्खा है। कभी-कभी उसका सर हिला जाता है, जो उसके दिल की परेशानी को पूरी तरह से छिपा रहने नहीं देता, उसके होंठ भी कभी-कभी अलग होकर दिल का दरवाजा खोल देते हैं, जिससे दिल के अन्दर कैद रहनेवाले कई भेद शब्द-रूप होकर धीरे-से बाहर निकल पड़ते हैं।

जब चारों तरफ अच्छी तरह सन्नाटा हो गया तो लाडिली ने काले कपड़े पहिरे और ऐयारी का बटुआ कमर से लगाने बाद कमरे के बाहर निकलकर इधर-उधर टहलना शुरू किया। वह उस कमरे के पास आयी, जिसके अन्दर मायारानी तरद्दुद और घबराहट से निद्रा न आने के कारण टहल रही थी। लाडिली छिपकर देखने लगी कि मायारानी क्या कर रही है। थोड़ी देर के बाद मायारानी के मुँह से निकले हुए शब्द लाडिली ने सुने और वे शब्द ये थे—"वह इस रास्ते को जानता है···वह भेद जिसे लाडिली नहीं जानी···आह, धनपत की मुहब्बत ने···"

इन शब्दों को सुनकर लाडिली घबड़ा गयी और बेचैनी से अपने कमरे में लौट आने के लिए तैयार हुई, मगर उसके दिल ने उसे वहाँ से लौटने न दिया, इच्छा हुई कि मायारानी के मुँह से और भी कोई शब्द निकले तो सुने, परन्तु इसके बाद मायारानी कुछ ज्यादे बेचैन मालूम हुई और अपनी मसहरी पर जाकर लेट रही। आधी घड़ी से ज्यादे न बीती थी कि मायारानी की साँस ने लाडिली को उसके सो जाने की खबर दी और लाडिली वहाँ से लौटकर बाग में टहलने लगी। घूमती-फिरती और अपने को पेड़ों की आड़ में बचाती हुई, वह बाग के पिछले कोने में पहुँची जहाँ एक छोटा-सा मगर मजबूत बुर्ज बना था। इसके अन्दर जाने के लिए छोटा-सा लोहे का दरवाजा था, जिसे उसने धीरे से खोला और अन्दर जाने के बाद फिर बन्द कर लिया। भीतर बिल्कुल अँधेरा था। बटुए में से सामान निकालकर मोमबत्ती जलायी और उस कोठरी की हालत अच्छी तरह देखने लगी। यह बुर्जवाली कोठरी वर्षों से ही बन्द थी और इस सबब से इसके अन्दर मकड़ों ने अच्छी तरह अपना घर बना लिया था, मगर लाडिली ने इस कोठरी की गन्दी हालत पर कुछ ध्यान न दिया। इस कोठरी की जमीन चौखूटे पत्थरों से बनी हुई थी और छत में छोटे-छोटे दो-तीन सूराख थे जिनमें से आसमान में जड़े हुए तारे दिखायी दे रहे थे। पहिले तो लाडिली इस विचार में पड़ी कि बहुत दिनों से बन्द रहने के कारण इस कोठरी की हवा खराब होकर

जहरीली हो गयी होगी, शायद किसी तरह का नुकसान पहुँचे, मगर छत के सूराखों को देख निश्चिन्त हो गयी और मोमबत्ती एक किनारे जमाकर जमीन पर बैठ गयी। आधी घड़ी तक वह सोच-विचार में पड़ी रही, इसके बाद हलकी आवाज के साथ कोने की तरफ जमीन का एक चौखूटा पत्थर किवाड़ के पल्ले की तरह खुलकर अलग हो गया और नीचे से अपनी असली सूरत में कमलिनी निकलकर लाडिली के सामने खड़ी हो गयी। कमलिनी को देखते ही लाडिली उठ खड़ी हुई और बड़ी मुहब्बत से उसके साथ लिपटकर रोने लगी तथा कमलिनी की आँखें भी आँसू की बूंदें गिराने लगीं, कुछ देर बाद दोनों अलग हुईं और जमीन पर बैठकर बातचीत करने लगीं।

लाडिली : मेरी प्यारी बहिन, इस समय मेरी खुशी का अन्दाजा कोई भी नहीं कर सकता। मुझे तो इस बात का बड़ा ही रंज था कि तुमने मुझे अपने दिल से भुला दिया, जिसकी आशा कदापि न थी, मगर आज शाम को तुम्हारे हाथ की लिखी हुई उस चीठी ने मुझमें जान डाल दी, जो तेजसिंह के हाथ मुझ तक पहुँचायी गयी थी।

कमलिनी : नहीं नहीं, अभी तक मैं तुझे उतना ही प्यार करती हूँ, जितना यहाँ रहने पर करती थी, परन्तु इस समय आशा कम थी कि मेरे लिखे अनुसार यहाँ आकर तू मुझसे मिलेगी, क्योंकि बड़ी बहिन मायारानी मेरी जान की ग्राहक हो रही है और तू पूरी तरह उसके कब्जे में है।

लाडिली : प्यारी बहिन, चाहे मायारानी का दिल तुम्हारी दुश्मनी से भरा हुआ क्यों न हो, मगर मेरा दिल तुम्हारी मुहब्बत से किसी तरह खाली नहीं हो सकता। तुम्हारी चीठी पाते ही मैं बेचैन हो गयी और हजारों आफतों की तरफ ध्यान न देकर बेखटके यहाँ चली आयी। क्या अब भी तुम्हें···

कमलिनी : हाँ हाँ, मुझे विश्वास है, और मैं खूब जानती हूँ कि अगर तेरे दिल में मेरी मुहब्बत न होती तो तू मेरे लिखने पर यकायक यहाँ न आती।

लाडिली : मुझे इस बात की शिकायत करने का मौका आज मिला कि कि तुमने इस घर को तिलांजुली देते समय अपने इरादे से मुझे बेखबर रक्खा।

कमलिनी : तो क्या मेरा इरादा जानने पर तू मेरा साथ देती?

लाडिली : (जोर देकर) जरूर साथ देती! हाय, यहाँ रहकर जैसी तकलीफ में दिन काट रही हूँ, वह मेरा ही जी जान रहा है। ऐसे-ऐसे भयानक काम मुझसे लिये जाते हैं कि जिसे मैं मुख्तसर में कह नहीं सकती,

लाचार होकर और झख मारकर सबकुछ करना पड़ता है, क्योंकि इस बात को मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि मायारानी के गुस्से में पड़कर मैं अपनी जान भारतवर्ष के किसी घने जंगल में छिपकर भी नहीं बचा सकती।

कमलिनी : इसका सबब यही है कि तू तिलिस्मी हाल से बिल्कुल बेखबर और भोली है, बल्कि वास्तव में रामभोली है।

लाडिली : (चौंककर) क्या तुम जानती हो कि मैं रामभोली बनने पर लाचार की गयी थी ?

कमलिनी : मुझे अच्छी तरह मालूम है, अभी तक नानक मेरे साथ रह-कर मेरा काम कर रहा है।

लाडिली : हाय, जब वह तुम्हारे साथ है तो जरूर एक दिन सामना होगा। उस समय शर्म से मेरी आँखें ऊँची न होंगी, उस बेचारे के साथ मैंने बड़ी बुराई की।

कमलिनी : लेकिन मैं खूब जानती हूँ कि इसमें तेरा कोई कसूर नहीं। खैर, इस बात को जाने दे, मुझे तेरी मुहब्बत यहाँ तक खैंच लायी है, मैं इस समय यह पूछने आयी हूँ कि अब तेरा क्या इरादा है, क्योंकि इस तिलिस्म की उम्र अब तमाम हो गयी और मायारानी अपने बुरे कर्मों का फल भोगा ही चाहती है।

लाडिली : (हाथ जोड़कर) मैं यही चाहती हूँ कि तुम मुझे अपने साथ रक्खो, जिसमें मायारानी का मुँह देखना नसीब न हो। मैं जानती हूँ कि यह तिलिस्म अब टूटा ही चाहता है, क्योंकि इधर थोड़े दिनों से बड़ी-बड़ी अद्भुत बातें देखने में आ रही हैं, जिनसे खुद मायारानी की अक्ल चक्कर में है, मगर शक है तो इतना ही कि तिलिस्म तोड़नेवाले कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह इस समय मायारानी के कैदी हो रहे हैं और कल उन दोनों का सिर जरूर काटा जायगा।

कमलिनी : यह बात मुझे भी मालूम है, मगर सवेरा होने के पहिले ही मैं उन दोनों को छुड़ाकर ले जाऊँगी।

लाडिली : यदि ऐसा हो तो क्या बात है ! वे दोनों कैसे नेक और खूब-सूरत हैं। जिस समय मैंने आनन्दसिंह को देखा···

इतना कहकर लाडिली चुप हो रही, उसकी आँखें नीची हो गयीं और उसके गालों पर शर्म की सुर्खी दौड़ गयी। कमलिनी समझ गयी कि यह आनन्दसिंह को चाहती है।

कमलिनी : मगर उन दोनों को छुड़ाने के लिए कुछ तुझसे भी मदद चाहती हूँ।

लाडिली : तुम्हारी आज्ञा मानने के लिए मैं हर तरह से तैयार हूँ।

कमलिनी : तू उस कैदखाने की ताली मुझे ला दे, जिसमें दोनों कुमार कैद हैं।

लाडिली : मैं उद्योग कर सकती हूँ, मगर वह तो हरदम मायारानी की कमर में रहती है !

कमलिनी : उसके लेने की सहज तरकीब मैं बताती हूँ।

लाडिली : क्या ?

कमलिनी : (कमर से तिलिस्मी खंजर निकाल और दिखाकर) यह तिलिस्म की सौगात है, हाथ में लेकर जब इसका कब्जा दबाया जायगा तो बिजली की-सी चमक पैदा होगी, जिसके सामने किसी की आँख खुली नहीं रह सकती। इसके अतिरिक्त इसमें और भी दो गुण हैं, एक तो यह कि जिसके बदन से यह लगा दिया जाय, उसके बदन में बिजली दौड़ जाती है, और वह तुरत बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ता है और दूसरे यह हर एक चीज को काट डालने की ताकत रखता है।

कमलिनी ने खंजर का कब्जा दबाया। उसमें से ऐसी चमक पैदा हुई कि लाडिली ने दोनों हाथों से आँखें बन्द कर लीं और कहा, "बस बस, इस चमक को दूर करो तो आँखें खोलूँ !"

कमलिनी : (कब्जा ढीला करके) लो चमक बन्द हो गयी, आँखें खोलो।

लाडिली : (आँखें खोलकर) मेरे हाथ में दो तो मैं भी कब्जा दबाकर देखूँ ! मगर नहीं तुम तो कह चुकी हो कि यह जिसके बदन से छुलाया जायगा वह बेहोश हो जायगा, तो मैं इसे कैसे ले सकूँगी और तुम पर इसका असर क्यों नहीं होता ?

हम ऊपर लिख आये हैं कि कमलिनी की कमर में दो तिलिस्मी खंजर थे और उनके जोड़ की दो अँगूठियाँ भी उसकी उँगलियों में थीं। उसने एक अँगूठी लाडिली की उँगली में पहिराकर उसका गुण अच्छी तरह समझा दिया और कह दिया कि जिसके हाथ में यह अँगूठी रहेगी, केवल वही इस खंजर को अपने पास रख सकेगा।

लाडिली : जब ऐसी चीज तुम्हारे पास है तो वह ताली तुम स्वयं उससे ले सकती हो।

कमलिनी : हाँ, मैं यह काम खुद भी कर सकती हूँ, मगर ताज्जुब नहीं कि मायारानी के कमरे तक जाते-आते मुझे कोई देख ले और गुल करे तो मुश्किल होगी। यद्यपि मेरा कोई कुछ कर नहीं सकता और मैं इस खंजर की बदौलत सैकड़ों को मारकर निकल जा सकती हूँ, मगर जहाँ तक बिना खून-खराबा किये काम निकल जाय तो उत्तम ही है।

आठवाँ भाग

पहिला बयान

मायारानी की कमर में से ताली लेकर जब लाडिली चली गयी तो उसके घण्टे-भर बाद मायारानी होश में आकर उठ बैठी। उसके बदन में कुछ-कुछ दर्द हो रहा था, जिसका सबब वह समझ नहीं सकती थी। उसे फिर उन्हीं खयालों ने आकर घेर लिया, जिनकी बदौलत दो घण्टे पहिले वह बहुत ही परेशान थी। न वह बैठकर आराम पा सकती थी और न कोई उपन्यास इत्यादि पढ़कर ही अपना जी बहला सकती थी। उसने अपनी आलमारी में से नाटक की किताब निकाली और शमादान के पास जाकर पढ़ना शुरू किया, पर नान्दी पढ़ते-पढ़ते ही उसकी आँखों पर पलकों का पर्दा पड़ गया और फिर आधे घण्टे तक वह गम्भीर चिन्ता में डूबी रह गयी, इसके बाद किसी के आने की आहट ने उसे चौंका दिया और वह घूमकर दरवाजे की तरफ देखने लगी। धनपति उसके सामने आकर खड़ी हो गयी और बोली—

धनपति : मेरी प्यारी रानी, मैं देखती हूँ कि इस समय तू बहुत ही उदास और किसी गम्भीर चिन्ता में डूबी हुई है, शायद अभी तक तेरीआँखों में निद्रादेवी का डेरा नहीं पड़ा।

माया : बेशक ऐसा ही है, मगर तेरे चेहरे पर भी···

धनपति : मैं तो बहुत घबरा गयी हूँ, क्योंकि अब यह बात लोगों को मालूम हुआ चाहती है, मैं खूब जानती हूँ कि तुम्हारी कट्टर रिआया उसे जी जान से···

माया : बस बस, आगे कहने की कोई आवश्यकता नहीं, इसी सोच ने तो मुझे बेकाम कर दिया है।

धनपति : मैं थोड़े दिनों के लिए तुमसे जुदा हो जाना उचित समझती

हूँ और यही कहने के लिए मैं यहाँ तक आयी हूँ।

माया : (घबड़ाकर) तुझे क्या हो गया है ? मुंह से बात भी सम्हालकर नहीं निकालती !

धनपति : हाँ हाँ, मुझसे भूल हो गयी, इस समय तरद्दुद और डर ने मुझे बेकाम कर रक्खा है।

माया : अच्छा तो तू मुझसे जुदा होकर कहाँ जायेगी ?

धनपति : जहाँ कहो।

माया : (कुछ सोचकर) अभी जल्दी न करो, इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह कब्जे में आ ही चुके हैं, सूर्योदय के पहिले ही मैं उनका काम तमाम कर दूंगी।

धनपति : मगर उसका क्या बन्दोवस्त किया जायगा, जिसके विषय में चण्डूल ने तेरे कान में···

माया : आह, उसकी तरफ से भी अब मुझे निराशा हो गयी, वह बड़ा जिद्दी है।

धनपति : तो क्यों नहीं उसकी तरफ से भी निश्चिन्त हो जाती हो ?

माया : हाँ, अब यही होगा।

धनपति : फिर देर करने की क्या जरूरत है ?

माया : मैं अभी जाती हूँ, क्या तू भी मेरे साथ चलेगी !

धनपति : मैं चलने को तैयार हूँ, मगर न मालूम उसे (चण्डूल को) यह बात क्योंकर मालूम हो गयी।

माया : खैर अब चलना चाहिए।

अब मायारानी का ध्यान कैदखाने की ताली पर गया। अपनी कमर में ताली न देखकर बहुत हैरान हुई। थोड़ी देर के लिए वह अपने को बिल्कुल ही भूल गयी पर आखिर एक लम्बी साँस लेकर धनपति से बोली, "आफत आने की यह दूसरी निशानी है !"

धनपति : सो क्या ? मेरी समझ में कुछ भी न आया कि यकायक तेरी अवस्था क्यों बदल गयी और किस नयी घटना ने आकर तुझे घेर लिया।

माया : कैदखाने की ताली, जिसे मैं सदा अपनी कमर में रखती थी, गायब हो गयी।

धनपति : (घबड़ाकर) कहीं दूसरी जगह न रख दी हो।

माया : नहीं नहीं, जरूर मेरे पास ही थी। चल लाडिली से पूछूं, शायद वह इस विषय में कुछ कह सके।

मायारानी धनपति को साथ लिये लाडिली के कमरे में गयी, मगर वहाँ लाडिली थी कहाँ, जो मिलती। अब उसकी घबराहट का कोई हद्द न

रहा। एकदम बोल उठी, "बेशक लाडिली ने धोखा दिया।"

धनपति : उसे ढूँढ़ना चाहिए।

माया : (आसमान की तरफ देखकर और लम्बी साँस लेकर) आह, यह पहर-भर के लगभग रात जो बाकी है, मेरे लिए बड़ी ही अनमोल है। इसे मैं लाडिली की खोज में व्यर्थ नहीं खोया चाहती। इतने ही समय में मुझे उस जिद्दी के पास पहुँचना और उसका सर काटकर लौट आना है। कैदियों से भी ज्यादे तरद्दुद मुझे उसका है। हाय, अभी तक वह आवाज़ मेरे कानों में गूंज रही है, जो चण्डूल ने कही थी, खैर, वहाँ जाते-जाते कैदखाने को भी देखती चलूंगी (जोश में आकर) कैदी चाहे कैदखाने के बाहर हो जाँय,

बराबर की बैठी हुई थी। रात पहरभर से कम बाकी थी। चन्द्रमा धीरे-धीरे निकलकर अपनी सुफेद रोशनी आसमान पर फैला रहा था। मायारानी ने उस मूरत की कलाई पकड़कर उमेठी, साथ ही मूरत ने मुँह खोल दिया। मायारानी ने उसके मुँह मे हाथ डालकर कोई पेंच घुमाना शुरू किया। थोड़ी देर में चबूतरे के सामने की तरफ का एक बड़ा-सा पत्थर हलकी आवाज के साथ हटकर अलग हो गया और नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ दिखायी दी। अपने पीछे-पीछे धनपति को आने का इशारा करके मायारानी उस तहखाने में उतर गयी। यद्यपि तहखाने में अँधेरा था, मगर मायारानी

अन्दाज करना मुश्किल है, क्योंकि रंज और गम ने उसे सुखाकर काँटा कर दिया है, बड़ी बड़ी आँखों के चारों तरफ स्याही दौड़ गयी है और उसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ी हुई हैं, तो भी हरएक हालत पर ध्यान देकर कह सकते हैं कि वह किसी जमाने में बहुत ही हसीन और नाजुक रहा होगा, मगर इस समय कैद ने उसे मुर्दा बना रक्खा है। उसके बदन के कपड़े बिल्कुल फटे और मैले थे और वह बहुत ही मजहूल हो रहा था। कोठरी के एक तरफ ताँबे का घड़ा, लोटा और कुछ खाने का सामान रक्खा हुआ था, ओढ़ने और बिछाने के लिए दो कम्बल थे। कोठरी की पिछली दीवार में खिड़की थी, जिसके अन्दर से बदबू आ रही थी।

मायारानी और धनपति को देखकर वह आदमी ठहर गया, और इस अवस्था में भी लाल-लाल आँखें करके उन दोनों की तरफ देखने लगा।

माया : यह आखिरी दफे मैं तेरे पास आयी हूँ।

कैदी : ईश्वर करे ऐसा ही हो और फिर तेरी सूरत दिखायी न दे।

माया : अब भी अगर वह भेद मुझे बता दे तो तुझे छोड़ दूँगी।

कैदी : हरामजादी, कमीनी औरत। दूर हो मेरे सामने से।

माया : मालूम होता है, वह भेद तू अपने साथ ले जायेगा ?

कैदी : बेशक, ऐसा ही है।

माया : यह ढाल तेरे हाथ में कहाँ से आयी ?

कैदी : तुझ चाण्डालिन की इस बात का जवाब मैं क्यों दूं ?

माया : मालूम होता है कि तुझे अपनी जान प्यारी नहीं है और अब तू मौत के पंजे में पड़ा चाहता है !

कैदी : बेशक, पहिले मुझे अपनी जान प्यारी न थी, पाँच दिन पीछे भोजन करना मुझे पसन्द न था, कभी-कभी तेरी सूरत देखने की बनिस्बत मौत को हजार दर्जे अच्छा समझता था, मगर अब मैं मरने के लिए तैयार नहीं हूँ।

माया : (हँसकर) तुझे मेरे हाथ से बचानेवाला कौन है ?

कैदी : (ढाल दिखाकर) यह !

धनपति : (मायारानी के कान में) न मालूम यह ढाल इसे क्योंकर मिल गयी ! क्या चण्डूल यहाँ पहुँच तो नहीं गया ?

माया : (धनपति से) कुछ समझ में नहीं आता। यह ढाल भविष्य बुरा बता रही है !

धनपति : मेरा कलेजा डर के मारे काँप रहा है।

माया : (कैदी से) यह तुझे किसी तरह बचा नहीं सकती और मैं तेरी जान लिये बिना नहीं जा सकती।

कैदी : खैर, जो कुछ तू कर सके कर ले।

माया : तू जिद्दी और बेहया है।

कैदी : हरामजादी की बच्ची, बेहया तो तू है, जो घड़ी-घड़ी मेरे सामने आती है।

इस बात के जवाब में मायारानी ने एक तीर कैदी को मारा, जिसे उसने बड़ी चालाकी से ढाल पर रोक लिया, दूसरा तीर चलाया, वह भी बेकार हुआ, तीसरा तीर चलाया, उससे भी कोई काम न चला। लाचार मायारानी कैदी का मुँह देखने लगी।

कैदी : तेरे किये कुछ भी न होगा।

माया : खैर, देखूँगी तू कब तक अपनी जान बचाता है।

कैदी : मेरी जान कोई भी नहीं ले सकता, बल्कि मुझे निश्चय हो गया कि अब तेरी मौत आ गयी।

इसका जवाब मायारानी कुछ दिया ही चाहती थी कि एक आवाज ने उसे चौंका दिया। कैदी की बात पूरी होने के साथ ही किसी ने कहा, "बेशक मायारानी की मौत आ गयी!"

दूसरा बयान

कैदखाने का हाल हम ऊपर लिख चुके हैं, पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं। उस कैदखाने में कई कोठरियाँ थीं, जिनमें से आठ कोठरियों में तो हमारे बहादुर लोग कैद थे और बाकी कोठरियाँ खाली थीं। कोई आश्चर्य नहीं यदि हमारे पाठक महाशय उन बहादुरों के नाम भूल गये हों, जो इस समय मायारानी के कैदखाने में बेबस पड़े हैं अस्तु, एक दफे पुनः याद दिला देते हैं। उस कैदखाने में कुँअर इन्द्रजीतसिंह, कुँअर आनन्दसिंह, तारासिंह, भैरोसिंह, देवीसिंह और शेरसिंह के अतिरिक्त एक कुमारी भी थी, जिसके मुख की सुन्दर आभा ने उस कैदखाने को उजाला कर रक्खा था। पाठक समझ ही गये होंगे कि हमारा इशारा कामिनी की तरफ है। यद्यपि वह ऐसी कोठरी में बन्द थी, जिसके अन्दर मर्दों की निगाह नहीं जा सकती थी, तथापि कुँअर आनन्दसिंह को इस बात पर ढाढ़स थी कि उनकी प्यारी कामिनी उनसे दूर नहीं है, मगर कुँअर इन्द्रजीतसिंह के रंज का कोई ठिकाना न था। वे कुछ भी नहीं जानते थे कि उनकी प्यारी किशोरी कहाँ और किस अवस्था में है।

इस कैदखाने में छत के सहारे शीशे की एक कन्दील लटक रही थी, उसी में मायारानी का एक आदमी रोज जाकर रोशनी ठीक कर देता था।

ठीक कर देना हम इसलिए कहते हैं कि उस कैदखाने में अँधेरा रहने के कारण, दिन-रात बत्ती जला करती थी और ठीक समय पर आदमी जाकर उसे दुरुस्त कर दिया करता था। खाने-पीने का सामान आठ पहर में एक दफे कैदियों को दिया जाता था। कैदखाने की भयानक अवस्था लिखने में विशेष समय नष्ट करना हम नहीं चाहते, क्योंकि हमें किस्सा बहुत लिखना है और जगह कम है।

अब हम उस सन्ध्या का हाल लिखते हैं, जिस दिन मायारानी से और चण्डूल से बातचीत हुई थी या जब कमलिनी से लाडिली मिली थी। यों तो तहखाने के अन्दर दिन-रात समान था और कैदियों को इस बात का ज्ञान बिल्कुल नहीं हो सकता था कि सूर्य कब उदय और कब अस्त हुआ, तथापि बाहरी हिसाब से हमें समय लिखना ही पड़ता है।

सन्ध्या होने के बाद एक आदमी कैदखाने में आया और कैदियों की तरफ देखकर बोला, "मायारानी की तरफ से इस समय आप लोगों के पास यह कहने के लिए मैं आया हूँ कि कल पहर दिन चढ़ने के पहिले ही आप लोग इस दुनिया से उठा दिये जायँगे। इसके अतिरिक्त अपनी तरफ से अफसोस के साथ आपको इत्तिला देता हूँ कि राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता को भी हमारी मायारानी ने गिरफ्तार कर लिया है। उन्हीं के सामने आप लोग मारे जाँयगे और इसके बाद उन दोनों की भी जान ली जायगी।"

इस आदमी के आने के पहिले कैदी लोग सुस्त और उदास बैठे हुए थे, मगर जब इस आदमी ने आकर ऊपर लिखी बातें कहीं तो सभों की अवस्था बदल गयी। क्रोध से सभों का चेहरा लाल हो गया और बदन काँपने लगा, लेकिन उस आदमी की बात का जवाब किसी ने भी कुछ न दिया।

कैदियों को सन्देश देने के बाद मायारानी का आदमी उस कोठरी में गया, जिसमें हथकड़ी और बेड़ी से बेबस बेचारी कामिनी कैद थी। थोड़ी ही देर बाद कामिनी को साथ लिये हुए वह आदमी बाहर निकला। उस समय सभों की निगाह उस बेचारी पर पड़ी। देखा कि रंजोगम और दुःख के मारे वह सूखकर काँटा हो गयी है, मालूम होता है, मानों वर्षों से बीमार है। सिर के बाल खुले और फैले हुए हैं, साड़ी मैली और खराब हो गयी है, मगर भोलापन, खूबसूरती और नजाकत ने इस अवस्था में भी उसका साथ नहीं छोड़ा है। उसके दोनों हाथ बँधे थे और वह बेड़ी के सबब से अच्छी तरह कदम नहीं उठा सकती थी।

सभों के देखते-देखते कामिनी को साथ लिये हुए मायारानी का आदमी कैदखाने के बाहर चला गया और कैदखाने का दरवाजा फिर बन्द हो गया।

ताली भरने का आवाज भी बहादुर कैदियों के कानों में पड़ी। यों तो वहाँ जितने कैदी थे, सभी क्रोध के मारे काँप रहे थे, मगर हमारे आनन्दसिंह की अवस्था कुछ और ही थी। एक तो अपने माँ-बाप का हाल सुनकर जोश में आ ही चुके थे, दूसरे कामिनी को जो इस बेबसी के साथ कैदखाने के बाहर जाते देखा तो और भी उबल पड़े, क्रोध सम्हाल न सके, उठके खड़े हो गये और जंगलेवाली कोठरी में, जिसमें कैद थे, टहलने लगे। जिस जंगलेवाली कोठरी में कुँअर इन्द्रजीतसिंह थे, वह आनन्दसिंह के ठीक सामने थी और ऐयार लोग भी उन्हें अच्छी तरह देख सकते थे। टहलने के साथ आनन्दसिंह के पैर की जंजीर बोली, जिससे सभों का ध्यान उनकी तरफ जा रहा।

इन्द्रजीत : आनन्द !

आनन्द : आज्ञा !

इन्द्रजीत : क्या बेबसी हम लोगों का साथ न छोड़ेगी ?

आनन्द : बेशक छोड़ेगी, अब हम लोग इस अवस्था में कदापि नहीं रह सकते। हम लोग पालतू शेर नहीं हैं, जो जंगले के अन्दर बन्द पड़े रहें !

इन्द्रजीत : (खड़े होकर) हाँ, ऐसा ही है, यह लोहे की तार अब हमें रोक नहीं सकती !

इतना कहके इन्द्रजीतसिंह नें इष्टदेव का ध्यान कर अपनी कलाई उमेठी और जोर करके, हथकड़ी तोड़ डाली। बड़े भाई की देखादेखी आनन्दसिंह ने भी वैसा ही किया। हथकड़ी तोड़ने के बाद दोनों ने अपने पैरों की बेड़ियाँ खोलीं और तब जंगले के वाहर निकलने का उद्योग करने लगे। दोनों हाथों पे लोहे का छड़ जो जंगले में लगा हुआ था, पकंड़के और लात अड़ाके खींचने लगे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि दोनों कुमार वड़े बहादुर और ताकतवर थे। छड़ टेढ़े हो-होकर छेदों से बाहर निकलने लगे और बात-की-बात में दोनों शेर जंगलेवाली कोठरी के बाहर निकलके खड़े हो गये। दोनों गले मिले और इसके बाद हरएक जंगले के छड़ों को निकालकर दोनों भाइयों ने अपने ऐयारों को भी छुड़ाया और जोश में आकर बोले, "उद्योग से बढ़के दुनिया में कोई पदार्थ नहीं !"

आनन्द : ईश्वर चाहेगा तो अब थोड़ी देर में हम लोग इस कैदखाने के बाहर भी निकल जायेंगे।

इन्द्रजीत : हाँ, अव हम लोगों को इसके लिए भी उद्योग करना चाहिए।

भैरो : हम लोग जोर करके तहखाने का दरवाजा उखाड़ डालेंगे और इसी समय कमबख्त मायारानी के सामने जा खड़े होंगे।

ऐयारों को साथ लिये हुए दोनों भाई सदर दरवाजे के पास गये, जो बाहर से बन्द था। यह दरवाजा चार अंगुल मोटे लोहे का बना था और

इसकी मजबूत चूल भी जमीन में बहुत गहरी घुसी हुई थी, इसलिए पूरे दो घण्टे तक मेहनत करने पर भी कोई नतीजा न निकला। क्रोध में आकर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने लोहे का छड़ जो जंगले में से निकला था, उठा लिया और बाईं तरफ की दीवार जो चूना और ईंटों से बनी हुई थी, तोड़ने लगे। उसी समय ऐयारों ने दोनों भाइयों के हाथ से छड़ ले लिया और दीवार तोड़ना शुरू किया।

पहर-भर की मेहनत से दीवार में इतना बड़ा छेद हो गया कि आदमी उसकी राह बखूबी निकल जाय। भैरोसिंह ने झाँककर देखा, उस तरफ बिल्कुल अंधेरा था और इस बात का ज्ञान जरा भी नहीं हो सकता था कि दीवार के दूसरी तरफ क्या है। हम ऊपर लिख आये हैं कि इस कैदखाने में छत के सहारे शीशे की एक कन्दील लटकती थी। इस समय ऐयारों ने उसी कन्दील की रोशनी से काम लेना चाहा। तारासिंह ने भैरोसिंह के कन्धे पर चढ़कर कन्दील उतार ली और उसे हाथ मे लिये हुए, उस सूराख की राह दूसरी तरफ निकल गये। इनके पीछे दोनों कुमार और ऐयार लोग भी गये। अब मालूम हुआ कि यह कोठरी है, जो लगभग तीस हाथ के लम्बी और पन्द्रह हाथ से कम चौड़ी है। कुमार तथा ऐयार लोग अगर बिना रोशनी के इस कोठरी में आते तो जरूर दुःख भोगते, क्योंकि यहाँ जमीन बराबर न थी, बीचोबीच में एक कूआँ था और उसके चारों तरफ जमीन में चार दरवाजे बने हुए थे, जिनके देखने से मालूम होता था कि यहाँ कई तहखाने हैं और ये दरवाजे नहीं, तहखानों के रास्ते हैं। इस समय उन दरवाजों के पल्ले जो लकड़ी के थे, अच्छी तरह देखने से मालूम हुआ कि नीचे उतरने के लिये सीढ़ियाँ बनी हुई हैं और उस कूएँ में भी लोहे की एक जंजीर लटक रही थी। इसके अतिरिक्त चारों तरफ की दीवारें बराबर थीं, अर्थात् किसी तरफ़ कोई दरवाजा न था, जिसे खोलकर ये लोग बाहर जाने की इच्छा करते।

इन्द्रजीत : मालूम होता है कि यहाँ आने या यहाँ से जाने के लिए इन तहखानों के सिवाय कोई राह नहीं है।

आनन्द : मैं भी यही समझता हूँ।

देवी : इन तहखानों में उतरे बिना काम न चलेगा।

तारा : आज्ञा हो तो मैं रोशनी लेकर एक तहखाने में उतरूँ और देखूं कि क्या है।

इन्द्रजीत : खैर, जाओ, कोई हर्ज नहीं।

आज्ञा पाकर तारासिंह एक तहखाने के मुँह पर गये, मगर जब नीचे उतरने लगे तो कुछ देखकर रुक गये। कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने रुकने का सबब

पूछा, जिसके जवाब में तारासिंह ने कहा, "इस तहखाने में रोशनी मालूम होती है और धीरे-धीरे वह रोशनी तेज होती जाती है। मालूम होता है कि सुरंग है और कोई आदमी हाथ में बत्ती लिये इसी तरफ आ रहा है।"

दोनों कुमार और ऐयार लोग भी वहाँ गये और झाँककर देखने लगे। थोड़ी देर में दो कमसिन औरतें नजर पड़ीं, जो सीढ़ी के पास आकर ऊपर चढ़ने का इरादा कर रही थीं। एक के हाथ में मोमबत्ती थी, जिसे देखते ही कुमार ने पहिचान लिया कि यह कमलिनी है, साथ में लाडिली भी थी, मगर उसे पहिचानते न थे, हाँ, जब कैदी बनकर मायारानी के दरबार में लाये गये थे, तो मायारानी के बगल में बैठे हुए उसे देखा था और समझते थे कि वह भी हम लोगों की दुश्मन है। इस समय कमलिनी के साथ उसे देखकर कुमार को शक मालूम हुआ, क्योंकि इन्द्रजीतसिंह कमलिनी को दोस्त समझते थे और दोस्त के साथ दुश्मन का होना बेशक खुटके की बात है।

कमलिनी जब सीढ़ी के पास पहुँची तो ऊपर रोशनी देखकर रुक गयी, साथ ही कुमार ने पुकारकर कहा, "डरो मत, ऊपर चली आओ, मैं हूँ, इन्द्रजीतसिंह !"

कमलिनी कुमार की आवाज पहिचान गयी और लाडिली को साथ लिये ऊपर चली आयी, मगर दोनों कुमारों और उनके ऐयारों को यहाँ देखकर ताज्जुब करने लगी।

कमलिनी : आप लोग यहाँ कैसे आये ?

इन्द्रजीत : यही बात मैं तुमसे पूछनेवाला था।

कमलिनी : मैं तो आपको छुड़ाने के लिए आयी हूँ, मगर मालूम होता है कि मेरे आने के पहिले ही किसी ने पहुँचकर आप लोगों को छुड़ा दिया।

देवी : कोई दूसरा नहीं आया, दोनों कुमारों ने स्वयं अपनी-अपनी हथकड़ी तोड़ डाली, जंगलों का सींखचा खैंचकर बाहर निकल आये और हम लोगों को भी कैद से छुड़ाया, इसके बाद दीवार तोड़कर हम लोग अभी थोड़ी देर हुई, इधर आये हैं !

कमलिनी : (हँसकर) बहादुर हैं, यह न ऐसा करेंगे तो दूसरा कौन करेगा।

इन्द्रजीत : हम एक बात तुमसे और पूछा चाहते हैं।

कमलिनी : आपका मतलब मैं समझ गयी। (लाडिली की तरफ देखकर) शायद इसके बारे में आप कुछ पूछेंगे !

इन्द्रजीत : हाँ, ठीक है, क्योंकि इन्हें हमने उसके पास बैठे देखा था, जिसके फरेब ने हमारी यह दशा की है और लोगों की बातों से यह भी

मालूम हुआ कि उसका नाम मायारानी है।

कमलिनी : बहुत दिनों तक साथ रहने पर भी आपको मेरा भेद कुछ मालूम नहीं हुआ, मगर इस समय मैं इतना कह देना उचित समझती हूँ कि यह मेरी छोटी बहिन है और मायारानी बड़ी बहिन है। हम तीनों बहिनें हैं, लेकिन अनबन होने के कारण मैं उससे अलग हो गयी और आज इसने भी उसका साथ छोड़ दिया। आज से पहले वह मेरी ही दुश्मन थी, मगर आज से इसकी भी जिसका नाम लाडिली है, जान की प्यासी हो गयी, मगर इतना सुनने पर भी मैं समझती हूँ कि आप मुझे अपना दुश्मन न समझते होंगे।

इन्द्रजीत : नहीं नहीं, कदापि नहीं, मैं तुम्हें अपना हमदर्द समझता हूँ, तुमने मेरे साथ बहुत कुछ नेकी की है।

कमलिनी : आप लोगों को छुड़ाने के लिए तेजसिंह भी यहाँ आये थे, मगर गिरफ्तार हो गये।

इन्द्रजीत : क्या तेजसिंह भी गिरफ्तार हो गये ? लेकिन उस कैदखाने में नहीं लाये गये, जहाँ हम लोग थे !

कमलिनी : वह दूसरी जगह रक्खे गये थे। मैंने उन्हें भी कैद से छुड़ाया है, अब थोड़ी ही देर में आप उनसे मिला चाहते हैं।

आनन्दसिंह चुपचाप इन दोनों की बातें सुन रहे थे और छिपी निगाहों से लाडिली के रूप की अलौकिक छटा का भी आनन्द ले रहे थे। लाडिली भी प्रेम की निगाहों से उन्हें देख रही थी। इस बात को कमलिनी ने भी जान लिया, मगर वह तरह दे गयी। जब आनन्दसिंह ने तेजसिंह का हाल सुना, तब चौंके और कमलिनी की तरफ देखकर बोले—

आनन्द : सुना है कि हमारे माता-पिता भी···

कमलिनी : हाँ, उन दोनों को भी कमबख्त मायारानी ने फँसा लिया है। हाय, मैंने सुना है कि वे दोनों बेचारे बड़े ही संकट में हैं और सहज ही में उन दोनों का छूटना मुश्किल है, तथापि उद्योग में विलम्ब न करना चाहिए। अब आप कोई सवाल न कीजिए और यहाँ से जल्द निकल चलिए।

राजा वीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता का हाल सुनकर सब-के-सब घबड़ा गये और आगे कुछ सवाल करने की हिम्मत न पड़ी। कुमार कमलिनी के साथ चलने के लिए तैयार हो गये और सभों को साथ लिये हुए कमलिनी फिर उसी तहखाने में उतर गयी, जहाँ से आयी थी। कुँअर इन्द्रजीतसिंह किशोरी का और आनन्दसिंह कामिनी का हाल पूछने के लिए बेचैन थे, मगर मौका न समझकर चुप रह गये।

नीचे जाने पर मालूम हुआ कि वह एक सुरंग का रास्ता था, मगर यह

सुरंग साधारण न थी। इसकी चौड़ाई केवल इतनी थी कि दो आदमी बराबर मिलकर जा सकते थे। ऊँचाई की यह अवस्था थी कि हरएक मर्द हाथ ऊँचा करके उसकी छत छू सकता था। दोनों तरफ की दीवार स्याह पत्थर की थी, जिस पर तरह-तरह की खूबसूरत भयानक और कहीं-कहीं आश्चर्यजनक तस्वीरें मुसौवरों की कारीगरी का नमूना दिखा रही थीं, अर्थात रंगों से बनी थीं, पत्थर खोदकर नहीं बनायी गयी थीं, परन्तु उन तस्वीरों के रंग की भी यह अवस्था थी कि अभी दो-चार दिन की बनी मालूम होती थीं, जिन्हें देख हमारे कुमारों और ऐयारों को बहुत-ही ताज्जुब मालूम हो रहा था।

कमलिनी : (इन्द्रजीतसिंह से) आप चाहते होंगे कि इन विचित्र तस्वीरों को अच्छी तरह देखें !

इन्द्रजीत : बेशक ऐसा ही है, इस दौड़ादौड़ में ऐसी उत्तम तस्वीरों के देखने का आनन्द कुछ भी नहीं मिल सकता और यहाँ की एक-एक तस्वीर ध्यान देकर देखने योग्य है, परन्तु क्या किया जाय, जबसे अपने माता-पिता का हाल तुम्हारी जुबानी सुना है, जी बेचैन हो रहा है, यही इच्छा होती है कि जहाँ तक जल्द हो सके, उनके पास पहुँचें और उन्हें कैद से छुड़ावें। तुम स्वयं कह चुकी हो कि वह बड़े संकट में पड़े हैं, परन्तु यह न जाना गया कि उन्हें किस प्रकार का संकट है !

कमलिनी : आपका कहना बहुत ठीक है, इन तस्वीरों को देखने के लिए बहुत समय चाहिए, बल्कि इनका हाल और मतलब जानने के लिए कई दिन चाहिए, और यह समय यहाँ अटकने का नहीं है, मगर साथ ही इसके यह भी याद रखिए कि आप दो-चार या दस घण्टे के अन्दर ठिकाने पहुँच-कर अपने माता-पिता को नहीं छुड़ा सकते। मुझे ठीक-ठीक मालूम नहीं कि वह किस कैदखाने में कैद हैं, पहिले तो इसी बात का पता लगाने के लिए कई दिन नहीं तो कई पहर चाहिए।

इन्द्रजीत : तो क्या तुमने उन्हें अपनी आँखों से नहीं देखा ?

कमलिनी : नहीं मगर इतना जानती हूँ कि इस बाग के चौथे दर्जे में किसी ठिकाने वे कैद हैं।

इन्द्रजीत : क्या इस बाग के कई दर्जे हैं, जिसमें मायारानी रहती है और जहाँ हम लोग बेबस करके लाये गये थे ?

कमलिनी : हाँ, इस बाग के चार दर्जे हैं। पहिले दर्जे में तो सिपाहियों और नौकरों के ठहरने का ठिकाना है, दूसरे दर्जे में स्वयं मायारानी रहती है, तीसरे और चौथे दर्जे में कोई नहीं रहता, हाँ, यदि कोई ऐसा कैदी हो, जिसे बहुत ही गुप्त रखना मंजूर हो तो वहाँ भेज दिया जाता है। तीसरे

और चौथे दर्जे को तिलिस्म कहना चाहिए, बल्कि चौथा दर्जा तो (काँपकर) ओफ, बड़ी-बड़ी भयानक चीजों से भरा हुआ है।

इन्द्रजीत : तो उसी चौथे दर्जे में हमारे माता-पिता कैद हैं?

कमलिनी : जी हाँ।

आनन्द : शायद तुम्हारी छोटी बहिन कुछ जानती हों, जो तुम्हारे साथ हैं?

कमलिनी : नहीं नहीं, यह बेचारी तीसरे-चौथे दर्जे का हाल कुछ भी नहीं जानती।

लाडिली : बल्कि तीसरे और चौथे दर्जे का पूरा-पूरा हाल मायारानी को भी नहीं मालूम। कमलिनी बहिन को भी कुछ न मालूम न था, मगर दो-ही-चार महीनों में न मालूम क्योंकर वहाँ का विचित्र हाल इन्हें मालूम हो गया। देखिए इसी सुरंग को, जिसमें हम लोग जा रहे हैं, मायारानी भी नहीं जानती थी और मुझे तो इसका कुछ गुमान भी न था।

यहाँ पर कमलिनी के हाथ की वह मोमबत्ती जलकर पूरी हो गयी और कमलिनी ने उसे जमीन पर फेंक दिया। अब इस सुरंग में केवल उस कन्दील की रोशनी रह गयी, जो ये लोग कैदखाने में से लाये थे और इस समय तारासिंह उसे अपने हाथ में लटकाये सभों के पीछे-पीछे आ रहे थे। कमलिनी के कहे मुताबिक तारासिंह अब कन्दील लिये हुए आगे-आगे चलने लगे। लगभग बीस कदम जाने बाद एक चौमुहानी मिली, अर्थात् वहाँ से चारों तरफ सुरंगें गयी हुई थीं। कमलिनी ने रुककर इन्द्रजीतसिंह की तरफ देखा और कहा, "अब यहाँ से अगर हम लोग चाहें तो इस तिलिस्मी मकान के बाहर निकल जा सकते हैं।"

इन्द्रजीत : यह सामनेवाला रास्ता कहाँ गया है?

कमलिनी : बाग के तीसरे और चौथे दर्जे में जाने के लिए यही रास्ता है और बायीं तरफवाली सुरंग उस दूसरे दर्जे में गयी है, जिसमें मायारानी रहती है।

आनन्द : और दाहिनी तरफ जाने से हम लोग कहाँ पहुँचेंगे?

कमलिनी : इस तिलिस्मी मकान या बाग के बाहर हो जाने के लिए वही राह है।

इन्द्रजीत : तो अब तुम हम लोगों को कहाँ ले जाना चाहती हो?

कमलिनी : जहाँ आप कहिए।

आनन्द : अगर मायारानी के बाग में ले चलो तो हम उसे इसी समय गिरफ्तार कर लें, इसके बाद सब काम सहज ही में हो जायगा।

कमलिनी : यह काम सहज नहीं है और इसके सिवाय जहाँ तक मैं

समझती हूँ, मायारानी इस समय अपने कमरे में न होगी या यदि होगी भी तो हर तरह से होशियार होगी। केवल इतना ही नहीं वहाँ जाने से और भी कई प्रकार का धोखा है। एक तो उस बाग की चहारदीवारी के बाहर कूदकर या कमन्द लगाकर निकल जाना असम्भव है, दूसरे उस बाग की हिफाजत के लिए पाँच सौ सिपाही मुकर्रर हैं, जो हमेशा मुस्तैद और सहज ही में मायारानी के पास पहुँच जाने के लिए तैयार रहते हैं। माया-रानी को गिरफ्तार करके बाग के बाहर ले जाना कठिन है। मेरी समझ में तो आपको एक दफे यहाँ से बाहर निकल जाना चाहिए।

इन्द्रजीत : मगर मैं कुछ और ही चाहता हूँ।

कमलिनी : वह क्या ?

इन्द्रजीत : यदि तुमसे हो सके तो हमें किसी ऐसी जगह ले चलो, जो इस बाग की सरहद के अन्दर हो और जहाँ दो-तीन रोज तक गुप्त रीति से हम लोग रह भी सकें।

कमलिनी : (कुछ सोचकर) हाँ, यह हो सकता है। और इस राय को मैं भी पसन्द करती हूँ।

लाडिली : (कमलिनी से) तुमने कौन-सी ऐसी जगह सोची है ?

कमलिनी : ऐसी जगह बाग के तीसरे दर्जे में तो हई है, बल्कि चौथे दर्जे में भी है।

लाडिली : चौथे दर्जे में जाकर दो-तीन दिन तक रहना उचित नहीं, क्योंकि वह बड़ी भयानक जगह है, क्या तुम वहाँ के भेद अच्छी तरह जानती हो ?

कमलिनी : हरे कृष्ण गोविन्द ! वहाँ का हाल जानना क्या खिलवाड़ है ? हाँ, एक मकान के अन्दर जाने का रास्ता जरूर मालूम है, जहाँ कोई दूसरा नहीं पहुंच सकता।

इन्द्रजीत : तो फिर उसी जगह हम लोगों को क्यों नहीं ले चलती हो ?

कमलिनी : (कुछ सोचकर) हाँ, मुझे अब याद आया, इतनी देर से व्यर्थ भटक रही हूँ, अच्छा आप लोग मेरे पीछे-पीछे चले आइए।

सभों को साथ लिये हुए कमलिनी रवाना हुई। थोड़ी दूर जाने बाद एक बन्द दरवाजा मिला। वह दरवाजा लोहे का था, मगर यह नहीं मालूम होता था कि वह किस तरह खुलेगा, क्योंकि न तो उसमें कहीं ताली लगाने की जगह थी और न कोई जंजीर या कुण्डी ही दिखायी देती थी। दरवाजे के दोनों बगल दीवार में तीन-तीन हाथ ऊँचे दो हाथी बने हुए थे। ये हाथी चाँदी के थे और इनके धड़ का अगला हिस्सा कुछ आने की तरफ बढ़ा हुआ था। एक हाथी के सूँड़ में दूसरे हाथी की सूँड़ गुँथी थी। इन दोनों हाथियों

के अगले एक-एक पैर आगे बढ़े और कुछ जमीन की तरफ इस प्रकार मुड़े हुए थे, जिसके देखने से मालूम होता था कि दो सुफेद हाथी क्रोध में आकर सूँड़ मिला रहे हैं और लड़ने के लिए तैयार हैं।

कमलिनी : एक ग्रन्थ के पढ़ने से मुझे मालूम हुआ है कि यह दरवाजा कमानी के सहारे से खुलता और बन्द होता है और इसकी कमानी इन दोनों हाथियों के पेट में है, जिस पर दोनों सूँड़ों के दबाने से दबाव पहुँचता है, अस्तु, यहाँ ताकत का काम है। इन दोनों सूँड़ों को जोर के साथ यहाँ तक झुकाना और दबाना चाहिए कि दरवाजे के साथ लग जाँय। मैं देखा चाहती हूँ कि आपके ऐयारों में कितनी ताकत है।

देवी : अगर किसी आदमी के झुकाये यह झुक सकता है तो पहिले मुझे उद्योग करने दीजिए।

कमलिनी : आइए आइए, लीजिए मैं हट जाती हूँ।

देवीसिंह ने दोनों सूँड़ों पर हाथ रख और छाती से अड़ाकर जोर किया, मगर एक बित्ते से ज्यादे न दबा सके और दरवाजा दो हाथ की दूरी पर था, इसलिए दो हाथ दबाकर ले जाने की आवश्यकता थी। आखिर देवीसिंह यह कहते हुए पीछे हटे, "यह राक्षसी काम है।"

इसके बाद और ऐयारों ने भी जोर किया, मगर देवीसिंह से ज्यादे काम न कर सके। तब कमलिनी कुमारों की तरफ देखकर हँसी और बोली, "सिवाय आप दोनों के यह काम किसी तीसरे से न हो सकेगा!"

आनन्द : (इन्द्रजीतसिंह की तरफ देखकर) यदि आज्ञा हो तो मैं भी जोर करूँ?

इन्द्रजीत : क्या हर्ज है, तुम यह काम बखूबी कर सकते हो!

आज्ञा पाते ही कुँअर आनन्दसिंह ने दोनों सूँड़ों पर हाथ रखके जोर किया और पहिले ही जोर में दरवाजे के साथ लगा दिया। यह हाल देखते ही लाडिली ने जोश में आकर कहा, "वाह वाह! कैद की मुसीबत उठाकर कमजोर होने पर भी यह हाल है!"

दरवाजे के साथ सूँड़ों का लगना था कि हाथियों के चिग्घाड़ने की हलकी आवाज आयी और दरवाजा जो एक ही पल्ले का था, सरसर करता जमीन के अन्दर घुस गया। कमलिनी ने आनन्दसिंह से कहा, "अब सूँड़ को पीछे की तरफ हटाइए, मगर पहिले सूँड़ के नीचे से या उसके ऊपर से लाँघकर दूसरी तरफ निकल चलिए।"

हाथ में कन्दील लिये हुए पहिले तारासिंह टप गये और दरवाजे के उस पार जा खड़े हुए, तब इन्द्रजीतसिंह दरवाजे के उस पार पहुँचे, उसके बाद कुँअर आनन्दसिंह जाया ही चाहते थे कि एक नयी घटना ने सब खेल ही

बिगाड़ दिया।

दरवाजे के उस पार एक आदमी न मालूम कब से छिपा बैठा था। उसने फुर्ती से आगे बढ़कर एक लात उस कन्दील में मारी जो तारासिंह के हाथ में थी। कन्दील हाथ से छूटकर जमीन पर तो न गिरी, मगर बुझ गयी और एकदम अन्धकार हो गया। यद्यपि यह काम उसने बड़ी फुर्ती से किया, तथापि इन लोगों की निगाह उस पर पड़ ही गयी, लेकिन उसकी असली सूरत नजर न पड़ी क्योंकि वह काला कपड़ा पहिने और अपने चेहरे को नकाब से छिपाये हुए था।

अँधेरा होते ही उसने दूसरा काम किया। भुजाली उसके पास थी, जिसका भरपूर हाथ उसने कुँअर इन्द्रजीतसिंह के सर पर जमाया। अँधेरे के सबब से निशाने में फर्क पड़ गया तो भी कुमार के बायें मोढ़े पर गहरी चोट बैठी। चोट खाते ही कुमार ने पुकारकर कहा, "सब कोई होशियार रहना! दुश्मन के हाथ में हर्बा है और वह मुझे जख्मी भी कर चुका है!"

यह हाल देख और सुनकर कमलिनी ने झट अपने तिलिस्मी खंजर से काम लिया। हम ऊपर लिख आये हैं कि उसके कमर में दो तिलिस्मी खंजर हैं। उसने एक खंजर हाथ में लेकर उसका कब्जा दबाया और उसमें से बिजली की तरह चमक पैदा हुई, जिससे कमलिनी के सिवाय जो आदमी वहाँ थे कोई भी उस चमक को न सह सका और सभों ने अपनी-अपनी आँखें बन्द कर लीं।

दरवाजे के उस पार भी उसी तरह की सुरंग थी। कमलिनी ने देखा कि दुश्मन अपना काम करके सामने की तरफ भागा जा रहा है, मगर खंजर की चमक ने उसे भी चौंधिया दिया था, जिसका नतीजा यह हुआ कि कमलिनी बहुत जल्द ही उसके पास जा पहुँची और खंजर उसके बदन से लगा दिया, जिसके साथ ही वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। खंजर कमर में रखकर कमलिनी लौटी और उसने अपने बटुए में से सामान निकालकर एक मोमबत्ती जलायी, तथा इतने में हमारे ऐयार लोग भी दरवाजे के दूसरी तरफ जा पहुँचे।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह के मोढ़े से खून निकल रहा था। यद्यपि कुमार को उसकी कुछ परवाह न थी और उनके चेहरे पर भी किसी प्रकार का रंज न मालूम होता था, तथापि देवीसिंह ने जख्म बाँधने का इरादा किया, मगर कमलिनी ने रोककर अपने बटुए में से किसी प्रकार के तेल की एक शीशी निकाली और अपने नाजुक हाथों से घाव पर तेल लगाया, जिससे तुरन्त ही खून बन्द हो गया। इसके बाद अपने आँचल में से थोड़ा कपड़ा फाड़कर जख्म पर बाँधा। उसके एहसान ने कुँअर इन्द्रजीतसिंह को पहिले ही अपना

कर लिया था, अब उसकी मुहब्बत और हमदर्दी ने उन्हें अच्छी तरह अपने काबू में कर लिया।

इन्द्रजीत : (कमलिनी से) तुम्हारे अहसानों के बोझ से मैं दबा ही जाता हूँ। (मुस्कुराकर और धीरे से) देखना चाहिए सिर उठाने का दिन भी कभी आता है, या नहीं।

कमलिनी : (मुस्कुराकर) बस, रहने दीजिए, बहुत बातें न बनाइए।

आनन्द : मालूम होता है वह शैतान भाग गया ?

कमलिनी : नहीं नहीं, मेरे सामने से भागकर निकल जाना जरा मुश्किल है, आगें चलकर आप उसे जमीन पर बेहोश पड़ा हुआ देखेंगे।

इन्द्रजीत : इस समय तो तुमने वह काम किया, जिसे करामात कहना चाहिए !

कमलिनी : मैं बेचारी क्या कर सकती हूँ, इस समय तो (खंजर की तरफ इशारा करके) इसने बड़ा काम किया।

इन्द्रजीत : बेशक, यह अनूठी चीज है, इसकी चमक ने तो आँखें बन्द कर दीं, कुछ देख भी न सके कि तुमने क्या किया ?

कमलिनी : यह तिलिस्मी खंजर है और इसमें बहुतसे गुण हैं।

इन्द्रजीत : मैं सुना चाहता हूँ कि इस खंजर में क्या-क्या गुण हैं। बल्कि और कई बातें पूछा चाहता हूँ, मगर यकायक दुश्मन के पहुँचने से···

कमलिनी : खैर ईश्वर की मर्जी, मैं खूब जानती हूँ कि सिवाय इस शैतान के और कोई यहाँ तक नहीं आ सकता, तिस पर भी इस दरवाजे को खोलने की इसे सामर्थ्य न थी, इसी से चुपचाप दबका हुआ था, मगर फिर भी इसका यहाँ तक पहुँच जाना ताज्जुब मालूम होता है।

इन्द्रजीत : क्या तुम उसे पहिचानती हो ?

कमलिनी : हाँ, कुछ-कुछ शक तो होता है, मगर निश्चय किये विना कुछ नहीं कह सकती।

इन्द्रजीत : जो हो; मगर अब हम लोगों को यहाँ से निकल चलने के लिए जल्दी करना चाहिए।

कमलिनी : पहिले इस दरवाजे को बन्द कर लीजिए, नहीं तो इस राह से दुश्मन के आ पहुँचने का डर रहेगा।

दरवाजे के दूसरी तरफ भी उसी प्रकार के दो हाथी बने हुए थे। कमलिनी के कहे मुताबिक आनन्दसिंह ने जोर से सूँड़ को दरवाजे की तरफ हटाया, जिससे उस तरफवाले हाथियों की सूँड़ ज्यो-की-त्यों सीधी हो गयी और दरवाजा भी बन्द हो गया।

इन्द्रजीत : मालूम होता है कि इस तरफसे कोई दरवाजा खोलना चाहे

तो इन हाथियों की सूँड़ों को जो इस समय दरवाजे के साथ लगी हुई हैं, अपनी तरफ खैंचकर सीधा करना पड़ेगा और ऐसा करने से उस तरफ के हाथियों की सूँड़ें दरवाजे के पास आ लगेंगी।

कमलिनी : आपका सोचना बहुत ठीक है, वास्तव में ऐसा ही है।

इन्द्रजीत : अच्छा अब यहाँ से चल देना चाहिए, चलते-चलते इस खंजर का गुण भी कहो, जिसकी करामात मैं अभी देख चुका हूँ।

कमलिनी : चलते-चलते कहने की कोई जरूरत नहीं, मैं इसी जगह अच्छी तरह समझाकर एक खंजर आपके हवाले करती हूँ।

उस खंजर में जो-जो गुण था, उसके विषय में ऊपर कई जगह लिखा जा चुका है। कमलिनी ने कुँअर इन्द्रजीतसिंह को सब समझाया और इसके बाद खंजर के जोड़ के अँगूठी उनके हाथ में पहिनाकर, एक खंजर उनके हवाले किया, जिसे पाकर कुमार बहुत प्रसन्न हुए।

लाडिली : (कमलिनी से) एक खंजर छोटे कुमार को भी देना चाहिए।

कमलिनी : (मुस्कुराकर) आपकी सिफारिश की कोई जरूरत नहीं, मैं खुद एक खंजर छोटे कुमार को दूंगी।

आनन्द : कब ?

कमलिनी : यह दूसरा खंजर उसी तरह का मेरे पास है। इसे मैं आपको अभी दे देती, मगर इसलिए रख छोड़ा है कि आपही के लिए इस घर में अभी कई तरह का काम करना है, शायद कभी दुश्मनों के···

आनन्द : नहीं नहीं, यह खंजर जो तुम्हारे पास रह गया है, लेकर मैं तुम्हें खतरे में नहीं डाल सकता. कल परसों या दस दिन में जब मौका हो, तब मुझे देना।

कमलिनी : जरूर दूँगी, अच्छा अब यहाँ से चलना चाहिए।

दोनों कुमारों और ऐयारों को साथ लिये हुए कमलिनी वहाँ से रवाना हुई और उस ठिकाने पहुँची, जहाँ वह शैतान बेहोश पड़ा हुआ था, जिसने कन्दील बुझाकर कुमार को जख्मी किया था। चेहरे पर से नकाब हटाते ही कमलिनी चौंकी और बोली, "हैं, यह तो कोई दूसरा ही है! मैं समझे हुए थी कि दारोगा है, किसी तरह राजा बीरेन्द्रसिंह की कैद से छूटकर आ गया होगा, मगर इसे तो मैं बिल्कुल नहीं पहिचानती। (कुछ रुककर) उसने मेरे साथ दगा तो नहीं की! कौन ठिकाना, ऐसे आदमी का विश्वास न करना चाहिए, मगर मैंने तो उसके साथ···"

ऊपर लिखी बातें कह कमलिनी चुप हो गयी और थोड़ी देर तक किसी गम्भीर चिन्ता में डूबी-सी दिखायी पड़ी। आखिर कुँअर इन्द्रजीतसिंह से

रहा न गया, धीरे से कमलिनी की उँगली पकड़कर बोले—

इन्द्रजीत : तुम्हें इस अवस्था में देखकर मुझे जान पड़ता है कि शायद कोई नयी मुसीबत आनेवाली है, जिसके विषय में तुम कुछ सोच रही हो।

कमलिनी : हाँ, ऐसा ही है, मेरे कामों में विघ्न पड़ता दिखायी देता है। अच्छा मर्जी परमेश्वर की ! आपके लिए कष्ट उठाना क्या जान तक देने को तैयार हूँ। (कुछ रुककर) अब देर करना उचित नहीं, यहाँ से निकल ही जाना चाहिए।

इन्द्रजीत : क्या मायारानी के इस अनूठे बाग के बाहर निकलने को कहती हो ?

कमलिनी : हाँ।

इन्द्रजीत : मैं तो सोचे हुए था कि माता-पिता को छुड़ाकर, तभी यहाँ से जाऊँगा।

कमलिनी : मैंने भी यही निश्चय किया था, परन्तु क्या किया जाय, सबके पहिले अपने को बचाना उचित है, यदि आप ही आफत में फँसे रहेंगे, तो उन्हें कौन छुड़ायेगा !

इन्द्रजीत : यहाँ की अद्‌भुत बातों से मैं अनजान हूँ, इसलिए जोकुछ करने को कहोगी करना ही पड़ेगा, नहीं तो मेरी राय तो यहाँ से भागने की न थी, क्योंकि जब मेरे हाथ-पैर खुले हैं और सचेत हूँ, तो एक क्या पाँच सौ से भी डर नहीं सकता। जिस पर तुम्हारा दिया हुआ यह अनूठा तिलिस्मी खंजर पाकर एक दफे साक्षात काल का भी मुकाबला करने से बाज न आऊँगा।

कमलिनी : आपका कहना ठीक है, मैं आपकी बहादुरी को अच्छी तरह जानती हूँ, परन्तु इस समय नीति यही कहती है कि यहाँ से निकल जाओ।

इन्द्रजीत : अगर ऐसा ही है तो चलो मैं चलता हूँ। (धीरे से कान में) तुम्हारी बुद्धिमानी पर मुझे डाह होता है।

कमलिनी : (धीरे से) डाह कैसा ?

इन्द्रजीत : (दो कदम आगे ले जाकर) डाह इस बात का कि वह बड़ा ही भाग्यशाली होगा, जिनके तुम पाले पड़ोगी।

इसके जवाब में कमलिनी ने कुमार को एक हलकी चुटकी काटी और धीरे से कहा, "मुझे तो तुमसे बढ़कर भाग्यशाली कोई दिखायी नहीं पड़ता, मगर···!"

आह, कमलिनी की इस बात ने तो कुमार को फड़का दिया, लेकिन इस 'मगर' के शब्द ने भी बड़ा अन्धेर किया, जिसका सबब हमारे मनचले

पाठक स्वयं समझ जायँगे, क्योंकि वे कमलिनी और कुँअर इन्द्रजीतसिंह की पहली बातें अभी भूले न होंगे, जो तालाब के बीचवाले उस मकान में हुई थीं, जहाँ कमलिनी रहा करती थी।

कमलिनी : (देवीसिंह से) इस आदमी को जो बेहोश पड़ा है, उठाके ले चलना चाहिए।

देवी : हाँ हाँ, इसे मैं उठाकर ले चलूंगा।

इन्द्रजीत : शायद हमलोगों को फिर लौटना पड़े, क्योंकि बाहर निकलने का रास्ता पीछे छोड़ आये हैं।

कमलिनी : हाँ, सुगम रास्ता तो यही था, मगर अब मैं उधर न जाऊँगी, कौन ठिकाना हाथीवाले दरवाजे के उस तरफ दुश्मन लोग आ गये हों, क्योंकि कैदखाने की दीवार आप तोड़ ही चुके हैं और उधरवाली सुरंग का मुँह खुला रहने के कारण किसी का आना कठिन नहीं है।

इन्द्रजीत : तब दूसरी राह कौन-सी है ? क्या उधर चलोगी, जिधर से यह दुश्मन आया है।

कमलिनी : नहीं, उधर भी दुश्मनों का गुमान है, आइए मैं एक और ही राह से ले चलती हूँ।

आगे-आगे कमलिनी और उसके पीछे दोनों कुमार और ऐयार लोग रवाना हुए।

यहाँ भी दोनों तरफ दीवारों में सुन्दर तस्वीरें बनी हुए थीं। दस-बारह कदम आगे जाने बाद बगल की दीवार में एक छोटा-सा खुला हुआ दरवाजा था जिसे देखकर कमलिनी ने इन्द्रजीतसिंह से कहा, "यह आदमी इसी राह से आया होगा, क्योंकि अभी तक दरवाजा खुला हुआ है, मगर मैं दूसरी ही राह से चलूंगी, जो ज़रा कठिन है।"

कुमार : मैं तो कहता हूँ कि इसी राह से चलो, दरवाजे पर दस-पाँच दुश्मन मिल ही जायँगे तो क्या होगा।

कमलिनी : खैर, तब चलिए।

सबकोई उस राह से बाहर हुए और कमलिनी ने उस दरवाजे को जो एक खटके के सहारे खुलता और बन्द होता था, बन्द कर दिया। उस तरफ भी थोड़ी दूर सुरंग में ही जाना पड़ा। जब सुरंग का अन्त हुआ तो छोटी-छोटी सीढ़ियाँ ऊपर चढ़ने के लिए मिलीं। कमलिनी ने ऊपर की तरफ देखा और कहा, "यहाँ का दरवाजा तो बन्द है।" सबके आगे कमलिनी और फिर दोनों कुमार और ऐयार लोग ऊपर चढ़े। ये सीढ़ियाँ घूमती हुई ऊपर गयी थीं, मालूम होता था कि किसी बुर्ज पर चढ़ रहे हैं।

जब सीढ़ियों का अन्त हुआ तो एक चक्कर,पहिए की तरह बना हुआ

दिखायी दिया जिसे कमलिनी ने चार-पाँच दफे घुमाया। खटके की आवाज के साथ पत्थर की चट्टान अलग हो गयी और सभी लोग उस राह से निकलकर बाहर मैदान में दिखायी देने लगे। बाहर सन्नाटा देखकर कमलिनी ने कहा, "शुक्र है कि यहाँ हमारा दुश्मन कोई नहीं दिखायी देता।"

जिस राह से कुमार और ऐयार लोग बाहर निकले, वह पत्थर का एक चबूतरा था, जिसके ऊपर महादेव का लिंग स्थापित था। चबूतरे के नीचे की तरफ का बगलवाला पत्थर खुलकर जमीन के साथ सट गया था, और वही बाहर निकलने का रास्ता बन गया था। लिंग के बगल में तांबे का बड़ा-सा नन्दी (बैल) बना हुआ था और उसके मोढ़े पर लोहे का एक सर्प गुडेड़ी मारे बैठा था। कमलिनी ने साँप के सिर को दोनों हाथ से पकड़कर उभाड़ा और साथ ही नन्दी ने मुँह खोल दिया, तब कमलिनी ने उसके मुँह में हाथ डालकर कोई पेंच घुमाया। वह पत्थर की चट्टान जो अलग हो गयी थी, फिर ज्यों-की-त्यों हो गयी और सुरंग का मुँह बन्द हो गया। कमलिनी ने साँप के फन को फिर दबा दिया, और बैल ने भी अपना मुँह बन्द कर लिया।

इन्द्रजीत : (कमलिनी से) यह दरवाजा भी अजब तरह से खुलता और बन्द होता है।

कमलिनी : हाँ, बड़ी कारीगरी से बनाया गया है।

इन्द्रजीत : इसके खोलने और बन्द करने की तरकीब मायारानी को मालूम होगी?

कमलिनी : जी हाँ, बल्कि (लाडिली की तरफ इशारा करके) यह भी जानती है, क्योंकि बाग के तीसरे दर्जे में जाने के लिए यह भी एक रास्ता है, जिसे हम तीनों बहिनें जानती हैं, मगर उस हाथीवाले दरवाजे का हाल, जिसे आपने खोला था, सिवाय मेरे और कोई भी नहीं जानता।

आनन्द : यह जगह बड़ी भयानक मालूम पड़ती है!

कमलिनी : जी हाँ, यह पुराना मसान है और गंगाजी भी यहाँ से थोड़ी ही दूर पर हैं। किसी जमाने में जब का यह मसान है, गंगाजी इसी जगह पास ही में बहती थीं, मगर अब कुछ दूर हट गयी और इस जगह बालू पड़ गया है।

आनन्द : खैर, अब क्या करना और कहाँ चलना चाहिए?

कमलिनी : अब हमको गंगा पार होकर जमानिया में पहुँचना चाहिए। वहाँ मैंने एक मकान किराये पर ले रक्खा है, जो बहुत ही गुप्त स्थान में है, उसी में दो-तीन दिन रहकर कार्रवाई करूँगी।

इन्द्रजीत : गंगा पार किस तरह जाना होगा?

कमलिनी : थोड़ी ही दूर पर गंगा के किनारे एक किश्ती बँधी हुई है, जिस पर मैं आयी थी, मैं समझती हूँ वह किश्ती अभी तक वहाँ ही होगी।

सवेरा होने में कुछ विलम्ब न था। मन्द-मन्द दक्षिणी हवा चल रही थी और आसमान पर केवल दस-पाँच तारे दिखायी पड़ रहे थे, जिनके चेहरे की चमक-दमक चलाचली की उदासी के कारण मन्द पड़ती जा रही थी, जबकि कमलिनी और कुमार इत्यादि सब कोई वहाँ से रवाना हुए और उसी किश्ती पर सवार होकर, जिसका जिक्र कमलिनी ने किया था, गंगा पार हो गये।

तीसरा बयान

मायारानी उस बेचारे मुसीबत के मारे कैदी को रञ्ज, डर और तरद्दुद की निगाहों से देख रही थी जबकि यह आवाज उसने सुनी, "बेशक, मायारानी की मौत आ गयी !" इस आवाज ने मायारानी को हद से ज्यादे बेचैन कर दिया। वह घबड़ाकर चारों तरफ देखने लगी, मगर कुछ मालूम न हुआ कि यह आवाज कहाँ से आयी। आखिर, वह लाचार होकर धनपति को साथ लिये हुए वहाँ से लौटी और जिस तरह वहाँ गयी थी, उसी तरह बाग के तीसरे दर्जे से होती हुई कैदखाने के दरवाजे पर पहुँची, जहाँ अपने दोनों ऐयार बिहारीसिंह और हरनामसिंह को छोड़ गयी थी। मायारानी को देखते ही बिहारीसिंह बोला —"आप हम लोगों को यहाँ व्यर्थ ही छोड़ गयीं !"

माया : हाँ, अब मैं भी यही सोचती हूँ, क्योंकि अगर तुम दोनों को अपने साथ ले जाती तो इसी समय टण्टा तै हो जाता। यद्यपि धनपति मेरे साथ थी और तुम लोग भी जानते हो कि यह बहुत ताकतवर है, तथापि मेरा हौसला न पड़ा कि उसे बाहर निकालती।

बिहारी : (चौंककर) तो क्या आप अपने कैदी को देखने के लिए चौथे दर्जे में गयी थीं ? मगर मैंने जोकुछ कहा, वह कुछ दूसरे मतलब से कहा था।

माया : हाँ, मैं उसी दुश्मन के पास गयी थी, जिसके बारे में चण्डूल ने मुझे होशियार किया था, मगर तुमने यह किस मतलब से कहा कि आप हम लोगों को यहाँ व्यर्थ ही छोड़ गयी थीं।

बिहारी : मैंने इस मतलब से कहा कि हम लोग यहाँ बैठे-बैठे जान रहे थे कि इस कैदखाने के अन्दर ऊधम मच रहा है, मगर कुछ कर नहीं सकते थे।

माया : ऊधम कैसा ?

बिहारी : इस कैदखाने के अन्दर से दीवार तोड़ने की आवाज आ रही थी, मालूम होता है कि कैदियों की हथकड़ी-बेड़ी किसी ने खोल दी।

माया : मगर तुम्हारी बातों से यह जाना जाता है कि अभी कैदी लोग इसके अन्दर ही हैं। मैं सोच रही थी कि जब ताली लेकर लाडिली चली गयी तो कहीं कैदियों को भी छुड़ा न ले गयी हो।

बिहारी : नहीं नहीं, कैदी वेशक इसके अन्दर थे और आपके जाने बाद कैदियों के बातचीत की कुछ-कुछ आवाज भी आ रही थी, कुछ देर बाद दीवार तोड़ने की आहट मालूम होने लगी, मगर अब मैं नहीं कह सकता कि कैदी इसके अन्दर हैं या निकल गये, क्योंकि थोड़ी देर से भीतर सन्नाटा-सा जान पड़ता है, न तो किसी की बातचीत की आहट मिलती है, न दीवार तोड़ने की।

माया : (कुछ सोचकर) दीवार तोड़कर इस बाग के बाहर निकल जाना जरा मुश्किल है, मगर मुझे ताज्जुब मालूम होता है कि उन कैदियों की हथकड़ी-बेड़ी किसने खोली, और दीवार तोड़ने का सामान उन्हें क्योंकर मिला ! शायद तुम्हें धोखा हुआ हो।

बिहारी : नहीं नहीं, मुझे धोखा नहीं हुआ, मैं पागल नहीं हूँ !

हरनाम : क्या हम लोग इतना भी नहीं पहिचान सकते कि यह दीवार तोड़ने की आवाज है ?

माया : (ऊँची साँस लेकर) हाय, न मालूम मेरी क्या दुर्दशा होगी ! खैर कैदियों के बारे में मैं पीछे सोचूंगी, पहिले तुम लोगों से एक दूसरे काम में मदद लिया चाहती हूँ !

बिहारी : वह कौन-सा काम है ?

माया : मैंने जिस काम के लिए उसे कैद किया था, वह न हुआ और न आशा ही है कि वह कोई भेद बतायेगा, अस्तु, अब उसे मारकर टण्टा मिटाया चाहती हूँ।

बिहारी : हाँ, आपने उसे जिस तरह की तकलीफ दे रक्खी है, उससे तो उसका मर जाना ही उत्तम है। हाय, वह बेचारा इस योग्य न था। हाय, आपकी बदौलत मेरा भी लोक-परलोक दोनों बिगड़ गया ! ऐसे नेक और होनहार मालिक के साथ आपके बहकाने से जोकुछ मैंने किया, उसका दुःख जन्म-भर न भूलूंगा।

माया : और उन नेकियों को याद न करोगे, जो मैंने तुम लोगों के साथ की थीं।

बिहारी : खैर, अब इस विषय पर हुज्जत करना व्यर्थ है, जब लालच में आकर बुरा काम कर ही चुके तो अब रोना काहे का है।

हरनाम : मुझे भी इस बात का बहुत ही दुःख है, देखा चाहिए क्या होता है। आजकल जो कुछ देखने-सुनने में आ रहा है, उसका नतीजा अवश्य ही बुरा होगा।

माया : (लम्बी साँस लेकर) खैर, जो होगा देखा जायगा, मगर इस समय यदि सुस्ती करोगे तो मेरी जान तो जायगी ही, तुम लोग भी जीते न बचोगे।

बिहारी : यह तो हम लोगों को पहिले ही मालूम हो चुका है कि अब उन बुरे कर्मों का फल शीघ्र ही भोगना पड़ेगा, मगर खैर, आप यह कहिए कि हम लोग क्या करें ? जान बचाने की क्या कोई सूरत दिखायी पड़ती है ?

माया : मेरे साथ बाग के चौथे दर्जे में चलकर पहिले उस कैदी को मारकर छुट्टी करो तो दूसरा काम बताऊँ।

हरनाम : नहीं नहीं, नहीं, यह काम मुझसे न हो सकेगा। बिहारीसिंह से हो सके तो इन्हें ले जाइए। मैं उनके ऊपर हर्बा नहीं उठा सकता। नारायण नारायण, इस अनर्थ का भी कोई ठिकाना है।

माया : (चिढ़कर) हरनाम, क्या तू पागल हो गया है, जो मेरे सामने ऐसी बेतुकी बातें करता है ? अदब और लेहाज को भी तूने एकदम चूल्हे में डाल दिया ! क्या तू मेरी सामर्थ्य को भूल गया ?

हरनाम : नहीं, मैं आपकी सामर्थ्य को नहीं भूला, बल्कि आपकी सामर्थ्य ने स्वयं आपका साथ छोड़ दिया।

बिहारीसिंह और हरनामसिंह की बातें सुनकर मायारानी को क्रोध तो बहुत आया, परन्तु इस समय क्रोध करने का मौका न देखकर, वह तरह दे गयी। मायारानी बड़ी ही चालबाज और दुष्ट औरत थी, समय पड़ने पर वह एक अदने को बाप बना लेती और काम न होने से किसी को एक तिनके बराबर भी न मानती। इस समय अपने ऊपर संकट आया हुआ जान उसने दोनों ऐयारों को किसी तरह राजी रखना ही उचित समझा।

माया : क्यों हरनामसिंह, तुमने कैसे जाना कि मेरी सामर्थ्य ने मेरा साथ छोड़ दिया ?

हरनाम : वह तो इसी से जाना जाता है कि बेबस कैदी की जान लेने के लिए हम लोगों को ले जाया चाहती हो। उस बेचारे को तो एक अदना लड़का भी मार सकता है।

बिहारी : हरनामसिंह का कहना ठीक है, बाहर खड़े होकर आपके हाथ से चलायी हुई एक तीर उसका काम तमाम कर सकती है।

माया : नहीं, यदि ऐसा होता तो मैं उसे बिना मारे लौट न आती, मेरे

कई तीर व्यर्थ गये और नतीजा कुछ भी न निकला !

बिहारी : (चौंककर) सो क्यों ?

माया : उसके हाथ में एक ढाल है । न मालूम वह ढाल उसे किसने दी, जिस पर वह तीर रोककर हंसता है और कहता है कि अब मुझे कोई मार नहीं सकता ।

बिहारी : (कुछ सोचकर) अब अनर्थ होने में कोई सन्देह नहीं, यह काम बेशक चण्डूल का है । कुछ समझ में नहीं आता कि वह कौन कमबख्त है ?

माया : अब सोच-विचार में विलम्ब करना उचित नहीं, जो होना था सो हो चुका, अब जान बचाने की फिक्र करनी चाहिए ।

बिहारी : आपने क्या विचारा ?

माया : तुम लोग यदि मेरी मदद न करोगे तो मेरी जान न बचेगी और जब मुझ पर आफत आवेगी तो तुम लोग भी जीते न बचोगे ।

बिहारी : हाँ, यह तो ठीक है, जान बचाने के लिए कोई-न-कोई उद्योग तो करना ही होगा ।

माया : अच्छा तो तुम लोग मेरे साथ चलो और जिस तरह हो उस कैदी को यमलोक पहुँचाओ । मुझे विश्वास हो गया कि उस कैदी की जान के साथ हम लोगों की आधी बला टल जायगी और इसके बदले में मैं तुम दोनों को एक लाख दूंगी ।

हरनाम : काम तो बड़ा कठिन है ?

यद्यपि बिहारीसिंह और हरनामसिंह अपने हाथ से उस कैदी को मारा नहीं चाहते थे, तथापि मायारानी की मीठी-मीठी बातों से और रुपये की लालच तथा जान के डर से वे लोग यह अनर्थ करने के लिए तैयार हो गये । धनपति और दोनों ऐयारों को साथ लिये हुए मायारानी फिर बाग के चौथे दर्जे की ओर रवाना हुई । सूर्य भगवान के दर्शन तो नहीं हुए थे, मगर सवेरा हो चुका था और मायारानी के नौकर नींद से उठकर अपने-अपने कामों में लग चुके थे । लेकिन मायारानी का ध्यान उस तरफ कुछ भी न था, उसने उस बेचारे कैदी की जान लेना ही सबसे जरूरी काम समझ रक्खा था ।

थोड़ी ही देर में चारों आदमी बाग के चौथे दर्जे में जा पहुँचे और कूएँ के अन्दर उतरकर उस कैदखाने में गये, जिसमें मायारानी का वह अनूठा कैदी बन्द था । मायारानी को उम्मीद थी कि उस कैदी को फिर उसी तरह हाथ में ढाल लिये हुए देखेगी, मगर ऐसा न हुआ । उस जंगलेवाली कोठरी का दरवाजा खुला हुआ था और उस कैदी का कहीं पता न था ।

वहाँ की ऐसी अवस्था देखकर मायारानी अपने रंज और गम को सम्हाल न सकी और एकदम 'हाय' करके जमीन पर गिरकर बेहोश हो गयी। धनपति और दोनों ऐयारों के भी होश जाते रहे, उनके चेहरे पीले पड़ गये और निश्चय हो गया कि अब जान जाने में कोई कसर नहीं है। केवल इतना ही नहीं, बल्कि डर के मारे वहाँ ठहरना भी वे लोग उचित न समझते थे, मगर बेहोश मायारानी को वहाँ से उठाकर बाग के दूसरे दर्जे में ले जाना भी कठिन था, इसलिए लाचार होकर उन लोगों को वहाँ ठहरना पड़ा।

बिहारीसिंह ने अपने बटुए में से लखलखा निकालकर मायारानी को सुँघाया और कोई अर्क उसके मुँह में टपकाया। थोड़ी देर में मायारानी होश में आयी और पड़े-पड़े नीचे लिखी बातें प्रलाप की तरह बकने लगी—

"हाय, आज मेरी जिन्दगी का दिन पूरा हो गया और मेरी मौत आ पहुँची। हाय, मुझे तो अपनी जान का धोखा उसी दिन हो चुका था, जिस दिन कमबख्त नानक ने दरबार में मेरे सामने कहा था कि 'उस कोठरी की ताली मेरे पास है जिसमें किसी के खून से लिखी हुई किताब रक्खी है'*। इस समय उसी किताब ने धोखा दिया। हाय, उस किताब के लिए नानक को छोड़ देना ही बुरा हुआ। यह काम उसी हरामजादे का है, लाडिली और धनपति के किये कुछ भी न हुआ। (धनपति की तरफ देखकर) सच तो यों है कि मेरी मौत तेरे ही सबब से हुई। तेरी ही मुहब्बत ने मुझे गारत किया, तेरे ही सबब से मैंने पाप की गठरी सिर पर लादी, तेरे ही सबब से मैंने अपना धर्म खोया, तेरे ही सबब से मैं बुरे कामों पर उतारू हुई, तेरे ही सबब से मैंने अपने पति के साथ बुराई की, तेरे ही सबब से मैंने अपना सर्वस्व बिगाड़ दिया, तेरे ही सबब से मैं बीरेन्द्रसिंह के लड़कों के साथ बुराई करने के लिए तैयार हुई, तेरे ही सबब से कमलिनी मेरा साथ छोड़कर चली गयी, और तेरे ही सबब से मैं आज इस दशा को पहुँची। हाय, इसमें कोई सन्देह नहीं कि बुरे कर्मों का बुरा फल अवश्य मिलता है। हाय, मुझ-सी औरत, जिसे ईश्वर ने हर प्रकार का सुख दे रक्खा था, आज बुरे कर्मों की बदौलत ही इस अवस्था को पहुँची। आह, मैंने क्या सोचा था और क्या हुआ? क्या बुरे कर्म करके भी कोई सुख भोग सकता है! नहीं नहीं, कभी नहीं, दृष्टान्त के लिए स्वयं मैं मौजूद हूँ!"

मायारानी न मालूम और भी क्या-क्या बकती, मगर एक आवाज ने उसके प्रलाप में विघ्न डाल दिया और उसके होश-हवास दुरुस्त कर दिये।

---

*देखिए चौथा भाग, सातवाँ बयान।

किसी तरफ से यह आवाज आयी—"अब अफसोस करने से क्या होता है, बुरे कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा।"

बहुत कुछ विचारने और चारों तरफ निगाह दौड़ाने पर भी किसी के समझ में न आया कि बोलनेवाला कौन या कहाँ है। डर के मारे सभों के बदन में कँपकँपी पैदा हो गयी। मायारानी उठ बैठी और धनपति तथा दोनों ऐयारों को साथ लिये और काँपते हुए कलेजे पर हाथ रक्खे वहाँ से अपने स्थान अर्थात् बाग के दूसरे दर्जे की तरफ भागी।

चौथा बयान

कमलिनी की आज्ञानुसार बेहोश नागर की गठरी पीठ पर लादे हुए भूतनाथ कमलिनी के उस तिलिस्मी मकान की तरफ रवाना हुआ, जो एक तालाब के बीचोबीच में था। इस समय उसकी चाल तेज थी और वह खुशी के मारे बहुत ही उमंग और लापरवाही के साथ बड़े-बड़े कदम मारता जा रहा था। उसे दो बातों की खुशी थी, एक तो उन कागजों को वह अपने हाथ से जलाकर खाक कर चुका था, जिनके सबब से वह मनोरमा और नागर के आधीन हो रहा था और जिनका भेद लोगों पर प्रकट होने के डर से अपने को मुर्दे से भी बदतर समझे हुए था, दूसरे उस तिलिस्मी खंजर ने उसका दिमाग आसमान पर चढ़ा दिया था और ये दोनों बातें कमलिनी की बदौलत उसे मिली थीं, एक तो भूतनाथ पहिले ही भारी मक्कार ऐयार और होशियार था, अपनी चालाकी के सामने किसी को कुछ गिनता ही न था, दूसरे आज खंजर का मालिक बनके खुशी के मारे अन्धा हो गया। उसने समझ लिया कि अब न तो उसे किसी का डर है और न किसी की परवाह।

अब हम उसके दूसरे दिन का हाल लिखते हैं, जिस दिन भूतनाथ नागर की गठरी पीठ पर लादे कमलिनी के मकान की तरफ रवाना हुआ था। भूतनाथ अपने को लोगों की निगाहों से बचाये हुए आबादी से दूर-दूर जंगल मैदान पगडण्डी और पेचीले रास्ते पर सफर कर रहा था। दोपहर के समय वह एक छोटी-सी पहाड़ी के नीचे पहुँचा, जिसके चारों तरफ मकोय और बेर इत्यादि कँटीले और झाड़ीवाले पेड़ों ने एक प्रकार का हलका-सा जंगल बना रक्खा था। उसी जगह एक छोटा-सा 'चूआ'* भी था और पास ही में जामुन का एक छोटा-सा पेड़ था। थकावट और दोपहर की धूप से व्याकुल

---

*'चूआ'—छोटा-सा (हाथ-दो हाथ का) गड़हा, जिसमें से पहाड़ी पानी धीरे-धीरे दिन-रात बारहो महीना निकला करता है।

भूतनाथ ने दो-तीन घण्टे के लिए वहाँ आराम करना पसन्द किया। जामुन के पेड़ के नीचे गठरी उतारकर रख दी और आप भी उसी जगह जमीन पर चादर बिछाकर लेट गया। थोड़ी देर बाद जब सुस्ती जाती रही तो उठ बैठा, कूएँ के जल से हाथ-मुँह धोकर कुछ मेवा खाया, जो उसके बटुए में था और इसके बाद लखलखा सुंघा नागर को होश में लाया। नागर होश में आकर उठ बैठी और चारों तरफ देखने लगी। जब सामने बैठे भूतनाथ पर नजर पड़ी तो समझ गयी कि कमलिनी की आज्ञानुसार यह मुझे कहीं लिये जाता है।

नागर : यह तो मैं समझ ही गयी कि कमलिनी ने मुझे गिरफ्तार कर लिया और उसी की आज्ञा से तू मुझे लिये जाता है, मगर यह देखकर मुझे ताज्जुब होता है कि कैदी होने पर भी मेरे हाथ-पैर क्यों खुले हैं और मेरी बेहोशी क्यों दूर की गयी ?

भूतनाथ : तेरी बेहोशी इसलिए दूर की गयी कि जिसमें तू भी इस दिल-चस्प मैदान और यहाँ की साफ हवा का आनन्द उठा ले। तेरे हाथ-पैर बंध रहने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि अब मैं तेरी तरफ से होशियार हूँ, तू मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती, दूसरे तेरे पास वह अँगूठी भी अब नहीं रही, जिसके भरोसे तू फूली हुई थी, तीसरे (खंजर की तरफ इशारा करके) यह अनूठा खंजर भी मेरे पास मौजूद है, फिर किसका डर है ?इसके इलावे उन कागजों को भी मैं जला चुका जो तेरे पास थे और जिनके सबब से मैं तुम लोगों के आधीन हो रहा था।

नागर : ठीक है, अब तुझे किसी का डर नहीं है, मगर फिर भी मैं इतना कहे बिना न रहूँगी कि तू हम लोगों के साथ दुश्मनी करके फायदा नहीं उठा सकता और राजा बीरेन्द्रसिंह तेरा कसूर कभी माफ न करेंगे।

भूतनाथ : राजा बीरेन्द्रसिंह अवश्य मेरा कसूर माफ करेंगे और जब मैं उन कागजों को जला ही चुका तो मेरा कसूर साबित भी कैसे हो सकता है ?

नागर : ऐसा होने पर भी तुझे सच्ची खुशी इस दुनिया में नहीं मिल सकती और राजा बीरेन्द्रसिंह के लिए जान दे देने पर भी तुझे उनसे कुछ विशेष लाभ नहीं हो सकता !

भूतनाथ : सो क्यों ? वह कौन सच्ची खुशी है, जो मुझे नहीं मिल सकती ?

नागर : तेरे लिये सच्ची खुशी यही है कि तेरे पास इतनी दौलत हो कि तू बेफिक्र होकर अमीरों की तरह जिन्दगी काट सके और तेरे पास, तेरी वह प्यारी स्त्री भी हो, जो काशी में रहती थी और जिसके पेट से नानक पैदा

हुआ है।

भूतनाथ : (चौंककर) तुझे यह कैसे मालूम हुआ कि वह मेरी ही स्त्री थी ?

नागर : वाह वाह, क्या मुझसे कोई बात छिपी रह सकती है ? मालूम होता है नानक ने तुझसे वह सब हाल नहीं कहा, जो तेरे निकल जाने बाद उसे मालूम हुआ था और जिसकी बदौलत नानक को उस जगह का पता लग गया, जहाँ किसी के खून से लिखी हुई किताब रक्खी हुई थी ?

भूतनाथ : नहीं, नानक ने मुझसे वह सब हाल नहीं कहा, बल्कि वह यह भी नहीं जानता कि मैं ही उसका बाप हूँ। हाँ, खून से लिखी किताब का हाल मुझे जरूर मालूम है।

नागर : शायद वह किताब अभी तक नानक ही के कब्जे में है।

भूतनाथ : उसका हाल मैं तुझसे नहीं कह सकता।

नागर : खैर, मुझे उसके विषय में कुछ जानने की इच्छा भी नहीं है।

भूतनाथ : हाँ, तो मेरी स्त्री का हाल तुझे मालूम है ?

नागर : बेशक, मालूम है।

भूतनाथ : क्या अभी तक वह जीती है ?

नागर : हाँ, जीती है मगर अब पाँच-चार दिन के बाद जीती न रहेगी।

भूतनाथ : सो क्यों ? क्या बीमार है ?

नागर : नहीं, बीमार नहीं है, जिसके यहाँ वह कैद है, उसी ने उसके मारने का विचार किया है।

भूतनाथ : उसे किसने कैद कर रक्खा है ?

नागर : यह हाल तुझसे मैं क्यों कहूँ ? जब तू मेरा दुश्मन है और मुझे कैदी बनाकर लिये जाता है तो मैं तेरे साथ नेकी क्यों करूँ ?

भूतनाथ : इसके बदले में मैं भी तेरे साथ कुछ नेकी कर दूंगा।

नागर : बेशक, इसमें कोई सन्देह नहीं कि तू हर तरह से मेरे साथ नेकी कर सकता है और मैं भी तेरे साथ बहुत-कुछ भलाई कर सकती हूँ, सच तो यों है कि तुझ पर मेरा दावा है।

भूतनाथ : दावा कैसा ?

नागर : (हँसकर) उस चाँदनी रात में मेरी चुटिया के साथ फूल गूँथने का दावा ! उस मसहरी के नीचे रूठ जाने का दावा ! नाखून के साथ खून निकालने का दावा ! और उस कसम की सचाई का दावा, जो रोहतासगढ़ जाती समय नर्मी लिये हुए कठोर पिण्डी पर···! क्या और कहूँ ?

भूतनाथ : बस बस बस, मैं समझ गया, विशेष कहने की कोई आवश्यकता नहीं है। वह सब कार्रवाई तुम्हीं लोगों की तरफ से हुई थी। जरूर

नानक की माँ के गायब होने बाद तू ही उसकी शक्ल बनके बहुत दिनों तक मेरे घर रही और तेरे ही साथ बहुत दिनों तक मैंने ऐश किया।

नागर : और अन्त में वह 'रिक्तगन्थ' तुमने मेरे ही हाथ में दिया था।

भूतनाथ : ठीक है, ठीक है, तो तेरा दावा मुझ पर उतना ही हो सकता है, जितना किसी बेईमान और बेमुरौवत रण्डी का अपने यार पर।

नागर : खैर, उतना ही सही, मैं रण्डी तो हूँ ही, मुझे चालाक और अपने काम का समझकर मनोरमा ने अपनी सखी बना लिया और इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि उसकी बदौलत मैंने बहुत कुछ सुख भोगा।

भूतनाथ : खैर, तो मालूम हुआ कि यदि तू चाहे तो मेरी स्त्री को मुझसे मिला सकती है ?

नागर : बेशक, ऐसा ही है, मगर इसके बदले में तू मुझे क्या देगा ?

भूतनाथ : (खंजर की तरफ इशारा करके) यह तिलिस्मी खंजर छोड़कर, जो माँगे सो तुझे दूँ।

नागर : मैं तेरा खंजर नहीं चाहती, मैं केवल इतना ही चाहती हूँ कि तू बीरेन्द्रसिंह की तरफदारी छोड़ दे और हमलोगों का साथी बन जा। फिर तुझे हर तरह की खुशी मिल सकती है। तू करोड़ों रुपये का धनी हो जायगा और दुनिया में बड़ी खुशी से अपनी जिन्दगी बितावेगा।

भूतनाथ : यह मुश्किल बात है, ऐसा करने से मेरी सख्त बदनामी ही नहीं होगी, बल्कि मैं बड़ी दुर्दशा के साथ मारा जाऊँगा।

नागर : तुम्हारा कुछ न बिगड़ेगा, मैं खूब जानती हूँ कि इस समय जिस सूरत में तुम हो, वह तुम्हारी असली सूरत नहीं है और कमलिनी से तुम्हारी नयी जान-पहिचान है, जरूर कमलिनी तुम्हारी असली सूरत से वाकिफ न होगी, इसलिए तुम सूरत बदलकर दुनिया में घूम सकते हो और कमलिनी तुम्हारा कुछ भी नहीं कर सकती।

भूतनाथ : (हँसकर) कमलिनी को मेरा सब भेद मालूम है और कमलिनी के साथ दगा करना अपनी जान के साथ दुश्मनी करना है, क्योंकि वह साधारण औरत नहीं है। वह जितनी ही खूबसूरत है, उतनी ही बड़ी चालाक, धूर्त, विद्वान और ऐयार भी है और साथ ही इसके नेक और दयावान भी। ऐसे के साथ दगा करना बुरा है। ऐसा करने से दूसरों की क्या कहूँ खास मेरा लड़का नानक ही मुझ पर घृणा करेगा।

नागर : नानक जिस समय अपनी माँ का हाल सुनेगा बहुत ही प्रसन्न होगा, बल्कि मेरा अहसान मानेगा, रहा तुम्हारा कमलिनी से डरना तो वह बहुत बड़ी भूल है, महीने-दो महीने के अन्दर ही तुम सुन लोगे कि कमलिनी इस दुनिया से उठ गयी और यदि तुम हमलोगों की मदद करोगे तो आठ ही

दस दिन में कमलिनी का नाम-निशान मिट जायगा। फिर तुम्हें किसी तरह का डर नहीं रहेगा और तुम्हारे इस खंजर का मुकाबला करनेवाला भी इस दुनिया में कोई न रहेगा। तुम विश्वास करो कि कमलिनी बहुत जल्द मारी जायगी और तब उसका साथ देने से तुम सूखे ही रह जाओगे। मैं तुम्हें फिर समझाकर कहती हूँ कि हम लोगों की मदद करो। तुम्हारी मदद से हम लोग थोड़े ही दिनों में कमलिनी, राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके दोनों कुमारों को मौत की चारपाई पर सुला देंगे। तुम्हारी खूबसूरत प्यारी जोरू तुम्हारे बगल में होगी, करोड़ों रुपये की सम्पत्ति के तुम मालिक होगे और मैं भी तुम्हारी रण्डी बनकर तुम्हारी बगल गर्म करूँगी, क्योंकि मैं तुम्हें दिल से चाहती हूँ और ताज्जुब नहीं कि तुम्हें विजयगढ़ का राज्य दिला दूं। मैं समझती हूँ कि तुम्हें मायारानी की ताकत का हाल मालूम होगा।

भूतनाथ : हाँ हाँ, मैं मशहूर मायारानी को अच्छी तरह जानता हूँ, परन्तु उसके गुप्त भेदों का हाल कुछ-कुछ सिर्फ कमलिनी की जुबानी सुना है, अच्छी तरह नहीं मालूम।

नागर : उसका हाल मैं तुमसे कहूँगी, वह लाखों आदमियों को इस तरह मार डालने की कुदरत रखती है कि किसी को कानोंकान मालूम न हो। उसके एक जरा-से इशारे पर तुम दीन-दुनिया से बेकार कर दिये गये, तुम्हारी जोरू छीन ली गयी और तुम किसी को मुँह दिखाने लायक न रहे। कहो जो मैं कहती हूँ, वह ठीक है या नहीं ?

भूतनाथ : हाँ, ठीक है, मगर इस बात को मैं नहीं मान सकता कि वह गुप्त रीति से लाखों आदमियों को मार डालने की कुदरत रखती है, अगर ऐसा ही होता तो बीरेन्द्रसिंह इत्यादि तथा मुझे मारने में कठिनता ही काहे की थी ?

नागर : यह कौन कहता है कि बीरेन्द्रसिंह इत्यादि के मारने में उसे कठिनता है ! इस समय बीरेन्द्रसिंह, उनके दोनों कुमार, किशोरी, कामिनी और तेजसिंह इत्यादि कई ऐयारों को उसने कैद कर रक्खा है, जब चाहे तब मार डाले और तुम्हें तो वह ऐसा समझती है, जैसे तुम एक खटमल हो, हाँ, कभी-कभी उसके ऐयार धोखा खा जाँय तो यह बात दूसरी है। यही सबब था कि रिक्तगन्थ हम लोगों के हाथ में आकर इत्तिफाक से निकल गया, परन्तु क्या हर्ज है, आज-ही-कल में वह किताब फिर मायारानी के हाथ में दिखायी देगी। यदि तुम हमारी बात न मानोगे तो कमलिनी तथा बीरेन्द्र-सिंह इत्यादि के पहिले ही मारे जाओगे। हम तुमसे कुछ काम निकालना चाहते हैं, इसलिए तुम्हें छोड़े जा रहे हैं। फिर ज़रा-सी मदद के बदले में क्या तुम्हें दिया जाता है, इस पर भी ध्यान दो और यह मत सोचो कि कमलिनी

ने मुझे और मनोरमा को कैद कर लिया तो कोई बड़ा काम किया। इससे मायारानी का कुछ भी न बिगड़ेगा और हम लोग भी ज्यादे दिन तक कैद में न रहेंगे। जोकुछ मैं कह चुकी हूँ, उस पर अच्छी तरह विचार करो और कमलिनी का साथ छोड़ो, नहीं पछताओगे और तुम्हारी जोरू भी बिलख-बिलखके मर जायगी। दुनिया में ऐश व आराम से बढ़कर कोई चीज नहीं है, सो सबकुछ तुम्हें दिया जाता है और यदि यह कहो कि तेरी बातों का मुझे विश्वास क्योंकर हो तो इसका जवाब अभी से यह देती हूँ कि मैं तुम्हारी दिलजमई ऐसी अच्छी तरह से कर दूंगी कि तुम स्वयं कहोगे कि हाँ, मुझे विश्वास हो गया। (मुस्कुराकर और नखरे के साथ भूतनाथ की अँगुली दबाकर) मैं तुम्हें चाहती हूँ, इसलिए इतना कहती हूँ नहीं तो मायारानी को तुम्हारी परवाह न थी, तुम्हारे साथ रहकर मैं भी दुनिया का कुछ आनन्द ले लूंगी।

नागर की बातें सुनकर भूतनाथ चिन्ता में पड़ गया और देर तक कुछ सोचता रह गया। इसके बाद वह नागर की तरफ देखकर बोला, "खैर, तुम जो कुछ कहती हो मैं करूँगा और अपनी प्यारी स्त्री के साथ तुम्हारी मुहब्बत की भी कदर करूँगा!"

इतना सुनते ही नागर ने झट भूतनाथ के गले में हाथ डाल दिया और तब दोनों प्रेमी हँसते हुए उस छोटी-सी पहाड़ी के ऊपर चढ़ गये।

पाँचवाँ बयान

दिन दोपहर से ज्यादे चढ़ चुका है, मगर मायारानी को खाने-पीने की कुछ भी सुध नहीं है। पल-पल में उसकी परेशानी बढ़ती ही जाती है। यद्यपि बिहारीसिंह, हरनामसिंह और धनपति ये तीनों उसके पास मौजूद हैं, परन्तु समझाने-बुझाने की तरफ किसी का भी ध्यान नहीं। उसे कोई भी नहीं दिलासा देता, कोई धीरज नहीं बँधाता और कोई भी यह विश्वास नहीं दिलाता कि तुझ पर आयी हुई बला टल जायेगी, यहाँ तक कि किसी के मुँह से यह भी नहीं निकलता कि सब्र कर, हम लोग ऐयारी के फन में होशियार हैं, कोई-न-कोई काम अवश्य करेंगे।

ऊपर के बयानों को पढ़कर पाठक समझ ही गये होंगे कि मायारानी की तरह उसकी धनपति और उसके दोनों ऐयार बिहारीसिंह तथा हरनामसिंह भी किसी भारी पाप के बोझ से दबे हुए हैं और ऊपर की घटनाओं ने उन तीनों की भी जान सुखा दी है। ये तीनों ही बदहोश और परेशान हो रहे हैं, इन तीनों को भी अपनी-अपनी फिक्र पड़ी है और इस समय इन तीनों के

अतिरिक्त कोई चौथा आदमी मायारानी के सामने नहीं है, फिर उसे कौन समझावे-बुझावे ? इनके सिवाय कोई चौथा आदमी उसके भेदों को जानता भी नहीं और न वह किसी को अपना भेद बताने का साहस कर सकती है। मायारानी की उदासी से चारों तरफ उदासी फैली हुई है। लौंडियों, नौकरों और सिपाहियों को भी चिन्ता ने आकर घेर लिया और कोई भी नहीं जानता कि क्या हुआ या क्या होनेवाला है।

बहुत देर तक चुप रहने बाद बिहारीसिंह ने सिर उठाया और माया-रानी की तरफ देखकर कहा—

बिहारी : एक तो बीरेन्द्रसिंह के ऐयार स्वयं धुरन्धर हैं, जिनका मुकाबला कोई कर नहीं सकता, दूसरे कमलिनी की मदद से उन लोगों का साहस और भी बढ़ गया है।

धनपति : इसमें कोई सन्देह नहीं कि आजकल जो खराबी हो रही है, वह सब कमलिनी ही की बदौलत है, जिसका हमलोग कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते।

माया : अफसोस, वह कमबख्त इस तिलिस्मी बाग के अन्दर आकर अपना काम कर जाय और किसी को कानोंकान खबर न हो ! हाय, न मालूम हम लोगों की क्या दुर्दशा होनेवाली है ! क्या करूँ, कहाँ भागकर जाऊँ, अपनी जान बचाने के लिए क्या उद्योग करूँ।

धनपति : अभी एकदम से हताश न हो जाना चाहिए, बल्कि देखना चाहिए कि इस मुनादी का क्या असर रिआया के दिल पर होता है।

माया : हाँ, मुझे ज़रा फिर से समझाके कह तो सही कि मुनादीवाले को क्या कहके पुकारने की आज्ञा मेरी तरफ से दी गयी है ? उस समय मैं आपे में बिल्कुल न थी, इससे कुछ समझ में न आया।

धनपति : आपकी तरफ से मैंने दीवान साहब को हुक्म दिया, जिसका बन्दोबस्त उन्होंने पूरा-पूरा किया। मेरे सामने ही उन्होंने चार डुग्गीवालों को तलब किया और समझाकर कह दिया कि वे लोग शहर-भर में पुकार-कर इस बात की मुनादी कर दें कि 'सरकारी ऐयारों को मालूम हुआ है कि वीरेन्द्रसिंह का एक ऐयार राजा गोपालसिंह की सूरत बनकर शहर में आया है, जिन्हें बैकुण्ठ पधारे पाँच वर्ष के लगभग हो चुके हैं, और रिआया को भड़काया चाहता है। जो कोई उस कमबख्त का सिर काटकर लावेगा, उसे एक लाख रुपया इनाम दिया जायगा'।

माया : ठीक है, मगर देखा चाहिए इसका नतीजा क्या निकलता है।

बिहारी : दो दिन के अन्दर-ही-अन्दर कुछ काम न चला तो समझ लेना चाहिए कि इस मुनादी का असर उलटा ही होगा।

माया : खैर, जोकुछ नसीब में लिखा है, भोगूंगी, इस समय बदहवास होने से तो काम नहीं चलेगा। मगर यह तो कहो कि तुम दोनों ऐयार ऐसी अवस्था में मेरी सहायता किस रीति से करोगे ?

बिहारी : मेरे किये तो कुछ न होगा। मैं खूब समझ चुका हूँ कि बीरेन्द्र-सिंह के ऐयारों तथा कमलिनी का मुकाबला मैं किसी तरह नहीं कर सकता। देखो तेजसिंह ने मेरा मुँह ऐसा काला किया कि अभी तक रंग साफ नहीं होता। न मालूम उसे कैसे-कैसे मसाले याद हैं। इसके अतिरिक्त तुम्हें अपने लिए शायद कुछ उम्मीद हो मगर मैं तो बिल्कुल ही नाउम्मीद हो चुका हूँ और अब एक घण्टे के लिए भी यहाँ ठहरना बुरा समझता हूँ।

माया : क्या तुम वास्तव में वैसा ही करोगे, जैसा कह चुके हो ?

बिहारी : हाँ, बेशक मैं अपनी राय पक्की कर चुका हूँ, मैं इसी समय यहाँ से चला जाऊँगा और फिर मेरा पता कोई भी न लगा सकेगा।

माया : (हरनामसिंह की तरफ देखके) और तुम्हारी क्या राय है ?

हरनाम : मेरी भी वही राय है, जो बिहारीसिंह की है !

माया : खूब समझ-बूझकर मेरी बातों का जवाब दो।

हरनाम : जोकुछ समझना था, समझ चुका।

माया : (कुछ सोचकर) अच्छा मैं एक तरकीब बताती हूँ, अगर उससे कुछ काम न चले तो फिर जोकुछ तुम्हारी समझ में आवे करना या जहाँ जी चाहे जाना।

बिहारी : अब उद्योग करना वृथा है, मेरे लिये कुछ भी न होगा !

माया : नहीं नहीं, घबराओ मत, तुम जानते हो कि मैं इस तिलिस्म की रानी हूँ और इस तिलिस्म में बहुत-सी अद्भुत चीजें हैं। मैं तुम दोनों को एक चीज देती हूँ, जिसे देखकर और जिसका मतलब समझकर तुम दोनों स्वयं कहोगे कि 'कोई हर्ज नहीं, अब हम लोग बात-की-बात में लाखों आदमियों की जान ले सकते हैं'।

हरनाम : बेशक, तुम इस तिलिस्म की रानी हो और तुम्हारे अधिकार में बहुत-सी अनमोल चीजें हैं, परन्तु जब तक हम लोग उस वस्तु को देख नहीं लें, जिसके विषय में तुम कह रही हो तब तक किसी तरह का वादा नहीं कर सकते।

माया : मैं भी तो यही कह रही हूँ, तुम दोनों मेरे साथ चलो और उस चीज को देख लो, फिर अगर मन भरे तो मेरा साथ दो नहीं तो जहाँ जी चाहे चले जाओ।

हरनाम : खैर, पहिले देखें तो सही वह कौन-सी अनूठी चीज है, जिस पर तुम्हें इतना भरोसा है।

माया : हाँ, मेरे साथ चलो, मैं अभी वह चीज़ तुम दोनों के हवाले करती हूँ।

मायारानी उठ खड़ी हुई और धनपति तथा दोनों ऐयारों को साथ लिये हुए वहाँ से रवाना हुई। बाग में घूमती वह उस बुर्ज के पास गयी जो बाग के पिछले कोने में था और जिसमें लाडिली और कमलिनी की मुलाकात हुई थी। उस बुर्ज के बगल ही में एक और कोठरी स्याह पत्थर से बनी हुई थी, मगर यह मालूम न होता था कि उसका दरवाजा किधर से है, क्योंकि पिछली तरफ तो बाग की दीवार थी और बाकी तीनों तरफवाली कोठरी की स्याह दीवारों में दरवाजे का कोई निशान न था। मायारानी ने बिहारी से कहा, "कमन्द लगाओ क्योंकि हम लोगों को इस कोठरी की छत पर चलना होगा।" बिहारीसिंह ने वैसा ही किया। सबसे पहिले मायारानी कमन्द के सहारे उस कोठरी पर चढ़ गयी और उसके बाद धनपति और दोनों ऐयार भी उसी छत पर जा पहुंचे।

ऊपर जाकर दोनों ऐयारों ने देखा कि छत के बीचोबीच में एक दरवाजा ठीक वैसा ही है, जैसा प्रायः तहखानों के मुँह पर रहता है। वह दरवाजा लकड़ी का था, मगर उस पर लोहे की चादर मढ़ी हुई थी और उसमें एक साधारण ताला लगा हुआ था। मायारानी ने हरनामसिंह से कहा, "यह ताला मामूली है, इसे किसी तरह खोलना चाहिए।"

बिहारीसिंह ने अपने ऐयारी के बटुए में से लोहे की एक टेढ़ी सलाई निकाली और उसे ताले के मुँह में डालकर ताला खोल डाला, इसके बाद दरवाजे का पल्ला हटाकर किनारे किया। मायारानी ने दोनों ऐयारों को अन्दर जाने के लिए कहा, मगर बिहारीसिंह ने इनकार किया और कहा, "पहिले आप इसके अन्दर उतरिए तब हम लोग इसके अन्दर जाँयगे, क्योंकि यहाँ की अद्भुत बातों से हम लोग बहुत डर गये हैं।" लाचार होकर माया-रानी कमन्द के सहारे उस कोठरी के अन्दर उतर गयी और इसके बाद धनपति और दोनों ऐयार भी नीचे उतर गये।

ऊपर का दरवाजा खुला रहने से कोठरी के अन्दर चाँदना पहुँच रहा था। यह कोठरी लगभग बीस हाथ के चौड़ी और इससे कुछ ज्यादे लम्बी थी। यहाँ की जमीन लकड़ी की थी और उस पर किसी तरह का मसाला चढ़ा हुआ था। कोठरी के बीचोबीच में एक छोटा-सा सन्दूक पड़ा हुआ था। धनपति का हाथ पकड़े मायारानी एक किनारे खड़ी हो गयी और दोनों ऐयारों की तरफ देखकर बोली, "तुम दोनों मिलकर इस सन्दूक को मेरे पास लाओ।"

हुक्म के मुताबिक दोनों ऐयार उस सन्दूक के पास गये, मगर सन्दूक का

कुण्डा पकड़ के उठाने का इरादा किया ही था कि उस जमीन का एक गोल हिस्सा जिस पर दोनों ऐयार खड़े थे, किवाड़ के पल्ले की तरह एक तरफ से अन्दर की तरफ यकायक धँस गया और वे दोनों ऐयार जमीन के अन्दर जा रहे, साथ ही एक आवाज ऐसी आयी, जिसके सुनने से धनपति को मालूम हो गया कि दोनों ऐयार नीचे जल की तह तक पहुँच गये।

इसके बाद जमीन का वह हिस्सा जो लकड़ी का था, फिर बराबर हो गया और सन्दूक भी उसी तरह दिखायी देने लगा।

यह हाल देख धनपति डरके मारे काँपने लगी और मायारानी की तरफ देखके बोली, "क्या यह कोई कूआँ है ?"

माया : हाँ, यह कूआँ है और ऐसे नमकहरामों को सजा देने के लिए बनाया गया है ! दोनों बेईमान ऐयार मेरा साथ छोड़के अपनी जान बचाया चाहते थे। हरामजादे, पाजी, नालायक अब अपनी सजा को पहुँचे।

धनपति : इतने दिनों तक आपके साथ रहने पर भी इस कूएं का हाल मुझे मालूम न था।

माया : यहाँ के बहुत-से भेद अभी तुम्हें मालूम नहीं, खैर, अब यहाँ से चलना चाहिए।

धनपति को साथ लिये मायारानी उस कोठरी के बाहर निकली और दरवाजा बन्द करने बाद कमन्द के सहारे उतरकर अपने खास सोनेवाले कमरे में चली आयी। मायारानी की लौंडियों ने मायारानी को दोनों ऐयारों और धनपति के साथ उस कोठरी की तरफ जाते देखा था, मगर अब केवल धनपति को साथ लिये लौटते देख उनको ताज्जुब हुआ लेकिन डर के मारे कुछ पूछ न सकीं।

सन्ध्या का समय हो गया। मायारानी अपने कमरे में जाकर मसहरी पर लेट गयी। उस समय बहुत-सी लौंडियाँ उसके सामने थीं, मगर इशारा पाकर सब बाहर चली गयीं केवल धनपति वहाँ रह गयी।

धनपति : आपने बहुत जल्दी की, बेचारे ऐयारों की जान व्यर्थ ही गयी।

माया : वे दोनों कमीने इसी लायक थे। इसीलिए मैं उनसे बार-बार पूछ रही थी, जब देख लिया कि वे अपने विचार पर दृढ़ हैं तो लाचार···

धनपति : खैर, जोकुछ हुआ सो अच्छा हुआ लेकिन अब क्या करना चाहिए ? अफसोस यह है कि ऐसे समय में बेचारी मनोरमा भी नहीं है।

माया : (लम्बी साँस लेकर) हाय, बेचारी मनोरमा मेरी सच्ची सहायक थी पर उसे भी तेजसिंह ने गिरफ्तार कर लिया। इसी खबर के साथ नागर ने कहला भेजा था कि भूतनाथ के कागजात अपने साथ लेकर उसे छुड़ाने

जाती हूँ, मगर उस बात को भी बहुत दिन बीत गये और अभी तक मालूम न हुआ कि नागर के जाने का क्या नतीजा निकला। तेजसिंह ने उसे भी गिरफ्तार कर लिया हो तो ताज्जुब नहीं, सच तो यह है कि भूतनाथ के मारने में मनोरमा ने बड़ी जल्दी की।

धनपति : बेशक भूतनाथ के मारने में उसने भूल की, भूतनाथ से बहुत-कुछ काम निकलने की आशा थी।

इतने ही में बाहर से आवाज आयी, "थी नहीं बल्कि है !" मायारानी ने दरवाजे की तरफ देखा तो नागर पर निगाह पड़ी।

नागर : आह, इस समय तेरा आना बहुत ही अच्छा हुआ, आ मेरे पास बैठ जा।

नागर : (मायारानी के पास बैठकर) मैं देखती हूँ कि आज आपकी अवस्था बिल्कुल बदली हुई है, कहिए मिजाज तो अच्छा है ?

माया : अच्छा क्या है, बस दम निकलने की देर है।

नागर : (घबड़ाकर) सो क्या ?

माया : अब आयी है तो सबकुछ सुन ही लेगी पर पहिले अपना हाल तो कह कि मेरी प्यारी सखी मनोरमा को छुड़ा लायी या नहीं और चौखट के अन्दर पैर रखते ही तैंने यह क्या कहा कि 'थी नहीं बल्कि है।' क्या भूतनाथ मारा नहीं गया ? क्या वह खबर झूठ थी ?

नागर : हाँ, वह खबर झूठी थी, मनोरमा ने भूतनाथ की जान नहीं ली और न उसे तेजसिंह ने गिरफ्तार किया है, बल्कि वह कमलिनी का कैदी है।

माया : तो वह औरत जो मनोरमा की खबर लेकर तेरे पास आयी थी, झूठी थी ?

नागर : वह स्वयं कमलिनी थी, मनोरमा को कैद कर चुकी थी और मुझे भी गिरफ्तार किया चाहती थी, वह तो असल में भूतनाथ के कागजात ले लेने का बन्दोबस्त कर रही थी. बल्कि यों कहना चाहिए कि मैं उसके धोखे में आ भी गयी। उसने मुझे गिरफ्तार कर लिया और भूतनाथ के बिल्कुल कागजात भी मुझसे लेकर जला दिये।

माया : यह बहुत ही बुरा हुआ, अब भूतनाथ बिल्कुल हम लोगों के कब्जे से बाहर हो गया, खैर, जीता है, यही बहुत है। यह कह कि तेरी जान कैसे बची ?

इसके बाद नागर ने अपना पूरा-पूरा हाल मायारानी के सामने कहा और उसने बड़े गौर से सुना। अन्त में नागर ने कहा, "इस समय भूतनाथ को अपने साथ ले आयी हूँ जो जी-जान से हम लोगों की मदद करने के लिए

तैयार है।"

यह सुनकर कि भूतनाथ अब हम लोगों का पक्षपाती हो गया और नागर के साथ आया है, मायारानी बहुत ही खुश हुई और उसे एक प्रकार की आशा बँध गयी। उसने धनपति की तरफ देखकर कहा, "ताज्जुब नहीं कि अब वह बला मेरे सिर से टल जाय, जिसके टलने की आशा न थी।"

नागर : आपने अपना हाल तो कुछ कहा ही नहीं ! यह जानने के लिए मेरा जी बेचैन हो रहा है कि आप क्यों उदास हो रही हैं और आप पर क्या बला आयी है ?

माया : थोड़ी देर में तुझे सबकुछ मालूम हो जायगा, पहिले भूतनाथ को मेरे पास बुला ला, मैं स्वयं उससे कुछ बात किया चाहती हूँ !

नागर : नहीं नहीं, पहिले आप अपना कुल हाल मुझसे कहिए, क्योंकि मेरी तबीयत घबड़ा रही है।

मायारानी ने अपना बिल्कुल हाल अर्थात तेजसिंह का पागल बनके जाना, उन्हें बाग के तीसरे दर्जे में कैद करना, चण्डूल का यकायक पहुँचना और उसकी अद्भुत बातें तथा लाडिली का दगा दे जाना आदि नागर से कहा, मगर अपने पुराने कैदी के छूटने का और दोनों ऐयारों के मार डालने का हाल छिपा रक्खा, हाँ, उसके बदले में इतना कहा कि 'बीरेन्द्रसिंह का एक ऐयार मेरे पति की सूरत बनकर आया है, जिन्हें मरे पाँच वर्ष के लगभग हुए, उसी को गिरफ्तार करने के लिए बिहारीसिंह और हरनामसिंह गये हैं।'

नागर : मगर यह तो कहिए कि चण्डूल ने आपके तथा बिहारीसिंह और हरनामसिंह के कान में क्या कहा।

माया : बहुत पूछने पर भी बिहारीसिंह और हरनामसिंह ने नहीं बताया कि चण्डूल ने उनके कान में क्या कहा था।

नागर : और आपके कान में उसने क्या कहा ?

माया : मेरे कान में तो उसने केवल इतना ही कहा था कि 'आठ दिन के अन्दर ही यह राजा इन्द्रजीतसिंह का हो जायगा और तू मारी जायगी'। खैर, जो होगा देखा जायगा, अब भूतनाथ को यहाँ ले आ, उससे मिलने की बहुत जरूरत है।

नागर : बहुत अच्छा, तो क्या इसी जगह बुला लाऊँ ?

माया : हाँ हाँ, इसी जगह बुला ला। वह तो ऐयार है, उससे पर्दा काहे का।

नागर कुछ सोचती-विचारती वहाँ से रवाना हुई और भूतनाथ को जिसे बाग के फाटक पर छोड़ गयी थी, साथ लेकर बाग के अन्दर घुसी।

पहरेवालों ने किसी तरह का उज्र न किया और भूतनाथ इस बाग की हर-एक चीज को अच्छी तरह देखता और ताज्जुब करता हुआ मायारानी के पास पहुँचा। नागर ने मायारानी की तरफ इशारा करके कहा, "यही हम लोगों की मायारानी हैं।" और भूतनाथ ने यह कहकर कि 'मैं बखूबी पहिचानता हूँ' मायारानी को सलाम किया।

मायारानी ने भूतनाथ की उतनी ही खातिरदारी और चापलूसी की, जितनी कोई खुदगर्ज आदमी उसकी खातिरदारी करता है, जिससे कुछ मतलब निकालने की आवश्यकता होती है।

माया : तुम्हारी स्त्री तुम्हें मिल गयी ?

भूतनाथ : जी हाँ, मिल गयी और यह उस इनाम का पहिला नमूना है, जो आपकी ताबेदारी करने पर मुझे मिलने की आशा है।

माया : नागर ने जोकुछ प्रतिज्ञा तुमसे की है, मैं अवश्य पूरी करूँगी, बल्कि उससे बहुत ज्यादे इनाम हरएक काम के बदले में दिया करूँगी।

भूतनाथ : मैं दिलोजान से आपके काम में उद्योग करूँगा और कमलिनी को बुरा धोखा दूँगा। वह जितना मुझ पर विश्वास रखती है, उतना ही पछतायेगी, परन्तु आपको भी कई बातों का खयाल रखना चाहिए।

माया : वह क्या ?

भूतनाथ : एक तो जाहिर में मैं कमलिनी का दोस्त बना रहूँगा, जिसमें उसे मुझ पर किसी तरह का शक न हो, यदि आपका कोई जासूस मेरे विषय में आपको इस बात का सबूत दे कि मैं कमलिनी से मिला हुआ हूँ तो आप किसी तरह की चिन्ता न कीजियेगा।

माया : नहीं नहीं, ऐसी छोटी-छोटी बातें मुझे समझाने की जरूरत नहीं है, मैं खूब जानती हूँ कि बिना उससे मिले किसी तरह पर काम न चलेगा।

भूतनाथ : बेशक बेशक, और इसी वजह से मैं बहुत छिपकर आपके पास आया करूँगा।

माया : ऐसा होना ही चाहिए, और दूसरी बात कौन-सी है ?

भूतनाथ : दूसरे यह कि मुझसे आप अपने भेद न छिपाया कीजिए, क्योंकि ऐयारों का काम बिना ठीक-ठीक भेद जाने नहीं चल सकता।

माया : मुझे तुम पर पूरा भरोसा है, इसलिए मैं अपना कोई भेद तुमसे न छिपाऊँगी।

भूतनाथ : अच्छा, अब एक बात मैं आपसे और कहूँगा।

माया : कहो !

भूतनाथ : नागर की जुबानी यह तो आपको मालूम ही हुआ होगा कि काशी में मनोरमा के तिलिस्मी मकान के अन्दर किशोरी के रखने का हाल

कमलिनी जान गयी है ।

माया : हाँ, नागर वह सब हाल मुझसे कह चुकी है ।

भूतनाथ : ठीक है, तो आपने यह भी विचारा होगा कि किशोरी को उस मकान से निकालकर किसी दूसरे मकान में रखना चाहिए ।

माया : हाँ, मेरी तो यही राय है ।

भूतनाथ : मगर नहीं, आप किशोरी को उसी मकान में रहने दीजिए, इस बात की खबर मैं किशोरी के पक्षपातियों को दूँगा, जिसे सुनकर वे लोग किशोरी को छुड़ाने की नीयत से अवश्य उस मकान के अन्दर जायँगे, उस समय उन लोगों को ऐसे ढंग से फँसा लूँगा कि किसी को पता न लगेगा और न इसी बात का शक किसी को होगा कि मैं आपका तरफदार हूँ ।

माया : तुम्हारी यह राय बहुत अच्छी है, मैं इसे पसन्द करती हूँ और ऐसा ही करूँगी ।

भूतनाथ : अच्छा तो अब आप यह बताइए कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह वगैरह के साथ आपने क्या बर्ताव किया, जो आपके यहाँ कैद हैं ?

माया : (ऊँची साँस लेकर) अफसोस, कमलिनी उन लोगों को यहाँ से छुड़ा ले गयी और मेरी छोटी बहिन लाडिली भी मुझे धोखा दे गयी, जिसका खुलासा हाल मैं तुमसे कहती हूँ ।

मायारानी ने अपना कुल हाल जो नागर से कहा था, भूतनाथ को कह सुनाया मगर अपने पुराने कैदी का हाल और यह बात कि चण्डूल ने उसके कान में क्या कहा था, भूतनाथ से भी छिपा रक्खा और उसके बदले में वह कहा जो नागर से कहा था, मगर भूतनाथ ने उस जगह मुस्कुरा दिया, जिससे मायारानी समझ गयी कि भूतनाथ को मेरी बातों में कुछ शक हुआ ।

माया : जोकुछ मैं कह चुकी हूँ, उसमें एक बात झूठ थी और एक मैंने छिपा ली ।

भूतनाथ : (हँसकर) वह बात शायद मुझसे कहने योग्य नहीं है !

माया : हाँ, मगर अब तो मैं वादा कर चुकी हूँ कि तुमसे कोई बात न छिपाऊँगी, इसलिए यद्यपि उस बात का भेद अभी तक मैंने नागर को भी नहीं दिया, मगर तुमसे जरूर कहूँगी, परन्तु इसके पहिले एक बात तुमसे पूछूंगी, क्योंकि बहुत देर से उसके पूछने की इच्छा लगी है, पर बातों का सिलसिला दूसरी तरफ हो जाने के कारण पूछ न सकी ।

भूतनाथ : खैर, अब पूछ लीजिए ।

माया : मनोरमा को कमलिनी की कैद से छुड़ाने के लिए तुमने क्या विचारा है ?

भूतनाथ : मनोरमा को यद्यपि मैं सहज ही में छुड़ा सकता हूँ, परन्तु उसे भी इस ढंग से छुड़ाया चाहता हूँ कि कमलिनी को मुझ पर शक न हो, अगर उसे जरा भी शक हो जायगा तो वह सम्हल जायगी, क्योंकि वह बड़ी धूर्त और शैतान है।

माया : सो तो ठीक है, मगर कोई बन्दोबस्त तो करना ही चाहिए।

भूतनाथ : हाँ हाँ, उसका बन्दोबस्त बहुत जल्द किया जायगा।

माया : अच्छा तो अब वह भेद की बात भी तुमसे कहती हूँ, जिसे मैं अभी तक बड़ी कोशिश से छिपाये हुए थी, यहाँ तक कि अपनी प्यारी सखी मनोरमा को भी उस विषय में आज तक मैंने कुछ नहीं कहा था। (नागर की तरफ देखकर) लो, तुम भी सुन लो।

मायारानी दो घण्टे तक अपने गुप्त भेद की बात भूतनाथ से कहती रही और वह बड़े गौर से सुनता रहा और अन्त में मायारानी को कुछ समझा-बुझाकर और इनाम में हीरे की एक माला पाकर वहाँ से रवाना हुआ।

छठवाँ बयान

रात आधी जा चुकी है, चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, हवा भी एकदम बन्द है, यहाँ तक कि किसी पेड़ की एक पत्ती भी नहीं हिलती। आसमान में चाँद तो नहीं दिखायी देता, मगर जंगल मैदान में चलनेवाले मुसाफिरों को तारों की रोशनी, जो अब बहुतायत से दिखायी दे रहे हैं, काफी है। ऐसे समय में गंगा के किनारे-किनारे दो मुसाफिर तेजी के साथ जमानिया की तरफ जा रहे हैं। जमानिया, अब बहुत दूर नहीं है और ये दोनों मुसाफिर शहर के बाहरी प्रान्त में पहुँच चुके हैं।

अब वे दोनों आदमी शहर के पास पहुँच गये, मगर शहर के अन्दर न जाकर बाहर-ही-बाहर मैदान के उस हिस्से की तरफ जाने लगे, जिधर पुराने जमाने की आबादी का कुछ-कुछ निशान मौजूद था। यहाँ बहुत-से टूटे-फूटे मकानों के कोई-कोई हिस्से बचे हुए थे, जो बदमाशों तथा चोरों के काम में आते थे। यहाँ की बनिस्बत शहर के कमजोर दिमागवालों और डरपोक आदमियों में तरह-तरह की गप्पें उड़ा करती थीं। कोई कहता था कि वहाँ किसी जमाने में बहुत-से आदमी मारे गये हैं और वे लोग भूत होकर अभी तक मौजूद हैं और उधर से आने-जानेवालों को सताया करते हैं। कोई कहता था कि उस जमीन में जिन्नों ने अपना घर बना लिया है और जो कोई उधर से जाता है, उसे मारकर अपनी जात में मिला लिया

करते हैं, इत्यादि तरह-तरह की बातें लोग करते थे। मगर उन दोनों मुसाफिरों को जो इस समय उसी तरफ कदम बढ़ाये जा रहे हैं, इन बातों की कुछ परवाह न थी।

थोड़ी ही देर में ये दोनों आदमी जिनमें से एक बहुत ही कमजोर और थका हुआ जान पड़ता था, उस हिस्से में जा पहुँचे और खड़े होकर चारों तरफ देखने लगे। पास ही में एक पुराना मकान दिखायी दिया, जो तीन हिस्से से ज्यादे टूट चुका था और उसके चारों तरफ जंगली पेड़ों और लताओं ने एक भयानक-सा दृश्य बना रक्खा था। उसी जगह एक आदमी टहलता हुआ नजर आया, जो उन दोनों को देखते ही पास आया और बोला, "हमारे साथियों ने उस नियत जगह पर ठहरना उचित न जाना और राय पक्की हुई कि एक नाव पर सवार होकर सब लोग काशी की तरफ रवाना हो जाँय और उसी जगह से अपनी कार्रवाई करें। वे लोग नाव पर सवार हो चुके हैं और कमलिनीजी यह कहकर मुझे इस जगह छोड़ गयी हैं कि तेजसिंह, राजा गोपालसिंह को साथ लेकर आवें तो उन्हें लिये हुए बालाघाट की तरफ, जहाँ हम लोगों की नाव खड़ी होगी, बहुत जल्द चले आना।"

पाठक समझ ही गये होंगे कि ये दोनों मुसाफिर तेजसिंह और राजा गोपालसिंह (मायारानी के पुराने कैदी) थे, हाँ, उस आदमी का परिचय हम दिये देते हैं, जो उन दोनों को इस भयानक स्थान में मिला था। वह तेजसिंह के प्यारे दोस्त देवीसिंह थे।

देवीसिंह की बात सुनकर तेजसिंह अपने साथी राजा गोपालसिंह को सांथ लिये हुए वहाँ से रवाना हुए और थोड़ी देर में गंगा के किनारे पहुँचकर उस नाव पर जा सवार हुए, जिस पर कमलिनी, लाडिली, इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह, तारासिंह, भैरोसिंह और शेरसिंह सवार थे। वह किश्ती बहुत छोटी तो न थी, मगर हल्की और तेज जानेवाली थी। मालूम होता है कि उसको उन लोगों ने खरीद लिया था, क्योंकि उस पर कोई मल्लाह न था और केवल ऐयार लोग खेकर ले जाने के लिए तैयार थे। तेजसिंह को और राजा गोपालसिंह को देखते ही सब उठ खड़े हुए। कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने खातिर के साथ राजा गोपालसिंह को अपने पास बैठाकर किश्ती किनारे से हटाने की आज्ञा दी और बात-की-बात में नाव किनारा छोड़कर दूर दिखायी देने लगी।

इन्द्रजीत : (राजा गोपालसिंह से) मैं इस समय आपको अपने पास देखकर बहुत ही प्रसन्न हूँ, ईश्वर ही ने आपकी जान बचायी।

गोपाल : मुझे अपने बचने की कुछ भी आशा न थी, यह तो बस आपके चरणों का प्रताप है कि कमलिनी वहाँ गयी और उसे इत्तिफाक से मेरा हाल

मालूम हो गया।

कमलिनी : मुझे आशा थी कि आपको साथ लिये तेजसिंह सूर्य निकलने के साथ ही हम लोगों से आ मिलेंगे, मगर दो दिन की देर हो गयी और यह दो दिन का समय बड़ी मुश्किल से बीता, क्योंकि हम लोगों को बड़ी चिन्ता इस बात की थी कि आपके आने में देर क्यों हुई। अब सबके पहिले इस विलम्ब का कारण हम लोग सुना चाहते हैं।

गोपाल : तेजसिंह जिस समय मुझे कैद से छुड़ाकर उस तिलिस्मी बाग के बाहर हुए, उस समय उन्होंने राजा बीरेन्द्रसिंह का जिक्र किया और कहा कि हरामजादी मायारानी ने राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता को भी इस तिलिस्म में कहीं पर कैद कर रक्खा है, जिनका पता नहीं लगता। यह सुनते ही मैं उन्हें साथ लिये हुए फिर उसी तिलिस्मी बाग में चला गया। जहाँ-जहाँ मैं जा सकता था, जाकर अच्छी तरह पता लगाया, क्योंकि कैद से छूट जाने पर मैं बिल्कुल ही लापरवाह और निडर हो गया था।

इन्द्रजीत : यह काम आपने बहुत ही उत्तम किया। हाँ, तो उनका कहीं पता लगा?

गोपाल : (सिर हिलाकर) नहीं, वह खबर बिल्कुल झूठी थी। उसने आप लोगों को धोखा देने के लिए अपने ही दो आदमियों को राजा बीरेन्द्र-सिंह और रानी चन्द्रकान्ता की सूरत में रँग के कैद कर रक्खा है।

कमलिनी : यह आपको कैसे निश्चय हुआ?

गोपाल : हमने स्वयं उन दोनों को अच्छी तरह आजमाकर देख लिया।

इन्द्रजीत : यह खबर सुनकर हम लोगों को हद्द से ज्यादे खुशी हुई, अब हम लोग उनकी तरफ से निश्चिन्त हो गये और केवल किशोरी और कामिनी की फिक्र रह गयी।

तेज : बेशक, हम लोग उनकी तरफ से निश्चिन्त हो गये। (राजा गोपालसिंह की तरफ इशारा करके) इनके साथ दो दिन तक बाग में रहने और गुप्त स्थानों में घूमने का मौका मिला। ऐसी-ऐसी चीजें देखने में आयीं कि होश दंग हो गये। यद्यपि राजा बीरेन्द्रसिंह के साथ विक्रमी तिलिस्म में मैं बहुतकुछ तमाशा देख चुका हूँ, परन्तु अब यही कहते बन पड़ता है कि इस तिलिस्म के आगे उसकी कोई हकीकत न थी।

कमलिनी : यह उस तिलिस्म के राजा ही ठहरे, फिर इनसे ज्यादे वहाँ का हाल कौन जान सकता था और किसकी सामर्थ्य थी कि दो दिन तक उस बाग में आपको रखकर घुमाये? वहाँ का जितना हाल ये जानते हैं, उसका सोलहवाँ हिस्सा भी मायारानी नहीं जानती। ये बेचारे नेक और

धर्मात्मा हैं, पर न मालूम क्योंकर उस कमबख्त के धोखे में पड़ गये।

आनन्द : बेशक, इनका किस्सा बहुत ही दिलचस्प होगा।

गोपाल : मैं अपना अनूठा किस्सा आपसे कहूँगा, जिसे सुनकर आप अफसोस करेंगे। (लाडिली की तरफ देखके) क्यों लाडिली, तू अच्छी तरह से तो है?

लाडिली : (गद्गद स्वर से) इस समय मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं! क्या स्वप्न में भी गुमान हो सकता था कि इस जिन्दगी में पुनः आपको देखूँगी? यह दिन आज कमलिनी बहिन की बदौलत देखने में आया।

गोपाल : बेशक बेशक, और ये पाँच वर्ष मैंने किस मुसीबत में काटे हैं, सो बस मैं ही जानता हूँ (कमलिनी की तरफ देखकर), मगर तुझे उस तिलिस्मी बाग के अन्दर घुसने का साहस कैसे हुआ?

कमलिनी : 'रिक्तगन्थ' मेरे हाथ लग गया, इसी से मैं इतना काम कर सकी।

गोपाल : ठीक है, तब तो तू मुझसे भी ज्यादे वहाँ का हाल जान गयी होगी।

इन्द्रजीत : (चौंककर और कमलिनी की तरफ देखकर) क्या 'रिक्तगन्थ' तुम्हारे पास है?

कमलिनी : (हँसकर) जी हाँ, मगर इससे यह न समझ लीजियेगा कि मैंने आपके यहाँ चोरी की थी?

तेज : नहीं नहीं, मैं खूब जानता हूँ कि 'रिक्तगन्थ' का चोर कोई दूसरा ही है, आपको नानक की बदौलत वह किताब हाथ लगी।

कमलिनी : जी हाँ, जिस समय तिलिस्मी बाग में नानक अपना किस्सा आपसे कह रहा था, मैं छिपकर सुन रही थी।

इन्द्रजीत : नानक का किस्सा कैसा है?

तेज : मैं आपसे कहता हूँ, जरा सब्र कीजिए।

इस समय उस किश्ती पर जितने आदमी थे सभी खुश थे, केवल इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को किशोरी और कामिनी का ध्यान था। तेजसिंह ने अपने पागल बनने का हाल और उसी बीच में नानक का किस्सा, जितना उसकी जुबानी सुना था, कह सुनाया। तेजसिंह के पागल बनने का हाल सुनकर सभों को हँसी आ गयी। दोनों कुमारों ने नानक का बाकी हाल कमलिनी से पूछा, जिसके जवाब में कमलिनी ने कहा—"यद्यपि नानक का कुछ हाल मुझे मालूम है, मगर मैं इस समय कुछ भी न कहूँगी, क्योंकि उसका किस्सा सुने बिना इस समय कोई हर्ज भी नहीं, हाँ, इस समय थोड़ा-

सा अपना हाल मैं आपसे कहूँगी।"

कमलिनी ने भूतनाथ का, मनोरमा और नागर का तथा अपना हाल जितना हम ऊपर लिख आये हैं, सभों के सामने कहना शुरू किया। अपना हाल कहते-कहते जब कमलिनी ने मनोरमा के मकान का अद्‌भुत हाल कहना शुरू किया तो सभों को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और किशोरी की अवस्था पर इन्द्रजीतसिंह को रुलाई आ गयी। उनके दिल पर बड़ा ही सदमा गुजरा, मगर तेजसिंह के लिहाज से, जिन्हें वे चाचा के बराबर समझते थे, अपने को सम्हाला। गोपालसिंह ने दिलासा देकर कहा, "आप लोग घबड़ाइए नहीं, कमबख्त मनोरमा के मकान का पूरा-पूरा भेद मैं जानता हूँ, इसलिए मैं बहुत जल्द किशोरी को उसकी कैद से छुड़ा लूंगा।"

लाडिली : कमलिनी भी उसी के मकान में भेज दी गयी है।

गोपाल : यह और अच्छी बात है, 'एक पन्थ दो काज' हो जायगा ?

इन्द्रजीत : (कमलिनी से) अब यह 'रिक्तगन्थ' मुझे कब मिलेगा ?

कमलिनी : वह मेरे पास है, उसी की बदौलत मैं आपको उस कैदखाने से छुड़ा सकी और उसी की बदौलत आपको तिलिस्म तोड़ने में सुगमता होगी, मैं बहुत जल्द वह किताब आपके हवाले करूँगी।

गोपाल : (चारों तरफ देखके कमलिनी से) ओफ, बात-की-बात में हम लोग बहुत दूर निकल आये ! क्या तुम्हारा इरादा काशी चलने का है ?

कमलिनी : जी हाँ, हमलोगों ने तो यही इरादा कर लिया है कि काशी चलकर किसी गुप्त स्थान में रहेंगे और उसी जगह से अपनी कार्रवाई करेंगे ?

गोपाल : मगर मेरी राय तो कुछ दूसरी है।

कमलिनी : वह क्या ? मुझे विश्वास है कि आप बनिस्बत मेरे बहुत अच्छी राय देंगे।

गोपाल : यद्यपि मैं इस शहर जमानिया का राजा हूँ और इस शहर को फिर कब्जे में कर सकता हूँ, परन्तु पाँच वर्ष तक मेरे मरने की झूठी खबर लोगों में फैली रहने के कारण यहाँ की रिआया के मन में बहुत कुछ फर्क पड़ गया होगा। यदि ऐसा न भी हो तो भी मैं अपने को जाहिर नहीं किया चाहता और न मायारानी को ही अभी जान से मारूंगा, क्योंकि यदि वह मर ही जायगी तो अपने किये का यथार्थ फल मेरे देखते कौन भोगेगा ? इसलिए मैं थोड़े दिनों तक छिपे रहकर उसे सजा देना उचित समझता हूँ।

कमलिनी : जैसी मर्जी।

गोपाल : (कमलिनी से) इसलिए मैं चाहता हूँ कि कुँअर साहब अपना एक ऐयार मुझे दें, मैं उसे साथ लेकर काशी जाऊँगा और किशोरी तथा

कामिनी को जो मनोरमा के मकान में कैद हैं बहुत जल्द छुड़ा लाऊँगा, तब तक तुम दोनों कुमारों और लाडिली को अपने साथ लेकर मायारानी के उस तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जाकर देवमन्दिर में रहो। वहाँ खाने के लिए मेवों की बहुतायत है और पानी का चश्मा भी जारी है। मायारानी को तुम लोगों का हाल मालूम न होगा क्योंकि उसे वह स्थान मालूम नहीं है और न वहाँ तक जा ही सकती है। उसी जगह रहकर दोनों कुमारों को एक दो दफे 'रिक्तगन्थ' शुरू से आखीर तक अच्छी तरह पढ़ जाना चाहिए, जो बातें इनकी समझ में न आवें तुम समझा देना और इसी बीच में वहाँ की बहुत-सी अद्भुत बातें भी ये देख लेंगे, इसलिए कि इनको बहुत जल्द वह तिलिस्म तोड़ना होगा, जैसा कि हम बुजुर्गों की लिखी किताबों में देख चुके हैं, वह इन्हीं लोगों के हाथ से टूटेगा।

कमलिनी : बेशक बेशक।

गोपाल : और एक ऐयार को रोहतासगढ़ भेज दो कि वहाँ जाकर महाराज बीरेन्द्रसिंह को कुमारों के कुशल-मंगल का हाल कहे और थोड़ीसी फौज अपने साथ ले आकर जमानिया के मुकाबिले में लड़ाई शुरू कर दे, मगर वह लड़ाई जोर के साथ शीघ्र बखेड़ा निपटाने की नीयत से न की जाय जब तक कि हमलोग दूसरा हुक्म न दें। बस इसके बाद जब मैं अपना काम करके अर्थात् किशोरी और कमलिनी को छुड़ाकर लौटूंगा और तुमसे मिलूंगा तो जो कुछ मुनासिब होगा किया जायगा। हाँ देवमन्दिर में रहकर मौका मिले तो मायारानी को गुप्त रूप से छेड़ती रहना।

कमलिनी : आपकी राय बहुत ठीक है मगर आप कैद की तकलीफ उठाने के कारण बहुत ही सुस्त और कमजोर हो रहे हैं, इतनी तकलीफ क्योंकर उठा सकेंगे।

गोपाल : तुम इसकी चिन्ता मत करो ! (कुमारों की तरफ देखकर) आप लोग मेरी राय पसन्द करते हैं या नहीं ?

कुमार : बेशक आपकी राय उत्तम है।

कमलिनी : अच्छा तो अपना तिलिस्मी खंजर जिसका गुण आपसे कह चुकी हूँ, आपको देती हूँ, यह आपकी बहुत सहायता करेगा।

गोपाल : हाँ बेशक यह खंजर ऐसी अवस्था में मेरे साथ रहने योग्य है, परन्तु वह जब तक तुम्हारे पास है, तुम्हें किसी तरह का खतरा नहीं पहुँच सकता इसलिए खंजर को मैं तुमसे जुदा न करूँगा।

इन्द्रजीत : उस खंजर का जोड़ा जो कमलिनी ने मुझे दिया है, मैं आपको देता हूँ, आप इसे अवश्य अपने साथ रक्खें।

गोपाल : नहीं नहीं, इसकी कोई आवश्यकता नहीं।

इन्द्रजीत : आपको मेरी यह बात अवश्य माननी पड़ेगी।

इतना कहकर इन्द्रजीतसिंह ने वह खंजर जबर्दस्ती गोपालसिंह के हवाले किया और किश्ती किनारे लगाने का हुक्म दिया।

गोपाल : अच्छा तो मेरे साथ कौन ऐयार चलेगा ?

इन्द्रजीत : जिसे आप पसन्द करें ! केवल तेजसिंह चाचा को मैं अपने पास रखना चाहता हूँ, इसलिए कि उनकी जुबानी उन घटनाओं का हाल सुनूंगा जो आपको कैद से छुड़ाने के समय हुई होंगी।

गोपाल : (हँसकर) बेशक वे बातें सुनने योग्य हैं।

देवी : आपके साथ मैं चलूंगा।

गोपाल : अच्छी बात है।

इन्द्र : भैरोसिंह को रोहतासगढ़ भेजता हूँ !

गोपाल : बहुत मुनासिब, मगर तेजसिंह के अतिरिक्त और दोनों ऐयारों को अर्थात् तारासिंह और शेरसिंह को अपने साथ मत फँसाये रहिएगा।

इन्द्रजीत : नहीं नहीं, उन दोनों को अपने रहने का ठिकाना दिखाकर छोड़ देंगे, ये दोनों चारों तरफ घूम-घूमकर खबर लगाते रहेंगे।

गोपाल : और मैं भी यही चाहता हूँ। (कमलिनी की तरफ देखकर) बाग के चौथे दर्जे में जो देवमन्दिर है, वहाँ जाने का रास्ता तुझे अच्छी तरह मालूम है या नहीं ?

कमलिनी : 'रिक्तगन्थ' की बदौलत वहाँ का रास्ता मैं अच्छी तरह जानती हूँ।

इतने में किश्ती किनारे लगी और सब कोई उतर पड़े।

सातवाँ बयान

राजा गोपालसिंह और देवीसिंह को काशी की तरफ और भैरोसिंह को रोहतासगढ़ की तरफ रवाना करके, कमलिनी अपने साथियों को साथ लिये हुए मायारानी के तिलिस्मी बाग की तरफ रवाना हुई। इस समय रात नाम-मात्र को बाकी थी। प्रायः सुबह को चलनेवाली दक्षिणी हवा ताजी खिली हुई खुशबूदार फूलों की कलियों में से अपने हिस्से की सबसे पहिली खुशबू लिये हुए अठखेलियाँ करती सामने से चली आ रही थी। हमारे बहादुर कुमार और ऐयार लोग भी धीरे-धीरे उसी तरफ जा रहे थे। यद्यपि माया-रानी का तिलिस्मी बाग यहाँ से बहुत दूर था, मगर वह खूबसूरत बँगला, जो चश्मे के ऊपर बना हुआ था और जिसमें पहिले पहल नानक और बाबा-

जी (मायाराना के दारोगा) से मुलाकात हुई थी, थोड़ी ही दूर पर था, बल्कि उसकी स्याही दिखायी दे रही थी। हमारे पाठक इस बँगले को अभी भूले न होंगे और उन्हें यह बात भी याद होगी कि नानक, रामभोली को ढूंढ़ता हुआ चश्मे के किनारे चलकर इसी बँगले में पहुँचा था और इसी जगह से बेबस करके मायारानी के दरबार में पहुँचाया गया था।

इन्द्रजीत : (कमलिनी से) सूर्योदय के पहिले ही हम लोगों को अपना सफर पूरा कर लेना चाहिए, क्योंकि दूसरे के राज्य में, बल्कि यों कहना चाहिए कि एक दुश्मन के राज्य में लापरवाही के साथ घूमना उचित नहीं है।

कमलिनी : ठीक है, मगर हमें अब बहुत दूर जाना भी नहीं है। (हाथ का इशारा करके) वह जो मकान दिखायी देता है, बस वहीं तक चलना है।

लाडिली : वह तो दारोगावाला बँगला है!

कमलिनी : हाँ, और मैं समझती हूँ कि जब से कमबख्त दारोगा कैद हो गया है तब से वह खाली ही रहता होगा?

लाडिली : हाँ, वह मकान आजकल बिल्कुल खाली पड़ा है। वहाँ से एक सुरंग मायारानी के बाग तक गयी है, मगर उसका हाल सिवाय दारोगा के और किसी को मालूम नहीं है और दारोगा ने आज तक उसका भेद किसी से नहीं कहा।

कमलिनी : ठीक है, मगर मुझे उस सुरंग से कोई मतलब नहीं, उस मकान के पास ही चश्मे के दूसरी तरफ एक टीला है, मैं वहाँ चलूंगी, क्योंकि आज दिन-भर उसी टीले पर बिताना होगा।

लाडिली : यदि मायारानी का कोई आदमी मिल गया तो?

कमलिनी : एक नहीं अगर दस भी हों तो क्या परवाह?

थोड़ी ही देर में यह मण्डली उस मकान के पास जा पहुँची, जिसमें दारोगा रहा करता था। कमलिनी ने चाहा कि उस मकान के बगल से होकर चश्मे के पार चली जाय और उस टीले पर पहुँचे, जहाँ जाने की आवश्यकता थी, मगर बँगले के बारामदे में एक लम्बे कद के आदमी को टहलते देख वह रुकी और उसी तरफ गौर से देखने लगी। कमलिनी के रुकने से दोनों कुमार और ऐयार लोग भी रुक गये और सभों का ध्यान उसी तरफ जा रहा। सवेरा तो हो चुका था मगर इतना साफ नहीं हुआ था कि सौ कदम की दूरी से कोई किसी को पहिचान सके।

उस आदमी ने भी कुँअर इन्द्रजीतसिंह की मण्डली को देखा और तेजी से इन लोगों की तरफ बढ़ा। कुछ पास आते ही कमलिनी ने उसे पहिचाना

और कहा, "यह तो भूतनाथ है !" भूतनाथ का नाम सुनते ही शेरसिंह काँप उठा, मगर दिल कड़ा करके चुपचाप खड़ा रह गया ।

कमलिनी : (भूतनाथ से) वाह वाह वाह ! तुम्हारे भरोसे पर अगर कोई काम छोड़ दिया जाय तो वह बिल्कुल ही चौपट हो जाय !!

भूतनाथ : (हाथ जोड़कर) माफ कीजियेगा, मुझसे एक भूल हो गयी और इसी सबब से मैं आज्ञानुसार काशी में आपसे मिल न सका ।

कमलिनी : भूल कैसी ?

भूतनाथ : नागर को लिये हुए मैं आपके मकान की तरफ जा रहा था। एक दिन तो बखूबी चला गया, दूसरे दिन जब बहुत थक गया तो एक पहाड़ी के नीचे घने जंगल में उसकी गठरी रखकर सुस्ताने के लिए जमीन पर लेट गया, यकायक कमबख्त नींद ने धर दबाया और मैं सो गया । जब आँख खुली तो नागर को अपने पास न देखकर घबरा गया और उसे चारों तरफ ढूंढ़ने लगा, मगर कहीं पता न लगा ।

कमलिनी : अफसोस !

भूतनाथ : कई दिन तक ढूँढ़ता रहा, आखिर भेष बदल जब काशी में आया तो खबर लगी कि नागर अपने मकान में मौजूद है। इसके बाद मैं गुप्त रीति से मायारानी के तिलिस्मी बाग के चारों तरफ घूमने लगा, वहाँ पता लगा कि दोनों कुमार और उनके ऐयारों को, जिन्हें मायारानी ने कैद कर रक्खा था कोई छुड़ाकर ले गया, मैं उसी समय समझ गया कि यह काम आपका है, बस तभी से आपको ढूंढ़ रहा हूँ, इस समय इत्तिफाक से इधर आ निकला ।

कमलिनी : (कुछ सोचकर) तुम अपने को बड़ा होशियार लगाते हो, मगर वास्तव में कुछ भी नहीं हो ! खैर, हम लोगों के साथ चले आओ ।

भूतनाथ को भी साथ लिये हुए कमलिनी वहाँ से रवाना हुई और चश्मे के पास से होकर उस टीले के पास पहुँची, जिसके ऊपर जाने का इरादा था । कमलिनी जब अपने साथियों को पीछे-पीछे आने के लिए कह-कर टीले के ऊपर चढ़ने लगी, तब शेरसिंह ने टोक दिया और कहा, "यदि कोई हर्ज न हो तो मेरी एक बात पहिले सुन लीजिए ।"

कमलिनी : आप जोकुछ कहेंगे, मैं पहिले ही समझ गयी, आप चिन्ता न कीजिए और चले आइए ।

शेर : ठीक है, मगर जब तक मैं कुछ कह न लूंगा, जी न मानेगा ।

कमलिनी : (हँसकर) अच्छा कहिए ।

शेरसिंह को अपने साथ आने का इशारा करके कमलिनी टीले के दूसरी तरफ चली और दोनों कुमार तेजसिंह, तारासिंह, लाडिली और भूतनाथ को

टीले के ऊपर धीरे-धीरे चढ़ने के लिए कह गयी। टीले के पीछे निराले में पहुँचने पर शेरसिंह ने अपने दिल का हाल कहना शुरू किया—

"चाहे आप भूतनाथ को कैसा ही नेक और ईमानदार समझती हों मगर मैं इतना कहे बिना नहीं रह सकता कि आप उस बेईमान शैतान पर भरोसा न कीजिए।"

कमलिनी : मैं पहिले ही समझ गयी थी कि आप यही बात मुझसे कहेंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि भूतनाथ ने जोकुछ काम किये हैं, वह उसकी नेकनामी, ईमानदारी और ऐयारी में बट्टा लगाते हैं, परन्तु आप कोई तरद्दुद न कीजिए, मैं बड़े-बड़े बेईमानों से अपना मतलब निकाल लेती हूँ, मेरे साथ वह अगर जरा भी दगा करेगा तो उसे बेकाम करके छोड़ दूंगी।

शेरसिंह : मैं समझता हूँ कि आप उसका पूरा-पूरा हाल नहीं जानतीं।

कमलिनी : भूतनाथ यद्यपि तुम्हारा भाई है, मगर मैं उसका हाल तुमसे भी ज्यादे जानती हूँ। तुम्हें अगर डर है तो इसी बात का न कि यदि कुमारों को मालूम हो जायगा कि वह तुम्हारा भाई है, तो तुम्हारी तरफ से उनका दिल मैला हो जायगा या भूतनाथ अगर कोई बुराई कर बैठेगा, तो मुफ्त में तुम भी बदनाम किये जाओगे!

शेरसिंह : हाँ हाँ, बस इसी सोच में मैं मरा जाता हूँ!

कमलिनी : तो तुम निश्चिन्त रहो, तुम्हारे सिर कोई बदनामी न आवेगी, जोकुछ होगा, मैं समझ लूंगी।

शेरसिंह : अख्तियार आपको है, मुझे जोकुछ कहना था, कह चुका।

दोनों कुमार और उनके साथी लोग टीले पर चढ़ चुके थे, इसके बाद शेरसिंह को अपने साथ लिये हुए कमलिनी भी वहाँ जा पहुँची। टीले के ऊपर की अवस्था देखने से मालूम होता था कि किसी जमाने में वहाँ पर जरूर कोई खूबसूरत मकान बना हुआ होगा, मगर इस समय तो एक कोठरी के सिवाय वहाँ और कुछ भी मौजूद न था। यह कोठरी बीस-पचीस आदमियों के बैठने योग्य थी। कोठरी के बीचोबीच पत्थर का एक चबूतरा बना हुआ था, और उसके ऊपर पत्थर ही का शेर बैठा था। कमलिनी ने उसी जगह सभों को बैठने के लिए कहा और भूतनाथ की तरफ देखकर बोली, "इसी जगह से एक रास्ता मायारानी के तिलिस्मी बाग में गया है। तुम्हें छोड़ सब लोगों को लेकर मैं वहाँ जाऊँगी और कुछ दिनों तक उसी बाग में रहकर अपना काम करूँगी। तब तक के लिए एक दूसरा काम तुम्हारे सुपुर्द करती हूँ, आशा है कि तुम बड़ी होशियारी से उस काम को करोगे।"

भूतनाथ : जोकुछ आज्ञा हो, मैं करने को तैयार हूँ, मगर इस समय

सबके पहिले मैं दो-चार बातें आपसे कहा चाहता हूँ, यदि आप एकान्त में सुन लें तो ठीक है।

कमलिनी : कोई हर्ज नहीं, तुम जोकुछ कहोगे, मैं सुनने के लिए तैयार हूँ।

इतना कहकर भूतनाथ को साथ लिये कमलिनी उस कोठरी के बाहर निकल आयी और दूसरी तरफ एक पत्थर की चट्टान पर बैठकर भूतनाथ से बातचीत करने लगी। दो घड़ी से ज्यादा दोनों में बातचीत होती रही, जिसे इस जगह लिखना हम मुनासिब नहीं समझते। अन्त में भूतनाथ ने अपने बटुए में से कलम-दावात और कागज का टुकड़ा निकालकर कमलिनी के सामने रख दिया। कमलिनी ने एक चीठी अपने बहनोई राजा गोपालसिंह के नाम लिखी और उसमें यह लिखा कि 'भूतनाथ को यह चीठी देकर हम तुम्हारे पास भेजते हैं। इसे बहुत ही नेक और ईमानदार समझना और हरएक काम में इसकी राय और मदद लेना। यदि यह किसी जगह ले जाय तो बेखटके चले जाना और यदि अपनी इच्छानुसार कोई काम करने के लिए कहे तो उसमें किसी तरह का शक न करना। मैं इससे अपना भेद नहीं छिपाती और इसे अपना विश्वासपात्र समझती हूँ।' इसके बाद हस्ताक्षर और एक निशान करके वह चीठी भूतनाथ के हवाले की और कहा कि 'बस तुम इसी समय मनोरमा के मकान की तरफ चले जाओ और राजा गोपालसिंह से मिलकर काम करो या जो मुनासिब हो करो, मगर देखो, खूब होशियारी से काम करना, मामला बहुत नाजुक है और तुम्हारे ईमान में ज़रा-सा फर्क पड़ेगा तो मैं बहुत बुरी तरह पेश आऊँगी' !

"आप हर तरह से बेफिक्र रहिए !" कहकर भूतनाथ टीले के नीचे उतर आया और देखते-देखते सामने के जंगल में घुसकर गायब हो गया।

आठवाँ बयान

अपनी बहिन लाडिली, ऐयारों और दोनों कुमारों को साथ लेकर कमलिनी राजा गोपालसिंह के कहे अनुसार मायारानी के तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जाकर देवमन्दिर में कुछ दिन रहेगी। वहाँ रहकर ये लोग जोकुछ करेंगे, उसका हाल पीछे लिखेंगे, इस समय भूतनाथ का कुछ हाल लिखकर हम अपने पाठकों के दिल में एक प्रकार का खुटका पैदा करते हैं।

भूतनाथ कमलिनी से विदा होकर सीधे काशीजी की तरफ नहीं गया, बल्कि मायारानी से मिलने के लिए उसके खास बाग (तिलिस्मी बाग) की तरफ रवाना हुआ और दो पहर दिन चढ़ने के पहिले ही बाग के फाटक पर

जा पहुँचा। पहरेवाले सिपाहियों में से एक की तरफ देखकर बोला, "जल्द इत्तिला कराओ कि भूतनाथ आया है।" इसके जवाब में उस सिपाही ने कहा, "आपके लिए रुकावट नहीं है, आप चले जाइए, जब दूसरे दर्जे के फाटक पर जाइयेगा तो लौंडियों से इत्तिला कराइयेगा।"

भूतनाथ बाग के अन्दर चला गया। जब दूसरे दर्जे के फाटक पर पहुँचा तो लौंडियों ने उसके आने की इत्तिला की और वह बहुत जल्द मायारानी के सामने हाजिर किया गया।

माया : कहो भूतनाथ, कुशल से तो हो ? तुम्हारे चेहरे पर खुशी की निशानी पायी जाती है, इससे मालूम होता है कि कोई खुशखबरी लाये हो और तुम्हारे शीघ्र लौट आने का भी यही सबब है। तुम जो चाहो कर सकते हो। हाँ, क्या खबर लाये ?

भूतनाथ : अब तो मैं बहुत कुछ इनाम लूंगा, क्योंकि वह काम कर आया हूँ, जो सिवा मेरे दूसरा कोई कर ही नहीं सकता था।

माया : बेशक, तुम ऐसे ही हो, भला कहो तो सही क्या कर आये ?

भूतनाथ : वह बात ऐसी नहीं है कि किसी के सामने कही जाय।

माया : (लौंडियों को चले जाने का इशारा करके) बेशक, मुझसे भूल हुई कि इन सभों के सामने तुमसे खुशी का सबब पूछती थी। हाँ, अब तो सन्नाटा हो गया।

भूतनाथ : आपने अपने पति गोपालसिंह के लिए जो उद्योग किया था, वह तो बिल्कुल ही निष्फल हुआ। मैं अब कमलिनी के पास से चला आ रहा हूँ। उसे मुझ पर पूरा भरोसा और विश्वास है और वह मुझसे अपना कोई भेद नहीं छिपाती। उसकी जुबानी जोकुछ मुझे मालूम हुआ है, उससे जाना जाता है कि गोपालसिंह अभी किसी के सामने अपने को जाहिर नहीं करेगा, बल्कि गुप्त रहकर, आपको तरह-तरह की तकलीफें पहुँचावेगा और अपना बदला लेगा।

माया : (काँपकर) बेशक, वह मुझे तकलीफ देगा। हाय, मैंने दुनिया का सुख कुछ भी नहीं भोगा ! खैर, तुम कौन-सी खुशखबरी सुनाने आये हो सो तो कहो।

भूतनाथ : कह तो रहा हूँ—पर आप स्वयं बीच में टोक देती हैं तो क्या करूँ। हाँ, तो इस समय आपको सताने के लिए बड़ी-बड़ी कार्रवाइयाँ हो रही हैं और रोहतासगढ़ से फौज चली आ रही है, क्योंकि गोपालसिंह और तेजसिंह ने कुमारों की दिलजमई करा दी है कि राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता को मायारानी ने कैद नहीं किया, बल्कि धोखा देने की नीयत से दो आदमियों को नकली चन्द्रकान्ता और बीरेन्द्रसिंह बनाकर कैद

किया है। अब कुँअर इन्द्रजीतसिंह के दो ऐयारों को साथ लेकर गोपालसिंह, किशोरी और कामिनी को छुड़ाने के लिए मनोरमा के मकान में गये हैं।

माया : बिना बोले रहा नहीं जाता ! मैं न तो कुँअर इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह या उनके ऐयारों से डरती हूँ और न रोहतासगढ़ की फौज से डरती हूँ, मैं अगर डरती हूँ तो केवल गोपालसिंह से, बल्कि उसके नाम से, क्योंकि मैं उसके साथ बुराई कर चुकी हूँ और वह मेरे पंजे से निकल गया है। खैर, यह खबर तो तुमने अच्छी सुनायी कि वह किशोरी और कामिनी को छुड़ाने के लिए मनोरमा के मकान में गया है। मैं आज ही यहाँ से काशीजी की तरफ रवाना हो जाऊंगी और जिस तरह होगा उसे गिरफ्तार करूँगी !

भूतनाथ : नहीं नहीं, अब आप उसे कदापि गिरफ्तार नहीं कर सकतीं, आप क्या बल्कि आप-सी अगर दस हजार एक साथ हो जायँ तो भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती हैं।

माया : (चिढ़कर) सो क्यों ?

भूतनाथ : कमलिनी ने उसे एक ऐसी अनूठी चीज दी है कि वह जो चाहे कर सकता है, और आप उसका कुछ नही बिगाड़ सकतीं।

माया : वह कौन ऐसी अनमोल चीज है ?

इसके जवाब में भूतनाथ ने उस तिलिस्मी खंजर का हाल और गुण बयान किया, जो कमलिनी ने कुँअर इन्द्रजीतसिंह को दिया था और कुँअर साहब ने गोपालसिंह को दे दिया था। अभी तक उस खंजर का पूरा हाल मायारानी को मालूम न था, इसलिए उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वह कुछ देर तक सोचने के बाद बोली—

माया : अगर ऐसा खंजर उसके हाथ लग गया है तो उसका कोई भी कुछ बिगाड़ नहीं सकता। बस मैं अपनी जिन्दगी से निराश हो गयी। परन्तु मुझे विश्वास नहीं होता कि ऐसा तिलिस्मी खंजर कहीं से कमलिनी के हाथ लगा हो। यह असम्भव है, बल्कि ऐसा खंजर हो ही नहीं सकता। कमलिनी ने तुमसे झूठ कहा होगा।

भूतनाथ : (हँसकर) नहीं नहीं, बल्कि उसी तरह का एक खंजर कमलिनी ने मुझे भी दिया है। (कमर से खंजर निकालकर और हर तरह पर दिखाकर) देखिए यही है।

माया : (ताज्जुब से) हाँ हाँ, अब मुझ याद आया। नागर ने अपना और तुम्हारा हाल बयान किया था तो ऐसे खंजर का जिक्र किया था और मैं इस बात को बिल्कुल भूल गयी थी। खैर, तो अब मैं उस पर किसी तरह फतह नहीं पा सकती।

भूतनाथ : नहीं घबड़ाइये मत, उसके लिए भी मैं बन्दोबस्त करके आया हूँ।

माया : वह क्या ?

भूतनाथ ने वह कमलिनीवाली चीठी बटुए में से निकालकर मायारानी के सामने रक्खी, जिसे पढ़ते ही वह खुश हो गयी और बोली, "शाबाश भूतनाथ, तुमने बड़ा ही काम किया ! अब तो तुम उस नालायक को मेरे पंजे में इस तरह फँसा सकते हो कि कमलिनी को तुम पर कुछ भी शक न हो।

भूतनाथ : बेशक, ऐसा ही है, मगर इसलिए अब हम लोगों को अपनी राय बदल देनी पड़ेगी अर्थात् पहिले जो यह बात सोची गयी थी कि किशोरी को छुड़ाने के लिए जो कोई वहाँ जायेगा, उसे फँसाते जायँगे सो न करना पड़ेगा।

माया : तुम जैसा कहोगे वैसा ही किया जायगा। बेशक, तुम्हारी अक्ल हम लोगों से तेज है। तुम्हारा खयाल बहुत ठीक है, अगर उसे पकड़ने की कोशिश की जायगी तो वह कई आदमियों को मारकर निकल जायगा और फिर कब्जे में न आवेगा और ताज्जुब नहीं कि इसकी खबर भी लोगों को हो जाय, जो हमारे लिए बहुत बुरा होगा।

भूतनाथ : हाँ, अस्तु, आप एक चीठी नागर के नाम की लिखकर मुझे दीजिए और उसमें केवल इतना ही लिखिए कि किशोरी और कामिनी को निकाल ले जानेवाले से रोक-टोक न करें, बल्कि तरह दे जायँ और उस मकान के तहखानों का भेद मुझे बता दें, फिर जब ये दोनों किशोरी और कामिनी को ले जायँगे तो उसके बाद मैं उन्हें धोखा देकर दारोगावाले बँगले में जो नहर के ऊपर है, ले जाकर झट फँसा लूँगा। वहाँ के तहखानों की ताली आप मुझ दे दीजिए। कमलिनी की जुबानी मैंने सुना है कि वहाँ का तहखाना बड़ा ही अनूठा है, इसलिए मैं समझता हूँ कि मेरा काम उस मकान से बखूबी चलेगा। जब मैं गोपालसिंह को वहाँ फँसा लूँगा तो आपको खबर दूँगा, फिर आप जो चाहे कीजियेगा !

माया : बस बस, तुम्हारी यह राय बहुत ठीक है, अब मुझे निश्चय हो गया कि मेरी मुराद पूरी हो जायगी !

मायारानी ने दारोगावाले बँगले तथा तहखाने की ताली भूतनाथ के हवाले करके, उसे वहाँ का भेद बता दिया और भूतनाथ के कहे बमूजिब एक चीठी भी नागर के नाम की लिख दी। दोनों चीजें लेकर भूतनाथ वहाँ से रवाना हुआ और काशीजी की तरफ तेजी के साथ चल निकला।

नौवाँ बयान

रात पहर-भर से ज्यादे जा चुकी है। काशी में मनोरमा के मकान के अन्दर फर्श पर नागर बैठी हुई है और उसके पास ही एक नौजवान खूबसूरत आदमी छोटे-छोटे तीन-चार तकियों का सहारा लगाये अधलेटा-सा पड़ा जमीन की तरफ देखता हुआ कुछ सोच रहा है। इन दोनों के सिवाय कमरे में कोई तीसरा नहीं है।

नागर : मैं फिर भी तुम्हें कहती हूँ कि किशोरी का ध्यान छोड़ दो, क्योंकि इस समय मौका समझकर मायारानी ने उसे आराम के साथ रखने का हुक्म दिया है।

जवान : ठीक है, मगर मैं उसे किसी तरह की तकलीफ तो नहीं देता, फिर उसके पास मेरा जाना तुमने क्यों बन्द कर दिया ?

नागर : बड़े अफसोस की बात है कि तुम मायारानी की तरफ कुछ भी ध्यान नहीं देते ! जब भी तुम किशोरी के सामने जाते हो वह जान देने के लिए तैयार हो जाती है। तुम्हारे सबब से वह सूखकर काँटा हो गयी है। मुझे निश्चय है कि दो-तीन दफे अगर तुम और उसके सामने आओगे तो वह जीती न बचेगी, क्योंकि उसमें अब बात करने की भी ताकत नहीं रही और उसका मरना मायारानी के हक में बहुत ही बुरा होगा। जब तक किशोरी को यह निश्चय न होगा कि तुम इस मकान से निकाल दिये गये, तब तक वह मुझसे सीधी तरह बात भी न करेगी। ऐसी अवस्था म मायारानी की आज्ञानुसार मैं उसे कैद रखने की अवस्था में भी क्योंकर खुश रख सकती हूँ ?

जवान : (कुछ चिढ़कर) यह बात तो तुम कई दफे कह चुकी हो, फिर घड़ी-घड़ी क्यों कहती हो ?

नागर : खैर, न सही सौ की सीधी एक ही कहे देती हूँ कि किशोरी के बारे में तुम्हारी मुराद पूरी न होगी और जहाँ तक जल्द हो सके, तुम्हें मायारानी के पास चले जाना पड़ेगा।

जवान : यदि ऐसा ही है तो लाचार होकर मुझे मायारानी के साथ दुश्मनी करनी पड़ेगी। मैं उसके कई ऐसे भेद जानता हूँ कि उन्हें प्रकट करने में उसकी कुशल नहीं है।

नागर : अगर तुम्हारी यह नीयत है तो तुम अभी जहन्नुम में भेज दिये जाओगे।

जवान : तुम मेरा कुछ भी नहीं कर सकतीं, मैं तुम्हारी जहरीली अँगूठी से डरनेवाला नहीं हूँ।

इतना कहकर वह नौजवान उठ खड़ा हुआ और कमरे के बाहर निकला

ही चाहता था कि सामने का दरवाजा खुला और भूतनाथ आता हुआ दिखायी दिया। नागर ने जवान की तरफ इशारा करके भूतनाथ से कहा, "देखो इस नालायक को मैं पहरों से समझा रही हूँ, मगर कुछ भी नहीं सुनता और जान-बूझकर मायारानी को मुसीबत में डालना चाहता है!" इसके जवाब में भूतनाथ ने कहा, "हाँ, मैं भी पिछले दरवाजे की तरफ खड़ा-खड़ा इस हरामजादे की बातें सुन रहा था!"

'हरामजादे' का शब्द सुनते ही उस नौजवान को क्रोध चढ़ आया और वह हाथ में खंजर लेकर भूतनाथ की तरफ झपटा। भूतनाथ ने चालाकी से उसकी कलाई पकड़ ली और कमरबन्द में हाथ डालके ऐसी अड़ानी मारी कि वह धम्म से जमीन पर गिर पड़ा। नागर दौड़ी हुई बाहर चली गयी और एक मजबूत रस्सी ले आयी, जो उस नौजवान के हाथ-पैर बाँधने के काम में आयी। भूतनाथ उस नौजवान को घसीटता हुआ दूसरी कोठरी में ले गया और नागर भी भूतनाथ के पीछे-पीछे चली गयी।

आधे घण्टे के बाद नागर और भूतनाथ फिर उसी कमरे में आये और दोनों प्रेमी मसनद पर बैठकर खुशी-खुशी हँसी-दिल्लगी की बातें करने लगे। अन्दाज से मालूम होता है कि ये दोनों उस नौजवान को कहीं कैद कर आये हैं।

थोड़ी देर तक हँसी-दिल्लगी होती रही, इसके बाद मतलब की बातें होने लगीं। नागर के पूछने पर भूतनाथ ने अपना हाल कहा और सबके पहिले वह चीठी नागर को दिखायी, जो राजा गोपालसिंह के लिए कमलिनी ने लिख दी थी, इसके बाद मायारानी के पास जाने और बातचीत करने का खुलासा हाल कहके वह दूसरी चीठी भी नागर को दिखायी, जो मायारानी ने नागर के नाम की लिखकर भूतनाथ के हवाले की थी। यह सब हाल सुनकर नागर बहुत खुश हुई और बोली, "यह काम सिवाय तुम्हारे और किसी से नहीं हो सकता था और यदि तुम मायारानी की चीठी न भी लाते तो भी तुम्हारी आज्ञानुसार काम करने को मैं तैयार थी।"

भूतनाथ : सो तो ठीक है, मुझे भी यही आशा थी, परन्तु यों ही एक चीठी तुम्हारे नाम की लिखा ली।

नागर : पर ताज्जुब है कि राजा गोपालसिंह और देवीसिंह आज के पहिले से इस शहर में आये हुए हैं, मगर अभी तक इस मकान के अन्दर उन दोनों के आने की आहट नहीं मिली। न मालूम वे दोनों कहाँ और किस धुन में हैं! खैर, जो होगा देखा जायगा, अब यह कहिए कि आप क्या करना चाहते हैं?

भूतनाथ : (कुछ देर तक सोचकर) अगर ऐसा है, तो मुझे स्वयं उन

दोनों को ढूंढ़ना पड़ेगा। मुलाकात होने पर दोनों को गुप्त रीति से इस मकान के अन्दर ले आऊंगा और किशोरी, कामिनी को छुड़ाकर यहाँ से निकल जाऊँगा, फिर धोखा देकर किशोरी और कामिनी को अपने कब्जे में कर लूंगा, अर्थात् उन्हें कोई दूसरा काम करने के लिए कहकर किशोरी और कामिनी को रोहतासगढ़ पहुँचाने का वादा कर ले जाऊँगा और उस गुप्त खोह में, जिसे मैं अपना मकान समझता हूँ और तुम्हें दिखा चुका हूँ, अपने आदमियों के सुपुर्द करके गोपालसिंह से आ मिलूंगा और फिर उसे कैद करके मायारानी के पास पहुँचा दूंगा, जिसमें वह अपने हाथ से उसे मारकर निश्चिन्त हो जाय।

नागर : बस बस, तुम्हारी राय बहुत ठीक है, अगर इतना काम हो जाय तो फिर क्या चाहिए ! मायारानी से मुँहमाँगा इनाम मिले क्योंकि इस समय वह राजा गोपालसिंह के सबब से बहुत ही परेशान हो रही है, यहाँ तक कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह वगैरह के हाथ से तिलिस्म को बचाने का ध्यान तक भी उसे बिलकुल ही जाता रहा। यदि वह गोपालसिंह को मारके निश्चिन्त हो जाय तो अपने से बढ़कर भाग्यवान दुनिया में किसी को नहीं समझेगी, जैसाकि थोड़े दिन पहिले समझती थी।

भूतनाथ : जो मैं कह चुका हूँ, वही होगा इसमें कोई सन्देह नहीं। अच्छा अब तुम इस मकान का पूरा-पूरा भेद मुझे बता दो, जिसमें किसी तहखाने, कोठरी, रास्ते या चोर दरवाजे का हाल मुझसे छिपा न रहे।

नागर : बहुत अच्छा, चलिए, उठिए, जहाँ तक जल्द हो सके, इस काम से भी निपट ही लेना चाहिए।

नागर ने उस मकान का पूरा-पूरा भेद भूतनाथ को बता दिया, हरएक कोठरी, तहखाना, रास्ता और चोर दरवाजा तथा सुरंग दिखा दिया और उनके खोलने और बन्द करने की विधि भी बता दी। इस काम से छुट्टी पाकर भूतनाथ नागर से विदा हुआ और राजा गोपालसिंह तथा देवीसिंह की खोज में चारों ओर घूमने लगा।

दसवाँ बयान

दूसरे दिन आधी रात जाते-जाते भूतनाथ फिर उसी मकान में नागर के पास पहुँचा। इस समय नागर आराम से सोयी न थी, बल्कि न मालूम किस धुन और फिक्र में मकान की पिछली तरफ नजरबाग में टहल रही थी। भूतनाथ को देखते ही वह हँसती हुई पास आयी और बोली।

नागर : कहो कुछ काम हुआ ?

भूतनाथ : काम तो बखूबी हो गया, उन दोनों से मुलाकात भी हुई और जो कुछ मैंने कहा दोनों ने मंजूर भी किया। कमलिनी की चीठी जब मैंने गोपालसिंह के हाथ में दी तो वे पढ़कर बहुत खुश हुए और बोले, "कमलिनी ने जोकुछ लिखा है मैं उसे मंजूर करता हूँ। वह तुम पर विश्वास रखती है तो मैं भी रखूँगा और जो तुम कहोगे वही करूँगा।"

नागर : बस, तब काम बखूबी बन गया, अच्छा अब क्या करना चाहिए ?

भूतनाथ : अब वे दोनों आते ही होंगे, तुम टहलना बन्द करो और कमरे में जाकर किवाड़ बन्द करके सो रहो और सिपाहियों को भी हुक्म दे दो कि आज कोई सिपाही पहरा न दे, बल्कि सब आराम से सो रहें, यहाँ तक कि अगर किसी को इस बाग में देखें भी तो चुपके हो रहें।

नागर "बहुत अच्छा" कहकर अपने कमरे में चली गयी और भूतनाथ के कहे मुताबिक सिपाहियों को हुक्म देकर, अपने कमरे का दरवाजा बन्द करके चारपाई पर लेट रही। भूतनाथ उसी बाग में घूमता-फिरता पिछली दीवार के पास जहाँ एक चोर दरवाजा था, जा पहुँचा और उसी जगह बैठकर किसी के आने की राह देखने लगा।

आधे घण्टे तक सन्नाटा रहा, इसके बाद किसी ने दरवाजे पर दो दफे हाथ से थपकी लगायी। भूतनाथ ने उठकर झट दरवाजा खोल दिया और दो आदमी उस राह से आ पहुँचे। बँधे हुए इशारे के होने से मालूम हो गया कि ये दोनों राजा गोपालसिंह और देवीसिंह हैं। भूतनाथ उन दोनों को अपने साथ लिये हुए धीरे-धीरे कदम रखता हुआ, नजरबाग के बीचोबीच आया, जहाँ एक छोटा-सा फौवारा था।

गोपाल : (भूतनाथ से) कुछ मालूम है कि इस समय किस तरफ पहरा पड़ रहा है ?

भूतनाथ : कहीं भी पहरा नहीं पड़ता चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है। इस मकान में जितने आदमी रहते हैं, सभों को मैंने बेहोशी की दवा दे दी है और सब-के-सब उठने के लिए मुर्दों से बाजी लगाकर पड़े है।

गोपाल : तब तो हम लोग बड़ी लापरवाही से अपना काम कर सकते हैं ?

भूतनाथ : बेशक !

गोपाल : अच्छा मेरे पीछे-पीछे चले आओ। (हाथ का इशारा करके) हम उस हम्माम की राह तहखाने में घुसा चाहते हैं। क्या तुम्हें मालूम है कि इस समय किशोरी और कामिनी किस तहखाने में कैद हैं ?

भूतनाथ : हाँ, जरूर मालूम है। किशोरी और कामिनी दोनों एक ही

साथ 'वायु-मण्डप' में कैद हैं।

गोपाल : तब तो हम्माम में जाने की कोई जरूरत नहीं, अच्छा तुम ही आगे चलो।

भूतनाथ आगे-आगे रवाना हुआ और उसके पीछे राजा गोपालसिंह और देवीसिंह चलने लगे। तीनों आदमी उत्तर तरफ के दालान में पहुँचे, जिसके दोनों तरफ दो कोठरियाँ थीं और इस समय दोनों कोठरियों का दरवाजा खुला हुआ था। तीनों आदमी दाहिने तरफवाली कोठरी में घुसे और अन्दर जाकर कोठरी का दरवाजा बन्द कर लिया। बटुए में से सामान निकालकर मोमबत्ती जलायी और देखा कि सामने दीवार में एक आलमारी है, जिसका दरवाजा एक खटके पर खुला करता था। भूतनाथ उस दरवाजे को खोलना जानता था, इसलिए पहिले उसी ने खटके पर हाथ रक्खा। दरवाजा खुल जाने पर मालूम हुआ कि उसके अन्दर सीढ़िया बनी हुई हैं। तीनों आदमी उस सीढ़ी की राह से नीचे तहखाने में उतर गये और एक कोठरी में पहुँचे, जिसका दूसरा दरवाजा बन्द था। भूतनाथ ने उस दरवाजे को भी खोला और तीनों आदमियों ने दूसरी कोठरी में पहुँचकर देखा कि एक चारपाई पर बेचारी किशोरी पड़ी हुई है, सिरहाने की तरफ कामिनी बैठी धीरे-धीरे उसका सिर दबा रही थी। कामिनी का चेहरा ज़र्द और सुस्त था मगर किशोरी तो वर्षों की बीमार जान पड़ती थी। जिस चारपाई पर वह पड़ी थी, उसका बिछावन बहुत मैला था और उसी के पास एक दूसरी चारपाई बिछी हुई थी, जो शायद कामिनी के लिए हो। कोठरी के एक कोने में पानी का घड़ा, लोटा, गिलास और कुछ खाने का सामान रक्खा हुआ था।

किशोरी और कामिनी देवीसिंह को बखूबी पहिचानती थीं, मगर भूतनाथ को केवल कामिनी ही पहिचानती थी, जब कमला के साथ शेरसिंह से मिलने के लिए कामिनी तिलिस्मी खँडहर में गयी थी, तब उसने भूतनाथ को देखा था और यह भी जानती थी कि भूतनाथ को देखकर शेरसिंह डर गया था, मगर इसका सबब पूछने पर भी उसने कुछ न कहा था। इस समय वह फिर उसी भूतनाथ को यहाँ देखकर डर गयी और जी में सोचने लगी कि एक बला में तो फँसी ही थी, यह दूसरी बला कहाँ से आ पहुँची, मगर उसी के साथ देवीसिंह को देख उसे कुछ ढाढ़स हुई और किशोरी को तो पूरी उम्मीद हो गयी ये लोग हमको छुड़ाने ही आये हैं। वह भूतनाथ और राजा गोपालसिंह को पहिचानती न थी, मगर सोच लिया कि शायद ये दोनों भी राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयार होंगे। किशोरी यद्यपि बहुत ही कमजोर, बल्कि अधमरी-सी हो रही थी, मगर इस समय यह जानकर कि कुंअर इन्द्रजीत-

सिंह के ऐयार हमें छुड़ाने आ गये हैं और अब शीघ्र ही इन्द्रजीतसिंह से मुलाकात होगी उसकी मुरझाई हुई आशालता हरी हो गयी और उसमें जान आ गयी। इस समय किशोरी का सिर कुछ खुला हुआ था, जिसे उसने अपने हाथ से ढँक लिया और देवीसिंह की तरफ देखकर बोली—

किशोरी : मैं समझती हूँ, आज ईश्वर को मुझ पर दया आयी है, इसी से आप लोग मुझे यहाँ से छुड़ाकर ले जाने के लिए आये हैं।

देवी : जी हाँ, हम लोग आपको छुड़ाने के लिए आये हैं, मगर आपकी दशा देखकर रुलाई आती है। हाय, क्या दुनिया में भलों और नेकों को यही इनाम मिला करता है!!

किशोरी : मैंने सुना था कि राजा साहब के दोनों लड़कों और ऐयारों को मायारानी ने कैद कर लिया है?

देवी : जी हाँ, उन कैदी ऐयारों में मैं भी था, परन्तु ईश्वर की कृपा से सब कोई छूट गये और अब हम लोग आपको और (कामिनी की तरफ इशारा करके) इनको छुड़ाने आये हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप बहुत कुछ मुझसे पूछना चाहती हैं और मेरे पेट में भी बहुत-सी बातें कहने योग्य भरी हैं, परन्तु यह अमूल्य समय बातों में नष्ट करने योग्य नहीं है इसलिए जोकुछ कहने-सुनने की बातें हैं, फिर होती रहेंगी, इससमय जहाँ तक जल्द हो सके यहाँ से निकल चलना ही उत्तम है।

"हाँ ठीक है।" कहकर किशोरी उठ बैठी। उसमें चलने-फिरने की ताकत न थी, परन्तु इस समय की खुशी ने उसके खून में कुछ जोश पैदा कर दिया और वह इस लायक हो गयी कि कामिनी के मोढे पर हाथ रखके तहखाने से ऊपर आ सके और वहाँ से बाग की चहारदीवारी के बाहर जा सके। कामिनी यद्यपि भूतनाथ को देखकर सहम गयी थी, मगर देवीसिंह के भरोसे से उसने इस विषय में कुछ कहना उचित न जाना, दूसरे उसने यह सोच लिया कि इस कैदखाने से बढ़कर और कोई दुःख की जगह न होगी, अतएव यहाँ से तो निकल चलना ही उत्तम है।

किशोरी और कामिनी को लिये हुए, तीनों आदमी तहखाने से बाहर निकले। इस समय भी उस मकान के चारों तरफ तथा नजरबाग में सन्नाटा ही था, इसलिए ये लोग बिना रोक-टोक उसी दरवाजे की राह यहाँ से बाहर निकल गये, जिससे राजा गोपालसिंह बाग के अन्दर आये थे। थोड़ी दूर पर तीन घोड़े और एक रथ, जिसके आगे दो घोड़े जुते हुए थे, मौजूद था। रथ पर किशोरी और कामिनी को सवार कराया गया और तीनों घोड़ों पर राजा गोपालसिंह, देवीसिंह और भूतनाथ ने सवार होकर रथ को तेजी के साथ हाँकने के लिए कहा। बात-की-बात में ये लोग शहर के

बाहर हो गये, बल्कि सुबह की सुफेदी निकलने के पहिले ही लगभग पाँच कोस दूर निकल जाने के बाद एक चौमुहानी पर रुककर विचार करने लगे कि अब रथ को किस तरफ ले चलना या रथ की हिफाजत किसके सुपुर्द करना चाहिए।

ग्यारहवाँ बयान

ऊपर के बयान में जोकुछ लिख आये हैं, उस बात को कई दिन बीत गये, आज भूतनाथ को हम फिर मायारानी के पास बैठे हुए देखते हैं। रंग-ढंग से ज़ाना जाता है कि भूतनाथ की कार्रवाइयों से मायारानी बहुत ही प्रसन्न है और वह भूतनाथ को कद्र और इज्जत की निगाह से देखती है! इस समय मायारानी के सामने सिवाय भूतनाथ के कोई दूसरा आदमी मौजूद नहीं है।

माया : इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुमने मेरी जान बचा ली।

भूतनाथ : गोपालसिंह को धोखा देकर गिरफ्तार करने में मुझे बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। आज दो दिन से केवल पानी के सहारे मैं जान बचाये हूँ। अभी तक तो कोई ऐसी बात नहीं हुई, जिसमें कमलिनी या राजा बीरेन्द्रसिंह के पक्षवाले किसी को मुझ पर शक हो। राजा गोपालसिंह के साथ केवल देवीसिंह था, जिसको मैंने किसी जरूरी काम के लिए रोहतासगढ़ जाने की सलाह दे दी और उसके जाने बाद गोपालसिंह को बातों में उलझाकर दारोगावाले मकान में ले जाकर कैद कर दिया।

माया : तो उसे तुमने खतम ही क्यों न कर दिया ?

भूतनाथ : केवल तुम्हारे विश्वास के लिए उसे जीता रख छोड़ा है।

माया : (हँसकर) केवल उसका सिर ही काट लाने से मुझे पूरा विश्वास हो जाता ! पर जो हुआ, सो हुआ, अब उसके मारने में विलम्ब न करना चाहिए।

भूतनाथ : ठीक है, जहाँ तक हो अब इस काम में जल्दी करना ही उचित है क्योंकि अबकी दफे यदि वह छूट जायगा तो मेरी बड़ी दुर्गति होगी।

माया : नहीं नहीं, अब वह किसी तरह नहीं बच सकता। मैं तुम्हारे साथ चलती हूँ और अपने हाथ से उसका सिर काटकर सदैव के लिए टण्टा मिटाती हूँ। घण्टे-भर और ठहर जाओ, अच्छी तरह अँधेरा हो जाने पर ही यहाँ से चलना उचित होगा, बल्कि तब तक तुम भोजन भी कर लो,

क्योंकि दो दिन के भूखे हो। यह तो कहो कि किशोरी और कामिनी को तुमने कहाँ छोड़ा ?

भूतनाथ : किशोरी और कामिनी को मैं एक ऐसी खोह में रख आया हूँ, जहाँ से सिवाय मेरे कोई दूसरा उन्हें निकाल ही नहीं सकता। बहुत दिनों से मैं स्वयं उस खोह में रहता हूँ और मेरे आदमी भी अभी तक वहाँ मौजूद हैं। अब केवल एक बात का खुटका मेरे जी में लगा हुआ है।

माया : वह क्या ?

भूतनाथ : यदि कमलिनी मुझसे पूछेगी कि किशोरी और कामिनी को कहाँ रख आये तो मैं क्या जवाब दूंगा ? यदि यह कहूँगा कि रोहतासगढ़ या तुम्हारे तालाबवाले मकान में रख आया हूँ, तो बहुत जल्द झूठा बनूंगा और सब भण्डा फूट जायगा।

माया : हाँ, सो तो ठीक है, मगर तुम चालाक हो, इसके लिए भी कोई-न-कोई बात जरूर सोच लोगे।

भूतनाथ : खैर, जो होगा देखा जायगा। अब कहिए कि आपका काम तो मैंने कर दिया, अब इसका इनाम क्या मिलता है ? आपका कौल है कि जो माँगोगे वही मिलेगा।

माया : हाँ हाँ, जोकुछ तुम माँगोगे वही मिलेगा। जरा दारोगावाले मकान में चलकर उसे मारकर निश्चिन्त हो जाऊँ तो तुम्हें मुंहमाँगा इनाम दूं। अच्छा यह तो कहो कि तुम चाहते क्या हो ?

भूतनाथ : दारोगावाला मकान मुझे दे दीजिए और उसमें जो अजायब-घर है, उसकी ताली मेरे हवाले कर दीजिए।

माया : (चौंककर) उस अजायबघर का हाल तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?

भूतनाथ : कमलिनी की जुबानी मैंने सुना था कि वह भी तिलिस्म ही है और उसमें बहुत अच्छी-अच्छी चीजें भी हैं ?

माया : ठीक है, मगर उसमें बहुत-सी ऐसी चीजें हैं, जो यदि मेरे दुश्मनों के हाथ लगे तो आफत ही हो जाय।

भूतनाथ : मैं उस जगह को अपने लिए चाहता हूँ, किसी दूसरे के लिए नहीं, मेरे रहते कोई दूसरा आदमी उस मकान से फायदा नहीं उठा सकता।

माया : (देर तक सोचकर) खैर, मैं दूंगी, क्योंकि तुमने मुझ पर भारी एहसान किया है, मगर उस ताली को बड़ी हिफाजत से रखना। यद्यपि उसका पूरा-पूरा हाल मुझे मालूम नहीं है, तथापि मैं समझती हूँ कि वह कोई अनूठी चीज है, क्योंकि गोपालसिंह उसे बड़े यत्न से अपने पास रखता

था, हाँ, अगर तुम अजायबघर की ताली मुझसे न लो तो मैं बहुत ज्यादा दौलत, तुम्हें देने के लिए तैयार हूँ।

भूतनाथ : आप तरद्दुद न कीजिए, उस चीज को आपका कोई दुश्मन मेरे कब्जे से नहीं ले जा सकता और आप देख लेंगी कि महीने-भर के अन्दर-ही-अन्दर मैं आपके दुश्मनों का नाम-निशान मिटा दूंगा और खुल्लम-खुल्ला अपनी प्यारी स्त्री को लेकर उस मकान में रहकर आपकी बदौलत खुशी से जिन्दगी बिताऊँगा।

माया : (ऊँची साँस लेकर) अच्छा दूंगी।

भूतनाथ : तो अब उसके देने में विलम्ब क्या है ?

माया : बस, उस काम से निपट जाने की देर है।

भूतनाथ : वहाँ भी केवल आप के चलने ही की देर है।

माया : मैं कह चुकी हूँ कि तुम भोजन कर लो, तब तक अँधेरा भी हो जाता है।

मायारानी ने घण्टी बजायी, जिसकी आवाज सुनते ही कई लौंडियाँ दौड़ी हुई आयीं और हाथ जोड़कर सामने खड़ी हो गयीं। मायारानी ने भूतनाथ के लिए भोजन का सामान ठीक करने को कहा और यह बहुत जल्द हो गया। भूतनाथ ने भोजन किया और अँधेरा होने पर मायारानी के साथ दारोगावाले मकान में चलने के लिए तैयार हुआ। मायारानी ने धनपति को भी साथ लिया और तीनों आदमी चेहरे पर नकाब डाले घोड़े पर सवार हो, वहाँ से रवाना हुए तथा बात-की-बात में दारोगावाले मकान के पास जा पहुँचे*। पेड़ों के साथ घोड़ों को बाँध तीनों आदमी उस मकान के अन्दर चले। हम ऊपर लिख आये हैं कि मायारानी ने इस मकान की ताली भूतनाथ को दे दी थी और मकान का भेद भी उसे बता दिया था, इसलिए भूतनाथ सबके आगे हुआ और उसके पीछे धनपति और मायारानी जाने लगीं। भूतनाथ उस मकान के दाहिनी तरफवाले दालान में पहुँचा, जिसमें एक कोठरी बन्द दरवाजे की थी, मगर यह नहीं जान पड़ता था कि यह दरवाजा क्योंकर खुलेगा या ताली लगाने की जगह कहाँ है। दरवाजे के पास पहुँचकर भूतनाथ ने बटुए में से एक ताली निकाली और दरवाजे के दाहिनी तरफ की दीवार में जो लकड़ी की बनी हुई थी, पैर से धक्का देना शुरू किया। चार-पाँच ठोकर के बाद लकड़ी का एक छोटा-सा तख्ता अलग हो गया और उसके अन्दर हाथ जाने लायक सूराख दिखायी दिया। ताली

---

* इस मकान का जिक्र कई दफे आ चुका है, नानक इसी मकान में बाबाजी से मिला था।

लिये हुए, उसी छेद के अन्दर भूतनाथ ने हाथ डाला और किसी गुप्त ताले में ताली लगायी। कोठरी का दरवाजा तुरत खुल गया और तीनों अन्दर चले गये। भीतर जाकर वह दरवाजा पुनः बन्द कर लिया, जिससे वह लकड़ी का टुकड़ा भी ज्यों-का-त्यों बराबर हो गया, जिसके अन्दर हाथ डाल-कर भूतनाथ ने ताला खोला था।

कोठरी के अन्दर बिल्कुल अँधेरा था, इसलिए भूतनाथ ने अपने बटुए में से सामान निकालकर मोमबत्ती जलायी। अब मालूम हुआ कि कोठरी के बीचोबीच में लोहे का एक गोल तख्ता जमीन में जड़ा हुआ है, जिस पर लगभग चार या पाँच आदमी खड़े हो सकते थे। उस तख्ते के बीचोबीच में तीन हाथ ऊँचा लोहे का एक खम्भा था और उसके ऊपर एक चर्खी लगी हुई थी। तीनों आदमी उस खम्भे को थामकर खड़े हो गये और भूतनाथ ने दाहिने हाथ से चर्खी को घुमाना शुरू किया, साथ ही घड़घड़ाहट की आवाज आयी और खम्भे के सहित वह लोहे का टुकड़ा जमीन के अन्दर घुसने लगा, यहाँ तक कि लगभग बीस हाथ के नीचे जाकर जमीन पर ठहर गया और तीनों आदमी उस पर से उतर पड़े। अब ये तीनों एक लम्बी-चौड़ी कोठरी के अन्दर घुसे। कोठरी के पूरब तरफ दीवार में एक सुरंग बनी हुई थी, पश्चिम तरफ कूआँ था, उत्तर तरफ चार सन्दूक पड़े हुए थे और दक्षिण तरफ एक जँगलेदार कोठरी बनी हुई थी, जिसके अन्दर एक आदमी जमीन पर औंधा पड़ा हुआ था और पास की जमीन खून से तरबतर हो रही थी। उसे देखते ही भूतनाथ चौंककर बोला—

भूतनाथ : ओफ, मालूम होता है कि इसने सिर पटककर जान दे दी, (मायारानी की तरफ देखके) क्योंकि तुम्हारा सामना करना इसे मंजूर न था!

माया : शायद ऐसा ही हो! आखिर मैं भी तो इसे मारने ही को आयी थी, अच्छा हुआ इसने अपनी जान आप ही दे दी, मगर अब यह क्योंकर निश्चय हो कि यह अभी जीता है या मर गया?

धनपति : (गौर से गोपालसिंह को देखकर) साँस लेने की आहट नहीं मालूम होती, जहाँ तक मैं समझती हूँ, इसमें अब दम नहीं है।

भूतनाथ : (मायारानी से) आप इस जँगले में जाकर इसे अच्छी तरह देखिए, कहिए तो ताला खोलूँ।

माया : नहीं नहीं, मुझे अब भी इसके पास जाते डर मालूम होता है, कहीं नकल न किये हो! (गोपालसिंह को अच्छी तरह देखके) वह तिलिस्मी खंजर इसके पास नहीं दिखायी देता?

भूतनाथ : वह खंजर देवीसिंह ने एक सप्ताह के लिए इससे माँग लिया

था और इस समय उसी के पास है।

माया : तब तो तुम बेखौफ इसके अन्दर जा सकते हो, अगर जीता भी होगा तो कुछ न कर सकेगा, क्योंकि इसका हाथ खाली है और तुम्हारे पास तिलिस्मी खंजर है !

भूतनाथ : बेशक, मैं इसके पास जाने में नहीं डरता।

उस जँगले के दरवाजे में एक ताला लगा हुआ था, जिसे भूतनाथ ने खोला और अन्दर जाकर राजा गोपालसिंह की लाश को सीधा किया, तब मायारानी की तरफ देखकर कहा, "अब इसमें दम नहीं है, आप बेखौफ चली आवें और इसे देखें।" मायारानी धनपति का हाथ थामे हुए उस कोठरी के अन्दर गयी और अच्छी तरह गोपालसिंह को देखा। सिर फट जाने और खून निकलने के साथ ही दम निकल जाने से गोपालसिंह का चेहरा कुछ भयानक-सा हो गया था। मायारानी को जब निश्चय हो गया कि इसमें दम नहीं है तब वह बहुत खुश हुई और भूतनाथ की तरफ देखकर बोली, "अब मैं इस दुनिया में निश्चिन्त हुई, मगर इस लाश का भी नाम-निशान मिटा देना ही उचित है।"

भूतनाथ : यह कौन बड़ी बात है। इसे ऊपर ले चलिए और जंगल में से लकड़ियाँ बटोरकर फूंक दीजिए।

माया : नहीं नहीं, रात के वक्त जंगल में विशेष रोशनी होने से ताज्जुब नहीं कि किसी को शक हो या राजा बीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार ही इधर आ निकले और देख ले।

भूतनाथ : खैर, जाने दीजिए, इसकी भी एक सहज तरकीब बताता हूँ।

माया : वह क्या ?

भूतनाथ : इसे ऊपर ले चलिए और टुकड़े-टुकड़े कर नहर में डाल दीजिए, बात-की-बात में मछलियाँ खा जायेंगी।

माया : हाँ, यह राय बहुत ठीक है, अच्छा इसे ले चलो।

भूतनाथ ने उस लाश को उठाकर उस लोहे के तख्ते पर रक्खा और तीनों आदमी खम्भे को थामकर खड़े हो गये। भूतनाथ ने उस चर्खी को उल्टा घुमाना शुरू किया। बात-की-बात में वह तख्ता ऊपर की जमीन के साथ बराबर मिल गया। भूतनाथ ने अन्दर से कोठरी का दरवाजा खोला और उस लाश को बाहर दालान में लाकर पटक दिया, इसके बाद उस कोठरी का दरवाजा, जिस तरह पहिले खोला था, उसी तरह बन्द कर दिया। मायारानी के इशारे से धनपति ने कमर से खंजर निकालकर लाश के टुकड़े किये और हड्डी और माँस नहर में डालने बाद नहर से जल लेकर

जमीन धो डाली। इसके बाद हर तरह से निश्चिन्त हो अपने-अपने घोड़े पर सवार होकर, तीनों आदमी तिलिस्मी बाग की तरफ रवाना हुए और आधी रात जाने के पहिले ही वहाँ पहुँचकर भूतनाथ ने कहा, "बस लाइए अब मेरा इनाम दे दीजिए !"

माया : हाँ हाँ, लीजिए, इनाम देने के लिए मैं तैयार हूँ। (मुस्कुराकर) लेकिन भूतनाथ, अगर इनाम में अजायबघर की ताली मैं तुम्हें न दूं तो तुम क्या करोगे ? क्योंकि मेरा काम तो हो ही चुका है !

भूतनाथ : करें क्या, बस अपनी जान दे देंगे !

माया : अपनी जान दे दोगे तो मेरा क्या बिगड़ेगा ?

भूतनाथ : (खिलखिला के हँसने बाद) क्या तुम समझती हो कि मैं सहज ही में अपनी जान दे दूंगा ? नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। पहिले तो मैं कमलिनी के पास जाकर अपना कसूर साफ-साफ कह दूंगा, इसके बाद तुम्हारे सब भेद खोल दूंगा, जो तुमने मुझे बताये हैं। इतना ही नहीं, बल्कि तुम्हारी जान लेकर तब कमलिनी के हाथ से मारा जाऊँगा। इस बाग का, दारोगावाले मकान का और मनोरमा के मकान का, रत्ती-रत्ती भेद मुझे मालूम हो चुका है और तुम खुद समझ सकती हो कि मैं कहाँ तक उपद्रव मचा सकता हूँ ! तुम यह भी न सोचना कि इस समय इस बाग में रहने के कारण, मैं तुम्हारे कब्जे में हूँ, क्योंकि वह···

माया : बस बस, बहुत जोश में न आओ, मैं तो दिल्लगी के तौर पर इतना कह गयी और तुम सच ही समझ गये ! इस बात का पूरा-पूरा विश्वास रखना कि मायारानी वादा पूरा करने से हटनेवाली नहीं है और इनाम देने में भी किसी से कम नहीं है, बैठो मैं अभी अजायबघर की ताली ला देती हूँ।

भूतनाथ : लाइए और मुझे भी अपने कौल का सच्चा ही समझिए, ऐसे काम कर दिखाऊँगा कि खुश हो जाइयेगा और ताज्जुब कीजियेगा !

माया : देखो रंज न होना, मैं तुमसे एक बात और पूछती हूँ।

भूतनाथ : (हँसकर) पूछिए ! पूछिए !!

माया : अगर मैं धोखा देकर कोई दूसरी चीज तुम्हें दे दूँ तो तुम कैसे समझोगे कि अजायबघर की ताली यही है ?

भूतनाथ : भूतनाथ को निरा मौलवी न समझ लेना। उस ताली को जो किताब की सूरत में है और जिसे दोनों तरफ से भौरों ने घेरा हुआ है, भूतनाथ अच्छी तरह पहिचानता है।

माया : शाबाश, तुम बहुत ही होशियार और चालाक हो, किसी के फरेब में आनेवाले नही, मालूम होता है कि इतनी जानकारी तुम्हें उसी

कमबख्त कमलिनी की बदौलत···

भूतनाथ : जी हाँ, बेशक ऐसा ही है, मगर हाय, जिस कमलिनी ने मेरी इतनी इज्जत की, मैं आपके लिए उसी के साथ दुश्मनी कर रहा हूँ और सो भी केवल इसी अजायबघर की ताली के लिए !

माया : अजायबघर की ताली तो तुम्हारी इच्छानुसार तुम्हें देती ही हूँ, इसके बाद इससे भी बढ़कर एक चीज तुम्हें दूँगी, जिसे देखकर तुम भी कहोगे कि मायारानी ने कुछ दिया।

भूतनाथ : बेशक, मुझे आपसे बहुतकुछ उम्मीद है।

भूतनाथ को उसी जगह बैठाकर मायारानी कहीं चली गयी, मगर आधे घण्टे के अन्दर हाथ में एक जड़ाऊ डिब्बा लिये हुए आ पहुँची और वह डिब्बा भूतनाथ के सामने रखकर बोली, "लीजिए वह अनौखी चीज हाजिर है।" भूतनाथ ने डिब्बा खोला। उसके अन्दर गुटके की तरह एक छोटी-सी पुस्तक थी, जिसे उलट-पुलटकर भूतनाथ ने अच्छी तरह देखा और तब कहा, "बेशक यही है। अच्छा अब मैं जाता हूँ, जरा कमलिनी से मिलकर खबर लूं कि उधर क्या हो रहा है।"

भूतनाथ अजायबघर की ताली लेकर मायारानी से बिदा हुआ और तिलिस्मी बाग के बाहर होकर खुशी-खुशी उत्तर की तरफ चल निकला, मगर थोड़ी ही दूर जाकर खड़ा हो गया और इधर-उधर देखने लगा। पेड़ की आड़ में से दो आदमी निकलकर भूतनाथ के सामने आये और एक ने आगे बढ़कर पूछा, "टेम गिन चाप[1] ?" इसके जवाब में भूतनाथ ने कहा, "चेह[2] !" इतना सुनकर उस आदमी ने भूतनाथ को गले लगा लिया। इसके बाद तीनों आदमी एक साथ आगे की तरफ रवाना हुए।

बारहवाँ बयान

आज से आठ-दस दिन के पहिले मायारानी कैसी परेशान और घबरायी हुई थी कि जिसका कुछ हिसाब नहीं। वह जीतें-जी अपने को मुर्दा समझने लगी थी। राजा गोपालसिंह के छूट जाने के डर, चिन्ता, बेचैनी और घबराहट ने चारों तरफ से उसे घेर लिया था, यहाँ तक कि राजा वीरेन्द्रसिंह के पक्ष-वालों और कमलिनी का ध्यान भी उसके दिल से जाता रहा था, जिनके लिए सैकड़ों ऊटक-नाटक उसे रचने पड़े थे और ध्यान था केवल गोपालसिंह का। कहीं ऐसा न हो कि गोपालसिंह का असल भेद रिआया को मालूम हो

---

1. (टेम गिन चाप) मिली वह ताली ? 2. (चेह) हाँ।

जाय, इसी सोच ने उसे बेकार कर दिया था। मगर आज वह भूतनाथ की बदौलत अपने को हर तरह से बेफिक्र मानती है, आयी हुई बला को टला समझती है और उसे विश्वास है कि अब कुछ दिन तक चैन से गुजरेगी। अब उसे केवल यही फिक्र रह गयी कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के हाथ से तिलिस्म टूटने न पावे और कमलिनी को जो यहाँ का बहुतकुछ हाल जानती है और उन दोनों कुमारों से मिली हुई है, किसी-न-किसी तरह गिरफ्तार करना या मार डालना चाहिए, जिसमें तिलिस्म तोड़ने में वह दोनों कुमारों को मदद न पहुँचा सके। वह समझती है कि इस समय इस तिलिस्म की बदौलत ही हरएक पर मैं अपना रुआब जमा सकती हूँ और बड़े-बड़े महाराजों के दिल में डर पैदा कर सकती हूँ, इतना ही नहीं, बल्कि जो चाहे कर सकती हूँ और जब तिलिस्म ही न रहेगा, तो मैं एक मामूली जमींदार के बराबर भी न समझी जाऊँगी, इत्यादि।

वास्तव में मायारानी का सोचना बहुत ठीक था, लेकिन फिर भी आज उसका दिमाग फिर आसमान पर चढ़ा हुआ है। भूतनाथ ऐसा ऐयार पाकर वह बहुत प्रसन्न है और उसे निश्चय है कि मैं जो चाहूँगी, कर गुजरूँगी, हाँ, लाडिली के चले जाने का उसे जरूर बहुत बड़ा रंज है।

जिस समय अजायबघर की ताली लेकर भूतनाथ उससे बिदा हुआ, उस समय रात बहुत कम बाकी थी और मायारानी रात-भर की थकी और जागी हुई थी इसलिए चारपाई पर जाते ही सो गयी और पहर-भर दिन चढ़े तक सोई रही। जब धनपति ने आकर जगाया तो उठी और मामूली कामों से छुट्टी पाकर हँसी-दिल्लगी में उसके साथ समय बिताने लगी। दिन तो हँसी-दिल्लगी में बीत गया मगर रात को उसने आश्चर्यजनक घटना देखी, जिससे वह बहुत परेशान और दुखी हुई।

आधी रात जा चुकी है। मायारानी अपने कमरे में, जो कीमती चीजों से भरा था, खूबसूरत जड़ाऊ पावों की मसहरी पर गाढ़ी नींद में सोयी हुई है। कमरे के बाहर हाथ में नंगी तलवार लिये नौजवान और कमसिन लौंडियाँ पहरा दे रही हैं। जिस समय सोने के इरादे से पलँग पर जाकर मायारानी ने आँखें बन्द कीं, उस समय केवल एक बिल्लौरी हाँडी के अन्दर खुशबूदार तेल से भरे हुए बिल्लौरी गिलास में हलकी रोशनी हो रही थी और कमरे का दरवाजा भिड़काया हुआ था, मगर इस समय न जाने वह रोशनी क्यों गुल हो गयी थी और कमरे के अन्दर अन्धकार हो रहा था।

मायारानी यद्यपि रानी, नौजवान और हर तरह से सुखिया थी, मगर उसकी नींद बहुत ही कच्ची थी, जरा खुटका पाने ही से वह उठ बैठती थी। इस समय भी यद्यपि वह गहरी नींद में सोयी थी, मगर शीशे के एक

शमादान के टूटने और झन्नाटे की आवाजआने से चौंककर उठ बैठी। कमरे में अन्धकार देख, वह चारपाई से नीचे उतरी और टटोलती हुई दरवाजे के पास पहुँची, मगर दरवाजा खोलना चाहा तो मालूम हुआ कि उसमें ताला लगा हुआ है। यह अद्‌भुत मामला देख वह बहुत घबरायी और डर के मारे उसका कलेजा धक-धक करने लगा। "हैं ऐसा क्यों हुआ! इस कमरे के अन्दर कौन आया, जिसने दरवाजे में ताला लगा दिया? क्या बाहर पहरा नहीं पड़ता है! जरूर पड़ता होगा, फिर बिना इत्तिला किये, इस कमरे के अन्दर आने का साहस किसको हुआ! अगर कोई आया है तो अवश्य ही इस कमरे के अन्दर ही है, क्योंकि दरवाजे में अभी तक ताला बन्द है। क्या यह काम धनपति का तो नहीं है! मगर इतना बड़ा हौसला वह नहीं कर सकती!"

ऐसे-ऐसे सोच-विचार ने मायारानी को घबड़ा दिया। वह यहाँ तक डरी कि मुँह से आवाज निकलना मुश्किल हो गया और वह अपनी लौंडियों को पुकार भी न सकी। अन्त में वह लाचार होकर दरवाजे के पास ही बैठ गयी और आँखों से आँसू की बूँदें टपकाने लगी। इतने ही में पैर की आहट जान पड़ी। मालूम हुआ कि कोई आदमी इस कमरे के अन्दर टहल रहा है। अब मायारानी और भी डरी और दरवाजे से कुछ हटकर दीवार के पास चिपक गयी। साफ मालूम होता था कि कोई आदमी पैर पटकता हुआ कमरे में घूम रहा है।

मायारानी यद्यपि दीवार के साथ दुबकी हुई थी, मगर पैर पटककर चलने वाला आदमी पल-पल में उसके पास होता जाता था। अन्त में एक मजबूत हाथ ने मायारानी की कलाई पकड़ ली। मायारानी चिल्ला उठी और इसके साथ ही उस आदमी ने, जिसने कलाई पकड़ी थी, मायारानी के गाल में जोर से एक तमाचा मारा, जिसकी तकलीफ वह बर्दाश्त न कर सकी और बेहोश होकर जमीन की ओर झुक गयी।

उस आदमी ने अपने बगल से चोर लालटेन निकाली, जिसके आगे से ढक्कन हटाते ही कमरे में उजाला हो गया। इस समय यदि मायारानी होश में आ जाती तो भी उस आदमी को न पहिचान सकती, क्योंकि वह अपने मुँह पर नकाब डाले हुए था। इस कमरे के चारों तरफ की दीवार आबनूस की लकड़ी से बनी हुई थी और उस पर उत्तम रीति से पालिश की हुई थी। पलँग के पायताने की तरफ दीवार में एक आदमी के घुसने लायक रास्ता हो गया था, अर्थात् लकड़ी का तख्ता पल्ले की तरफ घूमकर बगल में हट गया था। उस आदमी ने बेहोश मायारानी को धीरे से उठाकर उसकी चारपाई पर डाल दिया, इसके बाद कमरे के दरवाजे में जो ताला लगा हुआ था, खोलकर अपने पास रक्खा और फिर पायताने की तरफ जाकर,

उसी दरार की राह दीवार के अन्दर घुस गया। उसके जाने के साथ ही लकड़ी का तख्ता भी बराबर हो गया।

घण्टे-भर के बाद मायारानी होश में आयी और आँख खोलकर देखने लगी मगर अभी तक कमरे में अँधेरा ही था।

हाथ से टटोलने और जाँच करने से मालूम हो गया कि वह चारपाई पर पड़ी हुई है। डर के मारे देर तक चारपाई पर पड़ी रही, जब किसी के पैर की आहट न मालूम हुई तो जी कड़ा करके उठी और दरवाजे के पास आयी। कुण्डी खुली हुई थी, झट दरवाजा खोलकर कमरे के बाहर निकल आयी। कई लौंडियों को नंगी तलवार लिये दरवाजे पर पहरा देते पाया। उसने लौंडियों से पूछा, "कमरे के अन्दर कौन गया था!" जिसके जवाब में उन्होंने ताज्जुब के साथ कहा, "कोई नहीं।"

लौंडियों के कहने का विश्वास मायारानी को न हुआ, वह देर तक उन लोगों पर गुस्सा करती और बकती-झकती रही। उसे शक हो गया कि इन लोगों ने मेरे साथ दगा की और कुल लौंडियाँ दुश्मनों से मिली हुई हैं, मगर कसूर साबित किये बिना उन सभों को सजा देना भी उसने उचित न जाना।

डर के मारे मायारानी उस कमरे के अन्दर न गयी, बाहर ही एक आरामकुर्सी पर बैठकर उसने बची हुई रात बितायी। रात तो बीत गयी, मगर सुबह की सुफेदी ने आसमान पर अपना दखल अभी नहीं जमाया था कि एक मालिन का हाथ पकड़े धनपति आ पहुँची और मायारानी को बाहर बैठे हुए देख ताज्जुब के साथ बोली, "इस समय आप यहाँ क्यों बैठी हैं?"

माया : (घबड़ाई हुई आवाज में) क्या कहूँ, आज ईश्वर ने ही मेरी जान बचायी नहीं तो मरने मे कुछ बाकी न था!

धनपति : (ताज्जुब के साथ चौंककर) सो क्या?

माया : पहिले यह तो कहो कि इस मालिन को कैदियों की तरह पकड़ कर यहाँ लाने का क्या सबब है?

धनपति : नहीं, मैं पहिले आपका हाल सुन लूंगी तो कुछ कहूँगी।

मायारानी ने धीरे-धीरे अपना पूरा हाल विस्तार के साथ धनपति से कहा, जिसे सुनकर धनपति भी डरी और बोली, "इन लौंडियों पर शक करना मुनासिब नहीं है, हाँ, जब इस कमबख्त मालिन का हाल आप सुनेंगी, जिसे मैं गिरफ्तार कर लायी हूँ, तो आपका जी अवश्य दुखेगा और इस पर शक करना, बल्कि यह निश्चय कर लेना अनुचित न होगा कि यह दुश्मनों से मिली हुई है। ये लौंडियाँ, जिनके सुपुर्द पहरे का काम है और जिन पर आप शक करती हैं, बहुत ही नेक और ईमानदार हैं, मैं इन लोगों को अच्छी

तरह आजमा चुकी हूँ।"

माया : (खैर, मैं इस विषय में अच्छी तरह सोचकर और इन सभों को आजमाकर निश्चय करूँगी, तुम यह कहो कि इस मालिन ने क्या कसूर किया है ? यह तो अपने काम में बहुत तेज और होशियार है !

धनपति : हाँ, बाग की दुरुस्ती और गूलबूटों के सँवारने का काम तो यह बहुत ही अच्छी तरह जानती है, मगर इसका दिल नुकीले और विषैले काँटों से भरा हुआ है। आज रात को नींद न आने और कई तरह की चिन्ता के कारण मैं चारपाई पर आराम न कर सकी और यह सोचकर बाहर निकली कि बाग में टहलकर दिल बहलाऊँगी। मैं चुपचाप बाग में टहलने लगी, मगर मेरा दिल तरह-तरह के विचारों से खाली न था, यहाँ तक कि सिर नीचे किये टहलते मैं हम्माम के पास जा पहुंची और वहाँ अंगूर की टट्टी में पत्तों को खड़खड़ाहट पाकर घबड़ाके रुक गयी। थोड़ी ही देर में जब चुटकी बजाने की आवाज मेरे कान में पड़ी, तब तो मैं चौंकी और सोचने लगी कि बेशक, यहाँ कुछ दाल में काला है।

माया : उस समय तू अंगूर की टट्टी से कितनी दूर और किस तरफ थी ?

धनपति : मैं टट्टी के पूरब तरफ पास ही वाली चमेली की झाड़ी तक पहुँच चुकी थी, जब पत्तों की खड़खड़ाहट सुनी तो रुक गयी और जब चुटकी की आवाज कानों में पड़ी तो झट झाड़ी के अन्दर छिप गयी और बड़े गौर से अंगूर की टट्टी की तरफ ध्यान देकर देखने लगी। यद्यपि रात अँधेरी थी, मगर मेरी आँखों ने चुटकी की आवाज के साथ ही दो आदमियों को टट्टी के अन्दर घुसते देख लिया।

माया : चुटकी बजाने की आवाज कहाँ से आयी थी ?

धनपति : अंगूर की टट्टी के अन्दर से।

माया : अच्छा तब क्या हुआ ?

धनपति : मैं जमीन पर लेटकर धीरे-धीरे टट्टी की तरफ घसकने लगी और उसके बहुत पास पहुँच गयी, अन्त में किसी की आवाज भी मेरे कान में पड़ी और मैं ध्यान देकर सुनने लगी। बातें धीरे-धीरे हो रही थीं, मगर मैं बहुत पास पहुँच जाने के कारण साफ-साफ सुन सकती थी। सबसे पहिले जिसकी आवाज मेरे कानों में पड़ी वह यही कमबख्त मालिन थी।

माया : हाँ ! अच्छा इसने क्या कहा ?

धनपति : इसने केवल इतना कहा कि 'मैं बड़ी देर से तुम लोगों की राह देख रही हूँ'। इसके जवाब में आये हुए दोनों आदमियों में से एक ने कहा, बेशक, तूने अपना वादा पूरा किया, जिसका इनाम मैं इसी समय तुझे

दूंगा, मगर आज किसी कारण से कमलिनी यहाँ न आ सकी, हम लोग केवल इतना ही कहने आये हैं कि कल आधी रात को आज ही की तरह फिर चोर दरवाजा खोल दीजियो, तुझे आज से ज्यादे इनाम दिया जायगा।" यह कमबख्त 'बहुत अच्छा' कहकर चुप हो गयी और फिर किसी के बातचीत की आवाज न आयी। थोड़ी ही देर में उन दोनों आदमियों को अंगूर की टट्टी से निकलकर, दक्खिन की तरफ जाते हुए मैंने देखा, उन्हीं के पीछे-पीछे यह मालिन भी चली गयी और मैं चुपचाप उसी जगह पड़ी रही।

माया : तुमने गुल मचाकर उन दोनों को गिरफ्तार क्यों न किया ?

धनपति : मैं यह सोचकर चुप हो रही कि यदि दोनों आदमी गिरफ्तार हो जायेंगे तो कल रात को इस बाग में कमलिनी का आना न होगा।

माया : ठीक हैं, तुमने बहुत अच्छा सोचा, हाँ, तब क्या हुआ ?

धनपति : थोड़ी देर बाद मैं वहाँ से उठी और पीछे की तरफ लौटकर बाग में होशियारी के साथ टहलने लगी। आधी घड़ी न बीती थी कि यह मालिन लौटकर आपके डेरे की तरफ जाती हुई मिली। मैंने झट इसकी कलाई पकड़ ली और यह देखने के लिए दरवाजे की तरफ गयी कि इसने दरवाजा बन्द कर दिया या नहीं। वहाँ पहुँचकर मैंने दरवाजा बन्द पाया, तब इस कमिनी को लिये हुए आपके पास आयी।

माया : (मालिन की तरफ देखकर) क्यों री.! तुझ पर जो कुछ दोष लगाया गया है, वह सच है या झूठ ?

मालिन ने मायारानी की बात का कुछ जवाब न दिया। तब माया-रानी ने पहरा देनेवाली लौंडियों की तरफ देख के कहा, "आज रात को तुम लोगों की मदद से अगर कमलिनी गिरफ्तार हो गयी तो ठीक है, नहीं तो मैं समझूंगी कि तुम लोग भी इस मालिन की तरह नमकहराम होकर दुश्मनों से मिली हुई हो !"

पहरा देनेवाली लौंडियों ने मायारानी को दण्डवत् किया और एक ने कुछ आगे बढ़कर और हाथ जोड़कर कहा, "बेशक आप हम लोगों को नेक और ईमानदार पावेंगी (धनपति की तरफ इशारा करके) आपकी बात से निश्चय होता है कि आज रात को कमलिनीजी इस बाग में जरूर आवेंगी।

तरह आजमा चुकी हूँ।"

माया : (खैर, मैं इस विषय में अच्छी तरह सोचकर और इन सभों को आजमाकर निश्चय करूँगी, तुम यह कहो कि इस मालिन ने क्या कसूर किया है ? यह तो अपने काम में बहुत तेज और होशियार है !

धनपति : हाँ, बाग की दुरुस्ती और गूलबूटों के सँवारने का काम तो यह बहुत ही अच्छी तरह जानती है, मगर इसका दिल नुकीले और विषैले काँटों से भरा हुआ है। आज रात को नींद न आने और कई तरह की चिन्ता के कारण मैं चारपाई पर आराम न कर सकी और यह सोचकर बाहर निकली कि बाग में टहलकर दिल बहलाऊँगी। मैं चुपचाप बाग में टहलने लगी, मगर मेरा दिल तरह-तरह के विचारों से खाली न था, यहाँ तक कि सिर नीचे किये टहलते मैं हम्माम के पास जा पहुँची और वहाँ अंगूर की टट्टी में पत्तों को खड़खड़ाहट पाकर घबड़ाके रुक गयी। थोड़ी ही देर में जब चुटकी बजाने की आवाज मेरे कान में पड़ी, तब तो मैं चौंकी और सोचने लगी कि बेशक, यहाँ कुछ दाल में काला है।

माया : उस समय तू अंगूर की टट्टी से कितनी दूर और किस तरफ थी ?

धनपति : मैं टट्टी के पूरब तरफ पास ही वाली चमेली की झाड़ी तक पहुँच चुकी थी, जब पत्तों की खड़खड़ाहट सुनी तो रुक गयी और जब चुटकी की आवाज कानों में पड़ी तो झट झाड़ी के अन्दर छिप गयी और बड़े गौर से अंगूर की टट्टी की तरफ ध्यान देकर देखने लगी। यद्यपि रात अँधेरी थी, मगर मेरी आँखों ने चुटकी की आवाज के साथ ही दो आदमियों को टट्टी के अन्दर घुसते देख लिया।

माया : चुटकी बजाने की आवाज कहाँ से आयी थी ?

धनपति : अंगूर की टट्टी के अन्दर से।

माया : अच्छा तब क्या हुआ ?

धनपति : मैं जमीन पर लेटकर धीरे-धीरे टट्टी की तरफ घसकने लगी और उसके बहुत पास पहुँच गयी, अन्त में किसी की आवाज भी मेरे कान में पड़ी और मैं ध्यान देकर सुनने लगी। बातें धीरे-धीरे हो रही थीं, मगर मैं बहुत पास पहुँच जाने के कारण साफ-साफ सुन सकती थी। सबसे पहिले जिसकी आवाज मेरे कानों में पड़ी वह यही कमबख्त मालिन थी।

माया : हाँ ! अच्छा इसने क्या कहा ?

धनपति : इसने केवल इतना कहा कि 'मैं बड़ी देर से तुम लोगों की राह देख रही हूँ'। इसके जवाब में आये हुए दोनों आदमियों में से एक ने कहा, बेशक, तूने अपना वादा पूरा किया, जिसका इनाम मैं इसी समय तुझे

दूंगा, मगर आज किसी कारण से कमलिनी यहाँ न आ सकी, हम लोग केवल इतना ही कहने आये हैं कि कल आधी रात को आज ही की तरह फिर चोर दरवाजा खोल दीजियो, तुझे आज से ज्यादे इनाम दिया जायगा।" यह कमबख्त 'बहुत अच्छा' कहकर चुप हो गयी और फिर किसी के बातचीत की आवाज न आयी। थोड़ी ही देर में उन दोनों आदमियों को अंगूर की टट्टी से निकलकर, दक्खिन की तरफ जाते हुए मैंने देखा, उन्हीं के पीछे-पीछे यह मालिन भी चली गयी और मैं चुपचाप उसी जगह पड़ी रही।

माया : तुमने गुल मचाकर उन दोनों को गिरफ्तार क्यों न किया ?

धनपति : मैं यह सोचकर चुप हो रही कि यदि दोनों आदमी गिरफ्तार हो जायेंगे तो कल रात को इस बाग में कमलिनी का आना न होगा।

माया : ठीक हैं, तुमने बहुत अच्छा सोचा, हाँ, तब क्या हुआ ?

धनपति : थोड़ी देर बाद मैं वहाँ से उठी और पीछे की तरफ लौटकर बाग में होशियारी के साथ टहलने लगी। आधी घड़ी न बीती थी कि यह मालिन लौटकर आपके डेरे की तरफ जाती हुई मिली। मैंने झट इसकी कलाई पकड़ ली और यह देखने के लिए दरवाजे की तरफ गयी कि इसने दरवाजा बन्द कर दिया या नहीं। वहाँ पहुँचकर मैंने दरवाजा बन्द पाया, तब इस कमिनी को लिये हुए आपके पास आयी।

माया : (मालिन की तरफ देखकर) क्यों री.! तुझ पर जो कुछ दोष लगाया गया है, वह सच है या झूठ ?

मालिन ने मायारानी की बात का कुछ जवाब न दिया। तब माया-रानी ने पहरा देनेवाली लौंडियों की तरफ देख के कहा, "आज रात को तुम लोगों की मदद से अगर कमलिनी गिरफ्तार हो गयी तो ठीक है, नहीं तो मैं समझूंगी कि तुम लोग भी इस मालिन की तरह नमकहराम होकर दुश्मनों से मिली हुई हो !"

पहरा देनेवाली लौंडियों ने मायारानी को दण्डवत् किया और एक ने कुछ आगे बढ़कर और हाथ जोड़कर कहा, "बेशक आप हम लोगों को नेक और ईमानदार पावेंगी (धनपति की तरफ इशारा करके) आपकी बात से निश्चय होता है कि आज रात को कमलिनीजी इस बाग में जरूर आवेंगी।

अगर ऐसा हुआ तो हम लोग उन्हें गिरफ्तार किये बिना कदापि न रहेंगे !!"

मायारानी ने कहा, "हाँ, ऐसा ही होना चाहिए ! मैं खुद भी इस काम में तुम लोगों का साथ दूंगी और आधी रात के समय अपने हाथ से चोर दरवाजा खोलकर उसे बाग के अन्दर आने का मौका दूंगी। देखो, होशियार और खबरदार, यह बात किसी के कान में न पड़ने पावे !"

०००